Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Corrected ally

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

श्रीसीतारामचरितायन

बालकाण्ड

श्रीसीतलसिंह गहरवार

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

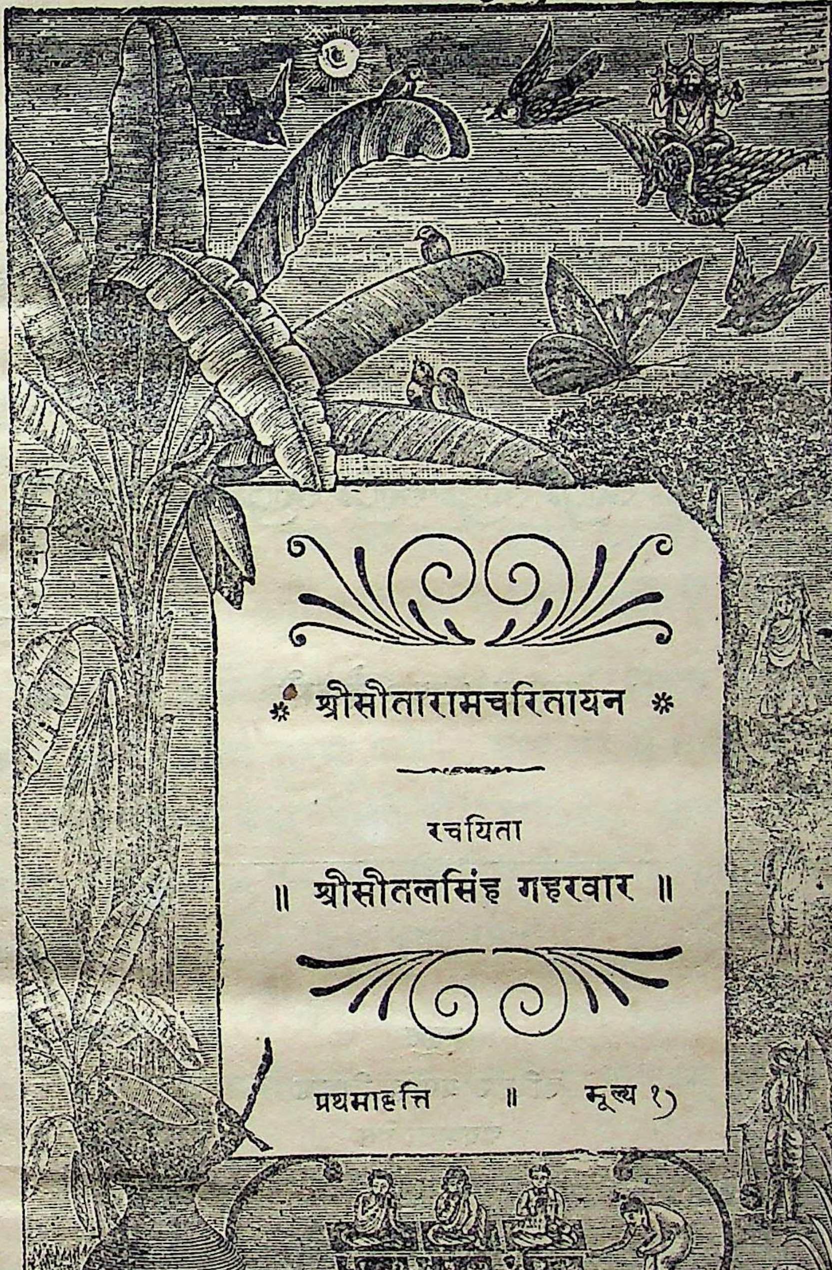

श्रीसीतारामचरितायन

रचयिता

॥ श्रीसीतलसिंह गहरवार ॥

प्रथमावृत्ति ॥ मूल्य १)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक और सम्पादक

बाबू जयप्रकाश सिंह

मोक़ाबले नवीस कलक्टरी महाफ़िज़ख़ाना

सिखलीटगञ्ज—गया।

सम्वत १९८२ बैक्रमी

मुद्रक

हरिहर प्रसाद जिञ्जल

अग्रवाला प्रेस

गया।

२३ जूलाई १९२५ ईस्वी

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सम्मति पत्र

साहित्यालंकार श्री पण्डित मोहन लाल महत्तो गयावाल
कविरत्न जी की सम्मति ।

कविवर श्री सीतल प्रसाद सिंह जी गहरवार ने जिस समय मुझे अपने अमर ग्रन्थ श्रीसीतारामचरितायन पर सम्मति लिखने का आदेश दिया था उस समय मैं तो एकाएक अवाक् हो गया ! ग्रन्थ की महानता तथा अपनी बुद्धि की अल्पता देख करही मेरी ऐसी दशा हो गयी थी !

कुछ लिखने के लिये कई बार क़लम उठाने और रखने के बाद ये चन्द लाइनें बड़ी कठिनता से लिखी गयी हैं । अस्तु ।

कहना न होगा कि प्रस्तुत ग्रन्थ रत्न की प्रत्येक पंक्ति में आप कुछ न कुछ विशेषता अवश्य पावेंगे । ग्रन्थ भर में भावों की भव्यता और अलङ्कारों की छटा देखते ही बनती है । भाषा का लालित्य मन को बरबस हरण कर लेता है तथा लेखक का प्रगाढ़ पाण्डित्य पाठक पर धाक जमाये बिना नहीं रहता ।

निष्कर्ष यह है कि श्रीसीतारामचरितायन अनन्वय अलङ्कार का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है । इत्यलम्

गया
श्रा० कृ० १२ सं० १९८२वै०

श्री मोहन लाल महत्तो गयावाल
" बियोगी "

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुस्तक परिचय

यह श्रीसीतारामचरितायन नाम का एक सप्तकाण्डात्मक पद्यात्मक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ मौलिक है अर्थात् स्वयंमूल ग्रन्थ है किसी ग्रन्थ से अनुबादित या अनेक ग्रन्थों से संकलित नहीं है। तथापि इसके कथाबिभाग अनेक ग्रन्थों के मत लेकर मनमाने तौर से लिखे गये हैं। यह अपने रंग ढंग का एक अद्वितीय और स्वतंत्र रामायण ग्रन्थ है। जिसमें श्रीसीताराम के अद्भुत चरित्रों का अद्भुत बर्णन है, जो आजतक हिन्दीभाषा में प्रकाशित नहीं हुए हैं। सबसे बिशेषता इस ग्रन्थ में यह है कि श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत मानसरामायण में बर्णित कथाओं से सभी कथायें इस ग्रन्थ में बिभिन्न हैं। यह अभिनवपथगामी एक स्वतंत्र रामायण ग्रन्थ है, जो देखनेही से बन पड़ता है। पद्योंके लालित्य और सरलता, भावार्थ की गम्भीरता, अलंकारों के चमत्कार और व्यञ्जनादि मुख्य मुख्य साहित्य के अङ्गों का समाबेश भी देखनेही योग्य है। समस्त सप्तकाण्डात्मक श्रीसीतारामचरितायन ग्रन्थ, चौपाई, दोहा और सोरठादि सरल छन्दों में लिखागया है और ठौर ठौर पर पाठकों के चित्तबिनोदार्थ सैंकड़ों प्रकार के सुप्रचलित तथा ललित छन्द लिखे गये हैं। और नव रस तो इस ग्रन्थ में कूट कूट कर भर दिये गये हैं, जो स्थान स्थान पर अपना प्रभाव प्रकट करते हैं।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यथा, जहां करुणा रस का वर्णन है वहां बरबस रुलाई आती है। जहां वात्सल्य का वर्णन है वहां चित्त गद्गद हो उठता है। वीर रस का वर्णन पढ़ने ही से चित्त में एकाएक वीरता की उमंग उठती है, शृंगार रस के वर्णन का प्रभाव मनको अतीव प्रमुदित करता है और भक्ति रस का वर्णन वज्र हृदय मनुष्य को भी दयार्द्र कर देता है। इत्यादि।

इस भगवद्भक्ति और भावनामय ग्रन्थ का अनुभव मेरे लेख से नहीं हो सक्ता। पाठकों से प्रार्थना है कि वे स्वयं इस ग्रन्थ का रसास्वादनकर अपने हृदय और मुख को पवित्र करते हुए मेरे लेख की परीक्षा करें। कथा प्रधान ग्रन्थ होने पर भी यह एक उत्तम काव्य है। इसके समस्त अलङ्कारादि काव्याङ्गों को मैं नहीं लिख सका हूं, परन्तु इसकी पाण्डुलिपि को सरसरी तौर से एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर जो काव्याङ्ग मुझे सूझ पड़े हैं उन्हे पाद टिप्पणी में लिख दिया है। जिन पद्यों के अलंकारादि नहीं लिखे गये उनपर या तो शीघ्रता के कारण मेरी दृष्टि नहीं पड़ी या सरल जानकर ग्रन्थ बिस्तार भय से मैंने छोड़ दिया। पादटिप्पणी में मैंनें जो अलङ्कारादि लिखे हैं उनमें मतभेद हो सकता है, और गम्भीर बिचार और अर्थभेद से उन्हीं अलङ्कारादिकों के दूसरे अलङ्कारादि हो जाने का संभव है। यथार्थ बात तो यह है की मनुष्य की बुद्धि अभ्रान्त नहीं हो सकती। अतएव बहुत सम्भव है कि अनेक स्थानों पर अशुद्धियां रहगयी होंगी। इस ग्रन्थ का मुद्रण बहुत जल्दी में होने और उचित रीति से प्रूफ शीट न देखे जाने के कारण भी कुछ अशुद्धियां मूलपाठ और

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाठटिप्पणियों में रह गयी हैं जिन्हें प्रथमावृत्ति समझ कर पाठक गण क्षमा करेंगे।

शेषांशमें सर्वसाधारण से मेरी यह बिनीत प्रार्थना है कि इस भगवद्भक्तिमय श्रीसीतारामचरित प्रधान ग्रन्थ की एक एक प्रति ख़रीद कर अपने अपने गृह की शोभा बढ़ावें। इस ग्रन्थ का उत्तरकाण्ड जो कई वर्ष पहिले प्रकाशित हुआ था हिन्दी संसार में बिशेष कर बिहार और छोटानागपुर प्रान्त में फैल गया है और इस कबि के विषय में ये दो दोहे प्रचलित होगये हैं।

दोहा

तुलसी सीतल होत है, सीतल तुलसी होय।
रामचरित बांटि परो, तुलसी सीतल दोय॥
तुलसी सीतल दुहुंन के, आखर एक समान।
उपजे तुलसी प्रथम जग, तेहि उकार अधिकान॥

इत्यलम्। किमधिकं बिज्ञ जनेषु।

बिनीत
जयप्रकाश सिंह
सम्पादक

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्राक्कथन

कोटि कोटि धन्यवाद है उस परमब्रह्म परमेश्वर सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को जिसकी कृपा से यह "श्रीसीतारामचरितायन" ग्रन्थ निर्माण होकर सम्पूर्ण सत्काव्यानुरागी और श्रीसीतारामचरणावलम्बी विद्वज्जनों के चित्त बिनोदार्थ प्रकाशित हुआ।

श्रीसीतारामचरितसागर का पारावार नहीं है। इसमें ज्यों २ डुबकी लगाइये त्यों २ एक से एक अनमोल रत्न हाथ आते हैं। जो चरित आजतक सर्वसाधारण पर प्रकट नहीं हैं वे सब भी चरित्रनायक की कृपा से समय २ पर सत्कवियों द्वारा प्रकट होते हैं और सर्वथा आदर पाते हैं। क्योंकि "चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्"। अतएव मैं अत्यन्त नम्रतापूर्वक अपने पाठक महाशयों से प्रार्थना करता हूं कि जब तक आपलोग इस सप्तकाण्डात्मक श्री सीतारामचरितायन ग्रन्थ को एकबार भी आद्योपान्त न पढ़ जाइए तब तक किसी प्रकार का भी कथाबिभाग में सन्देह न प्रकट कीजिये। और जब आप एकबार इस सप्तकाण्डात्मक ग्रन्थ को पढ़ जाइयेगा तब आपकी समस्त शंकाओं का आपही आप समाधान हो जायगा। क्योंकि इस बिषय में मेरा जो कुछ वक्तव्य था उसे मैं जगह बजगह और बिशेष कर बालकाण्ड की पद्यात्मक-भूमिका में लिखचुका हूं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैं गुणग्राही सज्जन महाशयों से यह भी प्रार्थना करता हूं, कि वे कृपा पूर्वक मेरे सम्पूर्ण अवगुणों को भूलकर कुछ परिश्रम स्वीकार करें और एकबार भी इस ग्रन्थ को आद्योपान्त अवश्य पढ़ जावें। यदि उन्हें इसके पढ़ने में किञ्चितमात्र भी आनन्द हुआ तो यह दीन अपने परिश्रम को सर्वथा सफल मानेगा ।

सर्वप्रथम श्रीसीतारामचरितायन के उत्तरकाण्ड को मैं ने रचा था अतएव अनेक मित्रों के अनुरोध से तथा अन्य अनेक कारणों से भी सर्वप्रथम उत्तरकाण्ड ही प्रकाशित किया गया था। अब बाल-काण्ड से प्रारम्भ कर क्रमशः सातो काण्ड पृथक २ सात खण्डों में छप रहे हैं, जो श्रीसीताराम की कृपा से बहुत शीघ्रही प्रकाशित होकर निकलेंगे ।

अनेक वर्षों के लगातार परिश्रम से बिना किसी की सहायता से—क्योंकि जहां मैं रहता हूं वह ऐसा प्रान्त ही है जहां किसी की सहायता की बात तो दूर रही किसी विद्वान, सज्जन, या संस्कृत अथवा हिन्दी के विख्यात ग्रन्थों का नाम तक भी नहीं सुनाजाता—केवल श्री सीताराम की प्रेरणा से मैं ने इस ग्रन्थ को निर्माण किया है। परन्तु इसकी छपाई बहुत शीघ्रता में होने और प्रूफ न देखे जाने के कारण कुछ अशुद्धियां रह गई हैं जिन्हें प्रथमावृत्ति जान कर क्षमाशील सज्जन अवश्य क्षमा करेंगे। गया आने पर इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि देखकर और काव्य सम्बन्धी अनेक सत्परामर्श देकर इसे छपवाने के लिये गयानिवासी साहित्यालंकार श्रीमान् पण्डित मोहनलाल महतो गयावाल ने मुझे पूर्ण उत्साह दिलाया है अतएव मैं अनेक धन्यवाद देने के पश्चात् उनका परम कृतज्ञ हूं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उपसंहार में सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर से मुझ अल्पज्ञ की बारम्बार यही प्रार्थना है, कि हे भगवन् ऐसी कृपा कीजिये जिससे देश देशान्तर में इस श्रीसीतारामचरितायन का प्रचार हो और श्रीतारामचरितसागर का शुद्ध ज्ञान सब लोगों को भली भांति प्राप्त हो जावे तथा सबलोगों के हृदय में श्री सीताराम के गुणगान की अभिरुचि उत्पन्न हो जिससे संसार यात्रा निर्वाह करते हुए भी आपके भजन में निमग्न रहकर अपना २ जन्म सफल करें और अन्त में परम पद को प्राप्त हों ।

ग्राम डुमामगञ्ज
ड़ा० डुमामगञ्ज
ज़िला गया
श्रावण संबत् १९८२ वै०

आप का दासानुदास
सीतल सिंह गहरवार
ग्रन्थकर्त्ता

महल्ला· मेरवलौ रगंज, महावीर
थान कोठी· ज़िला (गया)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीसीतारामचरितायन

बालकाण्ड

श्रीगणेशायनमः । श्रीसीतारामाभ्यांनमः

॥ अथ मंगलाचरणम् ॥

दो० १ जेहि उपजत जेहि ते जियत, जेहि सब जगत समात ।
सदा सच्चिदानन्दघन, नमो देव विख्यात ॥
अय आनन्द पयोधि जेहि, लव आनन्दहि पाय ।
सकल चराचर जग जियत, निज आनन्द अघाय ॥

---

१ यहां कवि का ईश्वरविषयकरतिभाव व्यंग्य है। ईश्वर आलम्बन विभाव है और सच्चिदानंदादि गुण उद्दीपन विभाव है। कवि का मति हर्षादि संचारीभाव है और नमस्कार करना अनुभाव है। इसी प्रकार आगे के समस्त रतिभावो में अर्थात् ईश्वर, देवता, ऋषि मुनि आदिक विषयक रतिभावो में भी जानना चाहिये। विस्तार भय से सभी स्थानों पर इस प्रकार से नहीं लिखकर केवल संकेत मात्र लिखाजायगा। जैसे यहां अमुक का अमुकविषयकरतिभाव व्यंग्य है। उन स्थानो में भी उनके विभावानुभाव और संचारीभावों को सहृदय पाठक गण को विचार करलेना चाहिये। इसमें ईश्वर विषयकरतिभाव का अंग अद्भुत रस होने से रसवदालंकार भी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो अकेल बिरचत हरत, सहज सकल संसार।
वही एक सर्वेश विभु, मेरो करहु सम्हार॥

चौ० नमो देव सब अग जग स्वामी, अलख निरन्तर अन्तर्यामी।
निर्गुन निराकार निर्बेदा, नेति नेति जेहि कह सब बेदा॥
जेहि आज्ञा बस सब संसारा, करत सदा नियमित व्यवहारा।
जो यह पंचतत्व उपजायो, पुनि सब कह निज कर्म लगायो॥
जेहि प्रभु की अद्भुत गुन करनी, निज २ थल रह नभ अरु धरनी।
जेहि आयसु ससि सूर सदाही, भ्रमत रहत नियमित पथ माहीं॥
छन मुहूर्त दिन रात महीना, युग परिबर्तन जेहि आधीना।
गंगा दिक सरि जलधि बिसाला, जेहि भय सलिल बहत सब काला॥

दो० बिधि हरिहर इन्द्रादि सुर, सिद्ध साध्य मुनि बृन्द।
जेहि भय निज कारज करत, नमो सच्चिदानन्द॥
पुनि पुनि सो परमेस को, प्रणवौं मन बचकाय।
सकल चराचर जगत में, जेहि चेतन रह छाय॥
१ मिर्च बीज सम कहत श्रुति, यह समस्त ब्रह्मण्ड।
तिच्छन गुन जिमि बीज तिमि, जग चैतन्य अखण्ड॥
ऐसे श्री परब्रह्म जो, भयो राम अवतार।
कर्म वचन मन प्रकृति तेहि, प्रणवौं बारम्बार॥

चौ० २ सुमिरौं सिद्धिसदन गननायक, बिघनहरन मंगल सबदायक।
काव्य प्रबंध सकल सुन्दरमति, जेहि सुमिरत उपजत अद्भुतगति॥

---

१ यहां बाच्यार्थरूपवस्तुसे उपमालंकार व्यंग्य है।

२ यहां से लेकर आगे के देवताओं के समस्त बंदनात्मकपद्योंमें ग्रंथ कर्ता का देवताविषयक रतिभावव्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Awasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बन्दौं रबि तिहु लोक प्रकासी, सकल पाप त्रय ताप बिनासी ।
उदय ब्रह्म मध्यान्हहिं शङ्कर, अस्त बिस्नु त्रय रूप प्रभाकर ॥
शिवशङ्कर पदकमल नमामी, महादेव सब अगजग स्वामी ।
ब्याल सुमाल बालससिभाला, अग्नि सूर ससि नयन बिसाला ॥
बन्दौं आदिशक्ति जगमाता, सकलशक्तिमति सब बिख्याता ।
जग उतपति पालन लय कारिनि, अगनित नाम रूप गुन धारिनि ॥

दो० श्रीचतुरानन पद कमल, बन्दौं बारम्बार ।
जेहि बिरचे ब्रह्माण्ड सब, रचना बिबिध प्रकार ॥
लोकपाल दिसिपाल सब, देबी देव . समस्त ।
बीर बार बिनवौं चरन, कीजे कृपा प्रसस्त ॥
१ बिधिहिं हृदय शुक गर्भ मह, बेदतत्व दिय जौन ।
अगजगब्यापक सर्बमय, बन्दौं निज गुरु तौन ॥

चौ० सुमिरौं चरन शारदा माता, जेहि सुमिरन सब ज्ञानप्रदाता ।
मो पै कृपा करहु महरानी, कहौं रामयस मंगलखानी ॥
बन्दौं दिव्य पितर गन जाती, सिद्ध साध्य खग उरग जमाती ।
भूत प्रेत ग्रह असुर समेते, भयप्रद भैरवादि गन जेते ॥
पुनि पुनि सबकहं करौं प्रनामा, देहु सुमति बरनौं यस रामा ।
तीनकाल तिहुंलोक प्रमाना, जे जड़ चेतन जीव बिधाना ॥
ब्यापक राम रूप पहिचानी, करौं प्रनाम कर्म मन बानी ।
गंगादिक सरि तीरथ जेते, बन्दौं सबकहं प्रेम समेते ॥

---

१ यहां ग्रंथकर्ता का गुरुबिषयक रतिभाव व्यंग्यहै और गुरुबिषयक रतिभाव का अंग अद्भुत रस है अतएव रसवदालंकार भी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ बन्दौं सरयू पुन्यप्रकासिनि, प्रनत पाप त्रय ताप बिनासिनि।
बन्दौं अवध त्रिकाल निवासी, सीताराम रूप अबिनासी ॥

दोहा—सकल जीव सचराचर, नारि पुरुष अस नाम।
सियाराम मय जानि सब, पुनिपुनि करौं प्रनाम ॥

चौ० २ नारद व्यास आदि सनकादी, जे मुनिबर परमारथबादी।
तिन सब के पद कमल मनाई, मांगौं अचल भक्ति रघुराई ॥
ऋषि मुनिगन सब ब्राह्मन बृन्दा, बन्दौं चरनकमल सानन्दा।
३ पुनि बन्दौं सब धार्मिक राजा, जेहि सुराज सुख प्रजा समाजा ॥
बन्दौं चरन कमल पितु माता, हितु परलोक लोक सुखदाता।
प्रणवौं अवध जगतरजधानी, रामजन्ममहि महिमाखानी ॥
पाप ताप हर सब सुखरासी, जँह सन्तत सियराम निवासी।
बन्दौं दसरथ पद जलजाता, जासु सुवन रघुपति चहुं भ्राता ॥
कौसिल्या पदकमल मनाऊं, जासुकृपा प्रभुपदरति पाऊं।
को कहि सकै भाग्य बड़ तासू, पूरनब्रह्मराम सुत जासू ॥

सो०—बन्दौं जनक भुवार, ज्ञाननिधान सुजानबंर।
त्रिजगरमा सबसार, भइ दुहिता सिय जासुघर ॥

चौ० प्रणवौं बहुरि सुनयना रानी, सीयजननि सब मंगलखानी।
बन्दौं पदरज देविसुमित्रा, जासुप्रीति प्रभुचरन बिचित्रा ॥

---

१ यहां प्रथम उल्लासालंकारसे सरयू की प्रशंसा रूप बस्तु व्यंग्य है। अतएव संलक्ष्य क्रम अलंकार से बस्तु व्यंग्य है।

२ यहां ग्रंथकार का ऋषि विषयक रतिभाव व्यंग्य है।

३ यहां कवि का राजबिषयकरतिभाव व्यंग्य है और प्रथम उल्लासालंकारसे धार्मिक राजाओं की प्रशंसारूपबस्तु व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बन्दौं पदरज कैकयिरानी, भरतजननि महिमा गुनखानी ।
कौसिल्यहि ते अति प्रिय जाही, मानत राम सदा मनमाहीं ॥
प्रनवौं अंजनिसुत हनुमाना, महावीर गुनज्ञाननिधाना ।
आगम निगम तत्व सब ज्ञाता, राम भक्त सर्बस सुखदाता ॥
१ यातुधान करि कुल पंचानन, जेहि भुजबल जानत भल रावन ।
शिव बिरंचि दिसिपति दिनराऊ, बरनत जेहि बल बिपुल प्रभाऊ ॥
याम्बवान कपिराज बिभीषन, अंगदादि जे बीर अदूषन ।
सबहिं रामप्रिय पार्षद जानी, करौं प्रनाम कर्म मन बानी ॥
प्रनवौं सकल भालु कपि सेना, जे अतिशय प्रिय राजिवनैना ।
२ तीनकाल त्रिभुवन के माहीं, जे प्रिय-राम राम-प्रिय जाहीं ॥
बन्दौं सबहिं नाय पद माथा, दीजै बिमल भक्ति रघुनाथा ।
३ बिनवौं गुरु वशिष्ठ बिज्ञानी, राम सदा जेहि आयसु मानी ॥
बन्दौं भरतचरनजलजाता, भ्रातृभक्ति सिक्षा जगदाता ।
प्रीति पाव रघुपति मनमाहीं, जेहि समान तिभुवन कोउ नाहीं ॥

दोहा—भरत कहत दुख अपहरत, सरत सकल मनकाम ।
सानुकूल तेहि पर रहत, लखन सहित सियराम ॥

राम अनुज पदकमल नमामी, तन मन धन जेहि सब सियस्वामी ।
सेष बिसेष रूप भगवाना, जासु सीस महि रेनु समाना ॥

---

१ यहां रूपकालंकारसे हनुमान जी का प्रबलपराक्रमरूपवस्तु व्यंग्य है।

२ यहां वाच्यार्थरूपवस्तुसे अनोन्यालंकार व्यंग्य है।

३ यहा वाच्यार्थरूपवस्तु से गुरु वशिष्ठ की महिमारूप वस्तुव्यंग्य है अतएव संसक्ष्यक्रमवस्तुसे वस्तुव्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बन्दौ पदसरोज रिपुहन्ता, यस महिमा गुन बिभव अनन्ता।
१ जेहि सुमिरन पूजन गुन गाना, होहिं सुजन सब श्रेय निधाना॥
२ जरत राम बिरहानलभारी, जो दिय अवध सुहितसिखबारी।
सत्तल जासु निरखि सेवकाई, बस सिय सहित राम तिहुं भाई॥
भाषा संस्कृत के कबि टोऊ, भये अहहिं अबहूं हैं जोऊ।
नमो नाय सिर पद सबकेरे, जेहि व्रत हित उपदेश घनेरे॥
समुझि सकल जग भूरि भलाई, जे बरने हरि कीर्ति सुहाई।
३ सुनि २ जेहि उपदेश सुहायो, नीचहु पलटि ऊंच बनिआयो॥

दोहा—भारत जननी चरन रज, पुनि पुनि करौं प्रनाम।
जह उपजे बहु नर रतन, कृष्ण युधिष्ठिर राम॥
स्वारथत्यागी जे भये, महापुरुष गुनवान।
कर्मक्षेत्र तिन सबन को, भारतबर्ष प्रधान॥
ध्यायआदिकबि चरन हिय, बन्दौं बारम्बार।
सियरघुपति सुभसुजस जो, किय सब जग बिस्तार॥
४ कबि उडु कहँ ससि सूर सम, बन्दौं तुलसी दास।
हरिहर ज्यों भवभय हरन, सबिधि सक्ति पद जास॥
५ बृहदार्णव श्रुति शास्त्र सब, भारत सहित पुरान।
निज मतमन्दर मंथिजिय, प्रभुयश रतन महान॥

---

१ यहां प्रथमउल्लासालंकारसे शत्रुघ्नजीकी प्रशंसारूपवस्तु व्यंग्य है।
२ यहां रूपकालंकारसे शत्रुघ्न जी का बिरही अवध बासियों की रक्षा करना रूप वस्तु व्यंग्य है। इसमें लक्षित लक्षणा से "अवध" का अर्थ अवध बासियों का समझिये
३ यहां प्रथम उल्लासालंकारसे तद्गुणालंकार व्यंग्य है अतएव संलक्ष्य क्रम अलंकार से अलंकार व्यंग्य है।
४ यहां वाच्यार्थरूपवस्तुसे मुद्रालंकार व्यंग्य है।
५ यहां रूपकालंकार से श्री तुलसीदास जी का रामयश प्रकट करना रूप वस्तु व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० १ जेहिसुभकाव्यसूर समभाई । कर अतिहित सबजगसमुदाई ॥
बालक युवा वृद्ध नर नारी । पढ़त सुनत सब लोग सुखारी ॥
२ जेहि जसभाव मिलै तेहिकोतस । है तुलसी कबिता मंह सबरस ॥
जेहि लघुकिरन प्रकाशहिं पायो । तब मैं यह निज ग्रन्थबनायो ॥
३ राम भगति अरु मति कविताई । श्रीतुलसीकृत ते मैं पाई ॥
अब पद रज बन्दौं श्रीहुलसी । जेहि सुतप्रगट भये कवितुलसी ॥
४ बन्दौं चरन कमल भवभूती । राम चरित जग बिमल प्रसूती ॥
कालिदास पद करौं प्रनामा । जो रघुवंस कहे गुनग्रामा ॥

दोहा—इन दुहु कृत रामायनहीं, सार अंस कछुलीन्ह ।
बाल्मीक मत राखिबहु, मैं यह ग्रन्थहिं कीन्ह ॥

चौ० जैमिनि व्यासदेव मुनिराजू । सेष कथित सुभ यस रघुराजू ॥
अपर अमित सद्ग्रन्थ पुराना । समुझि शास्त्रश्रुतिसम्मत नाना ॥
राम चरितमय ग्रन्थन जेते । देखि सुने संत मुख जेते ॥
सबकर सारग्रहण करि लीन्हा । तब मैं यह चरितायन कीन्हा ॥

इति श्रीसीताराम-चरितायने-अद्भुत बालकाण्डे
सीतल सिंह-गहरवार-बिरचिते प्रथमः सर्गः

---

१ यहां उपमालंकार से श्रीतुलसीदास जी के काव्य का सर्वजगव्यापकत्व रूपवस्तु व्यंग्य है ।

२ यहां वाच्यार्थ रूपवस्तु से श्रीतुलसीदास जी के काव्यकासर्वभावमय और सर्व रसमय होना रूपवस्तु व्यंग्य है ।

३ यहां प्रथम उल्लासालंकार से श्रीतुलसीदास के काव्यकी प्रशंसारूपवस्तु व्यंगहै ।

४ यहां रूपकालंकारसे श्रीभवभूति कबि की रामचरित प्रकट करने की प्रशंसा रूपवस्तु व्यंग है

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—रामचरित अरु राम को, सब मतिमान उदार।
तीन भांति बरनन करत, निज निज रुचि अनुसार॥
लक्ष्य दृष्टि ते ब्रह्म बिभु, वाच्य दृष्टि भगवान।
मनुज दृष्टि ते श्रेष्ट नृप, रामहिं कह मतिमान॥

चौ० कबि कोबिद जे परम सयाने। त्रयबिधि रामचरित्र बखाने॥
बाल्मीक मुनिबर मतिमाना। कहत राम जस मनुज समाना॥
मनुज चरित मनुजन कह भावै। तेहि कबि रामचरित इमिगावै॥
जो रामहिं ईश्वर नहिं जानैं। सोउ यह चरित सुनत सुखमानैं॥
अति मृदु मधुर मनोहर भारी। शिक्षा प्रद सबजग हितकारी॥
जेहि अनुकरन किये सबप्रानी। होहिं सकल मुद मङ्गलखानी॥
१ रामचरित सुनि गुनिमनमाहीं। ह्वै न मुदित अस कोउ जगनाहीं॥
भये राम आदर्श महीपति। कहत बिपश्चि हुं ह्वै हर्षितअति॥
व्यास देव अध्यात्म बनायो। तेहि ईशत्व राम दर्शायो॥
भये राम ईश्वर अवतारा। यह भगतन सिद्धान्त बिचारा॥

दोहा—कतहुं ब्रह्म कहुं बिष्णुकर, कहुथल और प्रकार।
कहहिं राम अवतार बुध, सो अभेद सुबिचार॥
महाबिष्णु परमातमा, परमेश्वर भगवान।
बाच्यारथ ते ब्रह्म हू, इक ईश्वर है जान॥
महाबिष्णु परब्रह्मते, भये बिष्णुभगवान।
सोउ परमातम स्वरूप हैं, बरनत सकल सुजान॥
ब्रह्मा बिष्णु महेश तिहुं, यद्यपि एक समान।
तदपि सत्त्वगुन भाव ते, बिष्णु श्रेष्ट सबजान॥

---

१ यहां प्रथम उल्लासालंकार से रामचरित की प्रशंसारूपवस्तु व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कार्य भेदते ब्रह्मयक, नामरूप है तीन ।
जब अभेद तब एक है, दुहुं मत कहत प्रबीन ॥
१ चतुरानन रचना करत, शंभुकरत संहार ।
जग प्रतिपालत विष्णु प्रभु, तेहि बहु ह्वै अवतार ॥
जब अधर्म बढ़ि जगत में, करत धर्म संहार ।
जग प्रतिपालक जगतहित, धरतअमित अवतार ॥

चौ० श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ मुनि जेते । रामहिं लच्य ब्रह्म कहतेते ॥
तहां एक शंका बड़ भारी । लच्य ब्रह्म सिगरे नर नारी ॥
रामहिं जीव भेद तब कैसे । सुनहु भेद बरनत हौं जैसे ॥
राम और जीवन तनु माहीं । अधिष्ठान चेतन द्रक आही ॥
भूत कार्य तनु जीवन काहीं । माया विग्रह राम सदाही ॥
जीवन आत्मभ्रान्ति तनु होई । रामहिं कबहुं होत नहि सोई ॥
जीव उपाधि अविद्या जानौ । विद्या राम उपाधि प्रमानौ ॥
तेहि भ्रम सहित जीव अज्ञाना । हैं सर्वज्ञ राम भगवाना ॥

दोहा—जीव सक्ति अति अल्प है, प्रभु सब शक्तीमान ।
बिन्दु सिन्धु के भेद ज्यों, जीवहि रामहिं जान ॥
जीव बद्ध अज्ञानते, होत मुक्त लहिज्ञान ।
सदा मुक्त विज्ञान घन, रहत राम भगवान ॥
योगी ज्ञानी आदिलौं, मुक्त जीव सब जोय ।
रहे प्रथम अज्ञान वे, ज्ञान पाय भे सोय ॥
मुक्त जीव ह्वै ब्रह्म सम, रह ब्रह्मानंद मोय ।

---

१ चतुरानन शब्द के अनेक अर्थ हैं, परन्तु यहां "रचनाकरत" के साहचर्यसे ब्रह्माजी काही बोधहोता है अतएव साहचर्य अभिधाशक्ति है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जग रचनादि समर्थ तिन, तदपि प्राप्त नहिं होय ॥
कोटिन जग उतपति प्रलय, राम करैं छनमाहिं ।
मुक्त जीव अरु राम ते, इहै भेद बड़ आहिं ॥
राम और सब जीव में, जो इक चेतन आहि ।
सो निर्गुन निष्क्रिय सदा, करै धरै कछु नाहि ॥

चौ० जो आभास अंस दुहु रहई । सेवक स्वामी भाव सो गहई ॥
तातें भक्त उपासक जेते । सेवहिं रामहिं प्रेम समेते ॥
भेद भगति रत भगतन काही । रहत अभेद भावना नाहीं ॥
सो रामहिं ईश्वर करि जानैं । भेद भगति भावना प्रमानैं ॥
द्वै उपासना बेद बखानै । भेद अभेदहु प्रबल प्रमानैं ॥
जेहि ते जौन सुगम बनिआवै । सोइ करै इच्छितफल पावै ॥
भगति प्रधान ग्रन्थ यह भाई । कहुँ कहुँ कहब ज्ञानसमुझाई ॥
भूल चूक सब सुजन सम्हारौ । मैं अविवेकी दास तुम्हारौ ॥
नहिं यह काव्य न मैं कबिभाई । सत्य कहौं जानत रघुराई ॥
दम्पति चरित जगत हितकारी । करौं कबित निजगिरागंवारी ॥

दोहा—ह्वै सोगुन वा दोषमय, मोहि न कछु परवाह ।
१ प्रभुयस जल यह ग्रन्थनद, सबथल बहत प्रवाह ॥
२ राम सुयसमय ग्रन्थजो, रहित काव्य गुनहोय ।
श्रद्धा भक्ति समेत तेहि, पढहिं सयाने लोय ॥
३ सहित काव्य गुन ग्रन्थजेहि, हरिचरचा नहि होय ।

---

१ इसमें रूपकालंकारसे इस ग्रंथकाआद्यन्त और मध्य रामयश मयह्वोना रूपवस्तु व्यंग्य है ।

२ यहां वाच्यार्थ रूपवस्तुसे रामसुयशमय ग्रंथकी प्रशंसा रूपवस्तु व्यंग्य है ।

३ यहां वाच्यार्थ रूपवस्तुसे रामसुयश रहितग्रंथकी निन्दा रूपवस्तु व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कबहुं सुनहिं नहिं साधुजन, यदिब्रह्मा कहसोय ॥

१ हरि हरिजन यस कबितजब, जगहितकरिय बखान ।
अधमु काव्यहू होतसब, उत्तम काव्य प्रमान ॥

२ करिश्रमबहुदिनदिवसनिशि, पुनि अवकास प्रमान ।
सात वर्ष महं कीन्ह यह, सात काण्ड निरमान ॥
बिरचिग्रन्थयह स्वार्थनिज, नहिं सपनेहु मनलीन्ह ।
सकल जगत उपकारहित, रामार्पण करि दीन्ह ॥

इति श्रीसीतारामचरितायने अद्भुत बालकाण्डे
सीतल-सिंह गहरवार—बिरचिते द्वितीयः सर्ग्गः

दोहा—सुनहु राम सर्वज्ञ प्रभु, करुना सिंधु उदार ।
आजु समर्पण करतहौं, तुम कंह यह उपहार ॥

३ "दम्पति चरितायन" चरित, प्रभु दम्पति लै लेहुं ।
रसिक सिरोमनि रीझिके, अचल भक्ति मोहिदेहु ॥

चौ० हे दम्पति अब कृपा करीजै । मम उपहार ग्रहन करिलीजै ॥
जौ प्रभु यहि आपुन अपनावैं । मम श्रम सकल सफल ह्वै जावैं ॥
मम श्रम कहत लगत बड़िलाजू । सब उर प्रेरक तुम महराजू ॥
जेहि जस चहहु कराबहु तैसे । तब मम श्रम यहिमंह प्रभुकैसे ॥
सकल कार्य कारन के कारन । तुमहिं अनादि देव जग-तारन ॥
जौ यह बात सदा सुचि सांची । तौयहु कीरति तुम्हरिहिरांची ॥

---

१ यहांभी बाच्यार्थ रूपबस्तुसे हरि और हरिजन यशमय कबितकी प्रशंसारूप बस्तु व्यंग्य है।

२ इसमें पुनरुक्ति वदाभास अलंकार है।

३ यहां परिवृत्ति अलंकारसे अचलभक्ति बरप्राप्तिकी प्रार्थनारूपबस्तु व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ जगत जीव जड़ चेतन जेते । अनुकूल प्रभु आज्ञा बस तेते ॥
२ बिधि हरिहर सुर सिद्ध घनेरे । करि न सकैं कछु बिनु तव प्रेरे ॥
श्रुति अस्मृति यहकरति समिच्छा । ह्वै न सकै कछु बिनु तवइच्छा ॥
सब कर यह सिद्धान्त अमोलै । बिनु तव आज्ञा तृनहुन डोलै ॥
३ सात पताल स्वर्ग अरु धरनी । करत एक तुमहीं सब करनी ॥
तब मम कृत यह ग्रंथ कहां है । जेहि बिरच्योयहि सोइ निबाहै ॥
४ निज कृत ग्रंथनाथ यहलीजै । अबिचलभक्ति हमहिं प्रभुदीजै ॥
५ अतिआरतह्वै तुमहिं पुकारौं । कृपा सिन्धु अबबेगि सम्हारौ ॥

दोहा—त्राहि त्राहि करुनायतन, दया सिन्धु भगवान ।
दीन बंधु मोहि दीन को, करु भव-भय परित्रान ॥
सकल साधना हीन हौं, सब अघ अवगुन पीन ।
मोहि अपनाइये नाथ अब, भयो चरन लवलीन ॥
कर्म उपासन ज्ञान की, नहि जानौं कछु रीति ।
तरन चहौं भवसिंधु यह, केवल प्रभु पद प्रीति ॥

---

१ यहां बाच्यार्थ रूपवस्तुसे श्रीरामजीका सर्वोपरिश्रेष्ठत्व रूपवस्तु व्यंग्य है ।

२ यहां बाच्यार्थ रूपवस्तुसे श्रीरामजीका सर्बहृदय प्रेरकत्व रूपवस्तु व्यंग्य है । इस प्रकरणमें तथा और स्थलोमें इसी प्रकारसे व्यंग्यनिकलते हैं परन्तु मैं केवल मंहूक प्लुतिन्यायसे बिस्तार भयके कारण किसी किसी स्थानपरही व्यंग्य की टिप्पणी दीहै अन्यस्थलोमें सहृदय पाठक स्वयमेव व्यंग्य बिचारलेंगे ।

३ इसमें लक्षितलक्षणासे 'पाताल स्वर्ग और धरनी' सेइनके निवासियों का अर्थ समझिये ।

४ यहां परिवृत्ति अलंकारहै बहुतस्थलोमें केवल अलंकारका नाममात्र लिखदियाहै

५ यहां दीनता संचारीभाव व्यंग्य है, सर्वैश्वर्य सम्पन्न कृपासिंधुराम आलम्बन बिभावहैं और अति आर्त्त होकर पुकारना और शीघ्र सम्हार के लिये प्रार्थना करना अनुभाव है । इसी प्रकार आगे के सभी संचारीभावोमें उचितभावानुभावादि बिचार लेना चाहिये ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोउ प्रीति स्रुति रीतितें, करौं सदा बिपरीत ।
निज स्वारथ की रीतिको, क्यों कहिये प्रभुप्रीत ॥
१ काह कहौं करुना करन, कहत न कछु कहिजात ।
अन्तर्यामी देव तुम, तुमहिं कि कछु अज्ञात ॥

चौ० सांच झूठ स्वारथ परमारथ । ममहिय गतिप्रभु जान यथारथ ॥
तेहि न व्यर्थ बहु बिनय सुनाऊँ । राखहु चरन सरन बलि जाऊँ ॥
जौ प्रभु मम अवगुन उर लैहौ । नहिँ निस्तार कबहुँ मैं पैहौं ॥
दोषहिं तजहिं गुनहिं करप्रीती । यह साधारन जन की रीती ॥
दीन दरिद्र पतित जन काहीं । तुम प्रति पालत नाथ सदाहीं ॥
अधम उधारन नाम तुम्हारो । हौं अति अधम बेगि प्रभुतारो ॥
आयो सरन ग्रहन करि लीजै । अविचल भक्ति चरन निजदीजै ॥
जो करि कृपा लेहु अपनाई । तौ मम सब बिगरी बनिजाई ॥

दोहा—भोगत हैं सब कर्मफल, टरत न कोटि उपाय ।
गहतसरन जब दीनजन, तुम प्रभु लेत बचाय ॥
होत अन्यथा न्याय लखि, प्रभु निज दया अपार ।
सरन ग्रहन श्रमको करत, कर्म भोग दुख भार ॥
सरन ग्रहन कै करतही, द्वै बिधि कर्म नसाय ।
भोगि शेष प्रारब्ध को, अवसि मुक्त ह्वै जाय ॥
२ जेहि जानत जग तुच्छअति, करत न आदर मान ।
राम भजन करि सोऊ नर, होवत राम समान ॥

---

१ इसमें अनुप्रास और बक्रोक्ति अलंकारका मिश्रण होनेसे संसृष्टि अलंकार है ।

२ यहां कई पद्यों में कवि का मतिसंचारीभाव व्यंगहै । बिस्तार भयसे सब स्थलों पर बिभावानु भावादि नहीं दिखलाये गये हैं ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ राम भजनजो करत नहीं, भवबंधन भय ताहि।
राम भजनजो करत नहीं, भवबंधन भय ताहि॥
जीवन कर कल्यान कर, हैं जितने जग काज।
तिन सबते अति श्रेष्ठतम, तव सुमिरन रघुराज॥
२ अगुन कहौ वा सगुनहौ, निराकार साकार।
सबहिँ व्याप्त सब तुमहिँ हौ, दसरथ राजकुमार॥
अपनी अपनी मति सरिस, तोहि बरनत सबलोग।
न तु यथार्थ तव तत्त्व को, को जग जानै योग॥
हे प्रभु तुम्हरो आजु लगि, कोउ न पायो भेद।
हार-गये बरनन करत, नेति नेति कहि बेद॥

चौ० न्याय सांख्य आदिक सबजोई। तुम्हरो भेद पाय नहिं कोई॥
जे उद्भट विद्वान कहावैं। गहन चिन्तवन समय बितावैं॥
तेहु करि बहु गंभीर बिचारा। तुम्हरो अन्त पाय नहिं पारा॥
शिव ब्रह्मादिक जे मतिमाना। सोउ प्रभुढिग बालक अज्ञाना॥
सब चतुरन की मति चतुराई। है प्रभु ढिग अति मूरखताई॥
मतबादी बहु मत फैलाये। कोटिन तर्क बितर्क बढ़ाये॥
पै तुम अति अबितर्क्य अनन्ता। नहिँ कैसेहु कोउ पायउ अन्ता॥
जहँ लगि कल्पित मत फैलाये। अधिक २ उलझन उलझाये॥

दोहा—अन परिमित सबते परे, सदा आप सर्वज्ञ।
तेहिनिज परिमित ज्ञानते, असिधकहत अतिअज्ञ॥
३ करन मान अप्रमान कर, चले भये अज्ञान।

---

१ इसमें लाटानुप्रास है।
२ यहां पर्य्यायालंकारसे रामजीकी महिमा रूपवस्तु व्यंग्य है।
३ यहां वाच्यार्थ रूपवस्तु से छेकोक्ति अलंकार व्यंग्यहै।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऊंट सींग खोजन गये, खो आये निजकान ॥
मत विवादमहँ बहुतजन, परे रहत दिन रैन ।
खोजत तत्त्व अतत्त्व गहि, कबहुँ न पावत चैन ॥
बहुनिज कल्पित मतकहत, सबही ते अति नीक ।
तिनिहिँ त्यागिजो औरमत, तिन कहँ कहतअलीक ॥
प्रभु अनन्त अवितर्क्य की, प्राप्ति हेतु पथ एक ।
हठकरि कहत जो ताहिबढ़ि, और कौन अविवेक ॥
सगुन उपासक ध्याव तोहि, सदा सगुनसाकार ।
तिनहिं सुलभहितधरत तुम, यहिजगबहुअवतार ॥
१ प्रभु तुम्हरो अवतार सब, महिमा अगम अपार ।
पै मोहि भावत हृदय अति, इहै राम अवतार ॥
अब श्रीसीताराम पद, बार बार सिरनाय ।
निज वृत्तान्त कछु कहतहौं, सुनहु सुजन मनलाय ॥

दोवै छन्द ।

सीतल मगध प्रदेश ख्यातजो, अब बिहार कहलावै ।
तेहि अन्तर्गत गया जिला महँ, गया क्षेत्र कबि गावैं ॥
देस देस ते जहँ हिन्दूगन, श्राद्ध करन हित आवैं ।
फल्गु न्हाय विष्णुपद पूजैं, देव गदाधर ध्यावैं ॥१॥
पितर मोक्षप्रद पुन्यधाम यह, बेद पुरान पुकारैं ।
२ समी पत्रसम पिण्डदान जहँ, इक सौ इक कुल तारैं ॥
सो शुभ क्षेत्र गया ते दच्छिन, योजन चार प्रमानो ।

१ यहां भी कबिका मतिसंचारीभाव व्यंग्य है ।
२ यहां बाच्यार्थ रूपबस्तुसे परिवृत्ति अलंकार व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाम सुग्राम डुमामगंज इक, जन्मभूमि मम जानौ ॥२॥
मुरहर सुरहर सरि द्वै पावन, जेहि चहुँ दिसिफिरि आई ।
जनु विधि दुहै ग्राम रच्छाहित, किय बलया कृति खाई ॥
दच्छिन ते पूरव ह्वै निकरी, श्रीमुरहर गुन खानी ।
पच्छिम ते सुरहर सरि आई, उत्तर दिसि दुमुहानी ॥३॥
है परगना सहरघाटी को, गया जिला पहिचानौ ।
थाना हसपताल डकखाना, जन्म भूमि मँह जानौ ॥
ससि बंसी ईश्वर के अंसी, जेहि सुभ यस जगभारी ।
गहरवार चली तहँ बसबहु, जिन्ह इक सिंह बिहारी ॥४॥
तेहि नरवर के चार सुवन भे, तिनहिं तीनमति धामा ।
प्रथम अयोध्या सिंह चन्द्रिका, जय प्रकाश क्रम नामा ॥
१ महादीन अघपीन मन्दमति, निपटै अधम असन्ता ।
कविकोबिद पाठकजन जानहु, सठ सीतल सुतअन्ता ॥५॥
सो यह श्रीदम्पति चरितायन, भाषा ग्रँथ बनावै ।
भूले सुधारि कृपाकरि अवयहि, पंडित जन अपनावैं ॥
सम्वतउनइसमौ पैंतालिस, (१९४५) बिक्रमार्क नृपजानौ ।
श्रीदम्पति चरितायन भाषा, ग्रंथारँभ प्रमानौ ॥६॥
संवत निधि बसु अंक विषाभुज, (४९८९) भूप युधिष्ठिर केरो ।
बसु अहिवसु शुक्राचि ईसवी (१८८८) कृस्तानन कर हेरो ॥
इम्परेस बिक्टोरिय माता, सुखद राज्य जेहिकाला ।
फैल रह्यो सब ओर छोर में, भातरवर्ष बिसाला ॥७॥

---

१ यहां कविका दीनता संचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ बकरी और व्याघ्र इक गृहमें, विचरत करत कलोलैं ।
मनिमानिक भरिथाल उछारत, पंथ पथिक जन डोलैं ॥
न्याय तुला तौलत सब इक सम, नहीं कहुं मंदी तेजी ।
अब भारत भगवान करैं ह्वैं, प्रजा राज अँगरेजी ॥८॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डे
सीतलसिंहगहरवारबिरचितेतृतीयःसर्गः

अथ कथा प्रसँगारंभः

दोहा—२ तमसा बासी आदि कबि, बाल्मीक मुनिराज ।
काय बचन मन जो सदा, परम भक्त रघुराज ॥
ज्ञान योग बैराग्यनिधि, सब सुभगुन आगार ।
तप निधान मतिमान बर, अतिधर्मज्ञ उदार ॥
श्रीबिधिके उपदेश जेहि, आदि काव्य जग कीन्ह ।
सियरघुपति जसजनक ह्वै, जगतबिमल जसलीन्ह ॥
सोमुनि नितनिजसिष्य सह, अरु उपसिष्यजमाति ।
परम प्रेम हरषित हृदय, भजन करत दिन राति ॥

चौ० तेहि मुनिके आश्रम मनभायो । इक दिन भरद्वाज मुनिआयो ॥
निज गुरु बाल्मीक पदलागी । रह कछुदिन तहँ मुनि बड़भागी ॥
एक दिवस भल अवसर पाई । कियबहु प्रश्न जगत सुखदाई ॥
प्रभु मम सँसय करहु निवारन । को यह दृश्य जगत को कारन ॥

---

१ यहां गौणीसाध्यवसान लक्षणासे बकरी का अर्थ अबल और व्याघ्रका अर्थ सबल मानना चाहिये ।

२ यहां लक्षितलक्षणासे—तमसाबासीका अर्थ तमसातटबासी समझिये ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो जगपति यह जगत बनायो । है तेहि किमि आकार सुहायो ॥
निर्गुन निराकार कोउ गावै । कोउ सगुन साकार बतावै ॥
बहुरि कहहु मोहि दया निकेतन । अहै ब्रह्म यह जड़ कै चेतन ॥
ब्रह्म जीव एकत्त्व प्रमानै । कोउ दोउ मँह बड़भेद बखानै ॥
गुरु यह तत्त्व कहहु समुझाई । जेहि ते मन दुबिधा मिटिजाई ॥
१ जो प्रभु अज अबिकल अबिकारा । कहहु सो धरत जगत अवतारा ॥
प्रभु कलिकाल घोर जब अइहैं । पाप निरत सब जन ह्वै जइहैं ॥
२ नहिं कलि कर्म योग नहिँ ज्ञाना । नहिं सधिहैं कछु धर्म बिधाना ॥
३ तब प्रभु सब जीवन निस्तारा । केहिबिधि ह्वै सो करहु प्रचारा ॥
इहै सोच मम हिय बड़ भारी । किमि तरिहैं कलियुग नरनारी ॥
लघु श्रम किये बहुत फल होई । जेहि परलोक बनै सबकोई ॥
सो उपाय कहिये मुनि नायक । हौ तुम ज्ञानमान सब लायक ॥
भरद्वाज कै प्रश्न अनूपा । सुनि हिय हरषि कहत मुनिभूपा ॥
धन्य धन्य तुम पर उपकारी । पूछेहु प्रश्न जगत हितकारी ॥

दोहा—पहिले सातो प्रश्न के, कहि उत्तर समुझाय ।
दम्पति चरित पवित्र अति, कहिहौं कथा बढ़ाय ॥

चौ० ४ सुनु मुनि सकल बेद इमि गावैं । जग कारन ईश्वरहिँ बतावैं ॥
तहँ इमि बहु संसय उर घेरै । कारन कौन ब्रह्म जग केरै ॥

---

१ इसमें छत्यनु प्रास है ।

२ कलिशब्द का अनेक अर्थ है परन्तु इहां योग, ज्ञानादि के बियोगसे कलियु[illegible] काही बोध होता है ।

३ जीवन शब्दके कई अर्थ हैं परन्तु यहां अर्थ प्रकरणसे—प्राणियोंकाही बो[illegible] होता है; इसी प्रकारसे और स्थलो में भी अभिधाशक्तिका उचितबिचार कर लीजि[illegible] मैं सभी स्थलोमें बिस्तारभयसे नहीं लिखूँगा ।

४ यहां इस समूचे प्रकरणमें कबिका बिबेक परिचय है और यहींसे पहिले प्र[illegible] का उत्तर प्रारंभ हुआ ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

द्वै बिधि कारन बेद बतावै । उपादान इक निमित कहावै ॥
यथा एक घट कारज जानो । तेहि उतपति द्वै कारन मानो ॥
उपादान कारन है माटी । निमित कुलाल चक्र अरुपाटी ॥
जब ये सब एकत्र ह्वै आवैं । द्वै कारन मिलि घट उपजावैं ॥
कारन निमित ब्रह्म जौ कहिये । तौ जगहित सामग्री चहिये ॥
सो कित ते सामग्री लायो । जेहिते यह सब जगत बनायो ॥
ब्रह्म एक अद्वैत कहावै । तेहि अतिरिक्त न कछु श्रुतिगावै ॥
उपादान जौ कहिये ताही । तो पुनि को बिरच्यो जगकाही ॥
उपादान कारन हैं जेते । बरनत बेद अचेतन तेते ॥
कह श्रुति ब्रह्म शुद्ध अरु चेतन । तेहिकिमि उपजे जगत अचेतन ॥

दोहा—चेतन ते चेतनहि ह्वै, जड़ ते जड़ परिवार ।
यह प्रतच्छ जग देखियत, सृष्टि नियम अनुसार ॥
परम बिलच्छन होय ह्वै, सुनु मुनि जौन पदार्थ ।
कारन कारज भाव नहि, तिन में बने यथार्थ ॥
पुनि बिनु कारन होय नहिँ, दृश्य जगत बिस्तार ।
सुनहु तात संछेप अब, यह सिद्धान्त बिचार ॥
१ बिनु साधनहूँ दूध यह, जैसे दधि बनि जाय ।
तैसे अपने आपहीं, ब्रह्म जगत ह्वै जाये ॥
२ चेतन ते जड़ होत है, जड़ ते चेतन होय ।
अति अचिंत्य जगदीस की, नियम न जाने कोय ॥
उपजत चेतन पुरुषते, अति जड़ नख अरु केश ।
बृश्चिकादि चेतन तथा, गोमयादि जड़ देश ॥

१ यहां उपमालंकारसे ब्रह्मकाजगत्स्वरूपहोना रूपवस्तु व्यंग्य है ।
२ यहां चतुर्थ बिभावनासे ईश्वरकी अचिंत्यमहिमा रूपवस्तु व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रेष्ठ उपासक भक्त जन, यह मत करत बखान ।
कारन जगत निमित्त अरु, उपादान भगवान ॥
१ सिद्ध योगिजन देवगन, बिनु साधनहुँ यथार्थ ।
निज संकल्पहिं ते रचत, जिमि जग अमित पदार्थ ॥
२ तिमि सब शक्तीमान यह, सर्बेश्वर भगवान ।
बिनु साधन संकल्प निज, बिरचत सकल जहान ॥
३ जग अरु ब्रह्म अभिन्न हैं, भिन्न न कह बेदान्त ।
रज्जु भुजंगम को यहां, लखि लीजै दृष्टान्त ॥
भुजँग रहै नहि रज्जु कहुँ, रज्जु रहै न भुजंग ।
ज्ञान और भ्रम कबहुँ कहुँ, रहि न सकैं इकसँग ॥
ब्रह्म और यह जगत तिमि, नहिँ लखात इकसाथ ।
बिसद बेद उपनिषद सब, कहत इहै सुभ गाथ ॥
४ भ्रम उपजै यह ब्रह्महीं, ह्वै जग रूप लखाय ।
बिनसै भ्रम ह्वै ज्ञान जब, ब्रह्म रहै जगजाय ॥

चौ० ५ ईश्वरकै मुनि हैं द्वयरूपा । निराकार साकार अनूपा ॥
निराकार निर्गुन बिभु जोई । ह्वै साकार सगुन पुनि सोई ॥
उभय भाँति तेहि बेद बतावै । निराकार साकारहु गावै ॥
केवल निराकार जब मानौ । तब तेहि बेदहुँ अगम बखानौ ॥

(१ और २) यहां इनदोनो दोहाओं में उपमालंकारसे ईश्वरका बिनाकिसी साधन केवल संकल्पमात्रासे जगतरचनामें सामर्थ्यवानहोना रूपवस्तु व्यंग्य है ।

३ यहा बाल्मीक मुनिका मतिसंचारीभाव व्यंग्य है ।

४ ब्रह्मशब्दके कई अर्थहै परन्तु जगबिरोधके कारण बेदान्तप्रतिपाद्य ब्रह्महीका बोधहोता है अतएव बिरोधसे अभिधाशक्ति है ।

५ यहांसे दूसरेप्रश्नका उत्तर प्रारंभहुआ ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो किमि आव मनुज मति माहीं । तब उपासना भयउ वृथाहीं ॥
मनुज सगुन साकार कहावै । सो किमि निराकार कहँ ध्यावै ॥
पुनि निर्गुनहिं भजन को करई । जो कृपादि सद्गुन नहिं धरई ॥
जो भगतन पै कृपा न करिहैं । तासु भजन करि क्यों नर मरिहैं ॥

दोहा—जौ ईश्वर कोउ मानिये, निराकार नहिं सोय ।
बिनु आकार कोउ बस्तु की, जगमें थिति नहिं होय ।
निराकार कहि ईश्वर हौं, जो थिति करैं प्रमान ।
सो प्रमान पंडित कहैं, "बंध्या पुत्र" समान ॥
निराकार को आजु लौं, को देख्यो जग मांहिँ ।
जौ देख्यो साकार तब, निराकार सो नाहिँ ॥
निराकार निर्गुन सदा, जौ होत्यो भगवान ।
१ तौ क्यों दर्शन पावते, जे प्रभु भक्त प्रधान ॥
ध्रुव प्रहलादादिक भगत, देखि प्रभु साकार ।
तब क्यों हठकरि भाषिये, निराकार करतार ॥
निराकार कर्ता नहीं, है कर्ता साकार ।
निराकार किमि कहिय तब, जो सब जग करतार ?

चौ० जो प्रभु निराकार कहि जावै । सो किमि जग साकार बनावै ॥
यह साकार जगत कौ कारन । है साकार ब्रह्म जग तारन ॥
जौ केवल साकारहि कहिये । तौ सब व्यापकता नहिँ लहिये ॥
जो परिछिन्न अल्प परिमाना । सो नहिँ सब व्यापक भगवाना ॥
है साकार बस्तु जग जेती । नाशमान स्रुति कह सब तेती ॥

---

१ सनातनधर्मावलम्बी भक्तोंकेअतिरिक्त ईसा और मूसा आदि पैगम्बरोंनेभी साकार ईश्वरका दर्शन किये थे।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तातें निराकार साकारा । है ईश्वर द्वै रूप प्रकारा ॥
यह ईस्वर की ईस्वरताई । द्वै साकारहुँ नहिँ बिनसाई ॥
निराकारमय जो साकारा । है सो सब सुभ गुन आगारा ॥

दोहा—यहि जग उत्तम गुनन को, है जहँ लगि परमान ।
सो सबगुन जेहि होय तेहि, कहिय सगुन भगवान ॥
पंचभूत तनु ईश नहिँ, माया बिग्रह सोय ।
सूछमहूते सूक्ष्म अति, साकार हु में होय ॥

चौ० निराकार श्रुति जाहि पुकारै । सर्वाकार रूप सो धारै ॥
नाम रूप यह जग जित हेरौ । सो सब नाम रूप तेहि केरौ ॥
अधिकारिन के भेद बिचारै । अगुन सगुन द्वै बेद पुकारै ॥
अगुन सगुन मँह भेद न कोई । उभय एक पुनि इक द्वै होई ॥
द्वै साकार न सो नसि जावै । निराकार द्वै जगत बनावै ॥
नहिँ परिछिन्न रूप साकारा । है सोउ व्यापक सब संसारा ॥
सगुन उपासक जे बिज्ञानी । निज प्रभुमय देखहिँ सब प्रानी ॥
है सब शक्तिमान जो साईं । यह सब तासु अलौकिक ताईं ॥

दोहा—१ द्वै निर्गुन है सगुन पुनि, निराकार साकार ।
अति बिचित्र सब शक्ति को, वही एक आधार ॥

चौ० सुनु मुनि कछुक भेद नहिँ राखौं । मतिप्रमान तोहि उत्तर भाखौं ॥
२ यह जग द्वै बिधि रचना जानौ । इक चेतन दूजो जड़ मानौ ॥

---

१ यहां वाच्यार्थ रूपबस्तुसे पर्य्यायालंकार व्यंग्य है ।

२ यहांसे तृतीय प्रश्न का उत्तर प्रारंभ हुआ और इसके समस्त प्रकरणमें कवि का अचेतनमें चेतनाध्यारोप परिचय है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जड़ चेतन जितने जगमाहीं । कारन एक ब्रह्म सब काहीं ॥
जो यह ब्रह्महिँ चेतन कहिये । तौ जड़ सृष्टि कहां ते लहिये ॥
जौ जड़ कहियत ह्वै बड़ि हानी । को विरचे सब चेतन प्रानी ॥
यह सिद्धान्त प्रथम कछु गायो । सुनहु और जो बेद बतायो ॥
जड़ चेतन जितने जग जानौ । है नहिँ पृथक एक सब मानौ ॥
देखहु जग जे परम अचेतन । बहिर्भूत जड़ अन्तर्चेतन ॥
१ अवनि अकास पतालहुँ माहीं । सब अन्तर्गत चेतन आही ॥
नहिं कछु बस्तु अहै जग माहीँ । जेहि अन्तर्गत चेतन नाहीँ ॥

दोहा—है चेतन ते व्याप्त जब, जग के सकल पदार्थ ।
तब सब चेतनही कहौ, नहिं जड़ कोउ यथार्थ ॥
महासूक्ष्मचित ब्रह्महीं, थूल दशा के माहिँ ।
परम अचेतन लखि परै, नतु सब चेतन आहिँ ॥
यह अपार संसार को, जो विरच्यो करतार ।
सो चेतन है जड़ नहीं, इहै कहत श्रुति चार ॥
२ चेतन कहँ चेतन करन, अति चेतन भगवान ।
ताहि अचेतन कहत जो, ताहि अचेतन जान ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेऽद्भुतबालकाण्डे
सीतलसिंहगहरवारविरचितेचतुर्थःसर्गः

दोहा—३ ब्रह्मरु जीव अभेद है, नहिँ बास्तव कछु भेद ।
कहि अभेद पुनि भेद बहु, कथन करत हैं बेद ॥

---

१ यहां लक्षितलक्षणासे—अवनि आकाश और पातालसे—उनमेंस्थित बस्तुओं का अर्थ समझिये ।

२ इसमें यमकालंकार चारो पदों में है ।

३ यहां से चौथे प्रश्न का उत्तर प्रारंभहुआ और इसमें कवि का आत्म ज्ञान और मोक्षोपाय का परिचय है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अधिकारिन के भेद ते, दुहु मत परम प्रमान ।
किय उपासना उभय बिधि, होत सकल कल्यान ॥
भेद अभेद उपासना, जेहिते जो बनि आय ।
सोइ करै फल एक है, अंत मुक्ति मिलि जाय ॥
यद्यपि उभय उपासना, समफल प्रद कह बेद ।
सहज कठिन को भेद पुनि, रुचि बैचित्र्य प्रभेद ॥
जब लगि जीवहिँ ब्रह्मते, नहिँ अभेद दृढ़ ज्ञान ।
तब लगि भेद उपासना, करिय सदा हित जान ॥
कहत "अहं ब्रह्मास्मि" जो, बाचक ज्ञानी मूढ़ ।
तिनहिँ श्रेष्ठ अति भक्त जो, भेद भक्ति आरूढ़ ॥
बैठे त्यागि उपासना, ब्रह्मज्ञान नहिँ निष्ठ ।
जेठ बनन अभिमान किय, ह्वै गे परम कनिष्ठ ॥

चौ॰ ब्रह्म जीव कर भेद अभेदा । सुनहु कहौं बरनत अस बेदा ॥
माया चेतन ईस्वर आनौ । जीव अबिद्या चेतन मानौ ॥
उभय उपाधिहिँ ते कह बेदा । ईस्वर अरु जीवहिँ बड़ भेदा ॥
सर्ब सक्तिमय ईस्वर जानौ । जीवहिँ अल्प सक्ति पहिचानौ ॥
है ईस्वर सर्बज्ञ सदाही । अल्प ज्ञान यह जीवहिँ आही ॥
अग जग ब्यापक ईस असीमा । परीछिन्न यह जीव ससीमा ॥
ईस्वर कहँ स्वाधीन प्रमानौ । पराधीन यह जीवहिँ जानौ ॥
ईस्वर एक जीव है नाना । इमि दुहुँ महँ बहु भेद प्रमाना ॥

दोहा—सहित उपाधिहिँ भेद बहु, रहित उपाधि न भेद ।
चेतन सदा अभेद इमि, निर्णय भेद अभेद ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० १ जोप्रभुअजअविकलअविकारा। तेहि बहुधरत जगत अवतारा॥
सुनहु वेद यह भेद बतावै। ब्रह्म जीव दुहुँ अज कहि गावै॥
है अज जीव देह बहुधारै। बहु विधि करत जगत व्यवहारै॥
यह प्रतच्छ सब जग महँ देखौ। तब अजन्म किमि जन्म न लेखौ॥
अल्प सक्तिमय जीव सदाही। जब तनु धरिआवत महि माहीं॥
सर्व सक्तिमय जग करतारा। धरि न सकत तब क्यों अवतारा॥
जग कर्त्ता जग में नहिं आवै। कहु यह बात कौन पतियावै॥
चौ०जग कर्ता मानिय कोई। धरि अवतार आव महि सोई॥

दोहा—आवत हैं जग भूप जन, निज कृत लघु अस्थान।
निजनिरमितबिस्तृतजगत, आवनकिमि भगवान॥
सूक्ष्म सृष्टि मह सूक्ष्म ह्वै, जो व्यापक करतार।
थूल जगत ह्वै थूल सो, क्यों न धरै अवतार॥
तब शंका यह उठति है, किमि व्यापक परिछिन्न।
भयहुँ ब्रह्म अवतार जग, नहिं व्यापकता भिन्न॥

० रह अवतार एक थल माहीं। तदपि ब्रह्म व्यापक सबकाहीं॥
ह सब ईस बिलच्छनताई। ह्वै व्यापकहुँ रहत इक ठाईं॥
कल बिरुद्ध धर्म तेहि माहीं। निगमागम सद्ग्रन्थ कहाहीं॥
निराकार साकरहु जानौ। सब सन पृथक सर्वमय मानौ॥
निर्गुनहुँ सगुन सो रहई। महत महत लघुह्न लघु अहई॥
तिहि कठिन अतिकोमल जानौ। न्याय समुद्र दयानिधि मानौ॥
हुरि सुमुनि निज हृदय बिचारौ। कछु लौकिक दृष्टान्त निहारौ॥
क यंत्र भरि राखिय बाऊ। तदपि व्याप्त सो जग सबठाऊं॥

१ यहांसे पाँचवें प्रश्न का उत्तर प्रारंभ हुआ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रह ज्वलिताग्नि एक थल माहीं । व्यापाकाग्नि तउ सब थलमाहीं
जब जड़ अगिनि वायु गुन ऐसे । तब चेतन सो गुन नहिं कैसे ॥

दोहा—अति चेतन सब सक्तिमय, सब जग सिरजन हार ।
रह व्यापक सब जगत में, धरेहु अमिल अवतार ॥

चौ० पूर्ण काम ईस्वर अबिकारा । केहि कारनहिं धरत अवतारा
जो अस पूछहु सुनहु मुनीसा । मनुज ससीम असीम सो ईसा
नहिं अस सक्ति मनुज के माहीं । समुझि जो सकै ईसगति काहीं
बुन्द सिन्धु को भेद न पावै । अल्पज्ञ न सर्बज्ञ कहावै
तबकिसिकहकोउ सम्यककारन । जेहि अवतार धरत जग तारन
यह अवतार बिषय तजि डारो । औरहु प्रभु कोउ काज बिचारो
हिंसक प्रानिन क्यों उपजावै । जो मनुजन कहँ धरि २ खावै
आधि व्याधि बहु बिपति बृथाहीं । किमि बिरचेहिं दुख सबकाहीं
केहि कारन यह जगत बनायो । जीव रूप ह्वै आपु बंधायो
बार बार यह सृष्टि बनावै । किमि पुनि २ बहु ताहि नसावै
को कहि सक यह ईस्वर आरज । केहि कारनहिं करत केहिकारज
अब लगि भये सिद्ध मुनि जेते । रहे यहि बिषय मौन गहि तेते

दोहा—१ जेहठिनिश्चय हित चले, सो फिरि कबहुं फिरै न ।
लवन पूतरा जिमि गले, थाह सिंधु को लै न ॥
आदि सृष्टि कबधौं भई, कारन कौन प्रमान ।
सत्य मरम तेहि आजुलौं, ब्रह्मादिकहुं न जान ॥
होऊँ एकते बहुत मैं, अस लीलेच्छा धारि ।

१ यहां वाच्यार्थ रूप वस्तु से केकोक्ति अलंकार व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ रचे ब्रह्म ब्रह्माण्ड बहु, द्रुमि श्रुति कहत बिचारि ॥
जो निज लीला ते रचत, कोटि कोटि संसार ।
सोइ धारत यह जगतमे, निज लीला अवतार ॥
कोटि कोटि संसार रचि, रहत जो प्रभु अविकार ।
सोइ जगत अवतार धरि, लहत न कोउ बिकार ॥
यद्यपि लीला मात्र है, प्रभु के सब अवतार ।
तदपि हेतु कछु कहतहीं, समुझहु हृदय बिचार ॥

चौ० २ जब २ होय धरमक्षय भारी । बढ़हिं असुर जग अनहितकारी ॥
तब तब ईश्वर धरि अवतारै । साधुन राखि असुर गन मारैं ॥
धरम सन्हारि करहिं जगके हित । सगुनचरितप्रगटहिं बहुबिधि नित
गाय गाय जेहि जन सुख पावैं । उभय लोक परलोक बनावैं ॥
तीन काल त्रिभुवन जन जेते । प्रभु अवतार सुखद अति तेते ॥
यह केवल प्रभु कृपा अपारा । जगत सुलभ हित धर अवतारा ॥
कोउ कह भक्त बिनय अनुसारा । मुनु मुनि ह्वै ईश्वर अवतारा ॥
पुन्यश्लोक चरित्र के हेतू । कोउ कह प्रकट होत जग सेतू ॥
कलि मल ग्रसित जीव निस्तारन । कोउ अवतार कहत जग तारन ॥
कोउ कह हरन महा महि भारा । ह्वै ईश्वर जग मंह अवतारा ॥
ब्रह्मादिक के बचन प्रमाना । कोउ कह अवनि आव भगवाना ॥
श्री लक्ष्मी सन्देह निवारन । निज प्रिय जन पारिषद उधारन ॥
प्रभु अवतार भयउ कह कोई । जेहि जस भाव कहै तस सोई ॥
प्रभु अचिंत्य अतर्क्य अनन्ता । तेहि अवतार हेतु नहिं अन्ता ॥

१ ब्रह्म शब्द के कई अर्थ हैं परन्तु यहां बहु ब्रह्माण्ड के प्रसंगसे ब्रह्म का अर्थ ईश्वर बोध होता है अतएव प्रसंगसे अभिधा शक्ति है ।

२ यहां कतिपय पद्यों में विस्तार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—यदपि प्रभु अवतार तनु, भौतिकवत दिखरात।
तदपि अलौकिक ही रहत, समुझि देखिये तात॥

चौ० प्रभु अवतार उभय बिधि लीला। लौकिक और अलौकिकशीला॥
उभय भांति तेहि कबिजन गावैं। समय २ दुहु बिधि दरसावैं॥
जौ केवल ऐश्वर्य्यहिं गाइय। नहिं माधुर्य्य स्वाद तेहि पाइय॥
तौ भल केवल ब्रह्म बखाना। कहिय सुनिय जस बेद प्रमाना॥
जग आदर्स ईस इक चाहै। जो लौकिक सब कर्म निबाहै॥
परम अलौकिक हूं पुनि जोई। है सब मनभावन प्रभु सोई॥
१ अस बिचारि कवि परम सयाने। दुँहु बिधि ते अवतार बखानैं॥
प्रभु अवतार सिद्ध सब भांती। करत कुतर्क व्यर्थ स्रुति घाती॥
२ सुनु मुनि जब कलिकाल कराला। ग्रसिहैं सबहिं बिषय बिषब्याला॥
३ सगुन चरित गारुड़ि समतबहीं। कर कल्यान जीव सब लबहीं॥

दोहा—नहिं कलि कर्म न धर्म कछु, नहिन योग जपध्यान।
किये गान अवतार जस, होत सकल कल्यान॥
४ ईस्वर के अवतार जग, यद्यपि अमित प्रकार।
सकल श्रेष्ठ तउ श्रेष्ठ अति, इहै राम अवतार॥
त्यागि अलौकिक लौकिकहूं, जासु सकल व्यवहार।
अति उत्तम आदर्स है, सब जग शिक्षा सार॥

---

१ यहां लक्षित लक्षणासे अवतार शब्द से अवतार चरित का अर्थ समझना चाहिये
२ यहां वाच्यार्थ रूप वस्तु से रूपकालंकार व्यंग्य है और यहां से षष्ट प्रश्न का उत्तर प्रारंभ हुआ।
३ यहां उपमालंकार से सगुणचरित की प्रशंसा रूप वस्तु व्यंग्य है।
४ यहां बाल्मीक मुनिका मति संचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० १ तेहि श्रीरामचरित गुन गाइय। छन छन परमानन्द अघाइय ॥
यहि ते बढ़ि जग यतन न कोई। जेहि दुहुँ लोक सकल सुख होई ॥
लघु श्रम किये बहुत फलदायक। है इक रामचरित मुनि नायक ॥
धर्म कर्म अरु ज्ञान बिरागै। पढ़ि सुनि रामचरित जियजागै ॥
जो सब शुभ गुन वेद बतावै। प्रभु गुन गुनत हृदय सो आवै ॥
पराभक्ति अति दुर्लभ जोऊ। प्रभु गुन गानहिं प्रगटत सोऊ ॥
२ जे निष्कपट राम गुन गावै। सो सायुज्य सहज गति पावै ॥
३ रामचरित रति जिन मनमाना। तिन कहँ सर्व काल कल्याना ॥

दोहा—४ रामचरित्र महात्म बहु, कँह लगि करौं बखान।
प्रभु गुन गायक भक्त के, रह बस है भगवान ॥
५ जेहि विधि ते श्रीराम जस, अति सुन्दर कमनीय।
तेहि बिधि ते मुनि जानिये, विमल चरित श्रीसीय ॥

सो०—सब अभिमत दातार, दम्पति चरितायन चरित।
सप्त काण्ड विस्तार, सुनु मुनीस आगे कहब ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते
पञ्चमःसर्गः

---

१ यहांसे लेकर अध्याय की समाप्ति पर्यन्त सप्तम प्रश्न का उत्तर है।

२ यहां कबिका मोक्षोपाय परिचय है।

३-४ यहां राम चरित में रतिमानना एक बस्तु है और सर्व कालमें कल्याण होना दूसरी बस्तु है इसमे जो राम चरित की प्रशंसा सूचित होती है सो व्यंग्य है अतएव बस्तु से बस्तु व्यंग्य है। तीसरी चौपाई और उसके आगे के दोहा में बाच्यार्थ रूपबस्तु से रामचरित की प्रशंसा रूपबस्तु व्यंग्य है।

५ इसमें उपमालंकार से सीताचरित की प्रशंसा रूपबस्तु व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—१ जो भक्तन हित प्रगट भे, करि निज कृपा अपार।
वही राम अवतार को, नमस्कार बहु बार॥

चौ० आदि सृष्टि इच्छा भगवाना। भयउ सुकेति असुर बलवाना॥
बिधि तनुजा अति सुन्दरि श्यामा। तड़ितकेसरी भइ तेहि बामा॥
समय पाय तेहि गर्भ सुहायो। असुर सुकेस जनम जग पायो॥
भे तेहि तीनि सुवन बलसाली। माल्यवान अरु मालि सुमाली॥
बिधि प्रसाद सब संपति पाई। लङ्का नगर बसे तिहुँ भाई॥
प्रथम ताहि सुनु मुनि इक बारा। गरुड़ पवन रन भयउ अपारा॥
सागर तीर भिरे दुहुँ जबहीं। प्रलय पवन प्रगटी तहँ तबहीं॥
डगमगानि महि जनु उलटानी। भयो गगन सर सागर पानी॥
कोटिन सैलसृंग समुदाई। टूटि गिरे सागर महँ जाई॥
जलधि गर्भ त्रय गिरि कढ़ि आये। जे त्रिकूट गिरि जगत कहाये॥
बिसकर्मा बिधि आयसु पाई। लै सब सैल सृंग समुदाई॥
गिरि त्रिकूट कहँ जाय सजायो। तेहि ऊपर दृढ दुर्ग बनायो॥

दोहा—गिरि त्रिकूट त्रय सिखर पर, किय लङ्का निरमान।
अमरावति ते रम्य अति, जेहि समता नहिँ आन॥

चौ० बसहिँ असुर सो नगर सुखारी। बहु बिधि देहिँ सुरन दुखभारी॥
सहि न सके सुर कष्ट अपारे। जाय सरन श्रीविष्णु पुकारे॥
सुर दुख समन हेतु सुरसाईं। किय अमरन बहु भांति सहाई॥
भयउ सुरासुर समर अपारा। सो प्रसंग जानत संसारा॥
घोर समर करि तहँ असुरारी। हति दनुजन किय सुरन सुखारी॥

१ यहाँ कबि का ईश्वर विषयक रतिभाव व्यंग्य है। और यहाँ से कथा विभाग आरंभ होने के कारण नमस्कारात्मक मंगलाचरण किया गया है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

माली निधन कीन्ह सुरत्राता । भगे असुर सब लखि तसु घाता ॥
दिबि महि तजि भयबस श्रीसाईं । निवसे सब पताल महँ जाई ॥
माल्यवान सह सब अनुगन्ता । गा पाताल तजि लङ्क तुरन्ता ॥

दोहा—श्री बिधिसुवन पुलस्ति मुनि, तेहि बिश्रवा सुजान ।
भरद्वाज दुहिता लता, लह्यो सो ब्याहि बिधान ॥

चौ० भयो यक्षपति तासु कुमारा । तोषि हरिहिँ तप बिबिधप्रकारा ॥
धनाधीस ह्वै अमर सरीरा । भयो लोक पति अति रनधीरा ॥
कछु दिन गे पितु आयसु पाई । लंकापुरे निवस्यो सो जाई ॥
१ माल्यवान पाताल निवासी । सुनि कुबेर महिमा गुन रासी ॥
भयउ बिकल दुख सोक अपारा । पुनिनिजहियकरिबिबिधबिचारा ॥
अनुज सुमाली सुता सयानी । नाम कैकसी सबगुन खानी ॥
मुनि बिश्रव सन कीन्ह बिबाहू । भे तेहि पांच प्रसव मुनिनाहू ॥
२ प्रथम सहस्र बदन बलवाना । दुतिय बक्रदस परम सुजाना ॥

दोहा—३ जन्म काल रावन युगल, सुरगन कहे अकास ।
लोक रुवावहिँ हेतु तेहि, रावन नाम प्रकास ॥
कुम्भकरन तीसर सुवन, चौथ बिभीषन जान ।
सूर्पनखा पुनि प्रगट भइ, पंचम प्रसव प्रमान ॥
सहसबदन रावन प्रबल, निबसो पुष्कर जाय ।
तासु चरित बल बिभव कछु, आगे कहब बुझाय ॥

---

१ यहां माल्यवान का बिषादसंचारीभाव व्यंग्य है ।
२ इसमें शब्दकल्पित निरुक्ति अलंकार है ।
३ यहां अर्थ कल्पित निरुक्ति अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मातामह अनुरोध लहि, दसकँधर इकबार ।
धनदहिँ कह्यो कि तजहु पुर, नतरु करहु रनरार ॥

चौ० १ पितुसम्मतिलहिनिसिचरत्रासा । धनपति आय बसे कैलासा ॥
तब लङ्कापुर सून्य निहारी । बसे आय तहँ सकल सुरारी ॥
असुराधिप रावन बलवाना । कीन्ह कठिन तप विविध बिधाना ॥
सिव बिधि सक्ति तुष्ट तप कीन्हो । सुर दुर्लभ कोटिन बर लीन्हों ॥
अजर अमर मोहि करहु गुसाईं । जब रावन अस बिनय सुनाई ॥
२ बोले कनकगर्भ भगवाना । यह तजि माँगु आन बरदाना ॥
तब सारद दसमुख मति फेरी । मांग्यो बर आगिल गति हेरी ॥
देव दनुज किन्नर गन व्याला । भूत पिसाच यच्छ बैताला ॥
तीन भुवन जे जन समुदाई । हमहिँ मारि नहिँ सकैं गुसाईं ॥
नर बानरन जाति दुई बारे । मरौं न मैं कालहुँ के मारे ॥
औरो एक बचन प्रभु मोरा । पूरन करहु दास मैं तोरा ॥
मोह बिबस निज सुता दुरासा । करौं नाथ होवै तब नासा ॥
एवमस्तु कहि बिधि भगवाना । गये मुदित आपन अस्थाना ॥
३ पाय अगमबर सुनहु मुनीसा । तीन भुवन जीत्यो दससीसा ॥
सिद्ध साध्य सुर नर मुनि नागा । भुज बल जीते सबहिँ सभागा ॥
४ रबिससिलोकपालदिकपाला । जीते सैल जलधि घनमाला ॥

---

१ यहां कुबेर का त्रास संचारीभाव व्यंग्य है ।

२ कनक गर्भ—ब्रह्माजी ।

३ यहां लक्षित लक्षणासे तीन भुवनसे तीनभुवन बासियों का अर्थ समझिये ।

४ यहां लक्षित लक्षणासे—सैलजलधि और घनमालासे उनके निवासियों का अधिष्ठातृ देवताओं का अर्थ समझिये ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—१ ब्रह्म सृष्टि महँ जीव जत, सचराचर अस नाम ।
जीतिसबहिँ निज बस्य किय, असुराधिप बलधाम ॥

चौ० बर प्रसाद सो मरै न मारे । सब सुरगन बिधि सरन पुकारे ॥
तब बिधि कह सुरगन समुझाई । रावन बस ह्वै निवसहु जाई ॥
२-यहिसँ हतुमहिँ हानिनहिँ कोई । कुसमय मेंडुक बस अहि होई ॥
बिधि आयसु सम्मति सिरमानी । तासु निधन रघुपति करजानी ॥
निज दुर्दिन तेहि उदय बिचारी । रहे सकल सुर सहि रिसिभारी ॥
रावन भय. लङ्कापुर माहीं । रबि ससि सुखप्रद रहत सदाहीं ॥
मलयानिल बह त्रिबिध समीरा । पाक करहिँ पावक मतिधीरा ॥
बासवादि दिसिपति सुर जेते । भे अधीन प्रभुता तजि तेते ॥
करत सदा दसमुख मन काजा । बसत सकल सुर सहित समाजा ॥
यहि बिधि रावन अति भट बङ्का । करत अकण्टक राज गढ़ लङ्का ॥

दोहा—होउँ अमर हठ हृदय धरि, किय तप बारम्बार ।
दीन्ह न बिधि बरदान सो, आगिल काज बिचार ॥

चौ० मन्दोदरि मयसुता सयानी । भइ सो रावन की पटरानी ॥
मयदानव सन कीन्ह मिताई । तेहि सब माया ताहि सिखाई ॥
अक्षयतुनीर धनुष बर बाना । अस्त्र सस्त्र दीन्हे बिधि नाना ॥
कुम्भकरन बिधि शाप प्रमाना । सोंव मास षट मृतक समाना ॥

---

१ यहां सबको जीतकर अपने बस में करनेसे जो रावन का सर्वश्रेष्ठ होना बिदित होता है यही व्यंग्य है सो बाच्यार्थ से सुन्दर नहीं है अतः असुन्दर गुणी भूत व्यंग्य है इस व्यंग्य की टिपणी बहुत जगहों में नहीं लिखा है।

२ यहां गौणीसाध्यवसानलचनासे—मेंडुक का अर्थ नीचवाअबल और अहिका अर्थ सबल वा उत्तम जानिये।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्रह्मा शाप दीन्ह कस ताही । कहब चरित यह लङ्का माहीं।
अजर अमर हरि भक्त प्रधाना । भयउ बिभीषन बिधि बरदाना।
जो मांगेहु दशमुखहिँ दुरायो । सो बिनु यतन बिभीषन पायो।
जानि भविष्य भगत रघुनाथा । दीन्ह अगम बर तेहि स्रुतिमाथा।
श्रीसरमा गंधर्ब कुमारी । भइ पतिब्रता बिभीषन नारी।
ब्रतज्वाला बलि सुता ललामा । भइ सो कुंभकरन की बामा।
रावन तिय सुत भये अनेका । गुन पौरुष बल एक ते एका।

दोहा—१ चित्रांगदा मदोद्री, गर्भजात बलवान ।
बीरबाहु घननादहुँ, भै सब सुभट प्रधान ।
बिजय कीन्ह त्रिभुवन सकल, ये दुहुँ भट बहुबार ।
२ नृपदसमुखघटस्रुति प्रभृति, सब कहँ प्रान अधार ॥

चौ० रावन पुत्र पौत्र परिवारा । बाढ़े जगत बिपुल बिस्तारा।
औरहु निसिचरअगिनित जाती । हरि इच्छा बाढ़ी बहु भांती।
सत योजन लङ्का बिस्तारा । बसहिँ सकल निशिचर परिवारा।
यक दिन रावन सबहिँ बुलायो । देस बांटि चहुँ ओर पठायो।
देस देस महँ ते सब जाई । किय निवास सह सैन सहाई।
कौनहु देस न अस संसारा । जहँ न फैल रावन परिवारा।
कौनहु भेद कतहुँ कोउ पावैं । आय लङ्क रावनहिं सुनावैं।
सब कहँ रावन इहै सिखावै । प्रजा—बिभव जेहि बढ़ै न पावै।

दोहा—३ जे अन्यायी दुष्ट नृप, करत राज मनमान ।
ते बिनु हेतु प्रजान ते, रह अति संसयवान ॥

---

१ यह दोहा और इसके ऊपर की अर्द्धाली में यथा संख्यालंकार है।
२ घट स्रुति—कुंभकरण।
३ यहां शंकासंचारीभाव वा भयस्थायीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० एक बार नारद मुनि आये । रावन निधन चरित सब गाये ॥
बधिहैं हरि सोहि धरि अवतारा । सुनि रावन करि क्रोध अपारा ॥
१ बोलि सेनपति सचिव जमाती । कह दसबदन बचन यहि भांती ॥
रहे जो असुर शत्रु सुरसारे । सो सब भे अब दास हमारे ॥
पै इक विष्णु महाबलवाना । जो निसिचर कुल काल महाना ॥
सो नहिं जीति जाय समराई । तेहि सब मिलि यह करहु उपाई ॥
ऋषि मुनि साधु संत जे पावौ । हठ करि तिन कहँ जाय सतावौ ॥
जप तप संयम नियम अचारा । भ्रष्ट करहु सिगरे संसारा ॥
यजन हवन कोउ करै न भाई । जो कर ताहि सतावहु जाई ॥
२ जब सब धर्म नाश दिन अइहैं । तब सो विष्णु अवसि प्रगटइहैं ॥

दोहा—३ तबसब मिलिसन्मुखसमर, करिहौं तेहि संहार ।
अथवा तेहि कर मरन लहि, ह्वै जैहौं भव पार ॥

चौ० असकहि रावन सहित सहाई । करै उपद्रव फिरि चहुँ धाई ॥
योग यज्ञ तप कर्म नसावै । साधु धेनु द्विज धरि धरि खावै ॥
सुर मंदिर सब ढाहि गिरावै । जहँ पावै तहँ आगि लगावै ॥
धर्माचरन करै जग जेई । ताहि पकरि बहुविधि दुखदेई ॥

दोहा—४ कहियकहानिसिचरनकृत, अति निर्दय व्यवहार ।
धर्मनिरत नर नारि सब, करत फिरत संहार ॥

---

१ यहां दसबदन शब्द का दो अर्थ होने से शब्द श्लेषालंकार है ।

२ यहां संभावनालंकार से धर्म रक्षार्थ विष्णुका प्रकट होना रूपवस्तु व्यंग्य है ।

३ यहां प्रथम आक्षेपालंकारसे रावन का उभय प्रकारसे निजहित साधन का निश्चय रूपवस्तु व्यंग्य है ।

४ यहां निशाचरों का उग्रता संचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० यहि विधि सकल धर्म बिनसायो । पाप कर्म सब जग फैलायो ॥
१ परम चतुर रावन उतपाती । मुक्ति हेतु अघ कर दिन राती ॥
प्रति दिन हर्षित हृदय मनावै । कब तनु धरि हरि मोहि नसावैं ॥
देखि असुर कृत अति उत्पाता । भये दुखित सब जग संघाता ॥
दंडक बन गमन्यो इकबारा । ऋषि मुनि गन लखि कीन्ह बिचारा ॥
इनहिं जीति कछु बस्तु न लीन्ही । तो मैं कहा जगत जैय कीन्ही ॥

दोहा—२ तबसगर्ब दसमुखअसुर, कह ऋषिमुनिन सुनाय ।
मैं कीन्ही जय जगत सब, तुम कर देहु चुकाय ॥
३ अथवा यहि दिन ते सबहिँ, तजहु धर्म्म व्यवहार ।
नतरु अवसि सब ऋषिमुनिन, मैं करिहौं संहार ॥
४ कह मुनिगन लखि कर्म तव, सुनहु निसाचर नाथ ।
जानि परत यह राज धन, जैहैं तुम्हरे साथ ॥

चौ० ५ करहुजगतहितजीवतमाहीं । सबदिन जियतरहत कोउनाहीं ॥
भजन करत निवसतमुनिगनबन । तुमकिमितिनहिं सतावतयहिछन ॥

---

१ यहां बाच्यार्थरूपबस्तु से बिचित्रालंकार व्यंग्य है।

२ यहां प्रथम दोहा के उत्तरार्द्ध और द्वितिय दोहा के पूर्बार्द्ध के मिलानेसे प्रथम आक्षेपालंकार होता है और इस अलंकार से रावन का मुनियों को उभय प्रकार से दुख देने का निश्चय रूपबस्तु व्यंग्य है।

३ यहां संभावना लंकार से रावन कृत मुनियों का धर्माचरण त्याग कराने से ईश्वरावतार का कारण उत्पन्न करना रूपबस्तु व्यंग्य है।

४ यहां इस दोहा और नीचे की अर्द्धाली में अत्यन्त तिरस्कृत अगूढ़ व्यंग्य है। दोहे का अर्थ यह है कि हे रावण भलाईकर राजधन किसी के साथ नहीं गया यह व्यंग्य है और चौपाई का अर्थ है कि जीतेभर पराया का उपकार करना चाहिये सबदिन कोई जीता नहीं रहता क्या तुम्ही जीते रहोगे यह व्यंग्य है। यहां पद ने अपना अर्थ बिलकुल छोड़ दिया है।

५ यहां से लेकर तृतीय दोहा पर्यन्त शान्त रस का उत्तम उदाहरण है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि जग महँ नहिँ काहु सताइय । करिय धर्म परलोक बनाइय ॥
धर्महिं इक परलोक बनावै । प्रिय परिजन तहँ काम न आवैं ॥
जे मृतजन परिवार कहावैं । जाय मसानहिं लौ फिरि आवैं ॥
धर्महिँ एक मरैं सँग जावै । धर्महिं सब सुभ काम बनावै ॥
१ धर्म मित्र सब मित्रन भारी । जियत मरतहु जग सुखकारी ॥
अस बिचारि जे जन बड़ भागी । धर्महिँ करैं अधर्महिँ त्यागी ॥
२ करत अधर्म लाभ ह्वै भारी । तदपि न ताहि करैं सुबिचारी ॥
३ धर्म करत जो ह्वै बहु हानी । तदपि करिय तेहि अति हित जानी ॥

दोहा—कहिय सुनिय जो गुनिय मन, दुहुँ जग सुख कल्यान ।
सो सब धर्महिँ ते मिलत, बरनत सकल सुजान ॥
अहो धर्म महिमा अगम, को करि सकै बखान ।
धर्महिं चिन्तत जो मरै, सोउ कर स्वर्ग पयान ॥
धर्म श्रवन चिन्तन कथन, मानसहू व्यवहार ।
बरनत हैं सब श्रेष्ठजन, काटत पाप पहार ॥

चौ० सुनि अति गरजिकह्यो दृशकन्धर । ज्ञान न कथहु देहु कर सत्वर ॥
यदपि मुनिन बहुबिधि समुझाये । गर्बित असुर हृदय नहिं भाये ॥
बार बार कहि बचन प्रचारी । माँगै दण्ड असुर कुबिचारी ॥
कह मुनिगन हम धन कहँ पावैं । रकतु पाछि लीजै जो भावै ।

---

१ यहां अधिकृतंद्रूपकालंकारसे धर्म की प्रशंसा रूपवस्तु व्यंग्य है। इस प्रकरण में अनेक पद्योमें बस्तु से बस्तु व्यंग्य है परन्तु ग्रन्थ बिस्तारभयसे उनका उल्लेख नहीं किया गया है।

इन दोनो अर्द्धालियों में उल्लासालंकारसे अधर्म की निन्दा रूपबस्तु और धर्म की प्रशंसारूपबस्तु यथाक्रमसे व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि रावन हिय अति रिसिआई । फाड़ि मुनिन तनु रुधिर बहाई ॥
बहु बिसाल इक घट भरवायो । अपर प्रसङ्ग सुनहु मन भायो ॥
सतसुतपिता बिप्र मतिमाना । नाम समदरशि सब जगजाना ॥
दुहिता रमा हेतु जगदीसा । करत कठिन तप सतिय मुनीसा ॥

दोहा—श्रुति मंत्रित पय भरत घट, नित प्रति कुशा उठाय ।
उपजै लक्ष्मी यह कलस, अस संकल्प दृढ़ाय ॥
सत वार्षिक ब्रत पूर्ण महँ, रहे शेष दिन पांच ।
बिधि प्रेरित आयो तहां, रावन अधम पिशाच ॥

सो०—राखि कलस स्वस्थान, गे अन्हान मुनि सरित तट ।
होनिहार बलवान, सुनु मुनीस अद्भुत चरित ॥

चौ० लखि सो कुंभ निशाचर नाथा । भरि ऋषि रुधिर गयउ लै साथा ॥
घट लै चल्यो दसानन जबहीं । कहऋषिमुनिगनक्रोधित तबहीं ॥
सुनु सठ यह घट ते अनयासा । प्रगट होय तव हेतु बिनासा ॥
जब रावन लङ्कापुर आयो । तियहिँ सौंपि घट बचन सुनायो ॥
भरो महाविष यह घट माहीं । करि अति यतन धरावहु ताही ॥
कहि अस बचन असुरपति गयऊ । आगिल चरित सुनहुजसभयऊ ॥
देव दनुज नर नाग कुमारी । हरि बरबस रावन व्यभिचारी ॥
करत सदा बहु भोग बिलासा । बसि सुमेरु मन्दर कैलासा ॥
१ यह सुधि मन्दोदरि जब पाई । नित नव हिय चिन्ता अधिकाई ॥
२ बारबार हिय करइ बिचारा । भा व्यभिचारी कन्त हमारा ॥

दोहा—धिक यौवन जीवन कुलहिँ, जो पति बञ्चित नारि ।
मृत्यु परम कल्यान अब, अस निज हृदय बिचारि ॥

१-२ इन दोनो अर्द्धालियो में चिन्तासंचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कीन्ह पान सोनित कलस, महागरल जिय जानि ।
दीन्ह प्रथम जो दसबदन, दण्डक बन ते आनि ॥

चौ० पय मिश्रित सोनित कृतपाना । भयउ तुरत तेहि गर्भ महाना ॥
कीन्ह निवास रमा उर आई । परम प्रकास बरनि नहिँ जाई ॥
निज गति देखि निशाचर नारी । कह अतिचकितदुखितहियभारी ॥
अइहैं भवन निशाचरनाहा । कहिहौं बचन ताहि मैं काहा ॥
परम सती पतिपद अनुरागिनि । लह्यो कहां मैं गर्भ अभागिनि ॥
सम्बतसर बीत्यो मम स्वामी । कबहुँ न भयो लङ्क पथगामी ॥
१ कहा कहहिं मोहि लोग लुगाई । प्रोषितपतिका गर्भ सुहाई ॥
अस बिचारि करि तीर्थ बहाना । कुरुक्षेत्र गइ बैठि बिमाना ॥

दोहा—तहां जाय महि खोदि कै, गाड़यो गर्भ गिराय ।
पुनि फिरि आई भवन निज, कोटिन तीर्थ अन्हाय ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते षष्टःसर्गः

चौ० निशिचर सकल कथा मैं गाई । भृगुकुल चरित सुनहु मनलाई ॥
चन्द्रबंस नृप जह्नु सुजाना । सकल ज्ञान गुन धर्म निधाना ॥
जो निज अंजलि सुरसरि राखी । कीन्ह पान सब अगजगसाखी ॥
सुनि सुर मुनि बहुबिनय बड़ाई । बहुरि जाह्नवी उरु उपजाई ॥
तेहि सप्तम कुल धर्म स्वरूपा । भयउ सुवन इक परम अनूपा ॥
२ अभिधागाधि बिदित सबदेसा । मगध भोजकटु देस नरेसा ॥

---

१ पति के बिदेस रहने से बिरह संतप्त स्त्री को प्रोषितपतिका कहते हैं ।

२ भोजकटु देश जो पटना और भागलपुर के पास है अथवा अब जिसको भोजपुर कहते हैं जो शाहाबाद के जिले में है । बहुतों का यहभी मत है कि प्राचीन "गाधिपुर" कोही आजकल ग़ाज़ीपुर कहते हैं ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सत्यवती तेहि सुता सयानी । अति सुन्दरि सुभ लच्छनखानी ॥
यक दिन मुनि ऋचीक तपसीतू । कीन्ह बिनय नृप तेहि तियहेतू ॥

दोहा—श्यामकर्ण हय सहस दस, हमहिं देइ जो आन ।
सुता बिआहौं ताहि सन, कह नृप बचन प्रमान ॥

चौ० सुनिनृपबच ऋचीकमुनिराई । सोधे सकल विप्र चहुँधाई ।
मिले न अश्व यतन बहु कीन्हे । मुनिहिय परम क्रोधितबलीन्हे ।
निजसिर ते इक जटा उखारी । कटकटाय भूतल तकि मारी ।
फाटी अवनि कढ़ी जल धारा । होन चह्यो जब जग संहारा ।
तबबिधिकहजलपतिहिँ बुझाई । अयुत अश्व लै प्रगटहु जाई ।
विष्णुभक्त मुनि तेज अपारा । नतु करिहैं सब जग संहारा ।
सुनत बरुन जलते कढ़ि आये । मुनिहिँ अश्व दै जगत बचाये ।
दस सहस्र बरवाजि अनूपा । मुनि लै जाय दीन्ह तब भूपा ॥

दोहा—लखि मुनि अगम प्रभाव नृप, अश्वन कहँ लौटाय ।
लीन्ह परिछा नाथ मैं, कह्यो बचन सिर नाय ॥
पुनि निज कन्या ब्याह करि, दाइज दीन्ह अपार ।
विपिन जाय निबसन लगे, तब मुनीस सहदार ॥

चौ० यहिबिधिबहुतकालजब बीते । दुहिता गृह गइ रानि सप्रीते ।
यक दिन गाधि नृपति की रानी । सुतहितमुनिसनबिनय बखानी ।
सत्यवतिहुँ निज अवसर पाई । पतिहिँ पुत्रहित बिनय सुनाई ।
लखियुगरुचि ऋचीक मुनि ज्ञानी । किय पुत्रेष्टि यज्ञ बिधि ठानी ।
जब संपूर्ण भयउ सो यागा । हवन शेष चरु करि द्वै भागा ।
ब्रह्म तेज संयुत इक कीन्हो । क्षत्रि तेज दूसर महँ दीन्हो ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोउ निज सासुहिं दीन्ह सनेहू । यक तुम खाहु सुता इक देहू ॥
यदपि सकल विधि कहि समुझाई । उभय भाग मुनि दीन्ह चिन्हाई ॥

दोहा—बदलि गयो चरु भाग सो, होनिहार अनुहारि ।
ब्राह्मनांसन्टपतिय भय्यो, च्चत्रियांस मुनि नारि ॥

चौ० चरु प्रभाव महिमा मुनिभारी । भइ तब गर्भवती दुहुं नारी ॥
दिव्य दृष्टि तप तेज बिसेखी । यकदिनमुनिनिजतियकहँ देखी ॥
भूत भविष्य चरित सब जाना । पुनि बोले अस बचन प्रमाना ॥
करि द्वै भाग जो चरु मैं दयऊ । बिधिबसउलटिपलटिसोगयऊ ॥
शान्त प्रकृति ब्राह्मन बिज्ञानी । ह्वै तव जननि पुत्र गुन खानी ॥
अति क्रोधी तव सुत रनधीरा । ह्वैहैं च्चत्रियांस बरबीरा ॥
सुनि पतिबचन तिय कह बिलखाई । अससुत हमहिँ न होयगुसाईं ॥
१ जौ कदापि ऐसो सुत ह्वै है । तब प्रभु हम निज प्रान गवैहैं ॥
अलि दारुन निज तिय हठ देखी । तप प्रभाव करि यतनबिसेखी ॥
२ कह मुनितवसुत द्विज प्रगटैहै । पै तेहि पुत्र अवसि अस ह्वै है ॥
मुनि यमदग्नि भये सुत तासू । तिय प्रसेनजित कन्या जासू ॥
भै तेहि चार सुवन गुनधामा । च्चत्रियांस पञ्चम भृगुरामा ॥

दोहा—नृपति गाधि के घरनि ते, प्रगटे विश्वामित्र ।
जो तप करि राजर्षिते, भै ब्रह्मर्षि पवित्र ॥
ब्राह्मन अरु च्चत्रिय करम, जानत सब सबिधान ।
दुहुँसमाज महँख्यातअति, जेहि सुभ सुयश महान ॥
गिरत त्रिशंकुहिं स्वर्ग ते, बीचहि पथ बिरमाय ।

१ इसमें संभावनालंकार है।
२ यहां औचित्य अभिधाशक्तिसे द्विज का अर्थ ब्राह्मण जानिये।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इन्द्रदेव को मद हरो, नूतन सृष्टि बनाय ॥
सुनःसेप को राखि के, होत निरखि बलिदान ।
सरनागत रच्छन धरम, जग महं कीन्ह प्रमान ॥
हरिश्चन्द्र के सत्य को, सत्य परिच्छा लीन्ह ।
तीनकाल तिहुँ लोक में, अचल सुयश तेहि दीन्ह ॥

चौ० परसुराम जननी इकबारा । गइ जल हित सुरसरित करारा ॥
१ जल विहार गन्धर्बन देखी । भयउ हृदय तेहि छोभ बिसेखी ॥
बारबार सो चरित निहारी । करि अति गहरु आय गृह नारी ॥
अग्निहोत्र बैठे मुनि ज्ञानी । तप प्रभाव तिय गतिसबजानी ॥
भयो क्रोध चहुं सुतन बुलायो । जननी बध आदेस सुनायो ॥
समुझि मातु बध पाप महाना । कोउ न कीन्ह सो कर्म प्रमाना ॥
कह मुनि तब भृगुपतिहिं बोलाई । मारहु जननि सहित चहुँ भाई ॥
परसुराम पितु बचन प्रमाना । कीन्ह जननि सब बन्धु निदाना ॥

दोहा—२ कह्यो हरषि यमदग्नि तब, मांगहु प्रिय बरदान ।
जियैं जननि सब बन्धु पुनि, रहै न मम कृत ज्ञान ॥

चौ० एवमस्तु कह मुनि तपधामा । जिये सकल उठि कीन्हप्रनामा ॥
परसुराम महिमा प्रभुताई । अपर प्रसङ्ग कहौं समुझाई ॥
निसिचरांस क्षत्रिय भटभारी । अब सब जग करि दीन्हदुखारी ॥
देव पितर कोउ धर्म न मानैं । बरबस द्रोह द्विजन ते ठानैं ॥
तब श्रीपति मन कीन्ह बिचारा । अहै न समय प्रगट अवतारा ॥
परसुराम की देह समाई । अंशावेश कीन्ह सुरसाईं ॥

१ यहां मोह संचारीभाव व्यंग्य है ।
२ इसमें हर्ष संचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निशिचरांस गुरु ब्राह्मन द्रोही। जे छत्रिय दुर्दम अति कोही॥
खोजि खोजि इक बिन्सति बारा। तिन सब कहँ प्रभु किय संहारा॥
परसुराम छत्रिन जिमि मारे। सुनहु सो कहत चरित मैं सारे॥
हैहय छत्रिय कीर्ति स्वरूपा। सहसबाहु इक भूप अनूपा॥
सातो द्वीप अवनि सब खण्डा। जीत्यो भुजबल भूप प्रचण्डा॥
तिहु पुर भ्रमन करै मनमाना। अव्याहत गति बायु समाना॥
ऋद्धि सिद्धि अणिमादि बिभूती। बसहिँ भूपबस ह्वै अनुदूती॥
१ निरखिनृपतिगृहधनंपरिछाहीं। इन्द्रादिक सुर सकल सिहाहीं॥

दोहा—दस सहस्र निज तियन सँग, जलबिहार इक बार।
सहसबाहु थम्भन कियउ, रेवासरि जलधार॥

चौ॰ नृपभुज थम्भि उलटि सरिधारा। चली बहावत देस करारा॥
तेहि तट करत शँभु सेवकाई। दसकन्धर जल चल्यो बहाई॥
२ देखि सहसभुज कर्म भयावन। आय प्रचारि समर किय रावन॥
बहुत दिवस लगि भई लराई। तब हैहयपति हृदय रिसाई॥
धरि लंकेशहिं गृह लै आयो। तब पुलस्ति मुनि जाय छुड़ायो॥
यक दिन हैहय पति मतिमाना। मृगया हित बन कीन्ह पयाना॥
भूलि पंथ सह सैन सहाई। भृगुकुल आश्रम पहुँचे जाई॥
मुनि नृप निज अभ्यागत जानी। किय पहुनइ नहिं जाय बखानी॥
३ इन्द्रहुँ अधिक बिभव सबदेखी। भयउ भूप मन मोह बिसेखी॥
पूछयो मुनि तेहि कह समुझाई। कामधेनु महिमा यह भाई॥

१ इसमें उल्लासालंकार वा उदात्तालंकार से सहस्रार्जुन राजा के धन की प्रशंसा रूपवस्तु व्यंग्य है और इन्द्रादिक देवताओं का विस्मयस्थायी भाव व्यंग्य भी है।

२ यहाँ भयानक रस का अंग वीर रसहोनें से रसवदालंकार है।

३ इसमें अद्भुत रसका अङ्गमोह संचारीभाव होनेसे रसवदालंकार हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—मुनिपुलस्तिसन नृपति तब, कह्यो चरन सिरनाय ।
अस गउ चहिय न बिप्र गृह, देहुहमहिं मुनिराय ॥

चौ॰ यदपि कीन्ह भूपति हठ भारी । दिय सुरधेनु न मुनि ब्रतधारी ॥
जब न दीन्ह उपज्यो नृप क्रोधा । भाबी बिबस न रह उर बोधा ॥
मुनिहिं निदरि निज बलबरियाई । चल्यो भूप लै धेनु छिनाई ॥
कह पुलस्ति नृप अनयन कीजै । यह सुर संपति ताहि न लीजै ॥
लखि दुख तपिन तपोधन चीन्हा । यह सुरप्रतिसब मुनिहितदीन्हा ॥
जौ हठि धेनु भवन लैजैहौ । कुल परिवार समेत नसैहौ ॥
१ जे जन धन अन्याय कमाहीं । धन समेत सो अवसि नसाहीं ॥
२ धर्मार्जित धन संग्रह करहीं । ते दुहुँ लोक सकल सुखभरहीं ॥

दोहा—३ अति रति ते अनहित करत, उदासीन ह्वै छीन ।
उचित भोग किय देत सुख, धन धरती तिय तीन ॥
४ धर्म सहित सेवन करिय, सदा अर्थ अरु काम ।
बिना धर्म त्रिभुवन बिभव, होत दुखद परिनाम ॥

---

१ यहां धन कमाना एक बस्तु है और धन सहित नाश होनेमें सहोक्ति अलंकारहै इससे जो अन्यायोपार्जित धन की निन्दा सूचित होती है वही व्यंग्य है अतः बस्तु से अलंकार व्यंग्य है।

२ यहां धर्मार्जित धनसंग्रह करना एक बस्तु है और उससे दोनों लोक का सुख मिलना दूसरी बस्तु है इससे जो धर्मार्जित धन की प्रशंसा सूचित होती है वही व्यंग्य है अतः बस्तु से बस्तु व्यंग्य है।

३ यहां तुल्ययोग्यता लंकार के प्रथम भेदसे धन धरती और तिय का उचितभोग रूपबस्तु व्यंग्य है।

४ यहां उल्लासालंकारसे धर्म की प्रशंसा रूपबस्तु व्यंग्य है। इसके अतिरिक्त यहां बहुत से पद्यों में व्यंग्य है बिस्तारभय से नहीं लिखा गया।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० १ बरनतसबकबिसुमतिसमाजा । धर्महिँ प्रगटसकलसुखसाजा ॥
कोटिन इन्द्र बिभव जो पावै । मरन समय सो काम न आवै ॥
मातु पिता सुत बांधव दारा । स्वारथ रत सिगरे परिवारा ॥
यह तनु तजि जब जीव सिधावै । केवल एक धर्म सँग जावै ॥
उभय लोक सुख संपति दाता । धर्महिं एक जगत परित्राता ॥
अस बिचारि जे पण्डित ज्ञानी । सबतजि धर्म करहिं हितजानी ॥
छनभंगुर लौकिक सुख लागी । कर अधर्म सो नर हतभागी ॥
इमिपुलस्ति बहुबिधि समुझायो । काल बिवस नृप हृदय न आयो ॥
तब सुरभी बहु भट उपजायो । सबहिं मारि नृपअवनिगिरायो ॥
गयउ भवन लै धेनु छिनाई । बहुरि भागि सो मुनि ढिगआई ॥
दस सहस्र सैनिकगन धाये । सुरभिहिँ खेदत मुनि ढिगआये ॥
तब यमदग्नि सुरभि गहि लीन्हे । ह्वै क्रोधित ते मुनिबध कीन्हे ॥

दोहा—२ लखि पतिबध तिय रेणुका, कीन्ह बिलाप अपार ।
आनि ध्यान तजि परसुधर, धाय आय तेहिबार ॥
बहु बिधि जननि प्रबोधि पुनि, करि अकेल रनरार ।
सहसबाहु नृप कहँ हत्यो, सहित सैन परिवार ॥
औरहुँ जे अति दुष्ट नृप, तिनहिँ सोधि चहुँ धाय ।
किय इकबिंसति बार बध, सहित सैन समुदाय ॥
बधि क्षत्रियगन राजधन, दै बिप्रन हरषाय ।
करन लगे पुनि कठिन तप, गिरि महेन्द्र पै जाय ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते सप्तम:सर्ग:

१ यहां से लेकर आगे के कतिपय पद्यो में शान्तरसका बर्णन है।
२ यहां करुणारस का अंग चपलता संचारीभाव होने से रसवदालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० जेहिबिधिभयउरामअवतारा । सुनहु चरित अब सो सुखसारा ॥
जब रावन उत्पात मचायो । नसि धर्म सबजग अघ छायो ॥
धेनु रूप धरि महि अकुलाई । निज दुख कह्यो सुरेसहिं जाई ॥
तब सुरेस सब सुरन समेता । गये धरनि लै ब्रह्मनिकेता ॥
१ तेहिछनसपदि सम्मुचलि आये । देखि सकल सुर हिय हरषाये ॥
तबसब मिलिअस मति निरुवारे । बिनु हरि कौन बिपतियहटारे ॥
कीन्ह सबन बिनती बिधि नाना । तब प्रगटो इक तेज महाना ॥
जासु प्रकाश दसहुँ दिसि छायो । जनु प्रलयान्त भानु प्रगटायो ॥

दोहा—अतुल अगम पवित्र अति, लखि सो परम प्रकास ।
ब्रह्मादिक सब देव दृग, मूँदि गये अनयास ॥
भयो सौम्य जब तेज सो, सुरगन बिनय प्रमान ।
गरुड़ पीठ लछमी सहित, प्रगटे श्री भगवान ॥
पीताम्बर धारन किये, अमित पार्षद साथ ।
शङ्ख चक्र पङ्कज गदा, सोहत चारौ हाथ ॥

सो०—सबसोभा सुखधाम, देखि युगल जोरी प्रगट ।
करि अष्टाङ्ग प्रनाम, ब्रह्मादिक अस्तुति करत ॥

रोलाछन्द

नमोदेव परब्रह्म, परम पावन अविनासी;
बाहिर भीतर सकल, जगत जड़ जङ्गमबासी ।
नमो प्रणतप्रतिपाल, सकल सुर मुनि हितकारी;
भक्त अनुग्रह हेतु, अमित लीला तनुधारी ॥१॥

१ यहां चपलता संचारीभाव का अंग हर्ष संचारीभाव होने से प्रेयालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु तुम अगम अपार, यदपि कोउ पार न पावत;
तदपि सुगम अति होत, कृपाकरि जबहिँ जनावत।
जौ निज सगुन सरूप, आजु प्रगटत तुम नाहीं;
होत न तव प्रतच्छ, ज्ञान तब हम सब काहीँ ॥२॥
महाप्रलय के अन्त, सबहिं अपने महँ धरि जब;
सोवत हौ तुम नाथ, तुमहिँ नहिं कोउ जानत तब।
अहो सृष्टि के प्रथम, तुमहिं कैसे कोउ जानै;
जब न जनम रह कोउ, तुमहिं तबकौन प्रमानै ॥३॥
मायाश्रित ह्वै आदि, सृष्टि जब आपु जनावैं;
तब तव किञ्चित ज्ञान, पाय तुम कहँ श्रुति गावैं।
नातरु अगुण अकथ्य, अलख अति अगमअपारा;
कौन भांति कोउकहै, तुमहिँ कछुकेहिआधारा ॥४॥
१ तुम सब महँ सबतुमहिं, तदपि तुमसबते न्यारे;
भयहु द्वैत अद्वैत, अगुन ह्वै सब गुनधारे।
ह्वै निस्पृह निष्काम, जगत उत्पति लय करहू;
यदापि अज तुम नाथ, जनम पुनि कोटिन धरहू ॥५॥
अहहु एक तुम तदपि, अनेकन तनुधरि प्रगटत;
सोवत जागत रहत, अघट घटना सब सुघटत।
अगम अलौकिक अकथनीय, तव गति भगवन्ता;
अप्रतर्क्य सब भांति, लहै कैसे कोउ अन्ता ॥६॥
घट के आदिहु अन्त, यथा मृतिका रहिजाती।
सब जग सर्ग बिसर्ग, तुमहिँ ते ह्वै तेहि भांती।

यहां बहुत से पद्यों में बिरोधाभासअलंकारसेईश्वर की प्रशंसारूपवस्तु व्यंग्यहै।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि कारन सब ज्ञानवान यह मतनिर्धारा,
जड़ जङ्गम मय सकल, जगत यह ब्रह्म पसारा ॥७॥
ब्रह्म सत्य जग असत, जीव यह ब्रह्म सही है;
चारो वेद प्रमान, सिद्ध सिद्धान्त यही है ।
रह्यो न उत्पति प्रथम, रहै अन्तहु पुनिनाहीं;
मध्यकाल जग देखि, परै मिथ्या सो आही ॥८॥
कङ्कन कुण्डल आदि, कनक कृत भूषन वैसे;
देखन मात्र अनेक, एक कञ्चन है जैसे ।
तिमि त्रिगुणात्मक नाम, रूपमय जगत अपारा;
बाचारंभनमात्र, सत्य इक तुम कर्तारा ॥९॥
तुमहिं बने यह जीव, अविद्या कहं अवधारे,
देहादिक के धर्म, सकल अपने सिर पारे ।
तब सत चित आनन्द, आदि तुह्मरे गुण तैसे,
यहिप्रकार छिपिजात, छिपैरबि घन महँ जैसे ॥१०॥
चिद बिलास यह जगत, असत त्रयकाल यदपि है,
प्रभु तब सत्ता पाय, सत्य ह्वै लसत तदपि है, ।
आतमबादी आत्मरूप, सब जग कहँ जानै,
जग अरु ब्रह्म अभिन्न, ब्रह्मबित यह मत मानैं ॥११॥
सब जग व्यापक जानि, तुमहिं तव जन आराधत;
तीनौं परम प्रमान, तिनहिंनहिं भवभय बाधत ।
जे जन एकहु वार, नाथ तव पद मन लावैं;
ते भवसागर तरैं, कबहुँ नहिं फिरिभवआवैं ॥१२॥
सकल कामनाहीन, परम परवीन जिते हैं;
सगुन चरित सर लीन, किये मनमीन तिते हैं ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ते नहिं इच्छत मुक्ति, सदा तव गुन गन गावैं;
पै तवभजन प्रभाव, अवसि सो तुम कहं पावैं ॥१३॥
योगि योग नित करैं, सुलिय मति काम पसारैं;
अरिगन वैरी जानि, तुमहिं नित वैर सम्हारैं।
सबहिं मुक्ति फल एक, मिलत अस बेद बतावै;
कैसहुं भाव कुभाव, तुम्हैं सुमिरै तरि आवै ॥१४॥
हम ब्रह्मादिक काहिं, नाथ जेहि भांति बताये;
तव आज्ञा सिरधारि, करत सब काज सुहाये।
तुम स्वतंत्र हम सकल, देव परतंत्र तथा हैं;
सार्वभौमन्टप निकट, हरुअ सामंत यथा है ॥१५
प्रभु तुम आत्मस्वरूप, सकल जन हृदय निवासी;
तेहि हमका दुख कहैं, सकल जानत अविनासी।
लोक बेद मरयाद, सहित धार्मिक पथ सिगरे;
रहे न कोउ अग आजु, दुष्ट निशिचरकृतबिगरे ॥१६
रावनादि मनुजाद, बहुत उतपात मंचाये;
तिन सब कृत अन्याय, कर्म नहिं जात गिनाये।
कहिन जात जगनाथ, जगत सब भयो उजारो;
प्रगटि राम अवतार, ताहि अब बेगि उबारो ॥१७॥

चौ० सुनि ब्रह्मादिकबिनय बखाना। ह्वै प्रसन्न बोले भगवाना॥
तजहु सोक सब सुर परिबारा। हरिहौं सकल अवनिकै भारा॥
मनु नृप कश्यप अंस स्वरूपा। भै दसरथ कोसलपुर भूपा॥
सतरूपा अरु अदिति सयानी। इन दुहुंअंस कौसिला रानी।
इन दुहुँ दम्पति गृह अवतरिहौं। चतुर्व्यूह ह्वै जग दुख हरिहौं॥
द्विज हरिदेव समदरशत चंसा। भये जनक निमि कुल अवतंसा॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इन दोउ बिप्रन तिय गुनखानी । भई सुनयना निमिपतिरानी ॥
तिनमख अवनि रसा प्रगटैहैं । नृप दम्पति सुखसुयश बढ़ैहैं ॥
अब ब्रह्मादिक सुर समुदाई । बनचर तनु ह्वै प्रगटहिं जाई ॥
नर बानरन जाति दुइ बारे । मरै न रावन त्रिभुवन मारे ॥

दोहा—इमि प्रबोधि सब सुरन कहँ, श्री हरि कृपानिधान ।
सब के देखतही भये, तेहि छन अन्तर्ध्यान ॥

चौ॰ तब ब्रह्मादिक सुर समुदाई । बनचर तनु ह्वै प्रगटे जाई ॥
सो सब आगे कहब बुझाई । अब सुनु रामजनम मुनिराई ॥
रबि बन्सी कोसलपति समरथ । भै इक बिश्व बिदित नृपदसरथ ॥
धर्म ज्ञान बिज्ञान निधाना । कर्म बचन मन रत भगवाना ॥
१ कहिनजायसुख बिभव नरेसा । जेहि लखि लज्जित कोटिसुरेसा ॥
२ यद्यपिसबसुख नृपमणिकाहीं । तउ हिय दुखित पुत्र इकनाहीं ॥
ब्याहे त्रिसत साठ बर रानी । तीन पाटमहिषी छबि खानी ॥
कौसिल्या कैकयी सुमित्रा । रूप सील गुन खानि पवित्रा ॥

दोहा—तदपि न सुत नृपकहँ भयो, हृदय बहुलदुखलाग ।
गुरुहिं बोलि करि मंत्रना, कीन्ह सबिधि सुतयाग ॥

चौ॰ मख परिपूर्न कीन्ह नृपजबहीं । प्रगटे यज्ञ पुरुष प्रभु तबहीं ॥
दिब्य हबिष कंचन भरिथारा । दै नृप इमि आसीस उचारा ॥
बिष्णु अंस यह चरु गुनखानी । जाय खियावहु निज प्रिय रानी ॥
ह्वैहैं चारि सुवन गुन धामा । जेहि तव सिद्ध सकल मनकामा ॥

---

१ यहां तृतीय उल्लासालंकार से दशरथ जी की प्रशंसारूपवस्तु व्यंग्य है ।
२ इसमे विषादसंचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ हरषि भूप अस्तुति बहुगाई । अन्तर्ध्यान भये सुरसाईं ॥
तब राजा तिहुँ महिषि बुलाई । यथा भाग चरु दीन्ह खवाई ॥
कौसिल्यादि सकल गुन खानी । गर्भ समेत भई तिहुं रानी ॥
जब ते किय हरि गर्भ निवासा । सुख संपति उमगी चहुंपासा ॥
कहि न जात सोभा सुख रानी । गर्भ क्लेस कछु परै न जानी ॥
प्रति दिन ब्रह्मादिक सुर आवैं । गर्भस्तुति करि भवन सिधावैं ॥

दोहा—निराकार निर्गुन निरव, सबमय सर्वप्रकास ।
सो दयालु निज भक्त हित, कीन्हो गर्भ निवास ॥

यहि विधि बीते मासदस, राम जनम दिन आव ।
२ सचराचर सब हर्षमय, प्रभु आगमन जनाव ॥
३ चैत्र शुक्ल नवमी तिथी, नखत सात ससिवार ।
कर्क लगन मध्याह्न महं, भयो राम अवतार ॥
कर्क चन्द्र गुरु शनि तुला, मकर भौम अज भानु ।
झष कबि वृषबुध, मिथुनतम रामजनम ग्रहजानु ॥
४ बर्गोतम बैशिस्थ शुभ, कारक केन्द्र असून्य ।
जन्म महाशुभ जानिये, ह्वै पुर्बिल बहु पुन्य ॥
परैं पांच उच्चादि ग्रह, रहैं केन्द्र महं आय ।
होय त्रिलोकी नाथ सो, सब जग यश फैलाय ॥

---

१ यहां बाच्यार्थरूपबस्तु से द्वितीयपर्य्यायालंकार व्यंग्य है।
२ यहां बाच्यार्थरूपबस्तु से प्रथमपर्य्यायालंकार व्यंग्य है।
३ यहां कतिपय पद्यो में कवि का ज्योतिष परिचय है।
४ यहां शुभशब्द का बैशिस्थ और कारक दोनो शब्दों के साथ अन्वयहोने से देहलीदीपकालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० १ रामजनमसुनिनृपसबरानी । अति आनन्द न जाय बखानी ॥
रानी सहित सकल पुर नारी । दान देहिं सजि मङ्गल भारी ॥
२ कहि न जाय सुख दसरथराजा । देत दान बहु सहित समाजा ॥
पुरजन परिजन नृप परिवारा । गृह गृह करहिं मङ्गलाचारा ॥
भयो महोत्सव नृप गृह माहीं । को अस कबि जो बरनैंताही ॥
शिव ब्रह्मादि अवधपुर आवैं । प्रभुगुन गाय सुमन बरसावैं ॥
दिव्य पितर ऋषि मुनिगन जेते । परमानन्द मगन भै तेते ॥
३ हरषित सकल जगत संघाता । प्रगट एक लङ्का उतपाता ॥

दोहा—मातु कौसिला गर्भ ते, जेहि दिन जनमे राम ।
तेहि दूजे दिन कैकयिहिं, भये भरत गुनधाम ॥
भरत जनम दूजे दिवस, मातु सुमित्रा काहिं ।
जनमे लछिमन सत्रुहन, दुहुँ एकै सँग माहिँ ॥

चौ० यदपिजनमदुहुंसाथ प्रमानी । तदपि जेठलछिमन कह जानी ॥
४ चारी सुत सुन्दर गुनधामा । तउ सबअधिक रामअभिरामा ॥
प्रगटे रामचन्द्र चहुँ भैया । गृह गृह सबपुर बजत बधैया ॥
५ छनछन नगर नारि नर आवैं । देखि कुंवर छबि अति सुखपावैं ॥
जातकरम सब नृप मणि कीन्हा । दान अनेक द्विजन कहं दीन्हा ॥
छठी बारहीं आदिक जेते । कुल व्यवहार कीन्ह सब तेते ॥

१ यहां बाच्यार्थरूपवस्तु से प्रथम पर्य्यायालंकार व्यंग्य है ।
२ यहां दानवीर का वर्णन है ।
३ यहां बाच्यार्थरूपवस्तुसे तृतीय उल्लासालंकार व्यंग्य है ।
४ यहां बाच्यार्थरूपवस्तुसे सार अलंकार व्यंग्य है ।
५ यहां बाच्यार्थरूपवस्तुसे प्रथम उल्लासालंकार व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाम करन कर अवसर आयो । किय सब कृति जसवेदबतायो ॥
अन्नप्रास चहुं सुतन कराये । कोटिन द्विज सब प्रजनजिमाये ॥

दोहा—कर्णबेध चूड़ाकरम, कीन्ह यज्ञ उपवीत ।
यथा समय जस कहेउ गुरु, सहित बेद कुलरीत ॥
यहि विधि दसरथ भवन जो, उत्सव होत अपार ।
कोटिन सेष महेस विधि, बरनि न पावैं पार ॥
नित नव बाल चरित्रशुभ, करत रहत चहुं भ्रात ।
१ देखि देखि हरषहिय, पुर परिजन पितु मात ॥
पढ़ि चौदह बिद्या सकल, चौंसठ कला प्रमान ।
भे चहुं सुत अवधेस के, सब गुन ज्ञान निधान ॥
२ यद्यपि चारौ कुंवर बर, सबगुन रूप निधान ।
तदपि सबन ते राम प्रभु, भे अति श्रेष्ठ प्रधान ॥
३ चारिहु भाइन में यदपि, निबहत प्रेम अभङ्ग ।
तदपि लच्छमन राम सँग, भरत सत्रुहन सङ्ग ॥
मातु पिता नर नारि सब, अवध प्रजा परिबार ।
प्रान अधिक प्रिय लागहीं, चारौ राजकुमार ॥
४ जपतप संयम नियम व्रत, करि कोटिन मख दान ।
चिरजीवैं चारो कुंवर, मांगैं सब बरदान ॥

चौ॰ रामबन्धु सब सखन सहीता । मिलिजुलिखेलहिं खेलबिनीता ॥
दुहु जग सुखद काज सब जेते । करत राम समयोचित तेते ॥

---

१ यहां प्रथम उल्लासालंकारसे प्रथम पर्य्यायालंकार व्यंग्य है।
२ यहां वाच्यार्थरूपवस्तुसे सार अलंकार व्यंग्य है।
३ यहां अन्योन्यालंकारसे समालंकार व्यंग्य है।
४ यहां द्वितियसमुच्चयालंकारसे प्रथम पर्य्यायालंकार व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उत्तम मध्यम लघु अनुहरहीं । यथायोग सब सो व्यवहरहीं ॥
दान मान करि सब सनमानैं । सब सन बचन बिनीत बखानैं ॥
यद्यपि बय थोरे रघुनायक । करत कर्म सबजन सुखदायक ॥
१ देव दनुज त्रिभुवन जन जोई । राम सरिस धनुधर नहिं कोई ॥
समर गमन नित राम उमाहैं । समर मरन सब मरन सराहैं ॥
२ कछु छन रहे राम ढिग जोई । अति कायरहूँ सूर बड़ होई ॥
प्रतिछन धरमनीति प्रतिपालैं । नहिँ सपनेहु मनधरत कुचालैं ॥
३ मानत पिता पुत्र निज जैसे । प्रजावर्ग मानत प्रभु तैसे ॥
निज कुल कीर्ति बढ़ै जेहिभांती । प्रभु सो कर्म करहिं दिनराती ॥
सचिव मित्र सेवक समुदाई । करत सबहिं प्रभु भूरि भलाई ॥
मातु पिता गुरु सेवा करहीं । अनुकूलनसुखरुखलखिअनुसरहीं ॥
कौसिल्यहु ते प्रीति बढ़ाई । सेवत सब जननिहिं रघुराई ॥

दोहा—४ पुरजन परिजन जननि नृप, सब जानैं असभाव ।
हैं मम सर्बस प्रानधन, रघुपति सरल सुभाव ॥
५ युवकन जानहिं बीरबर, लरिकन सखा समान ।
बिरिधन निज प्रिय पुत्रवत, जानत जानकिजान ॥
६ कर्म बचन मन प्रकृतिहूं, लखि आचरन पुनीत ।

---

१ इसमें तृतीयप्रतीपालंकार है ।
२ यहां प्रथम उल्लासालंकारसे रामचन्द्रजीकीप्रशंसारूपवस्तु व्यंग्य है ।
३ इसमें उदाहरणालंकार हैं ।
४ यहां एक को अनेक आश्रय होनेसे प्रथमपर्य्यायालंकारसे द्वितीय हेतु अलंकार व्यंग्य है ।
५ यहां रामको बहुतों को बहुतरीतिसे समझने के कारण प्रथमउल्लेखालंकारसे प्रथम पर्य्यायालंकार व्यंग्य है ।
६ यहां प्रथम उल्लासालंकारसे रामचन्द्र जी की सच्चरित्रतारूपवस्तु व्यंग्य है और लक्षितलक्षणासे नगर शब्दसे नगरवासियोंकाअर्थ समझिये ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सकल नगर हर्षित कहत, रामसुयस शुभगीत ॥
१ राम सुयस बल बिभव गुन, दिन २ बढ़त अपार ।
सुनि सो दसमुख हृदयकृद, उमगत दुख जलधार ॥
जबते नारद मुख सुन्यो, भयो राम अवतार ।
तबते रावन गुप्तचर, रहवहु अवध मँझार ॥
प्रति दिन ले सब भेदसो, कहैं लङ्क गढ़ जाय ।
माल्यवान मन्त्री प्रबर, बिरचै बहुत उपाय ॥
रामबधन हित असुर बहु, अब तब देत पठाय ।
कोउ न नासे राम कहँ, अपुने गये नसाय ॥
सो सब चरित न कहेउ मैं, ग्रन्थ बढ़न भयमान ।
थोरे महँ बहु समुझि हैं, सज्जन ज्ञाननिधान ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते षष्टःसर्गः

चौ० निसिचरि गर्भ रुधिर ते जाई । जिमि सिय प्रगट भई महिआई ॥
सुनहु बिप्र सो कथा पुनीता । जेहिबिधिनाम भयो पुनिसीता ॥
बिस्वबिदित इक तिरहुत देसू । बसत सीरधुज तहां नरेसू ॥
बल बिद्या गुन ज्ञान निधाना । जासु सुयस तिहुं लोक प्रमाना ॥
एक बार नृप देस मँझारा । भयो अवर्षन ते दुखभारा ॥
देखि प्रजा दुख व्याकुल भारी । भूपतिबहु ऋषि मुनिन हँकारी ॥
पूछामत ते कहे बुझाई । बिनु मख किये काल नहिं जाई ॥
सुनत भूप सब सजि मख साजा । कुरुक्षेत्र गे सहित समाजा ॥

१ यहां एक के गुणसे दूसरे को दोष होने के कारण तृतीयउल्लासालंकारसे सावयवरूपकालंकार व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिधिवत मखारंभ तहँ कीन्हा। दान अनेक द्विजन कहँ दीन्हा॥
यज्ञकर्म अस बेद बताये। सो सब मुनि नृपते करवाये॥
कांचन लांगल बिसद सुहायो। जब नृप कर कर्षन क्रम आयो॥
चहुँ दिसि छेत्र करत हल रेखा। फिरत महीपति मुदित बिसेखा॥
गाड़यो गर्भ मदोदरि जहवां। बिधि बस नृप करष्योहलतहवां॥
प्रगट भई तब अवनि कुमारी। देवन कीन्ह सुमन झर भारी॥

दोहा—सुक्ल पच्छ बैसाख की, नवमी तिथि गुरुवार।
सिंह लगन ग्यारह नखत, जानहु सिय अवतार॥
मनिमय सिंहासन रुचिर, ब्रह्मादिक के साथ।
दिव्यरूप सिय प्रगट भइ, कोटिन सक्तिन साथ॥

चौ० निमिपति सहितसकलनरनारी। भये चकित यह दृश्यनिहारी॥
तबकह यागबलिक मुनिज्ञानी। यहसिय आदि सक्ति गुनखानी॥
किय बहु तप नृप तुम जेहिलागी। आजु पाय तेहि भे बड़भागी॥
अब यह कन्या लै गृह जाहू। होइहिं वृष्टि न हिय कदराहू॥
सीता ते कन्या प्रगटानी। सीता नाम होय गुनखानी॥
सुता सरिस करि प्रीति सुहाती। पालन करहु याहि दिन राती॥
यहि मिसि बढ़िहैं कीर्ति तुम्हारी। मिलिहैं परमब्रह्म अविकारी॥
तेहि छन प्रगट भई नभ बानी। गुनु नृपसत्य जोकहमुनिज्ञानी॥
पुनि मुनि बिनय कीन्ह सिरनाई। सौम्यरूप धरिये अब माई॥
तब सब दृश्य लोप ह्वै गयऊ। सद्यजात कन्या सिय भयऊ॥
देखि रानि करि प्रेम अभङ्गा। धाय उठायउ सियहिं उछंगा॥
कन्या अङ्गगहत नृपनारी। बह पयधार पयोधर भारी॥
रोवत कन्यहिं अंक लगावै। हरषि हरषि पय पान करावै॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ पुनिअति हर्षित सहित समाजा। करि मख पूर्ण गये गृह राजा॥
पहुंचत भवन घटा घिरिआई। भई वृष्टि सब बिपति नसाई॥
जनक समेत सुनयना रानी। पालत सियहिँ प्रान सम जानी॥

दोहा—२ सीय जनम इतिहास बर, सुनहिं जे नर अरु नारि।
ते निबसहिं बैकुंठपुर, पाप समस्त बिसारि॥
कहत सुनत इतिहास, पुनर्जन्म नहिं लहत जन।
मिटत सकल भव त्रास, बसत रमा संतत भवन॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते
नवमःसर्गः

चौ० ३ जबते सिया जनकपुर आई। नित नव सुख संपति अधिकाई॥
प्रमुदित भूपति सहित समाजा। गृह गृह बाजत मङ्गल बाजा॥
पुर रचना नहिं जाय बखानी। भइ मिथिला सब मङ्गल खानी॥
छठी बारहीं आदिक करमा। कीन्ह भूप जस निजकुल धरमा॥
४ नित प्रति नगर नारि नर आवैं। सिय स्वरूप लखि अतिसुखपावैं॥
सची उमा सारदा सयानी। औरहुं सुर तिय जे गुन खानी॥
अति अनूप सखि रूप बनाई। सियसँग बसहिँकरहिं सेवकाई॥
५ दिनदिन बढ़ति जानकी कैसे। चन्द्रकला सित पच्छहिं जैसे॥
इन्द्रादिक सुर सिद्ध सयाने। गुप्त रूप जेहि कोउ न जाने॥
प्रतिदिन तिरहुत अवध सिधावैं। करि सियराम दरस सुख पावैं॥

---

१ एक को अनेक आश्रयहोनेसे प्रथमपर्य्यायालंकार है।
२ इसमें प्रथमउल्लासालंकार है।
३ यहां प्रथमउल्लासालंकारसेसीताजीकीप्रशंसारूपवस्तु व्यंग्य है।
४ यहां प्रथमउल्लासालंकारसे सीताजी के स्वरूपकीप्रशंसारूपवस्तु व्यंग्य है।
५ यहां उदाहरणालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—एकबार श्री देव ऋषि, आये जनक अगार ।
हरषि नृपति पूजन कियो, करि बहु बिधि सत्कार ॥
सुताल्याय मेल्यो चरन, पूछ्यो भाग्य बिधान ॥
देखि अंग लच्छन सकल, कह नारद मतिमान ॥
कहौं कहा नृप तव सुता, गुनगंन अगम अपार ।
कोटि कल्प लगि जौ कहै, शेष न पावैं पार ॥
तदपि सुनहु संछेप नृप, कन्या भाग्य बिचित्र ।
फैलैहैं सब जगत यह, निज गुन सुयश पवित्र ॥
करिहैं अति उपकार जग, हरिहैं सब महिभार ।
परब्रह्म परमात्मा, यहि मिलिहैं भरतार ॥
ह्वैहैं त्रिभुवन स्वामिनि, सती सिरोमनि सीय ।
पति पितु दुहुँ कुल कीर्ति जग, प्रगटैहैं कमनीय ॥
१ लक्ष्मी गौरी सरसती, पतिबरता परधान ।
अब चौथी यह सिय भई, जानहु बचन प्रमान ॥

चौ० पै कछुदिवसबिपति बस ह्वैहैं । तबहु जगत निज सुजस बढ़ैहैं ॥
अस कहि मुनि बिधिलोक सिधाये । सुनु सिय अपर चरित मनभाये ॥
मिलि सब भगनिन सखिन समेता । खेलति अनुपम खेल सचेता ॥
जनक अनुज कुशधुज जेहि नामा । तेहि दुहु सुता परम अभिरामा ॥
मांडवि श्रुतिकीरति गुनखानी । जनक सुता उर्मिला सयानी ॥
ये तिहुं भगिनि जानकी केरी । सेवा करहिं सप्रीति घनेरी ॥
चन्द्रकलादिक सखिन सयानी । सेवहिं सियहिं प्रानप्रियजानी ॥
जनक नगर जहं लगि नरनारी । प्रान अधिक सियसबहिं पियारी ॥

१ इसमें तृतीय तुल्ययोग्यतालंकारसे सीताजीकीप्रशंसारूपवस्तु व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

दोहा—पढ़ि बिद्या चारौ कुँवरि, सीखी सब तिय रीति।
पाकक्रिया सूचीकरम, नृत्यकला संगीत॥
धात्री सिच्छा धरमबिधि, पतिब्रततिय व्यवहार।
युद्धकला सीखी सकल, क्षात्र धर्म अनुसार॥
१ यदपि कुंवरि चहुं सकलगुन, सील सरूप निधान।
तदपि सबन में जानकी, भइ अति श्रेष्ठ प्रधान॥
२ उमा रमा ब्रह्मानि तिहुं, रूप शील गुन जौन।
सो एकत अब आय किय, सिय सरीर महं भौन॥

चौ० देखि सीय सिसु केलि अनूपा। हरषित सकल नारि नर भूपा॥
जगत जननि सिय सब गुनखानी। थोरेबय कृति करै सयानी॥
जौन कर्म इक दिन लखि पावै। सीखि लेइ सब भगिनिसिखावै॥
भगिनि सखिन मिलि खेलमचावै। आपुन हारै तिनहिं जितावै॥
सौम्य सुभाव सदा सुविनीता। सबसनमिली रहति सुचिसीता॥
जननि जनक आयसु अनुसरई। निज कर गृह कारज सबकरई॥
मधुर असन जननी जो लावै। सखिन खवाय आपु तब खावै॥
सुन्दर भूषन बसन घनेरे। सखिन पेन्हाय आपु तनु गेरे॥

दोहा—प्रियभगिनीअरुसखिनतजि, नहिं कछु भोगति सीय।
सकल स्वार्थ छल ते रहित, करत चरित कमनीय॥
३ सुन्दर सीलसुभावनिज, सबहिं किये बस प्रीति।
सियसिखवतिसबकुलतियन, बड़े कुलन की रीति॥

---

१ यहां बाच्यार्थरूपबस्तु ते सारअलंकार व्यंग्य है।

२ यहां द्वितीयउल्लेखालंकारसे सीता जी का सर्वश्रेष्ठ रूप, शील और सद्गुणादि वस्तु व्यंग्य है।

३ यहां सदर्थ निदर्शनालंकारसे सीता जी के सुन्दर शील और स्वभावकी प्रशंसा रूपवस्तु व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० जब ते जनक नगर सिय आई । नित नव करत भूप पहुनाई ॥
प्रति दिन सहस धेनु सिय हाथा । दान करावत निमिकुल नाथा ॥
औरहु उत्सव दान अनेका । समय समय किय नृप सबिबेका ॥
१ जो तिन सब कर ब्यौरा गावैं । कोटिन शेष पार नहिं पावैं ॥
२ कोटिन रङ्क पाय सिय दाना । भये कुबेर अधिक धनवाना ॥
३ रूप शील सुन्दर गुन जेते । सिय तनु बढ़त बढ़ें सब तेते ॥
प्रतिछन सिय सुसकर्म निरेखी । जननिजनक हिय हर्ष बिसेखी ॥
जप तप ब्रत सुर अर्चन दाना । नित प्रति करैं यज्ञ बिधि नाना ॥
सब करि मांगि लेहिँ फल येही । सिय अनुरूप मिलै बर जेही ॥
४ करि बहु तप सब पुर नर नारी । मांगहिं बर अस जनक कुमारी ॥
अस रुचि निरत सतत सब काहू । कब ह्वैहै सिय ब्याह उछाहू ॥
सुख सुहाग हित जननि सिखाई । सियनित करतिबिष्णु सेवकाई ॥

दोहा—देखिकठिनब्रतकरत सिय, मुनिगन कहहिं सराहि ।
५ यद्यपिअबलाकहतकबि, करिनसकै तिय काहि ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते
दशमःसर्गः

---

१ यहां ब्यौरागानकरना एकबस्तु है और कोटिन शेष के पार नहीं पाने में विशेषोक्ति अलंकार है इससे जो अनन्त उत्सवहोना प्रकट होता है वही व्यंग्य है अतः बस्तुसेअलंकार व्यंग्यहुआ ।

२ यहां दानवीर का बर्णन और उदात्तालंकारभीहै इसमें अधिक व्यतिरेकालंकार भीहोसकताहै ।

३ इसमें सहोक्त्यालंकार है ।

४ यहां बर शब्दमेंशब्दश्लेषालंकार है ।

५ इसमें काकु बक्रोक्ति है ।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० बाल चरितकरिप्रभु चहुँ भाई । जननि जनक सुखदीन्हअघाई ॥
बारह बरष राम बय बीते । आय अवध कौशिक मुनि प्रीते ॥
निज मख हेतु मांगि अनत्राता । लेगै राम लखन दोउ भ्राता ॥
तरि सुरसरि ताटक बन जाई । कह मुनि सुनहु देव रघुराई ॥
प्रभु अवतरे हरन महिभारा । करहु सकल सुर जग उपकारा ॥
अस कहि संभु पठायउ मोही । अब सो लेहु दीन्ह जो तोही ॥
पुनि मुनि दुहुं जन निकट बुलायो । बल अतिबल बिद्याहिं पढ़ायो ॥
क्षुधा तृषा जेहि ते नहिं लागै । बाढ़े बल रन श्रम सब भागै ॥

दोहा—बहुरि सौंपि दिब्यास्त्र सब, मन्त्रन दीन्ह पढ़ाय ।
ग्रहन बिसर्जन उभय बिधि, कहि रहस्य समुझाय ॥
तेहि अवसरअति बिकट बपु; धावत पवन समान ।
लखि आवत इक राछसी, पूछ मुनिहिं भगवान ॥
कह मुनि सुता सुकेतु यह, सुन्दासुर प्रिय बाम ।
जननी खल मारीच की, बिदित ताटका नाम ॥

चौ० करहु राम निशिचरसंहारा । यह बहु मुनिगन करति अहारा ॥
कह प्रभु सुनु मुनि यह तिय जाती । करौंअबध्यहिंबध केहि भांती ॥
सुनत बचन कह मुनि हरषाई । साधु साधु तव सुमति सुहाई ॥
रबि कुल नृप सब ज्ञाननिधाना । धर्म भीरु नयकाल प्रमाना ॥
१ तेहि कुल कमल प्रकाशक भूपा । कसन कहहु अस नीति अनूपा ॥
तदपि नाथ सब निगम कहाहीं । आततायि बध पातक नाहीं ॥

---

१ यहां कुलकमलमेंरूपकालंकार और "कस न कहहु असनीति अनूपा" में समालंकारहै इसमें रबि कुलकी प्रशंसा जो भासितहोतीहै वही व्यंग्य है अतएव अलंकार से अलंकार व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो पै एक कुतिय संहारा । होय सकल जग हित उपकारा ॥
तौ तिय बध पातक कछु नाहीं । कबि कोबिद सब संत कहाहीं ॥

दोहा—यह यच्छिनि निशिचरि भई, मुनि अगस्ति के साप ।
अयुत द्विरद बल जानिये, तेहि मारे नहिं पाप ॥
सुनि हंसि मारे राम सर, गिरी अवनि बिनु प्रान ।
दिव्य देह धरि बिनयकरि, पाई गति निर्बान ॥
तेहिनिसिताटकबिपिनबसि, चलिउठिहोत प्रभात ।
सिद्धाश्रम कौसिककुटी, पहुंचे राम सभ्रात ॥

चौ॰ मिलि सबद्विजमुनिगन सिरनाई । मख आरंभहु कह रघुराई ॥
सुनत हरषि सब बिप्र समाजा । लागे करन यज्ञ सजि साजा ॥
पांच दिवस मख करत सिराने । छठे दिवस सुधि पाय बिहाने ॥
बरषत मांस रुधिर बहु धारा । पहुंचे निशिचर कटक अपारा ॥
लखि उत्पात अमित निसिचारी । भये त्रसित सब मुनि नरनारी ॥
देखि राम सब मुनि भय पाये । पवन बान मारीच उड़ाये ॥
भ्रमत तूल इव नभ मंडराई । लङ्का द्वार गिरो सो जाई ॥
पुनि पावक सर राम प्रहारे । सुभट सुबाहु क्षार करि डारे ॥

दोहा—कालजीत सैना अगम, सैनप बहु बलवान ।
सबहिं निपाते निमिष महं, रामानुज भगवान ॥
जयजय कहि सुर गगन ते, बरषहिं सुमन सुमाल ।
यज्ञ पूर्ण करि षष्ठ दिन, भे सब बिप्र निहाल ॥
कछुक दिवसरहि राम तहं, बिप्रनबहु सुख दीन्ह ।
पुनिनिजभवनपयानहित, मुनिहिं बिनयजबकीन्ह ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेहि दिन मिथिला नगर ते, एक दूत तहं आय ।
जनक निमंत्रणपत्र दै, कह्यो मुनिहिं समुझाय ॥
दीन्ह निमन्त्रण प्रथम मैं, अवध नृपति ढिग जाय ।
तेहि पठये प्रभु निकट मोहि, चलिय लिये दुहुँभाय ॥
सतानंद अरु जनक नृप, किय बहु बिनय पवित्र ।
राम लखन कहं साथ लै, आवहिं विश्वामित्र ॥
बांचि निमन्त्रण बिहंसि मुख, बोले राम सुजान ।
कौन धनुष जेहि हेतु मख, करत जनक मतिमान ॥

चौ० सुनहुराम तिरहुत महिपाला । कीन्ह प्रथम तप परम बिसाला ॥
मन बच करम भगत नृप जानी । प्रगटे सङ्कर सहित भवानी ॥
कहेउ मांगु इच्छित बरदाना । नृप मांगे दुहुँजग कल्याना ॥
दुहिता रमा विष्णु जामाता । जिमि मोहि मिलै करहुसोबाता ॥
एवमस्तु तव बचन प्रमाना । होहु सकल गुन ज्ञान निधाना ॥
तव गृह जो मम धनुष महाना । यहिमिसिमिलहिंतुमहिंभगवाना ॥
राखहु नृप धनु यतन कराई । जेहि बहु मेरु अधिक गरुआई ॥
जो भंजै यह धनुष बिसाला । तेहि परब्रह्म जानु महिपाला ॥

दोहा—यज्ञ भवन नृप थापि धनु, संभु गये निज धाम ।
नित प्रति पूजत भूप तेहि, निज मन वांछित काम ॥

चौ० सेवत दम्पति मनतन बानी । प्रान सरिस सिव चापहिं जानी ॥
आगिल चरितभयउ जेहि भांती । सुनहु सुजन सो कथा सुहाती ॥
एक दिवस सीतागुन खानी । मख गृह गई संग निमि रानी ॥
सिसु-सुभाव कर बाम उठाई । फेंकी सिवधनु दूरि भ्रमाई ॥
लखि चरित्र जननी उठि धाई । जनक नृपहिं सब कथा सुनाई ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ सुनिन्टपअतिबिस्मितसियकरनी । हरषि धरनि हेरे निज घरनी ॥
है यकान्त पुनि करि शिवध्याना । कर्म बचन मन यह प्रन ठाना ॥
जो भंजै यह धनु गिरिनाह्र । करौं सीय तेहि संग बिबाह्र ॥

दोहा—कहि निजप्रनतबजनक न्टप, करि मङ्गल व्यवहार ।
चहुं दिसि पठये दूत बहु, आये सुभट अपार ॥

चौ० सुनि सिय छवि गुन रूप बड़ाई । देस देस के न्टप समुदाई ॥
तिरहुत जनक नगर चलि आये । धनुष परसि बल सुयस गंवाये ॥
देव दनुज किन्नर गन व्याला । जेहि बल बिक्रम बांहु बिसाला ।
रावनादि निशिचर भट भारे । कपट रूप धरि करि बलहारे ॥
नहिं कोउ शिवधनु सके उठाई । गये भवन जस रासि गंवाई ॥
एक बर्ष ते सुनु रघुबीरा । होत नित्य तिरहुत अति भीरा ॥
कोटिन भट प्रतिदिन तहं आवैं । परसि संभु धनु सक्ति गंवावैं ॥
मिलि बहु बिकट सुभट समुदाई । धरैं धनुष नहिं उठै उठाई ॥
एक अव्द अब रह दिन द्वादस । लह्यो न कोउ शिवधनु भंजनजस ॥
आजु जनकपुर भीर अपारे । आये तहं त्रिभुवन भट भारे ॥

दोहा—द्वादस दिन लगि जनकपुर, रहिहैं भीर अपार ।
धनु भंजन सिय मिलन जस, देहिं काहि करतार ॥
सुनिकौशिकबचजानि रुख, लखन सहित रघुनाथ ।
शुभमुहूर्त मिथिला नगर, चले बिप्रगन साथ ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते
एकादश:सर्ग:

---

१ यहां जनक जी के बिस्मयस्थायीभाव की शान्ति उनके हर्षसंचारीभाव के अंग सेहुई अत: "समाहितअलंकार" जानिये ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० मिथिला नगर निकट जब आये । सून्याश्रम इक तहं लखिपाये ॥
जीव जन्तु कोउ तेहि थल नाहीं । देखिय एक सिला मगुमाहीं ॥
पूछ्यो भेद तासु जग तारन । तब मुनि बरनि कहे सब कारन ॥
यथा अहिल्या गोतम नारी । लहि पति शाप सिला भइ भारी ॥
मुनि कौसिक बच दीनदयाला । निज पद परसि सिला तेहिकाला ॥
परसतहीं पदपंकज श्रीहरि । प्रगट भई तेहि छन तियतनुधरि ॥
१ बहु प्रकार करि विनय प्रनामा । निजपतिनिकटगईदिविधामा ॥
गोतम मुनि तेहि अवसर आये । करि बहु बिनय प्रभुहिं सिरनाये ॥
पुनि मुनि सहित बिप्र समुदाई । जनक नगर पहुंचे दोउ भाई ॥
आवत मुनिहिं जनक जब जाना । चलि लेन सादर अगुवाना ॥

दोहा—संग अपरिमित बिप्रगन, करत बेद उच्चार ।
लखिआवतइमि जनकन्टप, पूछ्यो लखन कुमार ॥
कहहु नाथ यह कौन जन, आवत सहित समाज ।
२ सुनत लखनमृदुमधुरबच, हंसि बोले मुनिराज ॥
मिथिलापतिनिमिकुलन्टपति, बिदितसीरध्वजनाम ।
योग ज्ञान बैराग निधि, सब बिद्या गुनधाम ॥

चौ० यह सो जनक भूप मणिआहीं । धनुष यज्ञ ह्वै जेहि गृहमाहीं ॥
इनके गृह शिव धनुष कठोरा । जेहि सब त्रिभुवन भट बलतोरा ॥
३ सियअयोनिजा इन्ह गृहमाहीं । जेहिसमतियत्रिभुवनकोउनाहीं ॥
निरखि जासु गुन रूप अपारा । मोहित आजु सकल संसारा ॥

---

१ दिबिधाम=स्वर्गलोक ।
२ इसमें प्रथम उल्लासालंकार है ।
३ यहाँ चतुर्थप्रतीपालंकारसे सीताजी की सब स्त्रियोंसे श्रेष्ठत्वरूपवस्तु व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ सुनहु लखनतिहुं लोकप्रमाना । नहिं इन सम कोउ धर्मनिधाना ॥
यागवलक मुनि योग सिखायो । ब्रह्मज्ञान शङ्कर सन पायो ॥
निज गन सहित उमा त्रिपुरारी । करत सदा जेहि पुर रखवारी ॥
तुम दुहुँ जन तेहि ढिग अति प्रीती । रहेहु बिनीत यथोचित रीती ॥

दोहा—मुनि कौतुकआकुलित चित, बोले राम उदार ।
नाथजनकगृहसकलबिधि, अति अचरज ब्यवहार ॥

चौ० चलत करत मगु बात सुहाई । भये उभयदल सन्मुख आई ॥
धाय जनक मुनि पद गहि लीन्हा । पुनि सब बिप्रन बन्दन कीन्हा ॥
बहुरि हृदय अति हर्ष बढ़ाई । मिलि परस्पर दुहुं समुदाई ॥
तेहि छन राम लखन गुन धामा । आय जनकपद कीन्ह प्रनामा ॥
२ देखि अनूप रूप दुहुं भ्राता । ह्वै अति मोहित तिरहुत त्राता ॥
पूछत मुनि कौसिकहिँ सुखारे । ये दोउ को त्रिभुवन उजियारे ॥
श्यामल गौर मनोहर जोरी । जिनहिं देखि त्रिभुवन छबिथोरी ॥
कोसलेस दसरथ सुत दोऊ । राम लखन जानत सब कोऊ ॥

दोहा—३ मुनिसुबचनहरषितहृदय, कहतजनक मतिमान ।
अहो धन्य सुभदिवस यह, सब बिधि पुन्य निधान ॥
दसरथ सुत दरसन भयउ, लोचन लाभ अघाय ।
अस कहि बरबस बन्धु दुहुँ, लीन्हो कण्ठ लगाय ॥

---

१ यहांभी चतुर्थ प्रतीपालंकारसे जनक जी की धार्मिकत्वरूपवस्तु व्यंग्य है। अब यहांसे आगे के पद्यो में बिस्तारभयसे वस्तु और अलंकार व्यंग्य न लिखकर केवल अलंकार का नाममात्रलिखेंगे; काव्य मर्मज्ञ सहृदय पाठक उचित स्थलोंपर व्यंग्य का स्वयंबिचार करलेंगे।

२ इसमें मोह संचारीभाव व्यंग्य है।

३ इसमें प्रथमउल्लासालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० पुनि बिदेह बहुरथ मंगवाये । सब समाज कहँ ताहि चढ़ाये ॥
राम लखन कौसिक मुनि साथा । रथ चढ़ि नगर चले निमिनाथा ॥
हाट बाट बहु बीथि अथाई । चले दिखावत नृप दुहुं भाई ॥
बरनि न जाय जनकपुर-सोभा । जेहि बिलोकि मुनिगनमनलोभा ॥
१ निरखि नीच गृहधन परिछाहीं । शिव ब्रह्मादिक देव सिहाहीं ॥
जेहि पुर प्रगट रमा गुनखानी । तेहिसोभा किमि जाय बखानी ॥
२ रूपराशि दोउ बन्धु निरेखी । पुर बासिन हिय हर्ष बिसेखी ॥
३ निरखहिँ राम रूप सब बामा । अनु त्रिभुवन शोभा सुखधामा ॥
४ सुभगसरदराकाशशिदामिनि । राममिलनरुचिकरिअहिभामिनि ॥
अति व्याकुल मरयाद बिहाई । यूथ यूथ मिलि प्रभु दिसिधाई ॥
५ तिय गन दशा देखि रघुराई । दीन्ह प्रेम हरि लिय बिकलाई ॥
यहिबिधिसकलसुतियबड़भागिनि । भइ श्रीराम रूप अनुरागिनि ॥
समुझि न सकी मरम यह कोऊ । रहे संग मुनि गन नृप जोऊ ॥
तबमुनिसन कह निमिकुलदाता । कहहु तात कछु कृतदोउ भ्राता ॥
कह कौशिकमुनिनिमिकुल ज्ञानी । ये द्वै बंधु अतुल बल खानी ॥
आय बिपिन मम मख रखवारी । प्रगट कीन्ह निज भुजबल भारी ॥

---

१ इसमें उदात्तवासंबंधातिशयोक्ति अलंकार है।

२ इसमेंहर्ष संचारीभाव व्यंग्य है और प्रथम उल्लासालंकारभी है।

३ इसमें अर्थान्तरसंक्रमितबाच्यध्वनि है । यहां रामरूप त्रिभुवन का शोभा सुखधाम मानागया है।

४ इसमें अत्यन्ततिरस्कृत बाच्यध्वनि है; यहां राकाशशिआदिका राममिलनकी रुचिकरना असंभव है तब बाचकों ने अपने अर्थ छोड़ और लक्षणासे शरद कालीन पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाली, दामिनी के समान शरीर की द्युतिवाली और अहि-भामिनी के समान चोटीवाली स्त्रियोंका अर्थ ग्रहणकिये।

५ इसमें परिवृत्तिअलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा – हति ताटका सुबाहु कहं, खल मारीच उड़ाय।
बिनसे बहुदल निशिचरन, छनमहं ये दुहुं भाय॥

चौ० परसि जासु पद गोतम नारी। जड़तनुतजि दिबि गई सुखारी॥
१ मुनि प्रभु कृत जननी उद्धारा। सतानन्द हिय हर्ष अपारा॥
२ प्रभुपद बंदिबिनय बहु कीन्ही। अबिचलभक्तिमांगि मुनि लीन्ही॥
तब बिदेह सब सहित सुपासा। ल्याय टिकायउ सुखद निवासा॥
सब प्रकार सुख साज सजाई। कीन्ह महीपति अति पहुनाई॥
मुनिन सहितरघुपतिदुहु भाई। तेहि दिन तहँ निवसे सुख पाई॥
दुतिय दिवस गोतम सुत आये। सबहिं यज्ञगृह चले लिवाये॥
यजन भवन अतिसय छबि छाजै। जेहि बिलोकि अमरावति लाजै॥
ऋषि मुनिगन बहु बिप्र समाजा। बैठे देस देस के राजा॥
यच्छ रच्छ गंधर्ब घनेरे। बैठे कोटिन भट चहुं फेरे॥
३ नगर नारि नर भीर अपारा। जनु दूत जुरे सकल संसारा॥
सतानंद संयुत दोउ भाई। यज्ञ भवन आये मुनिराई॥

दोहा – ४ सतानंद कौसिक सहित, लखि सानुज रघुराज।
जनक नृपति संयुत उठे, हर्षित सकल समाज॥
रामलखनमुनि कौसिकहीं, करि आदर सिरनाय।
सर्वोत्तम परमोच्चथल, बैठारे नृप ल्याय॥
५ जउ बहुराजा राम ते, सभा प्रभा बढ़ि जाय।
रह उडुगन तउ चांदही, निसि चांदनि प्रगटाय॥

---

१ इसमें हर्ष संचारीभाव व्यंग्य है।
२ इसमेंभी परिव्रतिअलंकार है।
३ इसमें सिद्धविषयावस्तुत्प्रेक्षालंकार है।
४ इसमें प्रथमपर्य्यायालंकार है।
५ इसमें दृष्टान्तालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेहिछन राम सरूप सुभ, निजनिज भाव प्रमान।
देखत भै नर नारि सब, सत्य मरम नहिं जान॥
१ नृपन बीर तियगन मदन, निशिचर काल समान।
निज रच्छक सुरमुनिऋषय, लखि जनक प्रिय प्रान॥

चौ० तबनिजपुत्रहिं जनकपठायो। राज समाज सियहिं सो ल्यायो॥
संगसुमुखि बहु सखि मृगनैनी। गावहिं गीत सरस पिकबैनी॥
२ तेहि अवसर सिय रूप निहारी। भै अति प्रेम मगन नरनारी॥
तब तहं बहु बन्दीजन आये। जनक राज प्रण टेरि सुनाये॥
३ जो यह सिवधनु भंजन करिहैं। सियहिं बिआहिसबजगयसभरिहैं॥
सुनत उठे बहु नृप भटमानी। शिवधनु परसि भयउ बलहानी॥
कोटिन बिकट सुभट बल करिकै। बैठे हारि हृदय दुख भरिकै॥
कहकौसिकतेहिछनरघुपति सन। सिवधनुभंजि रखहु निमिपतिपन॥

दोहा—उपरोहित लङ्काधिपति, सर्बमाय तब आय।
सकल सभायुत जनक कहँ, कहन लग्यो समुझाय॥

चौ० मखमहिजा तव सुता सयानी। करन चहत लङ्कापति रानी॥
मम मिसिनृपतुमसबहिं निहोरी। बहु बिधि बिनयकही करजोरी॥
कन्या केवल परहित होई। राउ रङ्क गृहपति किन कोई॥
तजि प्रदान जेहि गति नहिं अन्या। अस बिचारि दीजै नृपकन्या॥

दोहा—अस कीन्हे सब भांति ते, है निमिकुल कल्यान।
ह्वैहैं मित्र कुटुम्ब तव, लङ्कापति भगवान॥

---

१ इसमें प्रथम उल्लेखालंकार है।
२ इसमें हर्षसंचारीभाव व्यंग्य है।
३ इसमें प्रतिज्ञालंकार व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दैहौ ध्रुव दुहिता कहूं, यांचत त्रिभुवन नाथ।
१ करहु सफल तसु यांचना, समुझि बंस गुनगाथ॥

चौ० नृप दसमुख बलसुयसप्रतापा। आजु सकल त्रिभुवनतल व्यापा॥
कह लछिमन तेहिछन प्रभुकाना। यांचत सिय दसमुख अज्ञाना॥
सहज पापमय जो निसिचारी। तेहि साहस अस अचरज भारी॥
सुनि लछिमन बचसमुझि सुधाई। कह रघुनाथ मन्द मुसुकाई॥
बिनु ब्याही कन्या जे आही। यांचि सकत सब जन तेहि काहीं॥
नीचहुं करि रुचि ऊंच सुहाहीं। है सो दोष जनक कछु नाहीं॥
जग बिजयी रावन बलवाना। ब्रह्मवंसभव सब जगजाना॥
परसुराम बर बीर बिहाई। जेहि जीत्यो षटमुख समराई॥
निजभुजबल त्रिभुवन जयमाहीं। दसमुख सम समरथ कोउ नाहीं॥
करिय जासु बिबरन सुनुभ्राता। कहिय सकल गुन अवगुन बाता॥
तजिबहु गुन लघु दोष बढ़ाई। पर निन्दा नहिं कीजिय भाई॥
पर अघ अवगुन मेरु समाना। निज सुभाव जेहि रज करि जाना॥
अति लघु गुनहुं करहिं बिस्तारा। ते सज्जन जग परम उदारा॥
सुनि निसिचर बच कह मुनिराई। भरि लोचन धनु देखहु भाई॥
जो तोरै यह धनु भटमानी। लहै सुता सो सब गुनखानी॥
नतरु सकल समुदाइ रिसाई। जाई भवन फिरि भय नहिं भाई॥
कहत पुरोहित सुनहु मुनीसा। यह न काज कछु ढिग भुजबीसा॥
करत चूर्णधनु छन महं बीरा। निज गुरु भाव समुझि हिय पीरा॥
२ सुनिहंसिकहकौसिकमुनिज्ञानी। तुमअति सत्यकहत यहबानी॥
गुरु निवास कैलास उखारो। तब न हृदय अस नीति बिचारो॥

---

१ इसमें निरूढ़ो लक्षणा है।

२ इसमें लक्षणामूलकगूढ़ व्यंग्य वा उत्तम काव्य है; यहां सत्यकेमुख्यार्थ का बाध होकर काकु से असत्य का अर्थ निकलता है अतएव यहां यह व्यंग्य है कि तुम अत्यन्त झूठ बोल रहेहो।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा – गृह उखिरती बेर महँ, कीन्ह न नेकु बिबेक।
अब धनु भय गुरु भाव गहि, सबहिं जनावत टेक॥

चौ० सुनि सावज्ञ बचनमुनि ज्ञानी। कहत असुर अतिक्रोधितबानी॥
जेहि इक कर जग-जय-यस पायो। दूसर कर कैलास उठायो॥
अपर अष्ट दस भुज जेहि केरे। लहे न काज जगत सब हेरे॥
करहु बिप्र निज हृदय बिचारा। तेहि शिव धनु भंजत कतबारा॥
मिथिलापतिहिं कहहु समुझाई। धनु तोरे नहिं अधिक बड़ाई॥
कहु मुनि जेहि कैलास उठायो। सो भुजबल अब कहां गंवायो॥
भंजि धनुष जानकिहिं बिआही। कहहु नृपति निजगृह लै जाहीं॥
जो न शक्ति निज निलय सिधावहु। जनि प्रलाप नृपबल बहु गावहु॥

दोहा – इमि प्रचारिमुनि निसिचरहिं, कह्यो रामभगवान।
बेगि भंजि शिव धनुष यह, करहु जनक कल्यान॥
सबँ अग्रह्वै ठाढ़ तब, सर्बमाय निसिचारि।
बंक बिलोकनि राम लखि, बोल्यो बचन प्रचारि॥
सिय बिबाह दृढ प्रणधरो, लङ्कापति बलवान।
तजहु कुरुचि निज चहहु जो, जग निवास कल्यान॥
गुरु आयसु धनु भंजनहि, चले अबहिं उठि राम।
जनक सुता भृगुकुलतिलक, फरके भुज दृग बाम॥
कोल कमठ अहि दिग्गजन, निज पदभार जनाय।
कह्योलखनरहियोसजग, जेहि महि उलटि न जाय॥
तब अति लाघव राम प्रभु, हरकोदण्ड उठाय।
तोरे सहजहिं केलिवत, कुण्डल सरिस नवाय॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ सुनि धनु खण्ड प्रचण्ड रव, कम्प सकल ब्रह्माण्ड ।
बहुरि चेति द्वय दण्ड महं, कह अस बचन अखण्ड ॥
२ ब्रह्मा बिष्णु महेशजू, तीन देव परधान ।
अब चौथो यह राम भे, जानत सकल जहान ॥

चौ० ३ तेहिछनसकलगगनअरुधरनी । हरषिहरषिकहप्रभुगुनकरनी ॥
नाचहिं गावहिं सब सुरनारी । सुमन बृष्टि भइ चहुंदिशि भारी ॥
जब द्वै खण्ड धनुष ह्वै गयऊ । निमिबंसिन मन अतिसुख भयऊ ॥
परमानंद मगन निमिराई । करत मनहिंमन राम बड़ाई ॥
करहिं सखिन कलमङ्गल गाना । बरषिसुमन सुर हनहिं निसाना ॥
निज करते जयमाल सुहाई । तब सीता रामहिं पहिराई ॥
४ दम्पति सुछबि परस्पर देखी । मिलन ललक हिय भयउ बिसेखी ॥
कनक-माल सिय कहं पहिराई । एक सखी तब कह मुसुकाई ॥
५ सुभ सुबरन ग्रंथितगुनभारी । हिय बर हार रखु यह प्यारी ॥
तब बहु दूतन जनक बुलाई । पठये अवध नगर हरषाई ॥
सजि बरात दसरथ नृप आये । चारौ पुत्रन ब्याह रचाये ॥
प्रमुदित सुदिन साधि नृपनाह्न । सिय रघुबर कंह कीन्ह बिबाह्न ॥
जनक-सुता उर्मिला सयानी । ब्याहो लखन सकल गुनखानी ॥
माण्डविस्रुतिकीरतिअतिसुन्दरि । भरत शत्रु सूदन कहँ सो बरि ॥

---

१ यहां सब ब्रह्माण्ड बासियों का भयस्थायीभाव व्यंग्य है ।
२ इसमें तृतीय तुल्ययोग्यतालंकार है ।
३ इसमें लक्षितलक्षणा और हर्ष संचारीभाव व्यंग्य है ।
४ इसमें पूर्वानुराग और अन्योन्यालंकारभी है । ललक = प्रीतिपूर्वकचाह
५ इसमें समासोक्ति अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—व्याह रीति क्रमते सकल, व्याहे नृपति कुमार।
१ भुवन चतुर्दश भरि बढ़यो, ब्रह्मानन्द अपार॥
२ चारौ बर दुलहिन मिलै, अति सोभा सरसात।
तद्यपिसियरघुपतिमिलन, सबहिंअधिक अधिकात॥
३ राम व्याह आनन्द अति, व्याप्त सकल संसार।
जनक नगर नर नारि सब, करत मङ्गलाचार॥

चौ॰ यह लखि सर्व माय निसिचारी। बोल्यो सकल समाज प्रचारी॥
सुनहु सभासद सकल भुवारा। कहौं धर्म बच पुनि इक बारा॥
सब मिलि कीन्ह व्याह यह जोई। सो सब विधि अतिअनुचितहोई॥
सीतहिं सौंपि अन्य जनकाहीं। रहिहैं कुशल सहित कोउ नाहीं॥
विश्व विदित रावन प्रभुताई। जेहि सब त्रिभुवन खबस बसाई॥
राज समाजहिं मारि प्रचारी। सियहरिसकत अजहुं विबुधारी॥
अस निज बिक्रम अछत अपारा। करत विनय जो बहुत प्रकारा॥
सो नृप तासु सुजनता जानौ। अरु आपन बड़ भाग प्रमानौ॥

दोहा—इन्द्रादिक सुर असुर सब, जेहि भय नावत माथ।
त्रिभुवन नाथ कुटुम्बिता, क्यों न करत निमिनाथ॥

चौ॰ करहु यथारुचि कहौं प्रचारी। यहि कर फल पैहौ दुखभारी॥
यक दिन अवसि समय अस अइहैं। सीता लङ्क नगर चलि जैहैं॥
सुनि निसिचर बच लछिमन रोषि। छमहु दूत कहि प्रभु परितोषि॥
असकहि असुर लङ्क गढ़ आयो। लङ्केसहिं सब मरम जनायो॥

१ यहां आधारसे आधेयबड़ाहोने के कारण प्रथम अधिकालंकार है।
२ यहां संयोग शृङ्गार का वर्णन है। ३ इसमें पर्य्यायालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुनि रावन क्रोधित ह्वै धायो । सचिव बृन्द तब जाय फिरायो ॥
प्रथम स्वयम्वर सिय छबि देखी । भयो दसानन मुग्ध बिसेखी ॥
पलटि भेष करि कोटि उपाई । जब शिवधनु नहिँ सक्यो उठाई ॥
तब निज उपरोहितहिँ बुलायो । सिय यांचन तिरहुत पठवायो ॥

दोहा – राम आगमन दिवस ते, सूर्पनखा लिय साथ ।
माल्यवान अति गुप्त गति, रह्यो नगर निमिनाथ ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते
द्वादशःसर्गः

दोहा—देखि राम बल बिभव अति, सुर नर मुनि कृतमान ।
सहि न सक्यो यह असह दुख, माल्यवान मतिमान ॥

चौ॰ कहत सचिवकरि हृदयबिचारा । अहो राम बल अगम अपारा ॥
हति ताटका सुभुज बरिवण्डा, । हरकोदण्ड कीन्ह द्वै खण्डा ॥
ऋषि मुनि सकल बिप्र तपधामा । निजनिज शक्ति समर्पे रामा ॥
मुनि अगस्ति प्रिय पाहुन कीन्हो । बहु आयुध दाइज महं दीन्हो ॥
प्रथमहि सिद्धाश्रम जब आयो । बहुत सस्त्र कौशिक ते पायो ॥
देखि राम अद्भुत प्रभुताई । भये साहसिक सुर समुदाई ॥
सुनि कह सूपनखा सिरनाई । मनुज राम किमि भय अधिकाई ॥
यदपि राम लघुमनुज प्रमाना । तदपि आजु सब जगत प्रधाना ॥
१ यदपि जगत बहुबीर जमाती । रामहिं बीरवती महिख्याती ॥
२ रहत गगन उडुगन बहुजाती । चांदहि चांदनि गति कहाती ॥

१-२ इनदोनों में दृष्टान्तालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—आजु चराचर जगत सब, नहिं कोउ राम समान।
सुता बिआहे जनक जेहि, करि रावन अपमान॥

चौ० १ जौ न रामबलबेग सम्हरिहैं। तौनहि रावन राज ठहरिहैं॥
२ मचिहैं देश उपद्रव भारी। एक म्यान नहिं द्वै तरवारी॥
३ रावन राम भये अब कैसे। यक बिल बसै सरप दोउ जैसे॥
देखु जनक नृप कृत अपमाना। रावन अधिक राम कहं जाना॥
देश देश के भूपति जीते। आये सीय स्वयम्वर जीते॥
सुर नर नाग असुर गन नाना। परम प्रबल रामहिं सब जाना॥
इन्द्रादिकन लोक पति जेते। मिलन चहत रामहिं अब तेते॥
देखि सुपात्र जगत हितकारी। आजु राम प्रिय सब नर नारी॥
४ सबहिं बनै कर काम बनावैं। बिगरे कहं कोउ काम न आवैं॥
५ जियतहिं कर हित प्रियबारै। मरत प्रेत गुनि भवन निकारैं॥
कहि अस बचन सचिव बिलखायो। तेहिछिन एक दूत तहं आयो॥
भृगुपति लिखित पत्र बरदीन्हो। रावन सचिव हरषि उठि लीन्हो॥

दोहा—पढ़त पत्र सुनि निशिचरी, कहत बचन अनखाय।
लिखैं यथा प्रभुदास कहं, तिमि यह पत्र लखाय॥

चौ० तात न मोहि अस बात सुहाई। यह द्विज दीन गर्व अधिकाई॥
कहत सचिव सुनु सुता सयानी। मुनि महिमा नहिं जाय बखानी॥
तप विद्याबल बुद्धि निधाना। महाबीर तिहुं लोक प्रधाना॥
तुलि न सकैं सुरमुनि कोउ ताही। डरत सकल निसिचरबलजाही॥

---

१ इसमें संभावनालंकार है। २ इसमें लोकोक्तिअलंकार है।

३ इसमें छेकोक्तिअलंकार है।

४·५ इन दोनोंअर्द्धालियों मे लोकोक्ति अलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कार्तवीर्य्य शिव सुत बरबीरा । कीन्ह बिजय रन मुनि रनधीरा ॥
प्रथम जासु बल बिभव निहारी । मिल्यो दसानन युक्ति बिचारी ॥
शिष्य भाव गहि आश्रम जाई । अस्त्र सस्त्र बिद्या बहु पाई ॥
गुरु समान मानत सब भांती । तउ सतर्क रह समुझि अराती ॥
निज भुजबल त्रिभुवन जयकारी । आजु न कोउ मुनि सम भटभारी ॥
बिपुल बार छत्रिय छय कीन्हो । अब अवलम्ब शान्त ब्रत लीन्हो ॥

दोहा—इमिवरनतमुनिगुन अगम, सचिव सोच अधिकान ।
बढ़िहिं बैरलगिध्यानधरि, पुनि कह बचन प्रमान ॥
सुनहु सुता सम्मत सुखद, शंभु शिष्य भृगुराम ।
सिव धनु भञ्जन श्रवन सुनि, सहि न सकैं बलधाम ॥

चौ० अवसि राम सन समर मचैहैं । जौ कदापि दोउ रन बिनसैहैं ॥
तौ सधिहैं सब काज हमारा । बिनु प्रयास दुहुं रिपु संहारा ॥
जौ कदापि भृगुपति रन जीतैं । मरिहैं राम असुर दुखवीतै ॥
जौ रघुपति जीतैं मुनिकाहीं । सो च्छत्रिय बधिहैं द्विज नाहीं ॥
भये पराभव मुनि बन जैहैं । तेहि आयुध सब रघुपति लैहैं ॥
प्रथमहि राम परम बलवाना । अब ह्वैहैं बहु काल समाना ॥
तब न बनै निशिचर हित काजा । नसिहैं राज दसानन राजा ॥
इन्द्रादिक रावन अरिजोई । मिलिहैं आय राम सब सोई ॥
सुरनर असुर चराचर जेते । कीन्ह्यो बिजय दसानन तेते ॥
सहसबाहु दसकन्ध हरायो । निज अतुलित भुजयश जग छायो ॥
परसुराम तेहि सहज बिनासी । भये जगत बल बिक्रम रासी ॥
जीत जो राम मुनिहिंरनमाहीं । तब तेहि सम बल जगकेहुनाहीं ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो० १—बहुरि सुता रन त्यागिजौ, करैं साम दुहुँ राम ॥
तब निशिचर गति होय ज्यों, भयेकोटि बिधिबाम ।
सुनिनिसिचरि बोलीबिलखि, प्रभुकरतबतबकाहि ॥
करहुउचित सो यतनअब, समुझिसुमति अवगाहि ।

चौ० बहु प्रकार हिय सोच बिचारी । कहत सचिव धरि धीरज भारी ॥
सुनहु सुता मम मन अस आवै । शिवधनु खंडन मुनिहिँ सुनावैं ॥
सुनि निशिचरि बोली दुखबानी । कहहुआपुदुहुंबिधि किमिज्ञानी ॥
प्रथम कह्यो बहु भय यहि होई । बहुरि सराहहु सम्मति सोई ॥
कहत सचिव भरि हृदय उसासा । सुनहुसुतादुहुँ बिधिअतित्रासा ॥
कहि न जाय कछु निश्चित काजू । परो आय असमंजस आजू ॥
करिय प्रचार कि गोइय ताही । कौनहुं बिधि चित थित ह्वै नाहीं ॥
सुगम अगम अब निज हिय जोई । दुइमहं एक किये भल होई ॥

दोहा—मम बिचार शिवधनुचरित, करहु मुनिहिं परचार ।
होय अवसि भावी प्रबल, जो इच्छा करतार ॥
परहिं जो पुनिअवरेब कोउ, तबनिजमतिअनुसार ।
देखि देश अवसर सकल, करिहौं कछु उपचार ॥
हृदय सोचि इमि युक्ति बहु, परसुराम ढिग जाय ।
शिवधनु भंजन चरित सब, कह्यो प्रपंच बढ़ाय ॥

चौ० इहां जनकपुर सब नर नारी । करत ब्याह उत्सव अतिभारी ॥
अनुजसहित प्रभु रमा निवासा । कोहबर गृह बैठे रनिवांसा ॥
यह सुनि सब पुर युवति जमाती । अति हरषित चित चारिहुजाती ॥
२ धाय आय देखहिं प्रभु कैसे । चितव चकोरि सरद शशि जैसे ॥

---

१ इसमें उदाहरणालंकार है।   २ इसमेंभी उदाहरणअलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चहुं दिसि बैठी सखी सहेली । अति सुन्दरि नागरि अलबेली ॥
जनक जाति जित युवति जमाती । अन व्याही व्याही मनभाती ॥
अति सुन्दर प्रभु रूप निरेखी । रीझि रही हिय प्रीति बिसेखी ॥
पुलकि पसीजि उमग अधिकाई । प्रभुहिं घेरि बैठी चहुंधाई ॥

दोहा—१ कोहबर बैठी सुतिय गन, सजि सोरह शृङ्गार ।
लगी हाट जनु रूप की, मन्मथ नगर बजार ॥
चन्द्रबदन झलकत अलक, तेहि पुनि मांग सँवार ।
अमियलोभजनुअहितियन, ससिहिंकियउदुइफार ॥
सोहत बनिता बृन्द महं, बन्धु सहित भगवान ।
चतुर्व्यूह ह्वै जनु मदन, बिहरत रतिउद्यान ॥
चहुंदिशितेघिरिसुमुखिगन, प्रभुहिंलखहिं मनलाय ।
मनहु अमियभख लोभ ते, ससिहिं नखत रहछाइ ॥

चौ० २ चारो कुंवर मनोहर सोभा । देखत सकल युवति मनलोभा ॥
रामहिं देखि अधिक अनुरागीं । मन अभिलाष करन सब लागीं ॥
बहु विधि देवी देव मनाई । चाहहिं प्रीति रीति मनभाई ॥
रामहिं परम प्रेम प्रिय जानी । सौंपि अपनपौ सकल सयानी ॥
अनमिषचखप्रभुमुखछविदेखहिं । को मैं कहां न कछु हियलेखहिं ॥
सब उरस्थ प्रभु सब गुन जानी । प्रीति रीति सब तिय पहिचानी ॥
करि सन्मान सबहिं सबभांती । कहत प्रीतिमयि नीति सुहाती ॥
सुनहुसुमुखिसब सुभगुन खानी । करहु न लोक बेद पथ हानी ॥
निज तिय धर्म समुझि कुल जोई । करहु सुकाज उचित जस होई ॥
मम दर्शन सिख प्रेम प्रभाऊ । सपनेहुं तुमहिं विपति नहिं काऊ ॥

१ इन चारो दोहाओंमें उत्प्रेक्षालंकार है । २ इसमें मोहसंचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नखसिख लौ सबभांति अनूपा । सबहिं लखब निजपतिमसरूपा ॥
सुकृति सुमतिसुभगुनपुनिजोई । प्रगटहिं हिय नित नव सब कोई ॥
सुख सम्पति नित नव चहुँपासा । भुगुतिमुकुतिमिलिहैं अनयासा ॥
अस मन समुझि तजहु दुखभारी । मैंसबबिधि तुमसब हितकारी ॥
प्रेम सहित सुमिरौ मोहि जबहीं । पैहौ प्रगट दरस तुम तबहीं ॥
काय बचन मन प्रेम सुभाऊ । मैं तव बस सब छन सब ठाऊं ॥

दोहा—सुनहुसुमुखिमोहिसबहिं ते, प्रेमहिं परम पियार ॥
जेहिबसह्वै महि धरतहौं, पुनि पुनि बहु अवतार ॥

चौ० जब हम धरहिं कृष्ण अवतारा । होय सफल मनकाम तुम्हारा ॥
प्रभु मरयाद पयोधि अगाधू । प्रीति नीति पथ कुशल सुसाधू ॥
इमि परितोष सुतिय गन कीन्हा । निजपतिप्रेमसबहिं मन दीन्हा ॥
लखि गति सब सुरतिय गुनखानी । प्रभुहिं प्रसंसहिं मन अरु बानी ॥
पति भावना हृदय दृढ़ धारी । रामहिं अजहुं भजहिं जे नारी ॥
ते साकेत अवसि अवतरहीं । राम प्रिया ह्वै सब सुख करहीं ॥
निसिचर प्रेरित क्रोध बढ़ाये । जनक द्वार तेहि छन मुनि आये ॥
जेहिछनसखिननिकट रनिवांसा । करत राम इमि बाक बिलासा ॥
तहं दौरत बालक इक आयो । परसुराम आगमन जनायो ॥
सुनहु राम मुनि छत्रिय द्रोही । तुमहिं बुलावन पठयउ मोही ॥
शिवधनु भंजन सुनत रिसाते । मारन चहत तुमहिं परसाते ॥
सुनत बचन हर्षित उठि तबहीं । मुनि सन मिलनचलेप्रभुजबहीं ॥
धाय आय सब सखि समुदाई । बिनय बरजि रामहिं बैठाई ॥
कहहिं सखिन सुनु राम सुजाना । मुनि छत्रिय कुल समन समाना ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—कहत बिहंसिप्रभुसुनहुसखि, मुनि गुनरासि महान ।
कहि केवल तेहि चत्रिअरि, करियन अस अपमान ॥

चौ० मुनिपुनिपुनिछत्रियछयकीन्हो । सकलअवनिकश्यप कहँ दीन्हो ॥
निज धनु ते जल जलधि हटायो । गिरि महेन्द्र बरबास बनायो ॥
दससुख समर पराभव दाता । सहसबाहु नृप जग बिख्याता ॥
परसुराम तेहि सैन समेता । चढ़ि अकेल मारो रनखेता ॥
सो बल देखि उमा बिलखाई । अस सुत ह्वै शिव बिनय सुनाई ॥
सखिन निकट मुनि गुन अवगाह्ल । इमि सप्रेम बरनत रघुनाह्ल ॥
तेहि छन तहं दूसर सिसु आयो । परम त्रसित अस बचनसुनायो ॥
परसुराम करि क्रोध महाना । आवत तियपुर समन समाना ॥

दोहा—सुनत बचन प्रभु चह्यो जब, चलन बिप्रबर ओर ।
पकरिबसनचहुंदिसिसखिन, कियबिलापअतिघोर ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते
त्रयोदश:सर्गः

चौ० तेहि छन अन्त:पुर चहुं ओरा । ब्यापे बहु बिलाप दुखघोरा ॥
प्रभु बहु भांति सखिन समुझाई । चले कछुक मगु तिनहिंबिहाई ॥
तब लगि सीता सखिन सिखाई । कहन लगी प्रभु सन्मुख आई ॥
सुनहु आर्य्यसुत धर्मनिधाना । करियन यहि बिधि मम अपमाना ॥
अनुगामिनि मैं चेरि तुम्हारी । आइय प्रभु कहं ताहि बिसारी ॥
१ थर थरकम्पतसियहिं निरेखी । हंसे राम लखि प्रीति बिसेखी ॥

१ इसमें कम्पसात्विकानुभाव है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तव अति निकट भयउ रव भारी । कहां राम त्रिभुवन जयकारी ॥
भंजि शंभु को दण्ड अखण्डा । तिय ढिग दुरै कि अस बरिवण्डा ॥
सुनि मुनि वचन चले रघुराई । धाय धरी सिय धनु अकुलाई ॥
सजल नयन ह्वै कह पुनि बानी । सुनहु बिनय क्षम रघुकुल ज्ञानी ॥

दोहा—नाथनआवहिं जबहिंलगि, निमि रघुकुल दुहु भूप ।
मिलन न दैहौं कबहु हठि, तुमहिं बिप्र यमरूप ॥

चौ० बिहंसि राम बोले मृदु बानी । सुनु बिदेह नृप सुता सयानी ॥
जौ तुम निज हठ बहुत बढ़ैहौ । तजिधनु मैं मुनि निकट सिधैहौं ॥
पुनि तहं भइ असधुनि गंभीरा । कहां राम त्रिभुवन बरबीरा ॥
कह सिय जाहु जो प्रभु धनु त्यागी । रखिहौं रोकि सबल पद लागी ॥
सुनिरघुपतिसियअतिप्रियबानी । कहत बिहंसि मुख सुनहु सयानी ॥
पहुंचे परम निकट मुनिनाहू । अजहुं भवन अन्तर तुम जाहू ।
ह्वै छत्रिय तिय सब गुनखानी । होहु न यहि बिधि भीरु सयानी ॥
प्रिय यहि बिधि तव हिय कदराई । नासति दुहु कुल सुयसबड़ाई ॥
निमि रघुकुल बर धर्म निरेखी । धरहु धीर निज हृदय बिसेखी ॥

दोहा—यह मुनिबर भृगुकुल तिलक, सकल सुभटबिख्यात ।
जेहिप्रकारतेमिलहिं मोहिं, सो मम अति हित बात ॥
तब सिय सब सखि बहिर्गृह, देखे भृगुकुल पाल ।
१ आवत काल कराल जनु, धरे रूप बिकराल ॥
२ तरुनअरुन तनु तेज अति, कर कुठार यमधार ।

१ इसमें उक्तविषयावस्तुत्प्रेक्षालंकार है। २ इसमें रूपक और उत्प्रेक्षालंकार की संसृष्टि है; और तनुतेज को तरुणअरुण और कुठार को यमधार कहने से शुद्ध सारोपालक्षणा है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनहु ज्वलित पावक प्रबल, बिपुल जटा शिरभार ॥
१ चरन भार कम्पत अवनि, चलत उताहुल चाल।
डगमग ह्वै लघु तरनि ज्यों, चढ़त दीर्घ मुण्डाल ॥
डुमिदम्पति बतरात तहँ, मुनि पुनि दीन्ह पुकार।
जौ न मिलहु तुम राम अब, करौं सकल पुर छार ॥

चौ० सुनत राम कह मुनि ढिग आई। यह सेवक तव अहै गुसाईं ॥
चकित सुनत मुनि रघुपति बानी। साधु साधु कहि गिरा बखानी ॥
२ रबि कुल प्रभव सत्यतुम रामा। आयहु मरन जानि मम कामा ॥
मम प्रभाव बल लखि सब भांती। मिलेहु सुखिन अभय करिछाती ॥
सुनिमुनिबच सखिगन बिलखाई। शान्ति जपहिं सुरसुकृत मनाई ॥
३ अतिअतुलितछबिराममनिरेखी। भयो मोह मुनि हृदय बिसेखी ॥
हृदय सराहत बारहिं बारा। अहो! राम सुखमा सुख सारा ॥
बहुरि हठात् हृदय अनचाहे। प्रभुदिसिते चख फेर न चाहे ॥

दोहा—४ फेरतहू पै ना फिरे, फेरि थके मुनिराय।
प्रभु छबि सागर बुड़िरहे, युग चख भख बरियाय ॥
५ मुनिरूंधतहियप्रबलगति, करिश्रमबिबिधप्रकार।
जल निधि जल ज्यों दरसमुद, उमगत बारम्बार ॥
रहि यहि बिधिबड़िबेर लगि, पुनिभवितव्यप्रमान।
करिथिरचितअति धीर धरि, बोले भरि अभिमान ॥

चौ० कहहु सत्य केहि शिवधनु तोरा। तेहिकाटौं यह परसु कठोरा ॥
६ कोटिन चन्द्र सरिस जो होई। आजु अवसि मारौं मैं सोई ॥

१. इसमें उदाहरणालंकार है। २ इसमें यथा योग्य का संग हने से प्रथम समालंकार है। ३ इसमें मोहसंचारीभाव व्यंग्य है। ४ इसमें परंपरितरूपकालंकार है। ५ इसमें पूर्णोपमालंकार है! ६ इसमें प्रतिज्ञालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निमिपति प्रण गुरु आयसु मानी । मैं भंज्यो शिव धनु सुनु ज्ञानी ॥
सुनि अस अभय बचन रघुराई । हिय रिसि जरत कहत मुनिराई ॥
तैं नृपसुतनिज बल अभिमाना । अहमिति सबहिं करत अपमाना ॥
सिवधनुसक्तिबिदित नहिं तोही । जानसि नहिं मोहि छत्रियद्रोही ॥
असकहि पबि इव गरजि अपारा । चाहत करन कुठार प्रहारा ॥
उठै न कर किय कोटि उपाई । कह रघुपतितब मृदु मुसुकाई ॥

दोहा—प्रभु तवतपबल अगम अति, शिवधनु बिभवमहान ।
आनि सकौं किहि भांति ते, मैं बालक अज्ञान ॥

चौ० १ करिय न कोप वृथा मनमाहीं । बिप्रबंस मम मान्य सदाहीं ।
यह छत्रिय कुल रीति सुहाई । करहिं न गो द्विज पै प्रभुताई ॥
हमहिं तुमहिं अन्तर बड़भारी । भुजभवभूप मुखजश्रुतिधारी ॥
सेवक शिर निज चरन निरेखी । करहु जो ह्वै रुचि हृदय बिसेखी ॥
सतानन्द भृगुपति सुधि पाई । आये तहां सहित निमिराई ॥
पितु आगमन जानि तब सीता । गई भवन सह सखिन पुनीता ॥
सुनहु राम कह जनक सुजाना । होहु न बत्स कछुक भयमाना ॥
सतानन्द भृगुपति दिसि देखी । कहत बचन करि क्रोध बिसेखी ॥

दोहा—२ निमिरघुकुलबरकमलरबि, रामसकल सुखधाम ।
प्रविसिभवनअन्तरतिनहिं, चहहु अशुभकेहिकाम ॥

---

१ इसमें बिप्रबंससे यह ध्वनित हुआ कि हम आपको नहीं परन्तु आपके ब्राह्मण बंस को मान्य करते हैं और लक्षितलक्षणा से यह अर्थ निकला कि तुम्हारा अपमान करने से दोषभागीहोंगे । अतएव यह लक्षणामूलागूढ़ व्यंग्य है ।

२ इसमें परंपरितरूपकालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० तेहि अवसर दासी इक आई । जनक नृपति सन विनय सुनाई ॥
नाथ सकल सखिगन अरु सासू । बरहिं बुलावत हैं रनिवांसू ॥
करिहैं कछुक नेग व्यवहारे । आयसु होय राम पगुधारैं ।
सुनि नृप सतानन्द सुखमानी । रामहिं आन कह्यो मृदुबानी ॥
तब प्रभु परसुधरहिं सिरनाई । बोले अति मृदु गिरा सुहाई ॥
प्रभु गुरुजन आयसु अस होई । कहहु जो उचित करौं मैं सोई ॥
सुनत बचन हंसि कह मुनिनाहू । आवहु बेगि भेंटि सबकाहू ॥
निपटि बेगि अइहौं अति आसू । असकहि राम गये रनिवांसू ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारबिरचिते चतुर्दशःसर्गः

दोहा—तेहि छन सचिव सुमंत तहं, आय कह्यो सिरनाय ।
गुरु बसिष्ठ कौशिक सबहिं, पठयो बिनय बुलाय ॥

चौ० सुनत बचन सब कीन्ह पयाना । जहँबशिष्ठकौशिक मतिमाना ॥
मुनि बशिष्ठ कौशिक ऋषिराई । मिलि भार्गव कहं कीन्ह बड़ाई ॥
तब बिदेह दसरथ नृप ज्ञानी । गे शिव भवन हेतु कछु जानी ॥
तेहि छन मुनि कौसिक मतिधीरा । कह भृगुपतिसनबचन गँभीरा ॥
१ सुत दसरथसम नृप जग माहीं । अहैत्रिकालत्रिजगकोउनाहीं ॥
बिधि हरिहर सुर सकल सुजाना । करहिं जासु बड़ भाग्य बखाना ॥
इन्द्रादिक सब सुर संघाता । बसहिं जासु भुज बल सुनुताता ॥
सब सुख सम्पति सुकृति निधाना । जासु चरित तिहुँ लोक प्रमाना ॥
आजु जगत सचराचर जेते । दसरथ गुनगन बरनत तेते ॥

१ यहां भूत और भावी का प्रत्यक्ष वर्णन होने के कारण "भाविकालंकार" है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—कहिकिसके कोउ कछुक तसु, महिमा अगम अपार ।
राम लखन भरतादि सम, जासु सुवन जग चार ॥
सो दसरथ अति जरठ नृप, निज नृप नीति प्रमान ।
तुमहिंबिनयकरिबहुतबिधि, चहत अभय बरदान ॥

चौ० असबिचारिसुनुसुमतिसुजाना । तजहु बिरोध असुभप्रदनाना ॥
कह भृगुपति तव बचन न टरिहौं । रामहिं मारि कहहु सो करिहौं ॥
आजु सकल सचराचर माहीं । रामसरिस अतिबल कोउ नाहीं ॥
बाल बयस जेहि भुज बल ऐसे । प्रगटै कहहु युवापन कैसे ॥
यहि अवसर तव बच अनुसारा । तजौं जो तेहि बिनु किय संहारा ॥
तौ भविष्य जन कहै न कोई । मुनि यहि तज्यो कृपा उरजोई ॥
कह बशिष्ठ तुम द्विज श्रुतिधारी । शस्त्रग्रहन नहिं बृत्ति तुम्हारी ॥
निज सुचिपथ अवलम्बहु ताता । उभयलोक सुख सम्पतिदाता ॥
१ शमदमादि नव कर्म सुहावन । बिप्रन सहज धर्म अति पावन ॥
२ जेहि षटसत्रु सहज जय होई । बिप्रन उचित समर सुभसोई ॥
तजहु परसु अस हृदय बिचारी । बिप्र बृत्ति यह निन्दित भारी ॥
कीजै तात बिचार बहोरी । अस निठुराई कियहुँ बड़खोरी ॥

दोहा—३ सुकृत सिन्धुरघुबंसमणि, ज्ञान जलधि निमिराज ।
भे याचक तव आय युग, करहु न तिनहिं अकाज ॥

चौ० कह भृगुराम सत्य सब सोई । पै रिपु त्याग उचित नहिं होई ॥
रामहिं निधन किये बिनु आजू । शिव ढिग जात लगत मोहिलाजू ॥

---

१ शम, दम, तप, शौच, क्षमा, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिक्य येही नव विप्रों के कर्म हैं । २ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य, येही षट रिपु हैं ।
३ इसमें शुद्धसारोपालक्षणा है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह कौसिक सुनु तात सुजाना । जौ गुरु रति तव धर्म प्रमाना ॥
तौ हम सब आयसु सिखमानहु । सब प्रकार निज गुरु पहिचानहु ॥
हौं तव पितु मातुल सुनु ताता । मुनि बसिष्ठ प्रपितामह ख्याता ॥
सतानन्द भ्राता बर तोरे । तिन अपमान करहु जनि भोरे ॥
सुनि भृगुपति कह गिरा सुहाई । सब मम पूज्य सबहिं बिधिसाईं ॥
प्रभु आयसु सिख सपनहु टारे । चढ़ै अवसि पातक सिरभारे ॥

दोहा—सो अघ क्षयहित करब बरु, तप ब्रत बिबिध बिधान ।
शस्त्र ग्रहन बर बिमल ब्रत, उचित न अस अपमान ॥

चौ० कहौं सुभाव सत्य निज तोही । मोचहुं अधिक मान प्रिय मोही ॥
बिमल ब्रह्मकुल धरि अवतारा । भयउ जो क्षत्रिय कर्म हमारा ॥
तौ बिधिब्रत पालन तसु करिहौं । रामहिंत्यागिअयस नहिं मरिहौं ॥
प्रथम मुनिन सिख आयसु मानी । लियजोशान्तिब्रतसुनुमुनिज्ञानी ॥
तासु प्रगट फल देखहु आजू । भये प्रबल अति राज-समाजू ॥
१ मोर शान्ति ब्रत सलिल सिंचाई । बढ़े नृपति गन तन समुदाई ॥
तेहि महँ राम शत्रु अति घोरा । है सब भांति बध्य सो मोरा ॥
२ मारि राम गुरुऋन सबभरिहौं । तबसुखपायबिपिन तप करिहौं ॥
जौ यह काज बिघ्न कोउ पारै । तौ हमसब निमि रघुकुल मारैं ॥
बहुरि प्रगटि निज अद्भुत करनी । क्षत्रिय रहित करौं सब धरनी ॥
३ सुनि भृगुपति अतिगर्बित बानी । कह क्रोधित गोतमसुत ज्ञानी ॥
अब जनि बोलहु बात बढ़ाई । जाहु भवन तजि प्रथम सुराई ॥

---

१ इसमे निरवयवरूपकालंकार है । २ इसमें रूढ़ीलक्षणाहै ।
३ इसमें अमर्ष संचारीभाव और चतुर्थ उल्लासालंकार है और यहां से लेकर अध्याय समाप्त पर्यन्त रौद्र रस का बर्णन है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Awasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहहु सुकौन सुभट जगमाहीं। जो छुइ सकै जनक परिछाहीं॥
प्रान अधिक प्रिय तेहि जामाता। रामहिं बधब असम्भव बाता॥

दोहा—१ जेहिमिथिलाधिपभवननित, बहुब्राह्मनहितहोय।
अछत ब्रह्मकुल सो नृपहिं, भयउ अशुभ जौ कोय॥
धिक ब्राह्मन तप तेज तब, धिकश्रुति धर्म अपार।
कोटिकोटिधिकमोहि पुनि, सहित सकल परिवार॥

चौ० सुनि कौसिक गोतमसुत बानी। साधु साधु कहि गिरा बखानी॥
सुत तुम सन उपरोहित पाई। भे कृतकृत्य आजु निमिराई॥
२ जेहि प्रदेस तुम सम द्विज होई। सपनहुं तहं कि रहै दुख कोई॥
जनक अधिक प्रिय प्रान तुम्हारे। सो किमि सह यह दुख अनियारे॥
कह भृगुराम क्रोध करि भारी। सुनु रे गोतम सुत कुविचारी॥
३ तुम सम अमित बिप्र अभिमानी। नृपन हेतु करि हठ अज्ञानी॥
निज द्विज तेज गर्ब अतिपागे। काल बिबस सन्मुख भे आगे॥
बहुरि मोर अति तेज निरेखी। जरे मरे भय भगे बिसेखी॥

दोहा—उपरोहिति रत अधम तुम, सेवक नित यजमान॥
करहु अन्यथा गर्ब अस, बलि पशु सरिस अजान॥
४ भुज उठायपुनि प्रणबचन, कहन लगे तप धाम।
काटौं जौ सिर राम नहिं, तौ मैं नहिं भृगुराम॥

---

१ इन दोनो दोहाओं में संभावनालंकार है। २ इसमें काकु बक्रोक्ति है।
३ यहां तीनो पद्यों में प्रथम तुल्ययोग्यतालंकार है।
४ यहां प्रतिज्ञालंकार और परशुराम जी का क्रोधस्थायीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० १ मुनिगौतमकहअतिरिसिबानी । सुनुरे दुर्विनीत अभिमानी ॥
२ कुमतिकुपतिकृतिकरिदिनराती । भैतुमकुपति कुपति सबभांती ॥
३ सुनि अहिविष से बचन तुम्हारे । करकमलन कलमलत हमारे ॥
अब जनि बोलहु गर्ब बढ़ाई । मैं जानत भल तव प्रभुताई ॥
४ तुमसे तुमहिं महाभट भारे । तुम्हरे बच से बचन तुम्हारे ॥
५ जनमिबिमलब्राह्मनकुल माहीं । तुम सब कर्म कीन्ह असचाही ॥
धार्मिक प्रबर बिप्र जगमाहीं । अब यहियुग तुम सम कोउ नाहीं ॥
जानत आजु भुवन दससचारी । जस तुम बिप्र महा ब्रत धारी ॥

दोहा—मख दीक्षित क्षत्रियन बध, जननि प्रान अवसान ।
तिय गर्भक अर्भक दलन, तव कृत कर्म प्रधान ॥

चौ० सुनि भृगुपति कह क्रोधित बानी । रे द्विज अधमदुष्ट अभिमानी ॥
तैं मम बल अवलौं नहिं लेखे । बोलत बचन काल जनु देखे ॥
कहु सो कौनकाज जगमाहीं । जेहि मैं सविधि सिद्ध किय नाहीं ॥
कह गौतम सुनु सठ भटमानी । तैं निज कुलकलंक अघखानी ॥
कहौं कहां लगि कृत अघ तोरे । सहि न जातउर रिसि अब मोरे ॥
जौ नृप निज नय धर्म प्रमाना । तजहिं तुमहिं बिनु किये निदाना ॥

---

१ शतानन्दजी के पिता का नाम गोतम था अतएव शतानन्दको गोतम कह सकते हैं। गौतम शब्द गोत्र परक है। उत्तर रामचरित में आये हुये गौतम शब्द का अर्थ भी वहां पर गोत्र परकहीहै इसके अतिरिक्त वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, धर्मसूत्र, पुराण, दर्शन एवं जैन और बौद्ध ग्रंथों में गौतम के नाम पाये जाते हैं।

२ यहां यमक और छत्यनुप्रास दो शब्दालंकारों की संसृष्टि है; और कुपति शब्दका (१) पृथ्वीपति (२) निन्दित (३) अधमशिरोमणि तीन अर्थ है।

३ यहां उपमा, रूपक और परिणाम तीन अर्थालंकारों की संसृष्टिहै।

४ यहां छेकानुप्रास और अनन्वय अर्थात् शब्द और अर्थालंकारकी संसृष्टि है।

५ यहां कतिपय पद्यों में लक्षणामूलकगूढ़ व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ तदपि आजु तुमसठ हतभागी । भयहु सलभ ध्रुव मम कोपागी ॥
अस कहि हृदय महा रिसि छाई । शाप सलिल कर कमल उठाई ॥
कहन लगे यहि विधि रिसिबानी । सुनहु सभासबसज्जन ज्ञानी ॥
२ अब मैं भस्म करत यहि कैसे । करै छार लघु तृण पवि जैसे ॥

दोहा—यह अन्यायी दुष्ट द्विज, अति दुखप्रद संसार ।
ह्वै साखी देखहु सकल, जारि करत हौं छार ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारविरचिते

पञ्चदश:सर्गः

चौ० तेहि अवसर सुमन्त तहं जाई । सतानन्द सन विनय सुनाई ॥
प्रभु रिसि चरित जानि सबराजा । पठै मोहि लखि परम अकाजा ॥
नृप बहु भांति उभय करजोरी । तुमहिं शान्ति हित कह्योनिहोरी ॥
निज गृह प्राप्त अतिथि पहिचानी । दुष्टहुं चूक छमहिं जे ज्ञानी ॥
मुनि भृगुबंस प्रभव गुनरासी । तेहि बध किये होय अति हांसी ॥
बहुरि रामसिय मङ्गल माहीं । चहिय अमङ्गल कृति कछु नाहीं ॥
जेहि विवाह सुखसब संसारा । उचित कि तहं कछु द्विज अपकारा ॥
असविचारिहियरिसिपरित्यागहु । सहज छमा द्विज गुन अनुरागहु ॥

दोहा—सुनत बसिष्ठ सुमन्त बच, गहि बरबस द्विज हाथ ।
कीन्ह पान सब शाप जल, सुमिरि हृदय रघुनाथ ॥

चौ० कह गुरु बहुरि मनोहर बानी । सुनहु बत्स गोतमसुत ज्ञानी ॥
कहत अवधपति समुचित नीती । तुमहिं अवसि सो अब करतूती ॥

---

१ इसमें निरवयवरूपकालंकार है । २ इसमें उदाहरणालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सदा साधु नृप जग उपकारी। अरिहुं कृपाकर दोष बिसारी॥
सुत यहि छन दसरथ गति देखी। तजहु क्रोध धरि धीर बिसेखी॥
इमि गुरु कहि बहु नीति बुझाई। बिदा कीन्ह गौतम बरियाई॥
तब कौशिक भृगुपति दिसि देखी। कहन लगे इमि बचन बिसेखी॥
१ मानहु भार्गव गौतम बानी। न तु करिहैं सोउ मुनि बड़िहानी॥
सुनि सो बचन सभा गति देखी। भृगुपतिहियरिसिजरत बिसेखी॥
नयन तरेरि चितै चहुं ओरा। बोले बचन गर्व करि घोरा॥
अहह आजु जग चकित बिसेखी। नृप जीवित बटु गर्ब निरेखी॥

दोहा—करत थरहरी धाय तेहि, सकल सभा अज्ञान।
बारम्बार प्रसंसि बल, जनु बहु काल प्रमान॥

चौ० रक्तपटतदेखिशशहिं मृगराजू। आजु मगन दोउ राज समाजू॥
२ तीन काल त्रिभुवन भट नाना। जेहिढिग अतिलघुकीट समाना॥
तेहि मोहि आजु अधमबटु भखत। नृप समाज मुनिगनमिलिरखत॥
यहि कारन अब सबहिं चेताई। निज पौरुष कछु देत देखाई॥
४ तब अति रिसि स्वर ऊंचसुनाई। कहन लगे दोउ भुजा उठाई॥
सातौ दीप अवनि सब देसा। सुनहु सकल द्विज वृन्द नरेसा॥
तुम महं तप सुशस्त्र बल आही। अरु जो चहत राम बध नाहीं॥
सो सब आय भिरैं रन माहीं। मैं करि नास प्रथम तिन काहीं॥

---

१ यहां तुमभी मुनिहौ यह व्यंग्यहै और शतानन्द खूबमारैंगे, सो वाच्य के बराबरहै। अतः तुल्यप्रधान व्यंग्य है। २ इसमें अत्यन्त तिरस्कृत वाच्यध्वनि है। यहां व्यंग्यको अधिकाइ कहने को वाचकों ने अपने अर्थ छोड़े और लक्षणासे "शश" का अर्थ शतानन्द और "मृगराज" का अर्थ परशुराम हुआ। ३ यहां इन दोनो अर्द्धालियों में पंचम प्रतीपालंकार, भाविकालंकार और गम्योत्प्रेक्षालंकार की संसृष्टि है।
४ यहांसे लेकर रनिवांससे राम के आने पर्यन्त रौद्ररस का वर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—१ पुनिसबनिमिग्ररुरघुकुलहिं, सहितसैनपरिवार।
मारि एक सर सपथ शिव, करौं निमिष संहार॥
तेहि अवसर दसरथ जनक, सहित सकल परिवार।
२ अति द्रुत पद आये तहां, सुनिमुनिक्रोधअपार॥

चौ० तब बोले मैथिलपति ज्ञानी। करहु न वृथा गर्व अभिमानी॥
गयउ प्रथम अब सो दिन नाहीं। का करिहौ तुम बकत वृथाहीं॥
सुनि भृगुपति कह गर्वित बानी। तुम अति वृद्ध ब्रह्मबित ज्ञानी॥
सबबिधि तुमहिं साधु नृप जानी। अबलगि छम्यो कृपा उर आनी॥
देखौं आजु बढ्यो अभिमाना। बोलत बचन यथा मनमाना॥
सुनि बिदेह कह यहि विधिबानी। सुनहु सकलसज्जन मुनिज्ञानी॥
नृपति नीति कुलधर्म बिचारी। छमौं इनहिं सब दोष बिसारी॥
अब लगि कोउ न निमि कुलमाहीं। किय अपमान बिप्रकुलकाहीं॥
तदपि देखि यह परम अनीती। मिटन चहत अब निमिकुलरीती॥
अस अभिमान निरखि आराती। सहि रहिहैं रिसि छत्रियजाती॥
जौ ब्राह्मन कर कछु अपकारा। सहिय सीस धरि धर्म हमारा॥
पै अति अधम दुष्ट द्विज जोई। तेहि मद दमन दोष नहिं कोई॥

दोहा—कहक्रोधित मुनिबचनतब, सुनु मति मन्द अजान।
जानिवृद्धअतिसाधुतोहि, अबलगि किय न निदान॥
सोनहिंसमुझिबिसारिडर, बढ्योअधिकअभिमान।
प्राप्त शमन मुख सरिस अब, करन लगे अपमान॥

---

१ इसमें प्रतिज्ञालंकार है और उपादान लक्षणासे "कुल" शब्द से कुलवाले समस्त मनुष्यों का अर्थ समझिये। २ यहां क्रोधशब्दसे क्रोध संयुक्त बचन समझिये।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौ० असकहि क्रोधित परसु उठाई । चले काल इव नृप दिसिधाई ॥
मिथलेसहुं धनु बिसिष सम्हारी । भै सन्मुख भृगुपतिहिं प्रचारी ॥
देखि अवधपति परम अकाजा । धाय गहे भृगुपति अरु राजा ॥
पुनि मिथिलेसहिं कहत बुझाई । गहहु शान्ति नृप क्रोध बिहाई ॥
ज्ञानवन्त तुम अति गम्भीरा । जग बिख्यात परम रनधीरा ॥
१ जेहिनिजकरकोटिनमखकीन्हा । अमित दान महिदेवन दीन्हा ॥
तेहि कर आजु बिप्र जनि मारौ । समुझहु तात शस्त्र तजि डारौ ॥
कहत जनक सुनु सखौ सुजाना । हमहिंनदुख कछु निजअपमाना ॥
गुरु ब्राह्मन प्रभु जन कटु बानी । सुनि न करहिं दुख जे जगज्ञानी ॥
तदपि राम अनहितरत जानी । नहिं छमिहौं यह द्विज अज्ञानी ॥
२ यह बटु हृदय कुगर्ब महाना । काहु न जानत आपु समाना ॥
सुनि भृगुपति बोले रिसिबानी । रे नृप अधम मुखर अज्ञानी ॥
सठ तव मरन आय नियराना । तेहि मम करत परम अपमाना ॥
अबहिँ काटि तोहि परसु कठोरा । नाशौं सब निमिकुल बरजोरा ॥
अस कहि चाहत परसु चलायो । गहि दसरथ मिथिलेस बचायो ॥
३ लखि भृगुनायक कृतअबिचारा । निमिबंसी सब कुपितअपारा ॥

दोहा—पुनिकौसलपतिभृगुपतिहिं, कहत बचन सिरनाय ।
मुनिबरकरहु न अनय अस, बृथा क्रोध उर छाय ॥

चौ० प्रानअधिकप्रिय मोहि मिथलेसू । कहौं सत्य यह साखि महेसू ॥
निरखि तासु तव कृत अपमाना । होत हृदय मम दुखित महाना ॥

---

१ इसमेंप्रथम व्याघातअलंकार है ।

२ जनक जी ने शुकदेवादि अनेक ब्रह्मर्षियों को ब्रह्मज्ञान सिखलाया था ब्रह्मज्ञान वा भूमाविद्यामें परशुराम जी उनके शिष्य के समान भी नहीं थे ।

३ इसमें चतुर्थ उल्लासालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि बोले भृगुनाथ रिसाई। भये दुखित करिहौ का भाई ॥
कह दसरथ नृप हंसि मृदुबानी। नहिं छमिहौं तब तुम कहंज्ञानी ॥
कह भृगुपति अभिमान जनाये। तुमहुं आजु शासक ह्वै आये ॥
बिसुरि गये धौं केहि बिधि मोही। जगत ख्यात छत्रियकुलद्रोही ॥
कह दसरथ सो हेतु बिचारी। नहिं छमिहौं अब तोहि रिसिधारी ॥
तुम सम जगत दुखद जन काहीं। दमन करत नृप नीति सदाहीं ॥

सो०— कह सगर्ब मुनि बैन, अहो आज बड़ भाग मम।
तुम समान गुन ऐन, मिल्यो हमहिं शासक नृपति ॥

चौ० कहदशरथयहिसंसयनाहीं। भ्रमबस ज्ञान न जेहि हियमाहीं ॥
सो जु करै कछु अनुचित काजू। तेहि शासक गुरु बृद्ध समाजू ॥
भयहुं ज्ञान जे करहिं अनीती। सो दमनीय अवसि नृपनीती ॥
जौन करैं अस कर्म भुवारा। होय उछृंखल सब संसारा ॥
कह कौसिक सुनु भृगुकुल ज्ञानी। नृप भलि कहत सुसंगतिबानी ॥
जौ न भयउ सुत तोहि दृढ़ ज्ञाना। गहु पद गुरु बशिष्ठ भगवाना ॥
सुनि रिसाय कह भृगुकुल ज्ञानी। कहहु न बृथा अज्ञ इवबानी ॥
धार्मिकतत्त्व सस्त्र सब केरे। केवल एक शंभु गुरु मेरे ॥

दोहा—गुरु बसिष्ठ संबंध वय, हमहिं श्रेष्ठ सकनाहिं।
पै न कबहुं सो तुलि सकैं, मम गुन समता माहिं ॥

चौ० कबहुं कि छुद्र नदी बढ़ि धाई। प्राप्त करै जलनिधि समताई ॥
१ तप बिज्ञान शस्त्र बल माहीं। मोहि समान त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥
२ जनकअवधपतिकौसिकज्ञानी। सुनि कटु बचन कहतरिसिबानी ॥
रे अनार्य्य उद्धत अभिमानी। किमि बोलत उन्मत इव बानी ॥

१ इसमें चतुर्थ प्रतीपालंकार है। २ इसमें चतुर्थ उल्लासालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अग अनादि सद्गुरु भगवाना। तेहि बशिष्ठ कर अस अपमाना॥
हिंसक कर्म करत दिन राती। भइ तव मति कुंठित सबभांती॥
अब तवकाल निपट नियरायो। नहिं बचिहौ बहु भांति बचायो॥
कहभृगुपतिनखसिखरिसिकांपी। सन्मुख आय भिरहु किन पापी॥

दोहा—१ तज्योजोरिसिगहिशान्तिव्रत, गुरुजनसम्मतिहेरि।
अब यहि छन प्रलयाग्नि सम, बढ़न चहत सो फेरि॥
२ एक राम के पाप ते, सकल अवनि महिपाल।
सकल प्रजा परिजन सहित, होन चहत बस काल॥

चौ० आजु प्रगटिनिजकृतिअनहोनी। छत्रिय रहित करौं सब छोनी॥
बहुरि प्रगटि निज भुज प्रभुताई। हतौं तीन कुल द्विज समुदाई॥
सुनि कौसिक बोले रिसि बानी। रे मति मन्द अधम अभिमानी॥
ब्रह्म तेज छत्रिय बल मोरे। काल बिबस लखि परै न तोरे॥
अहह आजु तव मति गति देखी। जरत हृदय मम क्रोध बिसेखी॥
पालनीय निज कुल सिसुजानी। अब लगि तज्यो तोहि अभिमानी॥
३ नतु निज रिस प्रलयाग्नि अपारा। तुमहिं भूंजि करत्यो मैं छारा॥
कह भृगुपति अति क्रोधित बानी। प्रगटु बेगि निज बल अज्ञानी॥

दोहा—आजु तुमहिं सबकुल सहित, करिहौं समर निदान।
असकहिनिजधनुबिसिषसजि, धाये शमन समान॥

चौ० लखि कौसिक बंसी सब धाये। गर्ज करत मुनि सन्मुख आये॥
तेहिं अवसरहिं जनक दुहु भाई। धाय चले बहु सस्त्र उठाई॥

---

१ इसमें पूर्णोपमालंकार है। २ इसमें चतुर्थ उल्लासालंकार है।
३ इसमें निरवयव रूपकालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बैठे तहं निमिबंसिन जेते। क्रोधित धाय चले सब तेते॥
ब्रह्मदण्ड दुहुं हाथ उठाये। क्रोधित सतानन्द मुनि आये॥
लखि कोशलपति अनरथ भारी। ह्वै सामुहे समर बलभारी॥
सकल समाजहिं पाछे घाली। भये अकेल ठाढ़ बलसाली॥
कह दसरथ द्विज करहु प्रहारा। सहौं प्रथम यह धर्म हमारा॥
यह रघुबंसी कुल व्यवहारा। पहिले शस्त्र न करौं प्रहारा॥

दोहा—देखि युगल नृप समर मुख, सकल सभा रनधीर।
उठे कटक सब विकट भट, क्षत्रियगन बरवीर॥

चौ० खरभर भयउ नगर अति भारी। सिमिटे सकल सुभट रनकारी॥
तेहि छन सुनत घोर रव ब्राता। आये राम सहित सब भ्राता॥
लखि गुरु जन उद्यत रन काजू। भयउ हृदय अति दुख रघुराजू॥
हिय सोचत बहु भांति खरारी। अहो आजु असमंजस भारी॥
बिप्र दमन रन पाप महाना। जौन करौं गुरुजन अपमाना॥
किहि आदरौं तजौं पुनि केही। समुचित कौन काज छन येही॥
भरि करुना जल युगल बिलोचन। डूमि बहु सोचत सोच बिमोचन॥
कीन्ह बहुरि निश्चय मन माहीं। जगहित गुरु सम्मति भल आही॥

दोहा—प्रगटै सब संसार मम, यश वा अपयश गाय।
दुष्ट बिप्रमद दमन अब, गह्यो धनुष सर हाथ॥

चौ० १ धरिकर शस्त्र बधै चह जोई। समुझिय शत्रु बिप्र नहिं सोई॥
असकहि निजकर धनुष संवारी। चले राम बल पौरुष भारी॥
जहं भृगुपति सिगरे भट मानी। भिरे समर निज निज धनु तानी॥

१ इसमें शुद्धापन्हुतिअलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आय राम गुरुजन सिरनाये। ह्वै विनीत बहु बिनय सुनाये॥
हमहिं अछत प्रभु श्रमजनि कीजै। भिरौं राम रन आयसु दीजै॥
दुहू महँ एक समर बिनसैहैं। सकल जगत अनरथ मिटिजैहैं॥
कह दसरथ सुनु सखा सुजाना। अबधौ काह करहिं भगवाना॥
आयउ राम आपु रन माहीं। समुझि सो परत हेतु कछु नाहीं॥

दोहा—कह बिदेह नृप सुनहु प्रभु, सुनि गुरु जन अपमान।
सहिनसक्योअतिसुभट सुत, आयउ अवसर जान॥

चौ० अस बिचारि अब त्यागि सनेहू। रामहिं रन हित आयसु देहू॥
सुन्यो प्रथम हम शिवमुख सोई। भृगुपति बिजय राम कर होई॥
जुरे आय सो समय समाजू। सखा करहु कछु शोक न आजू॥
मुनि बिदेह बच सब मनमाने। गुरु बशिष्ठ कौसिक हरषाने॥
१ जब दोउ राम भये रन ठाढ़े। देखि परस्पर हिय सुख बाढ़े॥
दोउ निज निज प्रतिभट भलपाये। इहै जानि हिय हर्ष बढ़ाये॥
बहुरि देखि मुनि अद्भुत रूपा। भयउ रामहिय शोक अनूपा॥
जौ कदापि मुनि रन बिनसैहैं। हा! यह अवनि बीर बिनु ह्वैहैं॥
तब भृगुपति बहु बान चलाये। जल थल नभ सब सायक छाये॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध सयानैं। लखैं समर नभ ठाढ़ बिमानैं॥
कोटिन कोटि महास्त्र महाना। मुनि त्यागैं प्रभु करैं निदाना॥
मुनि निज सब बिद्या बल ओरे। राम बिजय श्रम कीन्ह न थोरे॥
जब सब बिधि चत्रिय बलहारे। प्रगट कीन्ह द्विज तेज अपारे॥
मुनि ~~मुख~~ निजतेज प्रगट जित कीन्हा। "हुं" करिरामसकल हरिलीन्हा॥

१ इसमें अन्योन्यालंकार है और दोनो राम का उत्साहस्थायीभाव व्यंग्य भी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ तब अति बिस्मित हृदय लजाई। बोले सुनहु राम रघुराई॥
तात रमापति धनुष महाना। खैंचि तजहु सर श्रवन प्रमाना॥
सुनत बचन हिय हंसि रघुनाथा। मुनि कर चाप खैंचि निजहाथा॥
कमल नाल इव दीन्ह चढ़ाई। सुनत शब्द कंपित मुनिराई॥

दोहा—२ कोटि बज्र सम घोर रव, भरे भुवन सब ओर।
कम्पत सब सुर सिद्ध मुनि, सुनत धनुष टंकोर॥

चौ० सर संधानि कह्यो भगवाना। कहुमुनिअबयहि लक्ष्य बिधाना॥
मम संधान व्यर्थ नहिं काऊ। किय प्रहार मरिहौ मुनिराऊ॥
औ करिहौं ब्राह्मन संहारा। ह्वैहैं मोहि जग अयश अपारा॥
कहहुत तव अमोघ गति ओई। यहि सर नास करौं मैं सोई॥
यहि बिधि बचन कहत तेहि काला। प्रगटो रघुपति तेज बिसाला॥
जेहि लखि सब जगजीव डेराने। ह्वै व्याकुल मुनि बचन बखाने॥
नाथ मोर गति नास न कीजै। लखि द्विज दीन कृपा अबकीजै॥
मैं जीत्यो निजबल संसारा। नास करहु सो सुयश अपारा॥
बिहंसि राम तैसी कृति कीन्ही। मुनि कहं दिव्य दृष्टि पुनि दीन्ही॥
देखन लगे तबहिं मुनिधीरा। सकल सृष्टिमय राम सरीरा॥

दोहा—३ रमत राम सब जगत महं, रमत जगत सब राम।
देखि दृश्य अति चकित चित, मुरछि गिरे भृगुराम॥

चौ० मुरछि गिरे तनु प्रान गंवाये। प्रथम तेज बल सकल नसाये॥
तब श्री बैष्णव अंश महाना। कोटि सूर्य्य प्रलयाग्नि समाना॥

---

१ यहां अद्भुत रस का अंग लज्जासंचारीभाव होने से रसवदालंकार है।
२ यहां प्रथम तुल्ययोग्यतालंकार और सब सुर सिद्धमुनियों का भयस्थायीभाव व्यंग्य है।
३ इसमें दोनो पर्य्यायालंकार और परशुराम जी का बिस्मयस्थायीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रथम जो अंशावेस करायो । मुनि तनु काढ़ि प्रभु बदन समायो ॥
देखि चरित सब अचरज माना । पुनि मुनि तनु पलटे जब प्राना ॥
१ जानि प्रभुहिं श्रीपति अवतारा । तनु पुलकित हिय प्रेम अपारा ॥
अस्तुति करन लगे बहु भांती । जय जय जय सुर रिपु आराती ॥
जयति राम करुना सुख सिन्धो । दीन दयाकर आरत बन्धो ॥
जगउत्पति पालन लय कर्ता । सतत प्रणत जन दुख अघहर्ता ॥
परमब्रह्म परमेश पुरातन । जयति राम सर्बज्ञ सनातन ॥
सुरसुख करन हरन महिभारा । प्रभु रघुबंस लीन्ह अवतारा ॥

दोहा—२ तीन लोक संकट हरन, सकल लोक आधार ।
क्षमहु नाथ अपराध मम, अशरन शरन उदार ॥

चौ० निशिचरांश क्षत्रिय अघकारी । किय जब प्रथम उपद्रवभारी ॥
प्रभु निज अंस मोहि कछु दीन्हा । तब मैं बिश्वबिजययस लीन्हा ॥
दुष्ट नृपन पुनि पुनि रनमारी । कीन्ह बिनस्र तेज हत भारी ॥
सो निज अंश आजु प्रभु लीन्हा । कृपा सिन्धु यह अति भल कीन्हा ॥
अवनिज चरन कमल करिदाया । देहु भक्ति मोहि अचल अमाया ॥
प्रथमहिं शंभु कह्यो यह मोही । ह्वैहै बिजय रामरन तोही ॥
शंभु बचन समझ्यो मैं आजू । तुम श्री बिष्णुदेव महराजू ॥
अस कहि प्रेम मगन मुनिनाथा । परे लकुट इव पद रघुनाथा ॥
हरषि राम गहि हृदय लगाये । दै बांछित बर इमि समुझाये ॥
करहु भजन मम बर्ष प्रमाना । पुनि ह्वैहौ तप तेज निधाना ॥

१ इसमें रोमांचसात्विकानुभाव है ।
२ यहां अनेक की एक आधार होने से द्वितिय पर्य्यायालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा—बार बार बहु बिनय कहि, करि प्रभु चरन प्रनाम।
मिलि ऋषि मुनि द्विज गन सकल, भवन चले भृगुराम॥
१ गर्बित भृगुपति गर्ब निज, सबहिं कीन्ह अपकार।
मिल्यो राम कहं सुयश बड़, यह उपकार अपार॥

चौ० तबनिमिपतिदसरथदोउबीरा। गहे चरन भृगुपति मतिधीरा॥
करि बहु बिनय चमा निज मांगे। पाय असीस हृदय मुद पागे॥
करत हृदय प्रभु गुन गन गाना। गिरि महेन्द्र मुनि कीन्ह पयाना॥
तहां सशंकित रहत सदाहीं। बिगत तेज उरमद कछु नाहीं॥
यहि बिधि कछुक समय जब बीते। देखि सुतहिं हत तेज बिनीते॥
दिबिते यामदग्नि मुनि आये। भल न कीन्ह सुत कहि समुझाये॥
राम बिष्णु सब अग जग स्वामी। सब उरस्थ सब अन्तर्यामी॥
रंचहु तेहि सन किये ढिठाई। कोटिन शिव बिधि शक्ति नशाई॥
२ रामहिं ब्रह्म न जो जिय जाना। सो सुजान तो कौन अजाना॥
३ हरि जन महं लेखा जिन नाहीं। सो द्विज तो अद्विजको आही॥

दोहा—४ अब भृगुआश्रम जाय तुम, पावन सरित अन्हाय।
करहु मुदित रघुपति भजन, बहुरि तेज बढ़ि जाय॥

चौ० करि भार्गव पितु बचन प्रमाना। लह्यो बहुरि तप तेज महाना॥
भृगुपति सकल चरित मैं गायो। अपर प्रसंग सुनहु मनभायो॥
रघुपति बिजय सुयश बड़ भारी। गुरु कौसिक भरि नयन निहारी॥
मिलि दुहुं भूप राम सब भाई। गये बिपिनि तप हित हरषाई॥

---

१ यहां एक के दोष से दूसरे को गुणहोने से द्वितीय उल्लासालंकार है।

२-३ इन दोनों अर्द्धालियों में अर्थान्तरसंक्रमितअगूढव्यंग्य है और अर्थ यह है कि राम को जिसने ब्रह्म नहीं जाना वहीमूर्ख है और जो रामभक्त नहीं है वही शूद्र है।

४ भृगुआश्रम बर्तमान ददरी चेत्र ज़िला बलिया में है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चारि पुत्र चहुं बधुन समेता। चले अवधपति मुदित निकेता॥
बन्दीजन मागध गुन गावैं। सुर गन सुमन बृष्टि झर लावैं।
इमि पग पग मग लहत अनन्दा। पहुंचे भवन भानु कुल चन्दा॥
सिययुत बसत राम रजधानी। नित नव सुख नहिँ जाय बखानी॥
१ सियपियकहंपियसियकहंचाहैं। उभय परस्पर धर्म निबाहैं॥
उत्तम पति प्रभु सीय स्वकीया। को कहि सकै प्रेम कमनीया॥
यहि बिधि भरतादिक तिहुं भाई। निज निज भवन बसे सुखदाई॥
२ चारौ बर दुलहिनहिं निहारी। प्रमुदित अवध सकल नरनारी॥

दोहा—नित नवमङ्गल मोदअति, नित नव करत बिलास।
ब्याहि आय द्वादस बरष, किय प्रभु अवध निवास॥
जगतजननि श्रीजानकी, जगतजनक श्रीराम।
तेहि शृंगार न कहब भल, समुझि सुमति परिनाम॥
हौं सेवक गहि बेंत कर, ठाढ़ रहौं नितद्वार।
गृह अन्तर्गति कहन को, नहिं अधिकार हमार॥
कहे कबिन बहु बरनि कै, प्रभु शृंगार बिहार।
मोरे मत सब भांति ते, यह अन्याय अपार॥
कहिय कथा उपकार हित, यहि सन अति अपकार।
सुजन सुमति नहिं आदरैं, हरषैं जार लबार॥
निज प्राकृत पितु मातु की, सुनि सो चरित लजात।
जगत जननि जग जनक प्रभु, किमि बरनैं रसबात॥
देस देस के भूप बहु, आय जु प्रथम बरात।
३ मांगि बिदा कछु दिन गये, गये भवन हरषात॥

१ इसमें अन्योन्यालंकार है। २ इसमें संयोगशृंगार है।
३ इसमें पुनरुक्तिवदाभासअलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

युधाजीत शिव बरस गै, अवध नगर पुनि आय।
सानुज भरतहिं नगर निज, लैगै साज सजाय॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतबालकाण्डेसीतलसिंहगहरवारविरचिते षोडश:सर्ग:

इतिबालकाण्ड समाप्त:

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विज्ञापन

सम्पूर्ण "श्रीसीतारामचरितायन" सात खण्डों में छप रहा है, जिसका मूल्य लगभग १०) दस रुपये के होगा। परन्तु जो व्यपारी एकसाथ २५ पचीस जिल्द या इससे अधिक ख़रीदेंगे उनको २५) पचीस रुपय सैकड़ा कमीशन दिया जायगा।

भवदीय कृपानुकांक्षी

जयप्रकाश सिंह

मोक़ाबले नबीस कलक्टरी महाफ़िज़खाना

मेखलीटगञ्ज—गया।

पुस्तक मिलने का ठिकाना

जिन महाशयों को यह ग्रन्थ ख़रीदना हो वे निम्न पते से मंगावें।

पहिला ठिकाना— श्रीसीतलसिंह गहरवार, ग्रन्थकर्त्ता

ग्राम और डाकखाना—इमामगंज

जिला गया।

दूसरा ठिकाना— बाबू जयप्रकाश सिंह

मोक़ाबिले नबीस कलक्टरी महाफ़िज़खाना

मेखलीटगञ्ज—गया।

तीसरा ठिकाना— राजराजेश्वरी पुस्तकालय

कचहरी रोड—गया।

चौथा ठिकाना— "विधु" साहित्यमन्दिर

रमना—गया।

थोक ख़रीदारों को २५) सैकड़ा कमीशन मिलेगा।

विशेष हाल पत्र से पूछिये।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

श्रीसीतारामचरितायन

अयोध्याकाण्ड

श्रीसीतलसिंह गहरवार

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

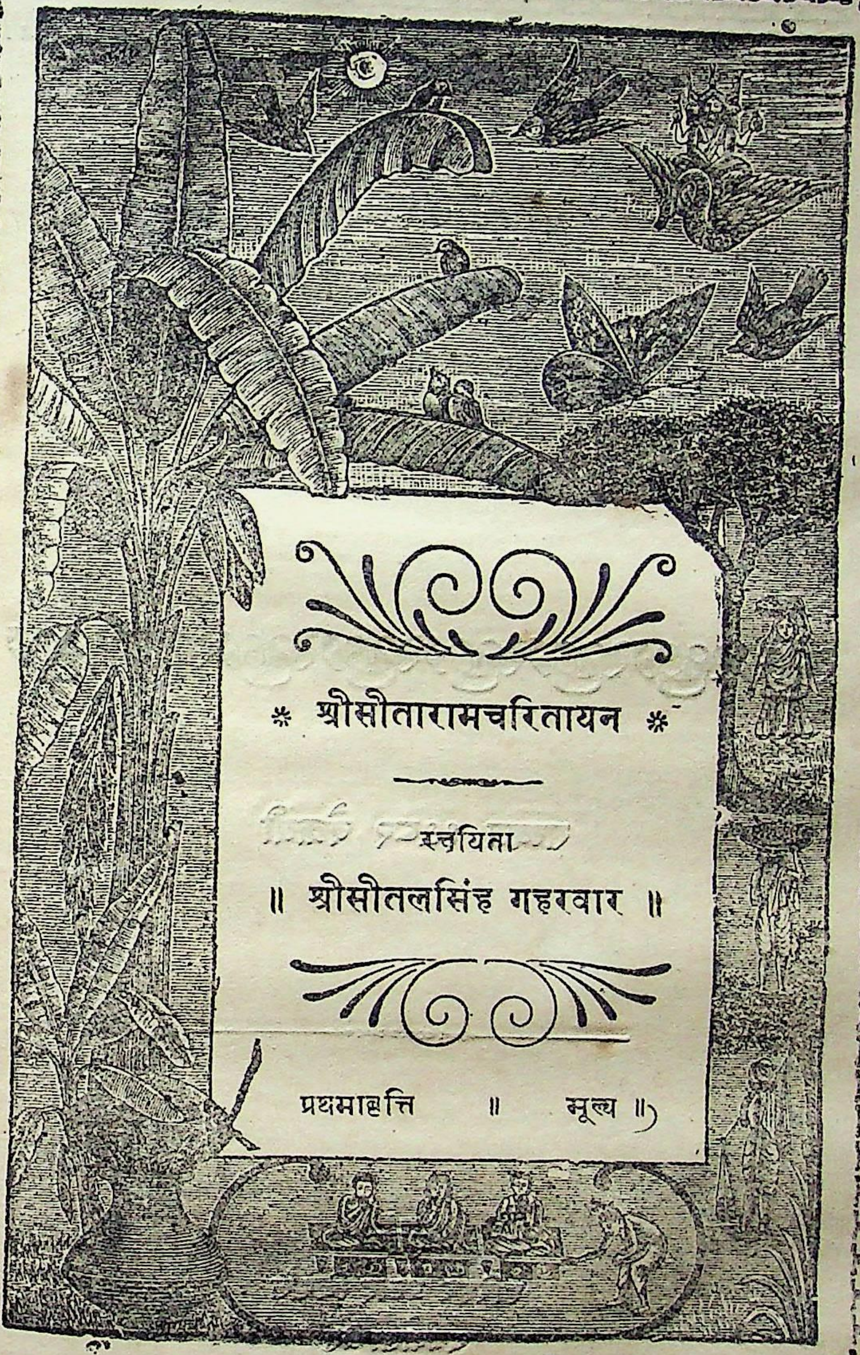

श्रीसीतारामचरितायन

रचयिता

॥ श्रीसीतलसिंह गहरवार ॥

प्रथमावृत्ति ॥ मूल्य ॥)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक और सम्पादक

बाबू जयप्रकाश सिंह

मोकाबले नवीस कलक्टरी महाफ़िज़ख़ाना

मिखलौटगञ्ज—गया ।

सम्बत १९८२ वैक्रमी

मुद्रक

हरिहर प्रसाद जिज्ञल

अग्रवाला प्रेस

गया ।

८ अगस्त १९२५ ईस्वी

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

✲ श्रीसीतारामाभ्यांनमः ✲

अयोध्याकाण्ड

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

सर्वात्मा सर्वाधिपति, रामचरन सिर नाय ।
रामप्रिया सिय पद नमो, पुनि पुनि मन बचकाय ॥
रामप्रेम अरु सत्यव्रत, जेहि निबह्यो यक साथ ।
सकल पुन्य प्रद पदकमल, बन्दौं कोसलनाथ ॥
सवति बचन बन प्रिय सुवन, पठवत हरि अहिवात ।
तेहि पतिरत अनुपम सती, नमो कौसिला मात ॥
राम लखन सिय श्रे यहित, करत जो तप दिनरात ।
चरन कमल बन्दौं भरत, सहित सत्रुहन भ्रात ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

* अथ कथाप्रसंगारम्भः *

भरत सत्रुहन दुहुन जब, गये युधाजित साथ।
राम सकल जननी सहित, सेवत पद नृपनाथ॥
राजकाज संभार सब, पितु आयसु सिरधारि।
करत राम मरजादयुत, जथाजोग्य अनुहारि॥
१ राम सील गुनधर्मबल, प्रजाप्रीति नृप नीति।
देखि हरष नर नारि सब, हृदय सराहत रीति॥
२ जनकजननिपरिजनप्रजा, जहँ लगि अवध समाज।
सबके मन अभिलाष अस, राम होहिं युबराज॥

३ सुखी अवधपुर सब नरनारी। राम हृदय दुख व्याकुल भारी॥
४ भरे नीर दोउ राजिव नयना। बहुबिधिसोच करत गुन अयना॥
बीते बहुत दिवस गृहमाहीं। जग उपकार कीन्ह कछु नाहीं॥
करत असुरगन अति उत्पाता। मरन चहति सब सृष्टि विधाता॥
स्रुति मरजाद धर्मपथ सिगरे। आजु दुष्ट निसिचर कृत बिगरे॥
सहत सकल सज्जनगन पीरा। समुझि हृदय दुखहोत अधीरा॥
छत्रिय जनम बृथा मैं लीन्हा। छात्रकर्म कछु जग नहिं कीन्हा॥
सो छत्रिय जनमत मरिजावै। जो न जगत आघात बचावै॥
धरि नर तनु परहित नहिँ कीन्हा। सो सठ जन्म बृथा जग लीन्हा॥
ऋषि मुनि गन बन बिपति बिसारी। किमि मैं करौं राज सुखभारी॥

१—२ इन दोनों दोहाओं में एक को अनेक आधार होने से प्रथम पर्य्यायालंकार है।
३ यहां अनेक पद्यों में राम का चिन्तासंचारीभाव व्यंग्य है।
४ इसमें अश्रु संचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अहह तपिनकुल सकल अब, होन चहत निर्मूल ।
धिक यौवन जीवन कुलहिं, जो जग हित प्रतिकूल ॥
असबिचारिअतिउचितमोहि, दण्डकबिपिनिपयान ।
१ नृपतिप्रीतिपुरजनभगति, ह्वै रह दुखद अलान ॥

कीन्हेहु कोटिन यतन प्रमाना । नहिं कहिहैं मोहि कोउ बन जाना ॥
अहह मोर मन बिषयहिं भूला । भयो दैव सब बिधि प्रतिकूला ॥
हे बिधि जो कछु पुन्य हमारे । करहु कृपा बन जाहिँ सकारे ॥
२ बहत नयन करुना जलधारा । इत इमि रघुपति करत बिचारा ॥
उत तेहि छन सब प्रजा जमाती । परिजन पुरजन जे नृप जाती ॥
ऋषि मुनि ब्राह्मन बृन्द घनेरे । बसहिँ अवधपुर जे चहुंफेरे ।
सुमन्तादि मन्त्री समुदाई । राम कर्म लखि अति हरषाई ।
करि सम्मति सब मिलि इक ठाईँ । नृपहिँ जायनिजसुरुचिसुनाई ॥

३ सुनहुभानुकुलमुकुटमनि, सबहिय अस मनकाम ।
करहु राम युबराज अब, पावै जग बिश्राम ॥

४ सुनत श्रवन अमृत सम बानी । अति हर्षित दसरथ नृप ज्ञानी ॥
गुरु बसिष्ठ पदरज सिरनाई । बोले प्रेम बचन हरषाई ॥
सुनहु नाथ मोहि अति प्रियजोई । कहत प्रजा सब सम्मति सोई ॥
पै गृह भरत सत्रुहन नाहीं । कहिय जो होय उचित यहि माहीं ॥
५ कहमुनि राम तिलक जब ह्वै है । सुनि दोउ बन्धु बहुत हरषैहैं ॥
अस बिचारिलखिबिधि अनुकूला । रचहु महोत्सव सब सुख मूला ॥
तब दसरथ सब सचिव बोलाई । कह्यो सजहु सब साज बनाई ॥

१ इसमें शुद्धसारोपालक्षणा है । २ इसमें अश्रुसात्विकानुभाव है ।
३ यहां प्रथम पर्यायालंकार है । (४, ५ इनमें प्रथम उल्लासलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूजहु सुरन देहु बहु दाना। हय गय धन जो जेहि मनमाना॥
१ सुनि प्रभु राजतिलक सुखभारी। हर्षित सकल नगर नर नारी॥
२ गृह गृह बाजत बाजन नाना। करहिँ सुमुखि कल मङ्गलगाना॥

३ रचहिँ सुमङ्गलनारिनर, प्रमुदित बिबिध विधान।
परमानन्द पयोधि जनु, अवध नगर उमड़ान॥
४ देखि रम्य रचना नगर, राम हृदय दुख भार।
केहिबिधितेचलिबिपिनिअब, करिहौं जग उपकार॥

इमि बहु सोचत राम दुखारी। सुनहु चरित जो किय निसिचारी॥
प्रभु बध हित भृगुपतिहिं पठाई। रह्यो सचिव निमि नगर दुराई॥
मुनिजय कीन्हि राम रन जबहीं। माल्यवान भागा गृह तबहीं॥
लङ्का जाय सोच करि भारी। कहत सचिव इमि हृदय बिचारी॥
अहह राम बल सुयस प्रतापा। आजु सकल सचराचर व्यापा॥
देखहु परसुराम जब हारे। सुमन झरत सुर हनत नगारे॥
५ हरषि हरषि सुर तिय समुदाई। नाचति रामहिं देति बधाई॥
सिव ब्रह्मादि देव सब जीते। भये राम सेवक अब तेते॥
६ अब बधिहौं रामहिं केहि भांती। करत बिचार सचिव दिनराती॥
जब तब अवधहिं असुर पठावै। प्रभु बध हित बहु घात लगावै॥
यहि बिधि द्वादस बर्ष बिताये। इक दिन अवध गुप्तचर आये॥
७ सुनि श्रीराम तिलक संवादा। भयउ सचिव हिय परम विषादा॥

१ इसमें प्रथम उल्लासालंकार है। २ इसमें उपादान लक्षणा है।
३ इसमें उक्तविषयावस्तुत्प्रेक्षालंकार है।
४ इसमें तृतीय उल्लासालंकार और चिंतासंचारीभावभी है।
५ इसमें हर्ष संचारीभाव है। ६ इसमें चिन्ता संचारीभाव है।
७ इसमे विषाद संचारीभाव वा असूयासंचारीभाव है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूपनखा कहँ सपदि बोलाई। कह्यो राम बल बढ़ अधिकाई ॥
सुनि निसचरि बोली दुख बानी। अहह दैव गति जाय न जानी ॥
गे बहु बर्ष जो कहि तुम बाला। भइ सोधु ब जनु रचित बिधाता ॥
१ सोसवसोचिसमुझिगति देखी। उपजत हिय दुख शोक बिसेखी ॥

साम्प्रतिसमुचितकौनकृति, सो प्रभुकहहु बिचारि।
२ धरिधीरजकहसचिवतब, निजशोकाम्बु निवारि ॥

करिय न सुता सोच यहि भांती। यदपि राम अति प्रबल अराती ॥
कोटिनबिघनभयहुंनिजकारज। तजहिं न समुचित कृति जे आरज ॥
३ जस जस बढ़ै बिघन समुदाई। करहिं सुकाज उछाह बढ़ाई ॥
सुनहु जो अवध चरन सुधि पाई। सो कछु मैं नहिं तुमहिं सुनाई ॥
अवध नृपति दसरथ महराजा। करिहैं कालिह राम युवराजा ॥
तेहि कारजहिं बिघन जेहि होई। सुनहु बुझाय कहत मैं सोई ॥
४ पुरा सुरासुर संगर भारी। गे दसरथ नृप संयुत नारी ॥
करत सुरन हित समर अपारा। चक्र कील रथ कटो भुवारा ॥
रही सुरति सो नृप कछु नाहीं। दइ तर्जनि कैकइ तेहि माहीं ॥
रिपुन जीति नृप तियहिं निहारा। भयउ हृदय आनन्द अपारा ॥

बिबिध प्रकार प्रसंसि तेहि, दीन्ह युगल बरदान।
सौंपि रख्यो सो नृपहिं तिय, लेब समय मनमान ॥
सो कैकयि प्रिय चेरि इक, नाम मंथिरा जासु।
नैहरही रह संग तिहि, मानति अति बिसवासु ॥

१ इसमें विषाद संचारीभाव है। २ इसमें अश्रुसात्विकानुभाव है।
३ यहां प्रतिबंधक के रहतेहुये भी कार्य सिद्धि होने से तृतिय बिभावनालंकार है।
४ यह देवासुर संग्राम बिख्यात देवासुर संग्राम के अतिरिक्त दूसरा है जिसकी कथा हनुमनाटक में है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

असकहि तेहि निज निकट बोलाई । श्रवन लागि सबयुक्ति सिखाई ॥
सुनत सहमि सो कह दुमि बानी । मनिहैंन्टपतिकियह मतिज्ञानी ॥
कहत सचिव यहि संसय नाहीं । छचिन सदा सत्य प्रिय आही ॥
भयहु सकल धन जीवन हानी । तजहिं न राम कबहुं पितु बानी ॥
कह निसिचरि पुनि करि सन्देहू । प्रभुबनबास लखन किमि देहू ॥
१ बल बिद्या गुन ज्ञान निधाना । राम अनुज सो राम समाना ॥
रामहिं उचित दण्ड बिधि जोई । चाहिय करन लखन कहं सोई ॥
सुनि निसिचरि बोली अनखाती । नहि यह सम्मति हमहिं सुहाती ॥
राम अबहिं अति दूरि गुसाईं । किय समीप तेहि कवन भलाई ॥
पुनि तेहि तिय हरि निज गृहल्याये । सधै कौन हित बैर बढ़ाये ॥

अब लगि रावन राम महं, कोउ सत्रुता नाहिं ।
किमि अहेतु तिय हेतु ते, उपजावत हौ ताहि ॥
ममसति ते सबभांति प्रभु, यह अति निन्दितकाज ।
न्टपतिनीतिगुनिकरहुकृति, जेहिनहिं बहुरियकाज ॥

कहत सचिव हंसि तब म्टदुबानी । सुनहु भेद सब कहौं बखानी ॥
राम लङ्कपति युगल नरेसा । युग अधिकार एक पुनि देसा ॥
युग युग ते रावन जग राजा । करत राम अब परम अकाजा ॥
युग बिग्रह प्रति दिन अधिकाई । राम बिभव कछु बरनि न जाई ॥
समर सुबाहु आदि भट मारी । निदरि न्टपहिं ब्याहे बर नारी ॥
अरु जो मैं बहु सुभट पठायो । बिनु श्रम राम सबहिं बिनसायो ॥
सो सब कर्म समुझि मन माहीं । को कहि सकत राम रिपुनाहीं ॥
पुनि देखहु करि हृदय बिचारा । जौ नहिं हरण करौं तेहि दारा ॥

१ इसमें पूर्णोपमालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तदपि राम रावन की माहीं । कौनिहुं भांति मेल ह्वै नाहीं ॥
देव पितर अरु मनुज समाजा । मानत सबहिं राम कहं राजा ॥
१ आजु राम समता कहँ को है । जेहि जस कमल भ्रमर नभ सोहै ॥
बहुरि राम सब जग हितकारी । परम कृपालु धर्मधुरधारी ॥
हमनिसिचरनिजसहजसुभावहिँ । सदा सबहिं बिनु हेतु सतावहिँ ॥
२ रामहिं रावन अन्तर कैसे । दिवस प्रकास रजनि तम जैसे ॥

३ असबिपच्छमतिपच्छदुहुँ, ह्वै हैकबहुं कि शाम ?
राम सकल सम्पति भवन, तहँ चलिहैं कछु दाम ?

निरखि जासु बल गुन प्रभुताई । करत सकल सुरगन सेवकाई ॥
अस अद्वैत पुरुष बिनु रागहिँ । करि प्रदान कछु देस बिभागहिं ॥
करि न सकत बस सुनहु सयानी । राम सदा क्षत्रिय अभिमानी ॥
बहुरि राम बल सुयस अपारा । ख्यात आजु सिगरे संसारा ॥
धर्म सुसील नीतिरत देखी । सबहिँ राम प्रति प्रीति बिसेखी ॥
४ राम सकल जग प्रान अधारा । रामहिँ सब जग प्रान पियारा ॥
५ किये कोटि बल बुद्धि सहाई । तहँ कि चलै कछु भेद उपाई ॥
अब सब बिधि यह निश्चित बामा । रावन राम समर परिनामा ॥
पै रामहिं सन्मुख रन माहीं । जीति सकै त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥
तेहि अब कपट करम कछु कीजै । जेहि ते गुप्त दण्ड तेहि दीजै ॥

१ यहां श्रीरामचन्द्र जी के यशरूप कमलके स्वरूपका आधिक्य बर्णन होने से उनका यश सर्वोपरि श्रेष्ठ प्रकट होता है; इसमें बाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ में अधिक चमत्कार है अत: प्रधान व्यंग्य है ।

२ इसमें उदाहरणालंकार है । ३ इसमें काकु बक्रोक्ति है ।

४ इसमें अन्योन्यालंकार है । ५ इसमें काकु बक्रोक्ति है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परम प्रबल अरि राम कहँ, लखि अजेय संग्राम।
रचिप्रपंचल्यावौंबिपिनि, सहित अनुज अरु बाम॥

रामहिं ल्याय निकट निज देसा। करि सिय हरन होब गतक्लेसा॥
रिपु कृत हरन जानि निज बामा। तजिहैं तनु लज्जा बस रामा॥
जौ न मरै जीवै अति दीना। बल प्रताप बिद्या गुनहीना॥
इमि कछु दिन बहु दुखबिलखाई। करिहैं अवसि सन्धि सोआई॥
जौ रिपु दमन अजहुँ नहिं होई। भामिनिहृतिकारज नहिं सोई॥
कपि पति बालि परम बलवाना। सो लङ्कापति मित्र महाना॥
तेहि चढ़ाय करि कपट उपाई। मरवैहौं रामहिँ समराई॥
जौ पुनि सधै न कारज येहू। तौ रन होय न कछु सन्देहू॥

बन्धु बिमुख अति धर्म प्रिय, भक्त बिभीषन धीर।
जानि राम रावन समर, मिलि जैहैं रघुबीर॥
कुम्भकरन जीवन मरन, जानहु एक समान।
निद्रालू अविनीत अति, करै कि नृप हित कान॥

देखि बिभीषन गुन निपुनाई। अति आदरहिँ प्रजा समुदाई॥
नृप अनीति अघ ओघ निरेखी। सब मिलिकरहिँ कुमन्त्र बिसेखी॥
जुरै जौ रिपु कोउ यहि छन आई। होयकठिनअति सरन उपाई॥
सो सब बिपति समुझि दिन राती। उचितबिभीषनबधसब भांती॥
पै सो परम चतुर बिज्ञानी। बेगि नृपति मन गति पहिचानी॥
मिलि हैं कपि सुग्रीमहिँ जाई। बाल बयस दोउ परम मिताई॥
तब पुनि प्रथम बालि कर ताही। मरवैहौं बिनु श्रम सक नाहीं॥
कपि तजि जौ रघुपति ढिगजैहैं। तदपि बालि कर अवसि नसैहैं॥
कह निसिचरी बहुरि करि सङ्का। मुनि बिजयी नृपसुत रनबङ्का॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अतुलित बल अद्भुतगुनसाली । जौ रन जीति सक्यो सो बाली ॥
तब प्रभु राम बिभीषन मेला । ह्वैहैं सब विधि अचल अपेला ॥
कपिपति बालि महाबल भारी । छन महँ बधै सृष्टि यह सारी ॥
जौ तेहि राम समर संहारै । तौ सो सब निसिचर कुल मारै ॥
राम समर कपि बध जब होई । जानेहु सर्बनाश दिन सोई ॥
पै यहि समय न हिय कदराहू । उठहु बेगि कोसलपुर जाहू ॥
तब मातामह पद शिरनाई । छन महँ सो कोशलपुर आई ॥
१ देखि राम अतुलित छबि भारी । ह्वै अति मुग्ध हृदय कह नारी ॥
२ अहो नृपतिसुत रूप अपारा । कोटि काम मन मोहनहारा ॥

३ धन्य रूप यौबन वही, वही तीय है तीय ।
जेहि सन्मुख हंसि हेरिहैं, यह नृपसुत रमनीय ॥
यदपि बाल बैधव्य दुख, सब सुख भयउ बिनास ।
तदपिअमियनिधिरूपलखि, पुनिहिय काम प्रकास ॥
रहिमुहूर्तभरिबिकलअति, पुनिनिजमनहिंसम्हारि ॥
कीन्हकाजजससचिवकह, मिलिहौंबिपिनिबिचारि ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतायोध्याकाण्डेसीतलसिंहगहरवार
बिरचिते प्रथमःसर्गः

४ राम तिलक उत्सव परम, देखि देव दुख पाय ।
बिघन करन हित सारदा, पठये अवध मनाय ॥

१ इसमें मोह संचारीभाव व्यंग्य है । २ इसमें सूर्पनखाका बिस्मयस्थायीभाव व्यंग्यहै ।
३ इसमे लच्चणामूलक गूढ़ व्यंग्य है । ४ इसमें असूया संचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ होय राम युबराज जौ, रहिहैं राज मंझार।
नहिँ ह्वैहैं जग काज कछु, यह सुर सोच अपार॥
सूर्पनखा हरि मंथरा, तासु रूप धरि आप।
लगी प्रबोधन कैकयिहिं, कहि बहु कपट प्रलाप॥
ह्वै प्रेरित श्रीसारदा, मृगी यच्छिनी साप।
चेरी बस कैकयि भई, तजि निज सुमति कलाप॥

चेरि सीख रानी मनमानी। बसि निसि कोपभवन रिसि ठानी॥
तेहि निसि तहँ दसरथ जब आये। मान न रानि बहुत समुझाये॥
करि भूपहिँ निज बस सब भांती। मांगा द्वै बर रहे जो थाती॥
भरतहिँ अवधराजअभिषिका। देहु नृपतिमणि यह बर एका॥
पुनि यह देहु द्वितिय बरदाना। राम काल्हि बन करैं पयाना॥
तापस भेष बिसेष बनाई। चौदह बरस बसैं बन जाई॥
तजि सिय लखन अवधि कै माहीं। अरु कोउ संग रहै तहं नाहीं॥
२ सुनत कठोर बचन निज नारी। गिरे अवनि नृपव्याकुल भारी॥

भूप दसा लखि कैकयी, कह कटु बचन रिसाय।
तदपि धीरधरिनृपतिमणि, कह्यो बहुत समुझाय॥

कुबरी कुटिल प्रबोधित रानी। नृप कृत बिनय न एकहु मानी॥
पुनि पुनि भूप बिनय बहु करई। मान न रानि अधिक रिसिजरई॥
लखि तियदसानृपति मन जाना। अब मम काल आय नियराना॥
समुझि राम दुख बिहरति छाती। बिलखत नृपहिं गई सब राती॥
इहां सकल पुरजन नर नारी। राम तिलक सजि साज सवांरी॥

१ इसमें चिन्ता संचारीभाव व्यंग्य है। २ इसमें अपस्मार संचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आये सब भूपति के द्वारे। बाजत नौबत संख नगारे॥
सो सुनि होत भूप दुखभारी। कोउ न जान जो किय कृति नारी॥
सचिव महाजन सोचन लागे। भयो भोर भूपति नहिं जागे॥
तब सुमन्त कैकयि गृह आये। नृप गति लखि हिय विस्मय छाये॥
सचिव बिलोकि कह्यो कैकेई। आवहु बेगि राम कहँ लेई॥

प्राय राउ रुख राम कहँ, रथ चढ़ाय लै आय।
देखि दुखित दुख हेतु पितु, तब पूछ्यो प्रभु माय॥
सुनत निठुर कह कैकयी, यहि बिधि बचन बनाय।
तुम्हरे कारन दुखित नृप, चहहु तो लेहु बचाय॥
जेहि न लहैं नृप अयसजग, नहिँ परलोक नसाय।
सुत समर्थ धर्मज्ञ तुम, करहु सो बेगि उपाय॥

१ सुनत सहमि जननी मृदुबानी। बोले राम जोरि युग पानी॥
मैया बेगि कहहु सो कारन। करौं यतन दुख होय निवारन॥
तन मन धन सर्बस प्रिय प्राना। त्यागि सकौं पितु बचन प्रमाना॥
सो सुत सबबिधि धन्य कहावै। जेहि ते मातु पिता सुख पावैं॥
सब बिधि अति निन्दित सुत सोई। जेहि ते मातु पिता दुख होई॥
सुनि कैकइ करि बहुत बड़ाई। आदिहिं ते सब कथा सुनाई॥
तव सनेह बस नृपति दुखारी। धरम प्रेम असमंजस भारी॥
देत न मोहि बर कहत न नाहीं। सुनहु जो अपर हेतु इक आही॥

ममपितुसनतवपितुप्रथम, किय अस प्रण सबिबेक।
करिहौं तव तनुजा तनय, अवध राज अभिषेक॥

१ इसमें पंचम विभावनालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनत बचन अति हर्ष मन, कह्यो राम सिरनाय।
१ दीन्हजो बर नृप कीन्ह प्रन, सो हम सीस चढ़ाय॥
भरत प्रान प्रिय बन्धु कहँ, करहु राज अभिषेक।
मैं बसिहौं मनु बर्ष बन, धरि मुनि भेष सटेक॥
प्रलय जलधि पावक प्रलय, प्रलय शेष मुख जाय।
सुनहु जननि मैं बसि सकत, पितु आयसु सुखपाय॥

२ बननिवाससुखप्रदसब भांती। जँह मिलिहैं मुनि ऋषयजमाती॥
तहां जात नहिँ दुख कछु मोरे। अब मम सब बिधि भाग अथोरे॥
लह्यो अनुज गृह राज अभंगा। मैं बन करौं मुनिन सतसंगा॥
अबलगि मोहि सब जगत समाजा। कहत जेठ सुत कोसलराजा॥
पाय राज होत्यो महराजू। तेहु अति बड़ अब भयउ सुकाजू॥
अब मोहि कोसलेस बड़ भाई। कहिहैं सकल जगत समुदाई॥
जब हम बिपिनि लौटि गृह अइहैं। मिलि अगुवान भरत सिरनैहैं॥
कहहु सो कौन भूप जगमाहीं। कोसलेस नावहिं सिरजाहीं॥

भरत राज साम्राज्य ते, मैं पायउ बड़ राज।
कहहुजननियहितेअधिक, अब मम कौन सुकाज॥
राम बचन सुनि चेतलहि, नृप दसरथ तेहि बार।
३ कहि न सकै मुख बैन कछु, श्रवत नयन जलधार॥

तब श्री राम जोरि युग पानी। नृप दिसि चितै कहत मृदुबानी॥
४ मम अपराध छमा पितु कीजै। आयसु बेगि गमन बन दीजै॥

१ इसमें रूढ़ीलक्षणा है। २ इसमें अनुज्ञालंकार है।
१ इसमें अश्रुसात्विकानुभाव है।
२ यहां अनेक पद्यों में औत्सुक्यसंचारीभाव का वर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु प्रसाद बन सब सुख पैहौं । अवधि बिताय बहुरि घर अइहौं ॥
मम बनबास न होहु दुखारी । तुम पितु सत्य वीरब्रतधारी ॥
कहहु अबहिँ तनु अगिनि जराऊं । नरकहु परत न नेकु डेराऊं ॥
जेहि बिधि ह्वै आदेस तुम्हारा । अवसि करौं यह धर्म हमारा ॥
यह बन गमन कलेस न काऊ । अवहिं जाउं चित चौगुन चाऊ ॥
१ सुनु नृप अब मम आंखिन आगे । बन सोभा सुख नाचन लागे ॥
२ मिलन हेतु ऋषि मुनि समुदाई । उमगत हृदय प्रीति अधिकाई ॥
अब जो होय हुकुम प्रभु तोरे । सब बिधि धर्म कर्म सो मोरे ॥

३ पिता धर्म सब कर्म है, पिता सकल तप भेव ।
पिता प्रेम जेहि हिय बसै, तेहि प्रसन्न सब देव ॥
तप तीरथ जज्ञादि ब्रत, बहु शुभकर्म प्रमान ।
मातु पिता सेवा सरिस, सुत कहँ धर्म न आन ॥
सर्ब सुखद यह देह रचि, पालन कीन्हे जीय ।
सो पितु मातहिं वर्ष सत, पुत्र उऋन नहिं होय ॥
सुनत राम मृदु सरल बच, अति गम्भीर उदार ।
४ सकल नारि नर दृगन ते, बहन लगी जलधार ॥
कुटिल कैकयी मंथिरा, निर्दय हृदय कठोर ।
रोकतहूँ बहु यतन करि, भरि आये दृग कोर ॥
असमंजस बस दुखित नृप, नहिं कछु उत्तर दीन्ह ।
करि प्रनाम पद राम तब, गमन जननि पहँ कीन्ह ॥

---

१ इसमें औत्सुक्यसंचारीभाव व्यंग्य है।

२ ऋषि और मुनियों में थोड़ा भेद है दोनोही वेदज्ञाता बिशुद्ध पुरुष हैं।

३ इसमें दोनो हेतु अलंकार हैं। ४ इसमें अश्रुसात्विकानुभाव है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह सुधि व्यापि नगर चहुंधाई। रोवहिँ सुनि सब लोग लुगाई॥
बृद्ध सचिव जन व्याकुल धाये। कोपभवन दसरथ ढिग आये॥
बिप्र बधू कुल तिय समुदाई। सब मिलि कैकयि के ढिग आई॥
समुझावहिं कहि कहि मृदुबानी। मान न रानि अधिक अनखानी॥
इहां राम जननी ढिग आई। बोले यहि बिधि बिनय सुनाई॥
सुनहु जननि मैं बिपिन सिधैहौं। चौदह बरस निपटि गृह अइहौं॥
सत्यप्रतिज्ञ पिता मम ज्ञानी। दीन्हो द्वै बर कैकयि रानी॥
जेहि बस ह्वै अब दै बड़ काजू। मोहि बनवास भरत कहं राजू॥
बननिवास सब बिधि सुख मोरे। चहौं मातु अब सम्मत तोरे॥
जो मोपै कछु प्रीति तुम्हारी। तौ पुरवहु यह बिनय हमारी॥
१ सुनत बचन कम्पत सब गाता। मुरछित गिरी कौसिला माता॥
२ बहुरि चेति उठि बैठि सम्हारी। बोलति बिलखि श्रवतदृगबारी॥

देस कोस सब भरत कहँ, देहिँ नृपति दुख नाहिं।
तुम मेरे प्रिय प्रानधन, क्यों पठवत बन माहिं॥

का अपराध कीन्ह तुम भैया। जो अस दण्ड देत पितु मैया।
पिता कह्यो तुम कहं बनजाना। मैं बर्जत जनि करहु पयाना॥
जौ न करहु तुम कहे हमारे। तजौं अबहिं तनु निकट तुम्हारे॥
कह कर जोरि राम मृदुबानी। सुनहु बिनय मम जननि सयानी॥
जौ यहि बिधि ह्वैहैं हठ तोरे। तौ नहिं रहै प्रान अब मोरे॥
द्वै महँ एक बचन परित्यागी। जियत न रहि हैं राम अभागी॥
सुनत जननि कह बचन दुखारे। तौ मोहि लेहु संग बन प्यारे॥
नृप सन द्वै बर जननि जो लीन्हा। तेहि यह अति निषेध करिदीन्हा॥

१ इसमें अपस्मार संचारीभाव व्यंग्य है। २ इसमें अश्रु सात्विकानुभाव है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अस कहि सकल चरित्र प्रभु, कह्यो जननि समुझाय।
१ सुनिअतिब्याकुलकौसिला, गिरी अवनि मुरछाय॥

२ राम बिपति सुनि क्रोध बढ़ाये। तेहिछनतहँ लछिमनभटआये॥
३ हिय रिसि जरत अवत दृग बारी। कहन लगे रघुपतिहिं प्रचारी॥
ह्वै तिय वस कर कुलांछति हानी। मानियकबहुंकिअस नृप बानी॥
यह रबिकुल की रीति सदाहीं। होत राज जेठे सुत काहीं॥
पूर्वज राज अहै जो थाती। सो नृप देहिं भरत केहि भांती॥
जौ तिय बस ह्वै कर पुनि ऐसे। कहिय सत्य ब्रत तब नृप कैसे॥
जो निज कुल मरयाद मिटावै। नृपति प्रतिष्ठा सो नहिं पावै॥
४ राजतिलकसजि दिय बनबासू। करिय न अस नृपबच बिस्वासू॥
सुनहु नाथ अस नीति बखानै। जौ गुरु जन हठि पापहि ठानैं॥
तौ ध्रुव दण्ड करिय तिन काहीं। करिय बिचार छोट बड़ नाहीं॥

ताते प्रभु मम हृदय अब, यहि बिधि होत बिचार।
चलि बैठिय राजासनहिं, करि भूपति अपकार॥

जौ यहि कारज करिहैं हानी। बधिहौं भूप सहित प्रिय रानी॥
मातुल सहित भरत दोउ भाई। बधिहौं सकल प्रजा समुदाई॥
आजु अवध बिनु मानव करिहौं। कोटिन काल समर संहरिहौं॥
नहि गुरु लघु हित अहित बिचारौं। करै जो बिघन ताहि मैं मारौं॥
५ आजु राम अभिषेक कराऊं। तौ मैं लछिमन नाम कहाऊं॥
लखन बचन सुनि हर्षित भारी। प्रभुमुख देखहिँ सब नर नारी॥

१ इसमें भी अपस्मार संचारीभाव व्यंग्य है।
२ यहां कतिपयपद्योंमें रौद्ररस का वर्णन है। ३ इसमें अश्रुसात्विकानुभाव है।
४ इसमें बिषादन यद्वा तृतीय असंगति अलंकार है। ५ इसमें प्रतिज्ञालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनत राम करि अनुज बड़ाई। कहन लगे यहि विधि समुझाई॥
देहिं कोटि दुख संकठ जबहूँ। पूजिय मातु पिता पद तबहूँ॥
गुरु पितु मातु स्वामि नृपबानी। बिन बिचार करिये हित जानी॥
दैव प्रबल सब ते सुनु भ्राता। नहिं इत नेकु दोष पितु माता॥
सुख दुख हानि लाभ जग जेते। भाग बिवस पावत नर तेते॥
सब बिधि लै लघुकृमिजित अहहीं। प्रबल दैव के बस सब रहहीं॥
जेहि गति रोकि सकै नहि कोई। अति अप्रतर्क दैव है सोई॥
करत न होय होय बिनु कीन्हे। दैव कर्म सो कह जेहि चीन्हे॥
अस बिचारि चित शान्त करीजै। कबहुं न पग अधर्म मग दीजै॥
तुम सम बीर सत्य व्रतधारी। करहि न राज्य हेतु अघभारी॥
छूटै राज मोहि दुख नाहीं। करिहौं तप मुनि सँग बन माहीं॥
त्यागहु क्रोध सकल अघ मूला। जेहि बस होत कर्म प्रतिकूला॥
जो अब व्यर्थ अनर्थ बढ़ैहौ। लोक अयश परलोक नसैहौ॥
कहत सकल श्रुति शास्त्र पुराना। नहिं कोउ सुख सन्तोष समाना॥

त्यागि स्वार्थ गहि शान्ति व्रत, देखहु हृदय बिचार।
सबतवप्रियतुमसबहिंप्रिय, नहिं कोउ सत्रु तुम्हार॥
१ सुधा मधुरता राम की, वाक्य न महँ सरसात।
सुनि सुहात रनिवास नहिं, सुर समाज हरषात॥
२ सुनतलखनदृगलाल करि, कहन लगे अनखाय।
सुनहु नाथ यहिसमयमोहि, नहि यह ज्ञान सुहाय॥

आयसु देहु अरिन संहारौं। बेगि राज अभिषेक सँवारौं॥
करहु जो राज अयस नहिं ह्वै है। त्यागे सकल धर्म नसि जैहैं॥

१ इसमें द्वितिय निदर्शना है।
२ यहांसे लेकर "असकहिधनुसरसाजि" वाला दोहातक रौद्र रस का वर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राज्यहिं ते छत्रिन सुख आही। बन तप करब तिनहिं भल नाहीं।
सुत सम प्रगटि प्रजा प्रति प्रीती। पालन करहिं जे नृपति सनीती॥
ते यहि लोक सकल सुख पावैं। अन्त काल बैकुण्ठ सिधावैं॥
इहै कर्म समुचित सब राजा। जेहि न उछृंखल होय समाजा॥
१ उचित धर्म सब प्रजा करावै। सो अति धार्मिक नृपति कहावै॥
२ त्यागि प्रजा मन ग्रसित कलेसा। बन तप करत सो मूढ़ नरेसा॥

दुखित रहत जेहि राज के, राज प्रजा समुदाय।
सो नृप रौरव नरक में, परै कल्प सत जाय॥
अन्यायी नृप बचन बस, तुम त्यागत हौ राज।
यहि ते सधै न धर्म कछु, बरु बहु होय अकाज॥
धर्माधर्म बिचार सब, तुम यहि छन तजि दीन्ह।
दैव प्रबल सबते कहत, हिय कायरता लीन्ह॥
सुनहु नाथ सब छत्रियन, किय पौरुषहिं प्रमान।
कायर अधम नपुंसकन्हि, दैव होत बलवान॥
उद्यम साहस धैर्य्य बल, बुद्धि पराक्रम जाहि।
नहिं असाध्य तेहि जगत कछु, दैवहुं डरपत ताहि॥

बैठि रहत आलस बस जोई। दैवहुं अधिक सतावत सोई॥
चलत दैव बल अबलन पाहीं। सबल समीप दैव कछु नाहीं॥
जो दृढब्रत धरि उद्यम करई। दैवहुं तेहि आयसु शिर धरई॥
सुनहु राम पौरुष के आगे। त्राहि त्राहि कहि दैवहुं भागी॥
कैसहुं प्रबल दैव जौ होई। किये प्रबल पौरुष नस सोई॥

१, २ इन दोनो में बिधिअलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब लगि पुरुष पुरुषव्रत धारै। कौन दैव जो काज बिगारै॥
तुम प्रभु प्रबल दैव कहं जानत। प्रगट पुरुष पौरुष नहिं मानत॥
दैव अदैव न मैं कछु जानौं। केवल पुरुषारथहिं प्रमानौं॥
कौन दैव कैसो बल आही। सो अबलगि देख्यो मैं नाहीं॥
अछत दैव अरु दसरथ राजा। आजु तुमहिं करिहौं युवराजा॥
देखौं धौं को कर छति हानी। दसरथ दैव कि कैकयि रानी॥
अब यहि छन मैं तिलक रचैहौं। कोटिन दैवहिं मारि गिरैहौं॥

दैव और पुरुषार्थ में, कौन अधिक बलवान।
सो यहि छन मोरे समर, देखै सकल जहान॥
१ करै बिघ्न मम काज जो, मिलि सब जगत समाज।
तदपि आजु मैं मारिहौं, सत्य सपथ रघुराज॥
अस कहि धनु सर साजि कै, पकरि हाथ रघुनाथ।
कह्यो तिलक हौं करत हौं, चलौ हमारे साथ॥
चूमि अनुज मुख राम तब, भुज भरि अङ्क लगाय।
नाशि क्रोध हिय बोध दिय, बहु प्रकार समुझाय॥
पुनि प्रभु जननिप्रबोधि बहु, आयसु बन हित लीन्ह।
गहिहियसुतपद्मिमन्त्रतेहि, बहु बिधि रच्छा कीन्ह॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतायोध्याकाण्डेसीतलसिंहगहरवार बिरचिते द्वितीयःसर्गः

१ इसमें प्रतिज्ञालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बार बार जननिहिं सिरनाई। सिय गृह गमन कीन्ह रघुराई ॥
जानकि निकट जाय धनुपानी। कही सकल बन गमन कहानी ॥
बरस चतुर्दस बनबसि प्यारी। मिलौं बहुरि गृह रहहु सुखारी ॥
सासु ससुर गुरु सेवा करहू। गृहबसि पतिव्रत कृति अनुसरहू ॥
ह्वै हैं तुमहिं बिपिन दुख भारी। ताते संग लेत नहिं प्यारी ॥
जौ हठ बस चलिहौ बन बामा। सहिहौ बहुत बिपति परिनामा ॥
१ सुनि सीता जल भरि दुहुं नैना। मलिन बदन ह्वै कह इमि बैना ॥
काह कहौं मैं तिय मति भोरी। तदपि नाथ बिनती यह मोरी ॥
लोक बेद सम्मति सबही की। पति ढिग रहनि नीक युवती की ॥
मातु पिता सुत जित परिवारा। नहिं ये तिय गति गति भर्तारा ॥
तुमहिं त्यागि त्रिभुवन के माहीं। सुनहु नाथ मम गति कहुं नाहीं ॥
पितु पुत्रादिक जे प्रिय लोगा। भोगत पृथक पृथक निज भोगा ॥
कहत बेद तिय पिय अरधङ्गिनि। भोगत सब सुख दुख ह्वै संगिनि ॥
२ तुम सो मति जब जानत नाहीं। तबमोहित्यागिजाहु बनमाहीं ॥

३ प्रभुबियोगबहुनरक दुख, सहिहौं अवधि प्रमान।
तुम बिनु मेरे प्रानधन, रहिहैं मम तनु प्रान ॥
त्यागि चन्द्र कहं चन्द्रिका, रबिकर रबिहिं बिहाय।
छाया पुरुषहिं त्यागि कै, राखै ते रहि जाय ॥
४ जाहुबिपिनमोहित्यागिअब, हौं बर्जत हौं नाहिं।

१ यहां से लेकर तृतीय दोहातक भविष्यतबिप्रयोगशृंगार का वर्णन है।
२ इस चौपाई से लेकर आगे के द्वितीय दोहातक काकुबैशिष्ट व्यंग्य है।
३ इसमें काकु बैशिष्ट व्यंग्य और सारोपालक्षणाभी है।
४ इसमें तृतीय आक्षेपालंकार और काकवाक्षिप्त व्यंग्य भी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम निवास करिहौ जहां, मैं अवतरौं तहाहिं ॥
१ सुनहु नाथ पतिदेवतिय, यह हिय सदा बिचार ।
पिय बियोग संयोग युग, सब दुख सुख आधार ॥
सुनि सिय प्रनय प्रगल्भ बच, राम कीन्ह अनुमान ।
राखै रखै न प्रान यह, कह सँग करहु पयान ॥

तब कह लखन जोरि युग हाथा । हमहुँ संग चलिहौं बन नाथा ॥
जौ प्रभु हमहिं संग नहिँ लैहौ । तौ यह प्रान अबहिं तजि दैहौं ॥
अस कहि राम चरन लपटाई । रोदन करन लगे अकुलाई ॥
हिय गहि राम बहुत समुझाये । पै लछिमन हिय एक न भाये ॥
देखि अनुज व्याकुल दुख भारी । बोले यहि बिधि बचन खरारी ॥
जननी अरु तिय मत लै आवहु । चलहु संग बन गहरु न लावहु ॥
जननी निकट लखन तब आई । जब कछु कहन चह्यो सिरनाई ॥
लखन हृदय गतिसमुझि सुमित्रा । बोलि उठी इमि बचन पबित्रा ॥

राजा रानी कीन्ह जो, मैं जानति सो गाय ।
जाहु मुदितसुतबिपिनमहँ, तुम सियरघुपतिसाथ ॥
प्रथमहिं ते मम हृदय महं, है रह इहै बिचार ।
पठवौं तोहि बन राम सँग, करिहौ समय सम्हार ॥
सो मम हिय रुचिबिनुकहे, जो तुम पूरन कीन्ह ।
धन्य धन्य रघुकुल भयो, हमहुँ जगत यश लीन्ह ॥

आजु जगत सब यह यस छायो । पितु आज्ञा बन राम सिधायो ॥
निज रुचि सेवा हित बड़भाई । गये संग लछिमन हरषाई ॥

१ इसमें गौणीसारोपालचणा और यथासंख्यालंकारभी है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ तेहि तुम सुत अब गहरु न लावहु। जाहु जाहु बन बेगि सिधावहु ॥
हरषि लखन जननिहिं सिर नाई। गै उर्मिला भवन भय छाई ॥
पतिहिं देखि उर्मिला सयानी। ह्वै अति चकित कहत इमिबानी ॥
सुन्यौ आजु बन राम सिधैहैं। कहौ कौन जन तेहि सँग जैहैं ॥
परे बिपति बड़ बन्धु तुम्हारे। क्यों न बिपिन तुम संग सिधारे ॥
औ हम सन सम्मति प्रभु लीजिय। बन्धु संग बन मग पग दीजिय ॥
कर्म बचन मन प्रीति दृढ़ाई। सेइय अनुछन सिय रघुराई ॥
जबहिं गाढ़ संकठ कछु लागै। रहहु तुमहिं ह्वै रघुपति आगै ॥
इहौ कह्यो हम सन गुरु नारी। ह्वै हैं बन संगर बहु भारी ॥
तहं यहि बिधि प्रभु समर मचावैं। बीर बधू यस हम जेहि पावैं ॥
बार बार बिनवौं तोहि स्वामी। करेहु समर जेहि होय न खामी ॥
नतुसब रघुवंसी तिय जितनी। हंसिहैं कहि मोहि कायर पतनी ॥
असकहि दधि अच्छत कर लीन्हा। लखन ललाट तिलककरि दीन्हा ॥
बार बार आरती उतारी। पांच प्रदच्छिन कीन्ह सुखारी ॥

२ नयननीर भरि चरन गहि, पुनि बोली सिरनाय।
जाहु भजहु बन राम सिय, दासी भूलि न जाय ॥

हरषि लखन करि सुतिय बड़ाई। आय शीघ्र जहं सिय रघुराई ॥
तब प्रभु सानुज सियहिं लिवाये। कैकयि गृह दसरथ ढिग आये ॥
३ बोले राम जननि सुनि लीजै। बेगि जाउं बन सो अब कीजै ॥
कहहु राउ सन तुम समुझाई। जाउं बेगिबन देहिं रजाई ॥

१ इसमें औत्सुक्यसंचारीभाव व्यंग्य है।
२ यहां भविष्यत विप्रयोग शृंगार और अश्रुसात्विकानुभाव का बर्णन है।
३ इसमें औत्सुक्यसंचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पितु आयसु हित स्वांग न कीजै । समुझि धर्म बनमगपग दीजै ॥
नृप तिय बचन बान सम लागे । देख्यो राम लखन सिय आगे ॥
१ मनहीमन महीप अनुमाना । ये न रहहिं बन करहिं पयाना ॥
धरम प्रेम असमंजस भारी । समुझि नृपति अति भयउ दुखारी ॥
परमब्रह्म रामहिं जिय जानी । पुनि यहिबिधिनिज दृढ़ मतिठानी ॥
जियत न सत्य धर्मब्रत टरिहौं । राम बिरह बरु तनु परिहरिहौं ॥
तजि भंगुर तनु धर्म निबाहैं । लोक बेद सब ताहि सराहैं ॥
अस बिचारि दसरथ नृप ज्ञानी । कही न बिधि निषेध कछुबानी ॥

देखि राम सिय लखन कहं, लीन्हो हृदय लगाय ।
२ शोकबिकलरोदनकरत, बचन न कछु कहिजाय ॥

नृप गति देखि रानि अनखानी । प्रभु सन कहनलगी इमि बानी ॥
३ सुनहु राम सो पुत्र कहावै । जो पितु कहं दुख नरक बचावै ॥
करि प्रन प्रथम बचन नृप हारे । अब न कहत कछु सील तुम्हारे ॥
हिय दुर्बल नृप अरठ महाना । कबहुं न कहहिँ तुमहिं बन जाना ॥
सो सब समुझत तुमहुं यथारथ । करहु यथा नृप ह्वै परमारथ ॥
बिना कहै पितु काज निबाहै । सो उत्तम सुत बेद सराहै ॥
कहे करै पितु कारज जोई । मध्यम पुत्र कहत श्रुतिसोई ॥
कहेहु करै नहिं जो पितु बानी । सो कपूत अघ अवगुनखानी ॥

---

१ इसमें अनुमानालंकार है ।

२ इसमें बिषादसंचारीभाव अथवा अश्रुसात्विकानुभाव है ।

३ इसमें उत्तम काव्य वा गूढ व्यंग्य है, यहां पुत्र शब्द से पुत्र मुख्यार्थ बाध होकर अतिधार्मिक वा सत्पुत्र में लक्षणा है इससे यह व्यंग्य निकलता है कि हे राम तुम बन जाकर राजा दसरथ को अधर्म से रक्षा करो ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ इमिपुनिपुनिकैकयिकहति, बनपयानहितबात।
सुनि बिकसत रघुपति अधर, हुलस न हृदय समात॥
उठि सबेग मुनिभेष धरि, करि प्रनाम पितु मात।
अनुज जानकी सहित प्रभु, चले बिपिन हरषात॥
२ जटाजूट दुहुंबन्धु सिर, मुनितिय पट सियदेखि।
गुरुबशिष्ठ से मुनिगनहुं, भयउ हृदय दुख रेखि॥

तेहिछन भयउ कुलाहल भारी। रोवन लगे सकल नर नारी॥
कौसल्यादि सकल रनिवांसू। रोदन करत आइ तहं आसू॥
धाय सबहिं गहि सिय लपटानी। करहिं बिलाप न जाय बखानी॥
सिय सब सासुन के पद लागी। चली बहोरि बिदा बन मांगी॥
तब माण्डवि उर्मिला सयानी। श्रुतिकीरति सिय पद लपटानी॥
तिहुं करजोरि बिनयबहुकीन्ही। सियपरितोष सबहिं सिखदीन्ही॥
३ कहमाण्डवी बिलखि दुख भारी। मोर बात सब सासु बिगारी॥
स्वामिनि सो अघ छमा करीजै। आनि चेरि निज सँग बन लीजै॥
सुनिसिय भगिनिहिं हृदयलगाईं। कहि तियधर्म बहुत समुझाईं॥
बहुरि सखिन अरु सखा घनेरे। बिलखत आय राम सिय नेरे॥
तब सिय राम सबहिं समुझाये। लखन सहित गढ़ बाहर आये॥
४ तहं देखि पुरजन बहु भीरा। व्याकुल राम बिरह अति पीरा॥
बहुबिधि राम सबहिँ समुझाये। फिरत न कोउ बन चहत सिधाये॥
कहि नृप मत सुमन्त रथलाये। राम लखन सिय ताहि चढ़ाये॥

१ यहां श्रीरामचन्द्र जी का हासस्थायीभाव व्यंग्य है।
२ यहां बशिष्ठादि मुनियों का शोकस्थायीभाव व्यंग्य है।
३ इसमें विषादसंचारीभाव व्यंग्य है। ४ इसमें बिषाद संचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चैत्र शुक्ल दसमी तिथी, गुरु बासर मध्यान ।
राम लखन सीता सहित, कीन्ह्योबिपिन पयान ॥
१ बिष समान सब बिभवसुख, रज समान लखिराज ।
चले राम बन हरषि हिय, पिता बचन के काज ॥
चलत राम रथ बिपिन पथ, चले लोग सब साथ ।
फिरे न कोउ गृह यदपि बहु, समुझाये रघुनाथ ॥
तेहि निसि तमसा सरित तट, किय निवास रघुराज ।
२ बिरहव्यथित पथ श्रमितअति, सोये सकलसमाज ॥
तमसा तट लौं राम कहं, सूर्पनखा पहुंचाय ।
कह्यो चरित सब सचिवसन, लङ्कागढ़ फिरिआय ॥
इहां अर्द्ध निसि सचिव उठि, राम रजायसु पाय ।
प्रथम हांकि रथ अवध पथ, फिरी अवध नियराय ॥

बहुरि ब्योंडि पथ लीक दुराई । रथचढ़ि बिपिन चले रघुराई ॥
होत प्रभात सकल जन जागे । कहां राम रथ खोजन लागे ॥
खोजत चिन्ह बिकल सब धाये । चहत गमन बन अवधहिं आये ॥
तहँ न राम लछिमन सिय देखी । बैठे सब हिय हारि बिसेखी ॥
धरिधीरज पुनि मिलन बिचारी । करहिं सबहिं जप तप ब्रतधारी ॥
इत दूसरी रइनि रघुराई । निवसे सृंगबेर पुर आई ॥
आय निषाद चरन सिर नायो । तेहि निसि सकल सुपास करायो ॥
बालसखा श्री राम सुजाना । गुहकराज गुन ज्ञान निधाना ॥
सुनत राम बनबास कहानी । किय बहु बिनय जोरि युग पानी ॥

१ यहां श्रीराम जी का निर्वेदस्थायीभाव व्यंग्य है और शुद्ध सारोपालक्षणा भी है।
२ इसमें श्रमसंचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ममपुर राज करहु महराजू। हौं सेवौं पद सहित समाजू॥

देखिप्रीति अति गुहकपति, भुज भरि हृदय लगाय।
किय प्रबोध रघुबंसमनि, बहु प्रकार समुझाय॥
१ तेहिनिशिप्रभुसुरसरि बसि, सहितनिषाद समाज।
आये बहु ऋषि मुनि निकर, मिलन हेतु रघुराज॥

२ बिगत रइनि जागे रघुराई। प्राची गगन छई अरुणाई॥
पङ्कज कोक लोक हरषाने। चले पथिक पथ समुझि बिहाने॥
तजि बसेर उड़ि उड़ि खगबृन्दा। चहचहात चहुं दिसि सानन्दा॥
चोर उलूक तमीतम भागे। मुनिगन न्हान ध्यान जप लागे॥
सकुचे कुमुद मलिन शशि भयऊ। नखत बृन्द नभ महं छिपि गयऊ॥
भयउ दसहुं दिसि परम प्रकासा। बन्दी भ्रमर छुटे वनयासा॥
दिवस थकनि निसि सयन मिटाई। उठे प्रात सब जन हरषाई॥
तेहि अवसर सचिवहिं समुझाई। यहि बिधि कहन लगे रघुराई॥
अब तुम लै रथ अवध सिधावहु। मातु पिता सब जन समुझावहु॥
करेहु तात सो काज बिचारी। जेहि न होय दुख पितु महतारी॥
परिजन प्रजा सुहृद समुदाई। जेहि सुख ह्वै सो करेहु उपाई॥
कहेहु तात भरतहिं जब आवैं। करहिं राज जेहि सब सुख पावैं॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिबारा। सब बिधि सबकर करहिं सम्हारा॥
यहि बिधि राम बहुत समुझाई। बिदा कीन्ह सचिवहिं बरिआई॥
तब निषाद नौका लै आयो। तिहुं जन पांय पखारि चढ़ायो॥
सीता अनुज समेत अन्हाये। सुरसरि पार उतरि प्रभु आये॥

१ इसमें लक्षित लक्षणा है। २ यहां कतिपय पदों में सूर्योदयबर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुनि गुह धरि सिर पद रघुनाथा। कह्यो हमहुं चलिहौं बन साथा॥
जौ मोहि नाथ संग नहिं लैहौ। यहि थल अबहिं प्रान तजि दैहौं॥

सखा उठाय लगाय उर, कह्यो राम समुझाय।
करि निवास मनु बर्षबन, पुनि मिलिहौं तोहि आय॥
अब यहि छन हठ त्यागि कै, पालहु प्रजा समाज।
जब तब अवध सिधाइयो, कुसल हेतु महराज॥
जौनमिलहुमोहि अवधिदिन, अवसितजौं निजप्रान।
कहि तथास्तु तेहि फेरि गृह, किय प्रभु बिपिन पयान॥
१ तेहि छन ते मुनि भेष धरि, तजि सब भोग बिलास।
प्रभुहिं भजतनिसिदिवसगुह, कियसुरसरितनिवास॥

राम लखन सिय सुन्दरताई। देखि हरषि मग लोग लुगाई॥
पुनि पुनि पुलकि प्रेम रस पागे। बरबस चले जाहिं सँगलागे॥
कोउ इमि बिनय करत सिरनाई। राखिय संग करौं सेवकाई॥
कोउ फल फूल भेंट लैआवै। प्रभु आगे धरि बिनय सुनावै॥
२ नारिबृन्द रघुपति छबि देखी। होहिं बिकल मन मोह बिसेखी॥
युवती धाय राम ढिग आई। चलन चहति मरयाद बिहाई॥
बहुबिधि राम तिनहिं समुझावैं। लोक लाज कुल धर्म सिखावैं॥
तदपि फिरैं नहिं लोग लुगाई। फेरैं राम सबहिं बरियाई॥

इमि सिय अनुज समेत बन, चले जात रघुबीर।
निकरैं जेहि बन ग्राम मग, तेहि बटुरै बहु भीर॥

१ इसमें लक्षितलक्षणा। २ इसमें मोह संचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ देखि सीय सुकुमारता, सोच करति मगुबाम।
केहिबिधि ये सहिहैं बिपिन, हिम बर्षा अरु घाम॥

तृतिय रइनि पथि बसि रघुराजू। आय चौथ दिन तीरथराजू॥
२ भरद्वाज आश्रम जब आये। मिले परस्पर प्रेम बढ़ाये॥
यह सुधि सुनि ऋषि मुनिबरवृन्दा। आय मिले सब रघुकुलचन्दा॥
३ तेहि निसि तहं निबसे रघुराई। होत प्रभात प्रयाग नहाई॥
मांगि बिदा मुनि पद सिरनाईं। चले यमुनतटपथ श्रीसाईं॥
पुनि प्रभु ह्वै यमुना सरिपारा। आय सिद्धबटबिटप निहारा॥
तहं ते बहुरि चले प्रभु आगे। नील बिटप बन कहं पुनि त्यागे॥
यमुना सरि दच्छिन तट आई। तेहि निसि बास कीन्ह रघुराई॥
करि प्रभात सिय अनुज समेता। चले बहुरि बन कृपा निकेता॥
चित्रकूट पर्बत पुनि आये। बाल्मीक आश्रमहिं सिधाये॥

मिलि मुनि सन करि बंदना, पर्णकुटी बिरचाय।
अनुज जानकी सहित प्रभु, तहं निबसे सुखपाय॥

चित्रकूट गिरि बन बहु शोभा। बरननि न जाय देखि मनलोभा॥
तुंग सृंग सुन्दर गिरि सोहै। चहुं दिसि सघन बिपिन मन मोहै॥
गुल्म लता तरु अगिनित जाती। लसत फूल फल दल बहुभांती॥
लटकत मधुछत्ता बहु डारैं। मधुमच्छिक मधुकर गुंजारैं॥
अगनित जाति बिहग चहुंओरा। बैठे बिटप करत कलसोरा॥
४ देखि कृषा तरु घन भ्रम छाई। नृत्य करहिं बरही समुदाई॥

१ इसमें चिन्तासंचारीभाव व्यंग्य है। २ इसमें अन्योन्यालंकार है।
३ यहां लच्छितलच्छणासे-प्रयाग-शब्द का त्रिवेणी अर्थ समझिये।
४ इसमें भ्रमालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदी नार झरना बहु भारी। बहत स्वच्छ जल मन सुखकारी॥
अमित जाति कपि अमित लँगूरे। कूदत चढ़ि द्रुम सैल कँगूरे॥

१ कुसुमित बन बहु बृक्ष गन, झुकेडार फल भार।
पाय बिभव नवके रहिय, उपदेशत संसार॥
२ सबमन हर्षित करिकहत, त्रयबिधि बहत बयार।
सबही को सुख दीजिये, करिये पर उपकार॥
३ तपबन सुचि सोभासुभग, महिमा अति अवगाह।
जेहि देखत अघ त्यागि मन, उमगत धर्म प्रबाह।

कहुं कुटि कहुं तरुतर कहुं गहबर। निवसत ध्यान मगन बहु मुनिबर॥
कहुं कहुं यज्ञ करत मुनि नाना। छाय धूम नभ दसहुं दिसाना॥
काय बचन मन प्रकृति सुधारी। करत कठिन तप कहुं ब्रत धारी॥
बलकल बसन असन फल फूला। निदरत स्वर्ग सकल सुखमूला॥
सम्पति जीर्न कमण्डल जर्जर। जेहि जल बहत मनहु निर्झरझर॥
यद्यपि न तहं कछु बिभव बिलासा। तप प्रभाव प्रगटत चहुं पासा॥
सकृतप्रबेस करतजेहि गिरिबन। ह्वैसुभरुचि बरबस बिषयिनमन॥
निबसत खग मृग गन बन जेते। रहत शान्त निज कृति तजि तेते॥
बाघ और मृग मिलि सँग आवैं। उभय परस्पर तनु खुजलावैं॥
बरहि ब्याल निर्भीकछुडावत। नकुल छीनि तिहि गोद खिलावत॥
अश्व महिषनिज बैर बिसरहीं। करि के हरि यक सँग बन चरहीं॥
खेलत बन मुनि सिसुगन धावैं। निद्रित हरि हति लात जगावैं॥

१, २ इन दोनो दोहाओं में सदर्ष निदर्शना लंकार जानिये।
३ यहां से लेकर आगे के दोहा तक शान्तरस का बर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शुकपिक खग मुनि आश्रम नाना। मुनि नित करत शाम श्रुतिगाना ॥
अन्ध मुनिन कहं यष्टि धराये। लिये फिरत मर्कट अगुआये ॥

यल प्रभाव मुनि संगवस, सब खग मृग समुदाय।
बिचरत करत कलोल बन, सहज बैर बिसराय ॥

जब ते राम बिपिन महँ आये। करत जगत हित ब्रत मन लाये ॥
बलकल बसन फूलफल खावैं। महि सिल सयन करत सुख पावैं ॥
१ पंचयज्ञ प्रति दिन प्रभु करहीं। वैदिक धर्म कर्म अनुसरहीं ॥
मख पूजादि सौंज सब जेते। कन्द मूल फल फूल समेते ॥
निजकरतेप्रतिदिनसियल्यावति। सब बिधि पति सेवा सरसावति ॥
भरि भरि कलस पयस्विनि नीरा। हरषित ल्यावत लछिमन बीरा ॥
जेहि बिधि ते रघुपति सुखपावैं। सिय लछिमन सो काम बनावैं ॥
सिय लछिमन कहं ह्वै हित जैसे। कहहिं करहिं सब कछु प्रभुतैसे ॥
यहि बिधि सानुज सिय रघुराई। बसत बिपिन सुरमुनि सुखदाई ॥
बसहिं जे ऋषिमुनि तेहि बनमाहीं। आवहिं राम दरस करिजाहीं ॥
बाल्मीक मुनिबर नित आवैं। प्रभु दम्पति गति-लखि सुखपावैं ॥
२ प्रतिदिनप्रभुयह करत बिचारा। कबकरिहौं ऋषिमुनिन उबारा ॥

कहत राम सुनु जानकी, येगिरि कानन माहिं।
कोटिअवधसमसोहिसुख, जौ जग हित सधिजाहिं ॥

प्रिय सो कौन यतन अब कीजै। जेहि सुरमुनि सुख ह्वै दुखछीजै ॥
केहि बिधि करौं असुर संहारा। जेहि ते ह्वै सब जग उपकारा ॥

---

१ स्वाध्याय, अग्निहोत्र, अतिथिपूजन, पितृतर्पण और बलिकर्म येही पञ्च यज्ञ हैं।
२ इसमें चिन्ता संचारी भाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह सिय सुनहु धर्म-धुर-धारी । परम कठिन व्रत परउपकारी ॥
१ परहित व्रत यज्ञानल माहीं । जब होमिय निज स्वारथ काहीं ॥
तब प्रभु सधै जगत उपकारा । मिटै भेद निज पर व्यवहारा ॥
जब लगिअगरअगिनिनहिंजरई । नहिं निज गंध पवन महँ भरई ॥
कटै छटै तनु सिल घिसि आवै । तब चन्दन सुर सिर चढ़ि आवै ॥
तपै अगिनि जब मल सब जरई । तब कंचन कंचन ह्वै बरई ॥
देखहु रवि ससि जलद बयारी । स्वार्थ रहित ये परउपकारी ॥
भये जगत जेते बड़भागी । ते परहित लगि स्वारथ त्यागी ॥

अस बिचारि रघुबंसमनि, प्रथम स्वार्थ तजि देहु ।
तब जग के उपकार कछु, करन हेतु मन देहु ॥
२ सुनिसियमृदुमञ्जुलबचन, सबबिधिसुखदअनूप ।
धन्य धन्य कहि जानकी, हरषे रघुकुल भूप ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतायोध्याकाण्डेसीतलसिंहगहरवार विरचिते तृतीयःसर्ग्गः

एक बार सुरलोक मझारा । बिधि सुरपति दुहुं कीन्ह बिचारा ॥
रावन बध हित प्रभु बन आये । इहां आय निज प्रन बिसराये ॥
तेहिअबचलिकछुकपटबनाइय । अरि बध हित प्रभु सुरति कराइय ॥
अस बिचारि दुहुं शिव ढिग आये । निज हिय के संकल्प सुनाये ॥
सुनि हंसि कह शङ्कर मति माना । व्यर्थ दोउ मन भ्रम इमि ठाना ॥

१ इसमें निरवयव अथवा समअभेदरूपकालंकार है ।
२ इसमें प्रथमउल्लासालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राम बेगि सब अरि संहरिहैं। सुरसुखदै महि भार उतरिहैं ॥
तजि दुविधा मम बच पतिआहू। जनि करि कपट राम ढिगजाहू ॥
शिव सुभवचन सुरन नहिं भाये। चले कपट मुनि भेष बनाये ॥
छन महं चित्रकूट चलि आये। तहँ चरित्र लखि बिस्मय छाये ॥
देखे निशिचर बनचर योधा। करत परस्पर समर सक्रोधा ॥
जहं लगि सैन सुभट निसिचारी। तिन कहं नाश कीन्ह बनचारी ॥
रावनादि जे असुर प्रधाना। परे अवनि बेधित प्रभुबाना ॥

यह बिलोकि दुहुँ जन तुरत, आये लङ्क मझार।
तहं देख्यो रावन भवन, बैठे राम उदार ॥

१ मनिमय सिंहासन इकराजै। तेहि पै प्रभु सिय सहित बिराजैं ॥
रावन कुंभकरन दुहुं भाई। सन्मुख ठाढ़ करत सेवकाई ॥
२ सेवत दुहुं जन दम्पति कैसे। जय अरु बिजय बिष्णु कहँ जैसे ॥
चकित चित्रकूटहिं चलि आये। तहंगतिलखिदुहुं अति भयपाये ॥
प्रभुकर रावन निधन निहारी। अस्तुति करत देव मुनि झारी ॥
३ कोटि इन्द्र कोटिन चतुरानन। बिनय करत कोटिन सहसानन ॥
तब दुहुं निज निज लोक सिधाये। तहंकोटिनबिधिइन्द्रहिंपाये ॥
निज निज गृह प्रबिसन हित द्वारे। गये तबहिं सुर दूरि निकारे ॥

तब दुहुं जन व्याकुल परम, आये जहं कैलास।
कहि चरित्र सिव चरनगहि, रोवत भरत उसास ॥

तब सिव दुहुन बहुत समुझाई। चले संग लै जहँ रघुराई ॥

१ इसमें पदावृत्तिदीपकालंकार है। २ इसमें उदाहरणालंकार है।
३ इसमें पदावृत्ति दीपक यद्वा शब्दकल्पितनिरुक्त्यालंकार है।

CC-O. In Public Domain, A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लखि देवन आवत भगवाना । उठि अति प्रेम मिले अगुवाना ॥
प्रभु आदर लखि अति सकुचाई । बिधि अरु इन्द्र परे पद जाई ॥
त्राहि त्राहि प्रभु कृपा निधाना । हमदुहुं कपट छमहु भगवाना ॥
हम दुहुं जन सिव कहा न माना । निज अज्ञान नाथ पै ठाना ॥
१ सो सब अघ अब नाथ निवारौ । गहत चरन निज दास उबारौ ॥
कहि इमि रुदन करत बहु भांती । तब प्रभु दुहुन लिये गहि छाती ॥
पुनि बहु भांति कह्यो समुझाई । निजनिजगृहनिबसहुसुखपाई ॥
करिहौं बेगि असुर सब नासा । करु मम बचन सत्य बिस्वासा ॥
तब सिव परे चरन धरिमाथा । किय प्रबोध हिय गहि रघुनाथा ॥
राम लखन सिय पद सिर नाये । पुनितिहुं निजनिजलोक सिधाये ॥
यहि बिधि बन सिय अनुज समेता । करतचरितनित कृपानिकेता ॥

एक समय बनवास महं, लखि सिय परम उदास ।
मनबिलासअरुहासहित, कह इमि रमा निवास ॥

२ कहहुसुमुखिनिजमतिगतिखोली । कोकिल बोलत मधुरी बोली ॥
को समन्त महिपाल कहावै । कौन भौन दुलहिन मनभावै ॥
को कहिये दुख ससिहिं निरेखी । अलि हिय रस को लोभ बिसेषी ॥
दिवस मिलन को कहै सुखारी । का महि बल बाढ़ै लखि नारी ॥
कह सिय हंसि सुनु प्रान पियारे । कहहु प्रस्न सो उतर हमारे ॥
पुनि हंसि कह प्रभु सुनहु सहेली । बूझहु मैं कछु कहत पहेली ॥
है यक बाजन सब मन भावै । सम अच्छर को नाम कहावै ॥
आधे अन्त तकार मिलावै । बनै गान सब गायक गावैं ॥

१ इसमें पदावृत्तिदीपकालंकार है ।
२ यहांसे लेकर आगे की चौथी अर्द्धाली तक प्रथमचित्र वा अभिन्नप्रश्नोत्तरालंकार है

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Shri Vasth Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो सम्पूर्न कहै कोउ ताही। ह्वै सिव बाहन संसय नाहीं ॥
१ यहि बूझै सो तव पति होई। कहसिय यह हमरो ननदोई ॥
कर बोलै करही सुनि पावै। नहिं तेहि सबद श्रवन महं आवै ॥
सब सन रमति रहति मन मानी। नीच ऊंच कुल करति न कानी ॥
२ सुनहु सुमुखि यह जाति तुम्हारी। कह सिय यह स्रंगी ऋषि नारी ॥
फाटै पेट बैठ रह आगै। लागतही मुख गर्जन लागै ॥
३ तुम्हरो अनुज हमारो सारो। कह सिय यह तो भरत तुम्हारो ॥
निमि पति ते कन्या इक आई। मिलो भलो बर तउ हरजाई ॥
खोजति फिरति पुरुष बहुरङ्गी। कहुं न रहति थिर ह्वै यकसङ्गी ॥
४ कहसिय यह तुम्हरी कुलआई। न्रप दसरथहिं प्रगटि महि आई ॥

इमि बहु हास बिलास किय, दम्पति इङनि यकन्त।
सो रहस्य सुख समुझि हैं, भक्तिमन्त कोउ सन्त ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतायोध्याकाण्डेसीतलसिंहगहरवार
बिरचिते चतुर्थःसर्ग्गः

प्रथम बरनि जिमि बन बसी, सिय समेत दोउ भाय।
कहौं परम संक्षेप अब, अवध कथा समुझाय ॥

१ स्रंगी। २ नारी।

३ रामजी पहेली का अर्थ समुद्रोत्पन्न शंख पर घटाते हैं और जानकी जी को लक्ष्मी मानकर उसे उनका भाई ठहराते हैं। जानकी जी पहेली का अर्थ शंखावतार भरत पर घटाती हैं और रामजी ने जो शंख को पहिले साला कहाथा उस पर हंसी उड़ाती हैं। ४ कीर्ति।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राम लखन सिय सन बिलगाये। जब सुमन्त दसरथ ढिग आये॥
१ सुनत चरित नृप व्याकुल भारी। राम बिरह तनु तजे सुखारी॥
२ स्वामि मरन लखि नृप तिय सारी। रोवहिं अवध सकल नरनारी॥
तब बशिष्ठ सब जन समुझाये। भरत शत्रुहन बोलि पठाये॥
सुनि पितु मरन बिकल दोउभाई। करहिं बिलाप न सो कहिजाई॥
राम लखन सिय बिपिन सिधाये। यह सुनि दुहुन गिरे मुरछाये॥
गुरु उठाय बहु बिधि समुझायो। पितृ कार्य सब सबिधि करायो॥
पुनि बशिष्ठ सब सचिव समाजू। भरतहिं कह्यो करहु पुर राजू॥

सुनत भरत अति बिकल ह्वै, बोले बचन प्रमान।
रामलखन सिय दरस बिनु, नहिं रहिहैं तनु प्रान॥

राज करन हित जौ हठ करि हौ। तौ यहि छन मैं तनु परिहरिहौं॥
अस कहि साजि तिलक सब साजू। चले फिरावन गृह रघुराजू॥
सचिव सुवन सिर दै पुर भारू। चले भरत सब लै परिवारू॥
३ पुरजन परिजन सचिव जमाती। चलीं सकल जननी हरषाती॥
हय गय रथ बहु संग सिधावैं। भरत सत्रुहन पैदल आवैं॥
गुरु जननी हठि रथ बैठावैं। चलि कछु मग पुनि पैदल धावैं॥
हाय राम सिय लखन पुकारत। चलेजात दुहुं जन अति आरत॥
चलत गड़त पग कंटक कंकर। बिलखत गुनि दुख सिय रघुबरकर॥
यहि बिधि भरत सत्रुहन दुहुंजन। पहुंचे चित्रकूट गिरिबर बन॥
दूरहिं लखि प्रभु कुटी बिशाला। धाय चले अति प्रेम उताला॥

१. यहां विरुद्ध भावों के जुड़नेसे-भावसंधिअलंकार हैं।
२, ३ इनमें "रोवहिं" और "चलीं" शब्द दोनों तरफलगते हैं अतएव देहली दीपकालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गिरे जाय रघुपति चरन, त्राहि त्राहि कहि नाथ।
भरत शत्रुहन दुहुन हिय, लिय लगाय रघुनाथ॥

पुनि सिय चरन परे दोउ भाई। मिले लखन दुहुं जन हरषाई॥
तेहि छन सब समाज चलि आये। रामलखन सिय मिलि सुखपाये॥
गुरु सम्मति पुनि सब समुदाई। इत उत बास कीन्ह बनजाई॥
१ सुनिमुनि मुख पितु स्वर्ग पयाना। महितल मुरछि गिरे भगवाना॥
२ भयो चेत उठि बैठि सम्हारी। रामलखन सिय बिलखहिं भारी॥
अहह साधु पितु धर्म निधाना। मम अपराध तजे तुम प्राना॥
हा! अति अधम पुत्र मैं जायो। जननिहिं दुख दै पितहिं नसायो॥
जो नहिं जनमत मैं उतपाती। तौ नहिं बढ़ति बिपति यहि भांती॥
कहि यहि बिधि ह्वै परम अधीरा। बिलखि बिलखि रोवत रघुबीरा॥
कह बशिष्ठ गुरु तब समुझाई। जनमत जग सो अवसि नसाई॥
काहु न मृत्यु समय बिनु होई। काल पाय जग बचै न कोई॥
जग प्रिय जन सम्बन्ध घनेरा। सो न सदा खग रइनि बसेरा॥
३ ज्यों समुद्र बहु घट बहि आवै। कबहुंक संग कबहुं बिलगावै॥
त्यों सब प्रिय जन यहि जगमाहीं। जियत संग रहि मरि बिलगाहीं॥

पथनिवास जिमिपथिकजन, निबसत निसि यकसाथ।
तिमि जग जन परिबार सब, समुझहु श्रीरघुनाथ॥

४ मृतप्रियजनफिरिमिलतनकैसे। सरित प्रवाह फिरत नहिं जैसे॥

---

१ इसमें अपस्मार संचारीभावव्यंग्य है।
२ यहां कतिपय पद्यों में करुणा रस का वर्णन है।
३ इनदोनोअर्द्धालियों में तथा आगे के दोहा में उदाहरणालंकार है।
४ उदाहरणालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोक करत सत कल्प गवांवै । मरे पुरुष नहिं फिरि गृह आवै ॥
सोक किये मृतजन दुख पावैं । करिय श्राद्ध तौ स्वर्ग सिधावैं ॥
अस बिचारि जे पण्डित ज्ञानी । करहिं न सोक मरे प्रिय प्रानी ॥
सबिधि श्राद्ध करि देहिं सुदाना । जेहिते ह्वै मृतजन कल्याना ॥
सुनहु राम मृत प्रद कल्याना । नहिं कोउ यहि जग श्राद्ध समाना ॥
सरधा सहित श्राद्ध जौ कीजै । अन्न फूल फल जल जौ दीजै ॥
ह्वै अछय्य सो मृत जन काहीं । मिलत स्वर्ग कछु संसय नाहीं ॥

अति सरधा बिस्वासयुत, बिष्णु सरन सम्पन्न ।
करत श्राद्ध तेहि पितर गन, लहत मोच्छ परछन्न ॥
नृप दसरथ निज पुन्यबल, गये देवपति धाम ।
कौन सराहै भाग्य तेहि, जेहि सुत तुम सम राम ॥
करि तर्पन लछिमन सहित, सबिधि श्राद्ध सब कीन ।
पितृ सोक बस राम प्रभु, रहे मौन दिन तीन ॥

चौथे दिवस भीर भइ भारी । जुरे अवध तिरहुत नरनारी ॥
लगी सभा कछु बरनि न जाई । बैठे मुनि बसिष्ठ निमिराई ॥
चहुंदिसि चित्रकूट गिरि बासी । आये सब ऋषि मुनि तपरासी ॥
तब अति प्रेम जोरि युग पानी । बोले भरत बिनय बर बानी ॥
अब निज राजतिलक प्रभु लीजै । जननि जनक मम अघ छय कीजै ॥
युग युग ते रघुकुल यह रीती । होत जेठ सुत नृप कह नीती ॥
ह्वै तियवस जो किय नृपदसरथ । सो न उचित सब विधि अतिअनरथ ॥
यह केहु भांति न नृप अधिकारा । देहिं मोहि जो राज तुम्हारा ॥
पुनि कैकयि अघ कीन्ह अघाई । प्रभु लछिमन सिय बनहिं पठाई ॥
धिक अस जननि कीन्ह बड़ि हानी । अहो ! कोटि धिक मोहि अघखानी ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व्यर्थ जन्म मम भयउ अभागी। रामलखन सिय दुख जेहि लागी ॥
परिजन प्रजा सकल परिवारा। मोरे अघदुख सहत अपारा ॥

छमि अधर्म सो सकल मम, करहु राज परित्रान।
नतरु अवसि तनु त्यागि हौं, त्राहि त्राहि भगवान ॥
१ असकहि अनुज समेत उठि, स्रवत नयन जलधार।
परे चरन गहि लकुट इव, पुलकत प्रेम अपार ॥
गहि भुज अनुज उठाय दुहुं, हिय लगाय रघुराय।
सीस घ्रान करि चूमिमुख, लिय समीप बैठाय ॥
प्रिय परिजन जननी सचिव, सकल प्रजा तेहिकाल।
कहहिं प्रभुहिं चलि अवध अब, करहु राज प्रतिपाल ॥
सत्यसील-निधि राम प्रभु, नहिं कछु उत्तर दीन्ह।
बहुरिभवन फिरिचलन हित, भरतविनय बहुकीन्ह ॥

कामी तिय जित नृपति बच, नाथ करिय नहिं कान।
अवसिभवन फिरि चलियअब, करिय प्रजापरित्रान ॥

२ सुनिअति सकुचि कहतभगवाना। सुनहुभरत तुमबुद्धि निधाना ॥
होत अवसि होनी जो होई। रोकि न सकै दैव गति कोई ॥
नृप दसरथ कैकयि तुम काहीं। मम बनबास दोष कछु नाहीं ॥
अस मन समुझि सोक परिहरहू। मातु पिता निन्दा जनि करहू ॥
मातु पिता कृत आयसु जोई। सब बिधि उचित धर्म सुत सोई ॥
पितु दसरथ कछु अनयन कीन्हा। तुमहिं जो राज मोहि बन दीन्हा ॥
जब लगि नृपति नृपति पद माहीं। तेहि अधिकार सर्व बिधि आही ॥

१ इसमें अश्रु और रोमांचसात्विकानुभाव दोनों हैं। २ इसमें व्रीडासंचारीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Shri Avadh Bihari Bhuvaneshwari Trust Donations

जे पितु मातु सुतहिं उपजाये। सहि बहु दुख पुनि पोसि बढ़ाये॥
निज सुत पै तिन सब अधिकारी। देहिं राज वा करहिं भिखारी॥
परै कोटि दुख संकठ जबहूं। मातु पिता बच तजिय न तबहूं॥
यह सुभ सहज नियम बिसराई। राज नियम कस मानहु भाई॥
धर्मसिन्धु पितु कैकयि माई। किय अति भल मोहि बिपिन पठाई॥

नीति निपुन धार्मिक नृपति, हमतुम कहं सुरझाय।
अवध और आरन्य कर, दीन्ह राज बिलगाय॥
हमहिं राज बनबास प्रभु, दिय नृप कौन बिचार।
भरत बचन सुनि हरषि हिय, बोले राम उदार॥
कैकय नृप सन प्रथम प्रण, किय अस दसरथराज।
करिहौं तव तनुजा तनय, अवध राज महराज॥

पुनि जननिहिं द्वै बर नृप दीन्हा। जो मनभाव मांगि सो लीन्हा॥
जेहि बस द्वै सब भये सुपासू। तुमहिं राज हम कहं बनबासू॥
मोहि पितु मातु राज जो दीन्हा। सो मैं प्रभुहिं समर्पन कीन्हा॥
मम दिसि ते प्रभु सो लै लीजै। रघुकुल रीति सत्य करि दीजै।
प्रभु बनबास सीस में धरिहौं। बनबन फिरत जनम निज भरिहौं॥
सत्य प्रतिज्ञ त्यागि पितु बानी। किमि करिहौ निज कृति मनमानी॥
१ अस व्यत्ययकियधर्म न रहिहै। साधु समाज न कोउ भल कहिहै॥
मोहि बनबास तुमहिं पुरराजू। दियो दुहै द्वै बर महराजू॥

कैकय नृप अरु कैकयिहिं, दिय जो बर महराज।
हमतुम मिलितेहि अन्यथा, केहिबिधि करिहौआज॥

१ व्यत्यय=उलट पलट।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पितु आयसु पालिय दुहु भाई। किय बिपरीत न होय भलाई॥
सुनहु भरत कोटिनहठ करिहौ। मैं पितु बचन कबहुं नहिं टरिहौं॥
सत्य सिन्धु पितु धर्म निधाना। बचन न तज्यो तज्यो बरु प्राना॥
सो धार्मिक पितुबच जब टरिहैं। अवसि राम निज तनु परिहरिहैं॥
अस बिचारि सो करहु उपाई। पितु आयसु जेहि टरै न भाई॥
१ सुनहु भरत बर बुद्धि बिधाता। अब तुम घन जग जीवन दाता॥
जौ कछु तुमहिं सनेह राम पर। तौ जनि हठ करि अब फेरहुघर॥
मातु पिता कृत पुन्य प्रभाऊ। मोहि बन होय कलेस न काऊ॥
इन्द्रिन बिषय बिबस जो नाहीं। तेहि सबथल सुख कहुं दुखनाहीं॥
तब प्रभु सिय फेरिय गृह माहीं। तेहि बनबास दीन्ह नृप नाहीं॥
राजबधू सिय अति सुकुमारी। किमि सहिहैं हिम आतप बारी॥
जौ चलि अवध रहैं सियमाई। जियैं प्रजा सब करि सेवकाई॥

करैं राज जौ अवध चलि, प्रभु आयसु सिय अम्ब।
गुरु परिजन जननी प्रजा, सब कहं ह्वै अवलम्ब॥

अस कहि सहित सकल रनिवांसू। गये भरत जहं सीय निवासू॥
गुरु तिय निमि रघु कुल सबरानी। भरत सहित कहिकहि मृदुबानी॥
समुझाये सिय कहं सब कोई। चलहु भवन बन दुख बहु होई॥
सुनि सिय सहमि कहति करजोरी। सुनहु सकल जन बिनतीमोरी॥
मोहि अस सीख दीन्ह सबकाहू। गृह सबसुख बन दुख अवगाहू॥
मैं पुनि देख्यो हृदय बिचारी। पति बिहीन मोहि गृह दुखभारी॥
१ पति सँग बिपिन कष्ट दुख जेते। कोटि अवध सम सुख मोहितेते॥
सासु ससुर गुरुपितु महतारी। नहिं कोउ तिय पतिसम हितकारी॥

१ इसमें वाच्यसिद्धाङ्गगुणीभूत व्यंग्य है। २ इसमें अनुज्ञालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ उभयलोक स्वारथ परमारथ। तियहिं एक पति देव यथारथ॥
अस बिचारि मैं गृहनहिं जैहौं। पति सँग बसि बन बिपति गवैहौं॥

अहह प्रान पति बिपिन बसि, सहिहैं कष्ट अपार।
केहि बिधि मैं चलि अवधपुर, करिहौं राज सम्हार॥
२ कहिइमिसियरोवनलगी, लखिचहुंदिशि अकुलाय।
अस न होय कोउ पकरिमोहि, अवध नगर लैजाय॥

सिय गति देखि हरषि हिय भारी। धन्य धन्य कह सब नरनारी॥
पुनि सब जन निजमन अनुमाना। फिरहिं न सिय नहिं रामसुजाना॥
तब उठि भरत राम पहँ आये। चरन बन्दि इमि बचन सुनाये॥
जब सियराम फिरत कोउ नाहीं। कछु अवलम्ब देहु जन काहीं॥
जेहि सेवन करि हम सुखपावैं। जबलगि प्रभु नहिं घर फिरि आवैं॥
सुनत राम हिय अति हरषाई। दिय निज पद पादुका सुहाई॥
हरषि भरत लै सीस चढ़ाये। पुनि यहि बिधि प्रन बचन सुनाये॥
अहिछन ते यह राज तुम्हारा। अब न रह्यो कछु मम अधिकारा॥
हौं सेवक ज्यों अवधि प्रमाना। करिहौं राज काज भगवाना॥
३ बीते अवधि न जौ प्रभु अइहौ। तौ तेहि दिन मैं प्रान गवैहौं॥
दै भरोस बहु बिधि समुझाई। तब प्रभु बिदा कीन्ह दुहुं भाई॥
पुनि मिलिजुलि जेहिसन जसचाही। बिदाकीन्ह रघुपति गुनग्राही॥
तब सब जननि सहित मुनिराजा। आय अवध सब अवध समाजा॥
निजनिज भवन निवसि सबलोगा। करत राम हित ब्रत जपयोगा॥

१ इसमें द्वितिय हेतु अलंकार है। २ इसमें शंकासंचारीभाव व्यंग्य है।
३ इसमें प्रतिज्ञालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मांडवि सहित सुमित्रा सादर। सेवति राम जननि निसिवासर ॥
श्रुतिकीरति उर्मिला सयानी। सेवहिं अनुछन कैकयि रानी ॥
तब सब जननि बहुत समुझाई। आये नन्दिग्राम दुहुं भाई ॥
मनिमय सिंहासन मँगवायो। तेहि पर प्रभु पादुका धरायो ॥
कर्म बचन मन प्रेम निबाही। राम सरिस नित पूजत ताही ॥
राज काज सिगरे व्यवहारा। पूछि करत पादुका उदारा ॥

भूमि सयन बलकल बसन, सकृत फूलफल खाय।
करत मुनिन इव कठिनब्रत, रह न लगी दुहुं भाय ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतायोध्याकाण्डेसीतलसिंहगहरवार विरचिते पंचमःसर्ग्गः

अयोध्याकाण्ड समाप्तः

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिज्ञापन

सम्पूर्ण "श्रीसीतारामचरितायन" सात खण्डों मे छप रहा है जिसका मूल्य लगभग १०) दस रुपये के होगा। परन्तु जो व्यपारी एकसाथ २५ पचीस जिल्द या इससे अधिक खरीदेंगे उनको २५) पचीस रुपय सैकड़ा कमीशन दिया जायगा।

भवदीय कृपानुकांक्षी

जयप्रकाश सिंह

मोकाबले नबीस कलक्टरी महाफ़िज़खाना

मेखलीटगञ्ज—गया।

पुस्तक मिलने का ठिकाना

जिन महाशयों को यह ग्रन्थ खरीदना हो वे निम्न पते से मंगावें

पहिला ठिकाना— श्रीसीतलसिंह गहरवार, ग्रन्थकर्त्ता
ग्राम और डाकखाना—इमाम गंज
जिला गया।

दूसरा ठिकाना— बाबू जयप्रकाश सिंह
मोकाबले नबीस कलक्टरी महाफ़िज़खाना
मेखलीटगञ्ज—गया

तीसरा ठिकाना— राजराजेश्वरी पुस्तकालय
कचहरी रोड—गया।

चौथा ठिकाना— "बिधु" साहित्यमन्दिर
रमना—गया।

थोक खरीदारों को २५) सैकड़ा कमीशन मिलेगा।

बिशेष हाल पत्र से पूछिये।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

श्रीसीतारामचरितायन

आरण्य, किष्किन्धा

और

॥ सुन्दरकाण्ड ॥

श्रीसीतलसिंह गहरवार

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक और सम्पादक
जयप्रकाश सिंह
मौक़ावले नवीस कलक्टरी
मेखलौटगञ्ज—गया ।

रचयिता

॥ श्रीसीतलसिंह गहरवार ॥

सम्बत १९८२ वैक्रमी

मुद्रक
हरिहर प्रसाद जिज्ञ
अग्रवाला प्रेस—गया ।
१८ सितम्बर १९२५ ईस्वी

प्रथमावृत्ति
मूल्य ।/

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

❋ श्रीसीतारामाभ्यांनमः ❋

॥ अथारण्यकाण्ड ॥

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

१ सुरदुर्लभ सुख त्यागिजेहि, समुझि जगतउपकार ।
सहत बिपिन बहु बिपतितेहि, बन्दौं राम उदार ॥

१ यहां इन दोहाओं से रामादिकी बन्दनादिसूचक अर्थों के अतिरिक्त काण्ड भरकी कथाकी सूचना मिल जाती हैं अतएव मुद्रालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अगहित साधन करत जो, रामहिं करत सहाय।
सोसिय अरु लछिमन चरन, बन्दौं मन बच काय॥
जासे जूठे फलन को, खायो राम सराहि।
सो श्रीसवरी पद नमो, सुर-तिय जाहि सिहाहिं॥

गये अवध जब अवध समाजू। तब सिय सन इमि कह रघुराजू॥
इहां निवास उचित अब नाहीं। चलिय बेगि दण्डकबन माहीं॥
१ ये गिरि गन बन लता घनेरी। सुरति करावति प्रियजन केरी॥
२ जेहि थल आय मिले जे जैसे। मम हिय ध्यान चढ़त सो तैसे॥
बहुरि आय जे अवध निवासी। देखि गये यह बन सुखरासी॥
जब मम सुधि करिहैं तब अइहैं। इहां आय बहु मोह बढ़ैहैं॥
तब मैं करत जो बन तप भारी। सो सब बिधि नसिहैं सुनु प्यारी॥
रामबचनसुनिसिय अरु लछिमन। चलिय अन्य बन कहं हर्षित मन॥

तबमिलिसबऋषिमुनिन सन, बार बार सिरनाय।
दण्डक बिपिन पयान किय, सीय सहित दुहुं भाय॥
राम लखन सीता सहित, लखि पैदल बन जात।
पंथपथिक नर नारि सब, कहहिं परस्पर बात॥
३ कहूं कहूं भगवान हूँ, किये भूल भरपूर।
सज्जन कहं बहु दुख दिये, दुर्जन कहं सुखपूर॥

चलत पंथ सब दिवस बिताये। अति बिपिन रजनीमुख आये॥
४ नखत सहित चांदनि छितराई। तेहि छन नभ प्रगटे शशि आई॥

१, २ इनदोनों में सुमिरण अलंकार है। ३ इसमें लोकोक्तिअलंकार है।
४ यहां से लेकर आगे के बहुत से पद्योंमें चन्द्रोदय का वर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रजत शैल पय जलधि अन्हाई । मनहु प्रगट भा नभ अँगनाई ॥
किधौ प्रकृति सिंगार पिटारा । सोह ग्रथित मुकतावलि तारा ॥
कै सुर सुतिय सुहाग कटोरा । कै श्री मुकुर हास रस बोरा ॥
कै आलोक अलौकिक खानी । प्रगट कीन्ह नभ रद्दनि सयानी ॥
अस छबिनिधि शशि प्रगट निरेखी । पुलकत तन मन हर्ष बिसेखी ॥
प्रफुलित कुमुद कमल सकुचाते । खग चकोर छबि लखि हरषाते ॥
बिरहिन दुख अति तम बिनसाने । चक चकई दम्पति बिलगाने ॥
तरुदल अन्तराल धसि बिहँसति । कौमुदिभाअद्भुतगतिबिलसति ॥
शशि-प्रतिबिम्ब सरित जल चमकत । नचत तरंग संग अति सरसत ॥
पवनप्रताड़ित जल सँग धावै । कबहुंक प्रगट कबहुं दुरि जावै ॥
प्रगटत दुरत कला दिखरावत । मानहु प्रभु दम्पतिहिं रिझावत ॥
कै प्रभु-पद परसित पावन पय । हरषि अन्हाय करत निज अघ क्षय ॥
इमि शशि सुछबि देखि हरषाई । मुनिवर निकट गये रघुराई ॥
मुनिहिं देखि सियसानुज रामा । कहि निज नाम कीन्ह परनामा ॥
सानुज रामहिं हृदय लगाई । दिय बहु आसिष मुनि हरषाई ॥
मुनि तिय अनुसूया गुनखानी । तेहि पद गहि सीता लपटानी ॥
तेहि छन मुनि दम्पति हरषाई । करहिं बिपुल निज भाग्य बड़ाई ॥
कह मुनि जन्म दिवस लगि आजू । मैं बहु जप तप किय रघुराजू ॥
तेहि फल पायउ आजु अघाई । करि सिय सहित दरस दोउ भाई ॥
असकहि प्रेम मगन मुनि ज्ञानी । किय बहु बिनय न जाय बखानी ॥

पुनि आसन पादार्घ दै, कन्द मूल फल दीन्ह ।
प्रेम सहित सतकार सब, मुनिबर रामहिं कीन्ह ॥
दिव्य बसन भूषन सहित, सुभ सुहाग अँगराग ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(१)मुनितियदियबरबससियहिं,पुलकिहृदयअनुराग॥
पुनि पुनि सियहिं लगाय हिय, पतिब्रतधर्मसिखाय।
रहहु सदा अहिवात युत, दिय असीस हरषाय॥

होत प्रात मुनि पद सिरनाई। चले अनुज सिय युत रघुराई॥
(२) चलि बहुपंथ बिकट बन आये। जेहि बिलोकि धीरज भगिजाये॥
भांति-भांति के तरु बहु बाढ़े। देखि परैं यमगन ज्यों ठाढ़े॥
अति उतंग गिरि शृंग उठाये। छुवत गगन रबि दिनहिं छिपाये॥
प्राब्ट-बिटप बढ़े बन न्यारे। जेहि अबिरल जल झरत फुहारे॥
नदी भयावनि बिकट करारा। जहतहं देखि परै बहु नारा॥
बहु बिधि गुल्म लता तृणजाली। सब बन छाय रही हरियाली॥
सब दिसि सैल सिला बनखण्डी। कतहु न देखि परै पगु डण्डी॥
(३) ऋच्छ महिष राछस बहु जाती। धावत जनु यमराज जमाती॥
बन चहुंओर घोर अंधियारी। नाचहिं भूत भयंकर भारी॥
चहुं दिशि झिल्लीगन झंकारैं। गर्जत केहरि गज चिघ्घारैं॥
देखिपरैं बन जीव अनेका। रूप भयंकर एक ते एका॥
काक घूक रव करत कठोरा। कहुं धधकत दावानल घोरा॥
निर्जन बन देखिय चहुंपासा। कहुं कोउ कोल भिल्ल कर बासा॥
महा घोर बन बरनिन जावै। जेहि लखि सुभटन हिय भयछावै॥
पुनि सिय सहित राम दुहुं भाई। पहुंचे दण्डकबन महं आई॥

परसत बन रघुपति चरन, शुक्र-शाप बिनसाय।
दण्डक नृप अरजा सहित, मिले राम कहं आय॥

१ इसमें रोमांच सात्विकानुभाव है।
२ यहां अनेक पद्यों में बन का वर्णन है। ३ इसमें उक्त बिषया बस्तूत्प्रेक्षा है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बारम्बार प्रणाम करि, बहु विधि बिनय सुनाय।
कहि वृतान्त निज साप सब, गये स्वर्ग हरषाय॥
देखि अगम बन बन्धु दुहुं, बान सरासन तानि।
सियहिं मध्यकरि बिपिनमग, चलनलगे सुखमानि॥

(१) आगे चलत भयंकर भेखा। सन्मुख पथ राछस यक देखा॥
दीर्घ ताल तरु अधिक सरीरा। बिकट बदन गर्जंत गम्भीरा॥
रुधिर धार सर्बांग नहाये। बिषम त्रिसूल कांध लटकाये॥
जेहि महँ बाघ सिंह गज केरे। सोहत ग्रंथित सीस घनेरे॥
गहि केहरि गज वृन्द अपारा। खात बहत मुख सोनित धारा॥
२ इबिधि बिराधहिं आवत देखी। अतिब्याकुलसियपियहिंनिरेखी॥
सियहिं देखि लछिमन दिसिदेखी। होहु सजग प्रभुकहेउ कनेखी॥
तबअति निकटआय बिबुधारी। लखि तिहुं जनकहं कहत प्रचारी॥
माल्यवान जस चिन्ह बतायो। तस दोउ पुरुष सतिय मैं पायो॥
तुमहिं राम त्रिभुवन भटमानी ?। इहै सीय तव तिय गुनखानी ?॥

तुम्हरे बध हित लंक पति, करत यतन दिनरात ?
उहै राम तुम सत्ययदि, तौ बनि आवै बात॥
तुम दोउ बन्धुहिंमारि रन, सियहिं सौंपि लंकेस।
निज भुज यस बिस्तारि जग, हरिहौं असुर कलेस॥
यह लछिमन यह जानकी, हमहिं राम कह राम।
होहु सजग तुम कहं अबहिं, पठवत हौं यमधाम॥

१ यहां कतिपय पद्यों में भयानक रसका बर्णन है।
२ यहां इनदोनों अर्द्धालियों में सूक्ष्मालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनत झपटि क्रोधित निसिचारी । भागि चला गहि जनक कुमारी ॥
सात बान रघुपति तब मारा । भयो बिकल बह रुधिर पनारा ॥
जनक सुतहिं निज गोद उतारी । गर्ज करत धावा निसिचारी ॥
काल सरिस आवत अरि देखी । किय दुहुं जन सरबिद्ध बिसिखी ॥
बिहंसि असुर तब लीन्ह जम्हाई । तनुकढ़िगिरे बिसिष समुदाई ॥
पुनि निज बिषम त्रिसूल चलायो । सरन मारि प्रभु काटि गिरायो ॥
तब अति निकट असुर चलिआयो । राम लखन दुहुं खड़ग चलायो ॥
दुहुं जन कठिन कृपान प्रहारें । पुनि पुनि घेरिअरिहिं रनमारें ॥

द्वै बिदीर्न सब तनु बहत, सोनित धार अबन्ध ।
तदपि पकरि दुहुं बन्धु कहं, राखि लीन्ह निजकन्ध ॥

लिये कन्ध दोउ भाइन काहीं । धाय चला दच्छिन दिसि माहीं ॥
१ यहलखिअतिभय जनककुमारी । बिलखिबिलखिरोदनकर भारी ॥
तब लगि राम लखन दुहुं भ्राता । निसिचर दुहुंभुज काटि निपाता ॥
अरि भुज काटि गर्ज करि गाढ़े । भये दूरि दुहुं जन रन ठाढ़े ॥
यह लखि धाय चला निसिचारी । चरन प्रहारत गरजत भारी ॥
सपदि राम बहु बिसिष चलाये । निसिचर दुहुंपद काटि गिराये ॥
ग्रसन हेतु निज मुख फैलाई । तब अरि चल्यो राम दिसि धाई ॥
तब प्रभु अर्द्धचन्द्र सर मारा । निसिचर सिर महि काटि पवारा ॥

तब तेहि तनु कढ़ि पुरुष इक, रामचरन सिरनाय ।
निज बृतान्त कहि बिनय करि, गयउस्वर्गहरषाय ॥

चले राम सिय अनुज समेता । आये मुनि सरभंग निकेता ॥

१ बिलखि बिलखि = दुख पीड़ित होकर ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मृत्यु निकट लखि मुनिमतिधीरा । तजन चहत जेहि समय सरीरा ॥
तेहि छन ससिय देखि दुहु भाई । कह मुनि बिहंसि चरन सिरनाई ॥
धन्य धन्य प्रभु त्रिभुवन साईं । तव अद्भुत गति बरनि न जाई ॥
मैं भरि जनम भजन बहु कीन्हा । सपनहुं राम दरस नहिं दीन्हा ॥
प्रभु गृह मिलन चल्यो मैं जबहीं । मम गृह आय मिले प्रभु तबहीं ॥
नहिं अब इहां मिलन मैं करिहौं । प्रभु आभार न निज सिर धरिहौं ॥
असकहि दै बहु बिसिष अभंगा । गै हरि लोक हरषि सरभंगा ॥
तेहि छन जे दण्डक बनवासी । आये सब ऋषि मुनि तपरासी ॥
रामहिं देखि हृदय अनुरागे । यहि बिधि बिनय करन सब लागे ॥
सुनहु राम सुर मुनि मनरंजन । तुम प्रगटे महि भार बिभंजन ॥
छत्रिय बंस बीर ब्रत धारी । को तुम सरिस दीन हितकारी ॥
ऋषिमुनि कहं बिसिचर धरिखावैं । तिनहिं नाथ अब बेगि बचावैं ॥
अस कहि राम लखन करि आगे । फिरिफिरिबिपिनदिखावनलागे ॥

१ अस्थिराशिलखिमुनिनकी, क्रुधितरामप्रनकीन ।
थोरे दिन महं अवनि सब, करिहौं असुर बिहीन ॥

राम प्रतिज्ञा मुनि हरषाये । देवन सुमन वृष्टि झरि लाये ॥
फिरि फिरि सब मुनि आश्रम माहीं । बसे राम बहु दिवस तहाहीं ॥
इमि बन भ्रमन करत सुख पाये । राम सुतिच्छन आश्रम आये ॥
२ रामलखनसिय कहं लखिआगे । प्रेम पुलकि मुनि नाचन लागे ॥
करि पूजन पुनि पुनि गुन गाये । कन्द मूल फल असन कराये ॥
उठि प्रभात मुनि सन रघुराई । बोले यहि बिधि बिनय सुनाई ॥
बसत जे बन ऋषिमुनिगन नाना । मिलितिनसनकरिहितसनमाना ॥

१ इस में प्रतिज्ञालंकार है। २ इसमें रोमांच सात्विकानुभावहै

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुनि मिलिहौं तुम सन मुनिराई। अस कहिबिपिन चले रघुराई॥
इत उत भ्रमन करत बन नाना। पहुंचे पंचाप्सर भगवाना॥
१ तहं देख्यो अद्भुत सर भारी। भरो स्वच्छ अमृत मय बारी॥
जेहि चहुं ओर मुनिन गृह नाना। गुल्म लता तरु बिबिध बिधाना॥
बिकसि सर सरसिज बहु भांती। बिहरत जल जलचर बहु जाती॥
चक चकई शुक पिक कलहंसा। कूजत जनु मुनि करत प्रशंसा॥
एक पाद रहि ध्यान लगाई। जहं तहं बैठे बक समुदाई॥
जल कुक्कुट इत उत जलधावत। भ्रमर बृन्द कमलन चढ़ि गावत॥
जल-खग कबहुं जलहिं बुड़ि जावैं। कबहुं तरंग संग कढ़ि आवैं॥
प्रफुलित सुमन सुगन्ध बसाई। परिमल पवन बहत चहुंधाई॥
मृग बहु भीर तीर चढ़ि आई। पियहिं नीरफिरि भागहिं धाई॥
करि करिनी दल जल धसि धावै। करभ केलि देखत बनिआवै॥
इमि सर बिभव बिलोकत गाढ़े। सानुज सिय तट भे प्रभु ठाढ़े॥

२ प्रगटत सर बहु बाद्य ध्वनि, सरसगान मृदुतान।
देखि परै नहिं मनुज कोउ, भये चकित भगवान॥
बसत निकट मुनि धर्म भृत, तेहि पूछ्यो रघुनाथ।
सुनहु राम सब कहत हौं, पंचाप्सर सुभ गाथ॥

माण्डकरन मुनिबर यक आही। किय तप अयुत बर्ष जल माहीं॥
देखि कठिन तप डरि सुरराजू। पठये सुर तिय करन अकाजू॥
तिनहिं देखि मुनि तप बिसरायो। ह्वै सकाम तिय गन मन लायो॥
निज तप बल ते तब मुनि राजू। प्रगट कीन्ह मन इच्छित साजू॥

१ यहां अनेक पद्योंमें ताल का बर्णन है।
२ यहां श्रीरामजी का बिस्मयस्थायी भावव्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पंचाप्सर जे इन्द्र पठाये। बिरचि पंचसर तिनहिं बसाये ॥
यहि बिधि निबसि पंचसर माहीं। मुनिवर करत बिहार सदाहीं ॥
सुर तिय नृत्य बाद्य अरु गाना। प्रगटत सर सो शब्द महाना ॥
सुनि मुनि चरित बिहंसि रघुराजू। लोप कीन्ह सब साज समाजू ॥
भयो चेत रामहिं पहिचानी। गहि पद बिनय कीन्ह मुनिज्ञानी ॥
जय जय प्रनत-पाल रघुराई। कृपासिन्धु मोहि लीन्ह बचाई ॥

अब निज चरन सरोज प्रभु, देहु भक्ति बरदान।
जेहि न परौं भव-बन्ध पुनि, चाहि चाहि भगवान ॥

मुनिहिं उठाय राम उर लाये। दै निज भगति बहुत समुझाये ॥
यहि बिधि सानुज सिय भगवाना। कीन्ह भ्रमन मुनि आश्रम नाना ॥
मिलत फिरत सब मुनि चहु घाहीं। बसी राम दस वर्ष तहाहीं ॥
१ करत सम्हार पिता सुत जैसे। मुनि गन कहं राखत प्रभु तैसे ॥
भक्ति ज्ञान अरु कर्म अचारी। उपदेशत जो जेहि अधिकारी ॥
दण्डक बन जब ते प्रभु आये। बिपिन दोष दुख सकल नसाये ॥
अभय भये ऋषि मुनि समुदाई। खग मृग सुखी बिपिन द्युति छाई ॥
बहुरि सुतिच्छन आश्रम आये। बसि कछु दिन प्रभु तहँ सुखपाये ॥
तहं यहि बिधि पाई सुधि रघुबर। पंच बटी ढिग रह बहु निसिचर ॥
तब तेहि बन तजि राम सिधाये। मुनि अगस्ति के आश्रम आये ॥
मिलत राम कुम्भज मुनि दोऊ। भयो,जो सुख कहि सकै न कोऊ ॥
राम लखन सिय की पहुनाई। बहु प्रकार कीन्ही मुनिराई ॥

बहुरि इन्द्र प्रद धनुषसर, अछय तोन करवाल।
कहि प्रयोग सब मंत्र बिधि, दीन्हयो मुनि रघुलाल ॥

१ इसमे प्रतिबस्तूपमालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुप्त रूप सब लोकपति, मिलि ऋषि मुनिन समाज ।
आय कीन्ह प्रभु प्रार्थना, शीघ्र असुर बध काज ॥

रहि कछु दिवस तहां रघुराई । चले बहुरि मुनि सम्मति पाई ॥
बहुत दूरि पथ आये जबहीं । मिलो जटायु गीध-पति तबहीं ॥
अरुण सुवन सब जग बिख्याता । सम्पाती जटायु युग भ्राता ॥
जेठो सुवन मलय गिरिबासू । दण्डक बिपिन जटायु निवासू ॥
सो सब पूरब चरित प्रचारे । तव पितु दसरथ सखा हमारे ॥
पितु समान पूजन करि ताही । आगे चले राम गुन-ग्राही ॥
तुरतहि पंचवटी चलि आये । गोदावरि तट परम सुहाये ॥
[1] ह्वै सिय सानुज ठाढ़ करारा । देखत प्रभु सरि बिभव अपारा ॥
कच्छ मच्छ चहुं दिसि जलधावैं । जल हय गय जलते कढ़ि आवैं ॥
विविध भांति जलचर समुदाई । फिरहिं सरितजल बरनि न जाई ॥
उठत सरित बहु बिकट तरंगा । कलकल रव जल करत अभंगा ॥
नीर गँभीर भ्रमर कहुं सोहै । चक्राकार फिरत मन मोहै ॥
बिकसे सरि पंकज बिधि नाना । गूँजत भ्रमर करत जनु गाना ॥
दुहुं तट मुनिन पर्ण गृह छाये । सुर-मन्दिर बहु भांति सुहाये ॥
बन उपबन तरुगन बिधि नाना । बिबिध सुमन तुलशी उद्याना ॥
करि सरिन्हान धरहिंमुनिध्याना । पढ़हिं कतहुं कोउ बेद पुराना ॥
तट तरु झुके सरित जल माहीं । जगमगात तिनकी परिछाहीं ॥
झरि झरि पुष्प गिरत दुहुं कोदा । जनु तरु पूजि रहे सरि गोदा ॥
गूंजत अलि खग शोर मचावत । मनहु सरित बर अस्तुति गावत ॥
सघन बेग्गु बन बेंत ललामा । नवहिं तटन्ह जनु करहिं प्रणामा ॥

[1] यहां कतिपय पद्यों में नदी का बर्णन है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परसिसुमन सरि जल अतिपावन। सुखद समीर बहत मनभावन ॥
देखि सरित तट परम सुहावा। राम लखन सीता मन भावा ॥
भिन्न भेष लोकप सब आये। बनते बहुत काठ तृण ल्याये ॥
पर्नभवन तहं लखन बनायो। बिसद सुखद सब भांति सुहायो ॥
सीता लखनसहितरघुनायक। तेहि निवसी मुनि गन सुखदायक ॥
यहिविधि बहुतकालचलिगयऊ। सुनहु चरित आगे जस भयऊ ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतारण्यकाण्डेसीतलसिंहगहरवार
विरचिते प्रथमःसर्गः

पंचबटी बन एक दिन, प्रभुहिं अकेल निहारि।
सूर्पनखा धरि दिव्य तनु, आई सजि सिंगार ॥
१ अंग अंगराइ जम्हाइ मुख, पुनि पुनि नैन नचाइ।
प्रविसतिसून्यनिकुंजगृह, प्रभुदिसिलखि मुसुकाई ॥

बहु बिधि भाव प्रगटकिय नारी। नहिं चितये तेहि ओर खरारी ॥
तब सो राम निकट चलि आई। करत कटाक्ष कहत मुसुकाई ॥
२ हमतुममिलिकरियेअसकारज। जेहिजग प्रगट सुवन यक आरज ॥
३ बार बार बिनवौं तोहिमीता। करहु बेगिकृति मम मनचीता ॥
४ देखि चरित सुर कह मुसुकाई। दुलहिनि सम दूलह नहिं भाई ॥

१ इसमें चेष्टा बैशिष्ट व्यंग्य है। २ इसमें असंलक्ष्यक्रम रसाभास व्यंग्य है।
३ इसमें असंलक्ष्यक्रम भावाभास व्यंग्य है।
४ इसमें असंलक्ष्यक्रमरस व्यंग्यहै और बाचक से भी व्यंग्य है। दुलहिन की कुरूपता और दूलह की सुन्दरता व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूछ्यो राम कौन तुम नारी। मैं भगिनी लङ्का अधिकारी॥
सूर्पनखा है नाम हमारी। भइ मोहित लखि रूप तुम्हारी॥
जौ तुम हमसन ब्याह रचैहौ। भावी समर बिजय ध्रुव पैहौ॥

होनिहार जो रावन हिं, अरु तुम में संग्राम।
करिहौं बहुत सहायलव, जेहि हित ह्वै परिनाम॥

१ जौ नहिं करिहौ कहै हमारी। सीय हरन ह्वै मरन तुम्हारी॥
कहत राम तुम बिधवा नारी। किमि इमि करन चली अघ भारी॥
द्विज कुल बिधवा ब्याह बिधाना। सुनेउ न कहुं कोउ शास्त्रपुराना॥
दूसर पतिकर कियहुं बिचारा। बिधवन कहं अघलग ब्यभिचारा॥
ब्यभिचारिनि जे बिधवा नारी। ते पावहिं यमपुर दुखभारी॥
कौनिहुंतिय जो ह्वै ब्यभिचारिनि। श्रुतिकहसो यमपुरअधिकारिनि॥
ब्रह्मचर्य्य ब्रत रत नर नारी। लहत स्वर्ग अनुपम सुखभारी॥
२ ब्रह्मचर्य्य बिधवा जो धारै। सो दुहुंकुल निज पितरन तारै॥

बिधवा धर्म निबाहिबो, तेज धार तलवार।
जो चढ़ि ताहि निबाहिये, खुलै स्वर्ग को द्वार॥
स्वार्थ त्याग की मूर्ति बर, ब्रह्मचर्य्य की खान।
लक्ष्मी गौरी सरसती, द्विजकुल बिधवा जान॥
अस बिधवन की धर्मयुत, करै जो पालन कोय।
कोटि तीर्थ तप दान को, तेहिफल प्रापत होय॥

अस बिचारिभामिनि अघत्यागहु। जनिसपनहुं परपति अनुरागहु॥
निज पति ध्यान परम कल्याना। परपति चिन्तन पाप महाना॥

१ इसमें देहलीदीपकालंकार है। २ इसमें प्रथम उल्लासालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रेष्ठ बंस मह जन्म तुम्हारी । जनि छन सुख लगि ताहि बिगारी ॥
अब सुनिहैं यह पाप बिचारा । का कहिहैं तव कुल परिबारा ॥
प्रथमहिं अवध राम छबि देखी । रही मिलन रुचि ताहि बिसेखी ॥
पुनि ह्वै सुर माया बस भारी । निज हिय कुरुचि करन कह नारी ॥
जउ प्रभु समुझाये बहु भांती । धारि बिकट बपु तउ अनखाती ॥
१ सिय भच्छन हित जब उठिधाई । तब प्रभु अनुजहिं सैन बुझाई ॥
लछिमन नाक कान बिनु कीन्हा । कुलटहिं जस चाहिय फलदीन्हा ॥
तब सो रुदन करत बहु भांती । जाय कहेसि दुख असुर जमाती ॥

राम कुटीते निकट ही, तेहिबन में सजि साज ।
खर दुषन त्रिसिरा सहित, निबसत असुर समाज ॥
सूपनखा दुख देखि बड़, करि हिय कोप कराल ।
त्रिसिरादिक प्रभु बध निमित, चले समर ततकाल ॥
२ रावन भगिनिहिं देखिनभ, कहसुरतियमुसुकाय ।
भेंड़ ऊन ल्यावन गई, आई सीस मुंड़ाय ॥
सो० ३ निशिचर दल बल ऐन, आयगयेअतिनिकटजब ।
तब प्रभुकह करि सैन, धरनीधर धारहु धरनि ॥

चहुं दिसि ते निशिचर समुदाई । मारहिं घेरि एक रघुराई ॥
बिहंसि राम बहु बिशिष पंवारे । अरि आयुध सब काटि निवारे ॥

---

१ यहां इशारेसे सूर्पनखा का नाक कान काटने के लिये रामजी की आज्ञाहै जिसको लच्मण जी ने कृत्य द्वारा संपादन किया है अतएव "युक्ति" अलंकार है।

२ इसमें लोकोक्ति और बिषमालंकार भी है।

३ इसमें बिवृतोक्ति अलंकार है। यहां धरणीधर पर्वतवालच्मण; धरणि पृथ्वी वा जानकी; इसमें श्लेषसे लच्मण और जानकी का अर्थ छिपा था सो कबि ने सैन शब्दही से खोलदिया।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुरि बरषि बहु बान बिताना। चहुं दिशि छाय दीन्ह भगवाना ॥
१ खर दूषन त्रिसिरादिक जेते। सैन समेत हते प्रभु तेते ॥
चौदह सहस सैन निसिचारी। सैनप सात अतुल बल भारी ॥
करत समर द्वै दण्ड बिताये। एक राम सब मारि गिराये ॥
२ देखि राम अद्भुतबल करनी। ह्वै अति चकित गगन अरु धरनी ॥
कहहिं सबहिं मिलि प्रभुहिं सराही। धर्महिं बिजय बीज अग चाही ॥
देखहु ये अगिनित निशिचारी। एक राम रन हते प्रचारी ॥
समाचार रावन जब पायो। यतीरूप ह्वै सिय हरि ल्यायो ॥

३ यती रूप रावन भयो, मिटो न मन की मैल।
छुटै छुछुन्दर गंध नहिं, मलै चमेली तैल ॥
४ तजिबहुसुन्दरिगृहअधम, दियतपसिनिमनदीठि।
चोरहिं चीनिहुं ते अधिक, चोरी को गुड़ मीठि ॥

लिये जात सिय देखि प्रचारी। कीन्ह जटायु समर बड़ भारी ॥
अङ्ग बिभंग बिकल चरि भयऊ। बहुरि सम्हारि खड़गकर लयऊ ॥
काटि पंख जर्जर तनु कीन्हा। करि मृतसम खगमहितजिदीन्हा ॥
धन्य जटायु जगत यस लयऊ। परहित लगि निजतनु तजि दयऊ ॥
जो बिनु हेतु जगत उपकारी। सबहिं अधिक महिमा तेहि भारी ॥
जप तप मख संयम ब्रत नाना। नहिं कोउ परउपकार समाना ॥

१ इस समस्त ग्रंथ में कवि को यह क्रम मालूम होता है कि श्री मानस रामायण वर्णित कथाओं को बहुत संक्षेप में कह कर दूसरी कथाओं को बिस्तार से कहते हैं। अतएव खर दूषणादिकों का युद्ध और संहार अत्यन्त संक्षिप्त कहा गया है।

२ यहां लक्षितलक्षणासे-गगन और धरणी शब्द से उनके निवासियों का अर्थ समझिये।

३ इसमें छेकोक्ति अलंकार है। ४ इसमें छेकोक्ति और दृष्टान्त दोनों हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परउपकार करहिं जे प्रानी। तेहि समान योगी नहिं ज्ञानी ॥
योगी ज्ञानी निज दुख बाधैं। उपकारी सब जग हित साधैं ॥

निज हित अनहित भाव तजि, केवल धर्म विचार।
पर-हित लगि जो कीजिये, सो कहिये उपकार ॥
निजसुख स्वारथ नहिं तज्यो, करतफिरत उपकार।
क्या करिहैं उपकार सो, बक बक करत लबार ॥

जब लै गयउ असुर बैदेही। भये बिकल अति परम सनेही ॥
प्राकृत जन इव बिलखत स्वामी। त्रिकालज्ञ प्रभु अन्तर्यामी ॥
यद्यपि सब जानत जग त्राता। खोजत विपिन फिरत सह भ्राता ॥
चहुं दिशि सिय खोजत दुहुं भाई। गे जहं अवनि परे खगराई ॥
१ तनु बिदीर्ण खग तदपि सुखारी। भयउ रामहिय दुख अतिभारी ॥
कहिसब चरित प्रभुहिं समुझायो। तनुतजिखगहरिलोकसिधायो ॥
परउपकार निरत जे प्रानी। पावहिं गति जो दुर्लभ ज्ञानी ॥
२ सुनिचरित्रतखगदुखबड़भारी। लज्जित अवनि गिरे असुरारी ॥
दुखित लखन रघुपति गतिदेखी। समुझायो कहिनीति बिसेखी ॥
तदपि हृदय दुख भरत उसासा। बोले मृदु स्वर बचन हरासा ॥

कोटि वज्र ते अधिक हिय, लागत यह अपमान।
तन मन अति व्याकुल भये, चाहत प्रान पयान ॥

सुनहु तात खग मरन समाना। त्रिजग त्रिकाल न मम अपमाना ॥

---

१ इसमें असंगतिअलंकार है।
२ इसमें व्रीडासंचारीभावव्यंग्य है और यहां से लेकर नीचे के अनेक पद्यों में करुणारस का बर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जौ पितु मरन दहत अतिछाती । तदपि न सोउ दुखद यहि भांती ॥
सीय हरन दुख अचल अखण्डा । सोउ न तात यहि सरिस प्रचण्डा ॥
जस जटायु बन मरन अनाथा । बिद्यमान जग मोहि रघुनाथा ॥
अस कहि श्रवत नयन जल धारे । खग तनु धूरि जटा ते भारें ॥
कहत लखन प्रभु चरन मनाई । नाथ लही खग सकल बड़ाई ॥
एक दिवस सब कोउ तनु त्यागै । धन्य सो देह जो परहित लागै ॥
निज दुख दुखी जगत सब कोई । परदुख दुखी होत कोइ कोई ॥

१ जीवत ही सो मरि रह्यो, निजहितजीवत जौन ।
जो परहित लगि मरत है, सब दिन जीवत तौन ॥
प्रान दान करि चतुर खग, ह्वैगो अमर प्रमान ।
तेहि हित करहु न शोक कछु, तुमप्रभुजगतप्रधान ॥

२ कहत राम सुनु लखन सुजाना । सत्य कर्म मम जगत प्रधाना ॥
रघुबंसी नृप धर्म धुरीना । कीन्ह सकल महि भय दुख हीना ॥
सो अनुपम कुल मैं अब आयो । सब प्रकार गृह काज बनायो ॥
परिजन प्रजा सकल परिवारा । दिय सुखबोरि बिरह.सक्षधारा ॥
पितु दिवि दै हित करिमहतारी । आयउ बिपिन करन सुखभारी ॥

१ इसमें बिरोधाभास अलंकार है ।

२ इस अर्द्धाली से लेकर पहिला दोहा पर्यन्त काकुद्वारा बक्रोक्ति है और अत्यन्त तिरस्कृत बाच्यध्वनिभी है—यहां बनायो आदिपद बिपरीत अर्थ को लच्चित करते हैं। जैसे बनायो से बिगार्‌यो; सुखदियो से दुखदियो; हितकरि से अनहितकरि; काज बनावा से काज बिगारा; कुलसुयशबढ़ायो से कुलसुयशघटायो; शिर से पारउतार्‌यो से शिर परचढ़ायो; सुकृति से कुकृति; सुमति से कुमति इत्यादि। यह बिपरीतलच्चणा है; और ऐसा करने पर भी रामजी कहते हैं कि मैं जगत प्रधान बना हुआहूं—यह अपना असाधुत्व ब्यंग्य है। इन सब पद्यों में उत्तम काव्य वा गूढ़ ब्यंग्य हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इहां आय बड़ काज बनावा। पितु सखा खग अरिहिं मरावा ॥
सिय सम तिय अरि कर पहुंचायो। बहु प्रकारकुलसुयस बढ़ायो ॥
अयस कलंक विपति अघभारा। मैं निज सिर ते पार उतारा।

सुनहु लखन रघुबंस महँ, जो न सुकृतिकियकोय।
मैं निजसुमतिसुसिद्धकरि, सबहिँ दिखायउ सोय ॥
१ पितुदसरथमोसमसुवन, नहिं तिहुं कालत्रिलोक।
सत्य धर्म हित जो मरे, तेहि हम करत बिशोक ॥

अहह साधु पितु धर्म निधाना। ममहित सह तुम संकठ नाना ॥
हे पितु तुम्हरे काज न आयउ। तौ जग जन्म वृथा मैं पायउ ॥
मातु पितहिं सुख प्रद जो नाहीं। सोसुत व्यर्थ जन्म जगमाहीं ॥
२ कहि इमि अति लज्जित रघुबीरा। बोलि बहुरि बहत दृग नीरा ॥
कहहु लखन सो खग बड़ भागा। कहिकेहिबचनदुखिततनुत्यागा ॥
बोले लखन सोकभरि छाती। प्रभु खग अन्तिम बच यहि भांती ॥
खोजत फिरहु जाहि बन माहीं। जीवन धन सम तन सुधि नाहीं ॥
सो गुनखानि सीय मम प्राना। हरन कीन्ह लंकेस अजाना ॥
जौ अब तुम रघुबंस कुमारा। मारहु असुर सहित परिवारा ॥
३ मम ऋन उऋन होब तुम तहिया। सिय उद्धार करव अब जहिया ॥
सुनहु लखन पितु मति गति देखी। होत हृदय दुख बिकल बिसेखी ॥
करौं सो तात काज अब कैसे। पितु अपमान फिरै अरि जैसे ॥
कहत लखन हिय दुख परि हरिये। समय पाय अरिगन बध करिये ॥

१ इस में श्लेष द्वारा बक्रोक्ति है और बिशोक शब्द में श्लेष है।
२ इस में ब्रीडासंचारी भाव और अश्रुसात्विकानुभाव दोनों हैं।
३ इस में विवृतोक्ति अलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह प्रन तौ प्रथमहिं मैं कीन्हा । रखिहौं अवनि न निसिचर चीन्हा ॥
अब जो मैं अरि गन संहरिहौं । केहि अभिनव पुरुषारथ करिहौं ॥
सीय हरन दुख किमि मिटि जैहैं । पितु जटायु केहिबिधिसुखपैहैं ॥

सीय हरन खगपति मरन, लखि अरिकृत अपमान ।
धरतन धीरज हृदय कछु, भबकत क्रोध महान ॥
१ सोखत जेहिबिधिसिन्धु कहँ, बड़वाग्निपरचण्ड ।
तेहिबिधितै यहदुसहरिसि, ममहिय दहत अखण्ड ॥

अब तुम तात कहहु कछु ऐसे । अरि प्रतिकार्य्य करौं मैं जैसे ॥
नतु यहि रिसि ते तनु जरिजैहैं । बिनु अरि बधे राम बिनसैहैं ॥
यहि बिधि प्रभु प्राकृत जन भांती । करत बिलाप शोक भरि छाती ॥
२ अहोनाथकिमिइमिपछिताइय । बहुत भूख दुहुं हाथ न खाइय ॥
अरिन मारि रन सियहिं उबारौ । एक पंथ द्वै काज संवारौ ॥
जब यहि बिधि लछिमन समुझाये । तब बिश्राम राम कछु पाये ॥
पितु समान करि क्रिया जटाई । चले बहुरि दच्छिन रघुराई ॥
खग मृग करि वृक बाघ बराह्न । देखत गिरि सरिता अवगाह्न ॥
प्रविसि महाघोर बन जाई । तब कह लखन सुनहु रघुराई ॥
योजनबाहु कबन्ध निशाचर । यहिबन बसत धरत सब बनचर ॥
तेहि पथ चलत सजग ह्वै रहिये । दुहुं कर धनुष बिसिष दृढ़ गहिये ॥
बन उर प्रबिसि अवसि यक बारा । करन चहौं निसिचर संहारा ॥

अस कहि अनुज समेत प्रभु, पहुंचे बन अति घोर ।
परेउ श्रवण सुनि दूरिते, आपदगतजन शोर ॥

१ इस में प्रतिबस्तूपमालंकारहै ।
२ इन दोनों अर्द्धालियों में लोकोक्ति अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ग्रसित कबन्ध असुर भुज भारी। मरन चहति मैं सबरी नारी॥
दर्सन हेतु राम दुहु भाई। मैं बन जात रही असहाई॥
है अस कोउ जो मोहि बचावै। अथवा रामहिं खबरि जनावै॥
सुनत बचन दुहु जन बन धाये। मारि कबन्धहिं नारि बचाये॥
तब पद गहि बहु बिनय सुनाई। दै पत्री तिय कह समुझाई॥
रावन अनुज बिभीषन नामा। सो तव भक्त बिदित तोहि रामा॥
१ यदपि जनम निसिचर कुल पायो। करत सदामुनि कर्म सुहायो॥
मात्‌ महादिक सचिव जमाती। तेहि अनभल चाहत दिनराती॥
गुप्त मंत्र करि रावन राजा। बधै चहत तेहि सहित समाजा॥
सो निज पत्र तुमहिं यह दीन्हा। प्रभु तव चरन सरन चह लीन्हा॥

जब ते भा सीता-हरन, खरत्रिसिरादि निदान।
तब ते पुनि दुहु बन्धुमहं, भयउ बिरोध महान॥
तेहि ते अब सुग्रीव गृह, करि लङ्का परित्याग।
तुमहिं मिलन हित बसत सो, सुनहु राम बड़भाग।
मिल्यो न अवसर मिलन हित, लगे रहत चर साथ॥
गुप्त पत्र दै हमहिं तेहि, तव ढिग पठयो नाथ।

मन इच्छित उत्तर जब पैहैं। तब सो बहुरि लङ्क गढ़ जैहैं॥
तेहि ते प्रभु सधिहैं बहु कारज। करहिं न कबहु हानि जन आरज॥
बहु बिधि सो रावन समुझैहैं। जेहि बिधि ह्वै हित सो मत दैहैं॥
जेहि प्रकार मिलिहैं पुनि सीता। सो करिहैं सबकाज बिनीता॥

---

१ इस में चतुर्थ बिभावनालंकारहै।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रावन राम सधै हित जेहि बिधि । करिहिं बिभीषनसोसवक्रृतिसिधि ॥
सुनि तिय बचन हृदय हरषाई । बांचन लगे पत्र रघुराई ॥
पढ़त राम निज जन प्रिय पाती । परमानन्द उमगि भरि छाती ॥
पुनि पुनि कहि प्रिय मित्र बिभीषन । भै अति प्रेम मगन भव भूषन ॥

परम मित्र लंकेस लिखि, जब प्रभु उत्तर दीन्ह ।
चकित लखन हिय हरषि तिय, राम पत्रिका लीन्ह ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतारण्यकाण्डेसीतलसिंहगहरवार बिरचिते द्वितीयःसर्ग्गः

आरण्यकाण्डसमाप्त

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

* श्रीसीतारामाभ्यांनमः *

॥ किष्किन्धाकाण्ड ॥

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

नमो देव जो निज दया, समुझि जगत उपकार ।
भगत सुगम हित अगुन ते, भये सगुन अवतार ॥
यदपि सगुन अवतार सब, अद्भुत अगम अपार ।
सबहिं श्रेष्ठ सब रम्य अति, नमो राम अवतार ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

॥ अथ कथा प्रारम्भः ॥

हति कबन्ध दुहुं बन्धु जब, दीन्ह्यो अगिनि जराय ।
तेहि तनु कढ़ि तब पुरुष यक, कह्योरामढिगआय ॥
माल्यवान रावन सचिव, बालि कोसपति काहिं ।
किय नियुक्ततव बध निमित, सजग रहहुबनमाहिं ॥
बिश्रव-सुत अरु इन्द्र-सुत, प्रथमहिं ते दोउ मीत ।
माल्यवान निज काज हित, पुनि दृढ़ किय सो प्रीत ॥
बिहंसि राम कह तात यह, उचित सुजन व्यवहार ।
कर्म बचन मन ते सदा, करहिं मित्र उपकार ॥

१ सुरपतिसुवनबालिगुनधामा । सब बिधि उचित करत यह कामा ॥
चाहिय करन मित्र हित जैसे । यहि छन करत कोसपति तैसे ॥
धन्य पुरुष सो पुन्य निधाना । करत जो काज मित्र मनमाना ॥
२ स्वारथ सिद्ध मित्र बनि आवै । सो न मित्र बरु सत्रु कहावै ॥
मैं पुनि इन्द्र सुवन कपि बाली । मिलन चहौं अद्भुत लैबहाली ॥
मिलहिं सो हृदय यथा रुचि राखी । सो सब हमहिं सुखद शिवसाखी ॥
सुनत राम मृदु बचन अमोले । सवरी सहित पुरुष हंसि बोले ॥
३ धन्य धन्य कोसलपति ज्ञानी । तुम बिनु कौन कहै अस बानी ॥

४ धर्म सिन्धु धार्मिक प्रवर, सब गुन ज्ञान निधान ।
जैसो कुल जस बीरतुम, तस तव बचन प्रमान ॥

१ यहां अनेक पद्यों में प्रथम समालंकार है । २ इस में शुद्धापन्हुति अलंकार है । ३ इसमें बक्रोक्ति है । ४ इसमें प्रथम समालंकार है ।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुनि सो पुरुष बिनय बहु भाखी । गयउ स्वर्ग प्रभुपद हियराखी ॥
तब लछिमन बोले मृदुबानी । कहु सबरी सो चरित बखानी ॥
सुरपति-सुत अरु निसिचरराई । कीन्ह प्रथम केहिभांति मिताई ॥
जब त्रिभुवन जय कीन्हि सुरारी । तब यक दिन अहमिति हिय भारी ॥
गयउ बालि सन करन लराई । धरि राख्यो सो कांख दबाई ॥
सात सिन्धु पुनि जाय अन्हायो । बहुरि आय गृह कैद करायो ॥
माल्यवान तब तेहि थल जाई । करै दीन्ह दुहं नृपति मिताई ॥
बालिहुं अरि अति प्रबल निरेखी । किय मैत्री हित समुझि बिसेखी ॥
तेहि दिन ते रावन अरु बाली । भये परस्पर मित्र सुचाली ॥
कौन बालि किमि हुमि बल भारी । सुनहु कहौं सब कथा प्रचारी ॥

राम जनम ते प्रथम हीं, श्रीब्रह्मा महराज ।
यामवन्त ह्वै प्रगट भै, करन हेतु सुर काज ॥
यामवन्त कहँ द्वै तनय, प्रगट भये बल सींव ।
इन्द्र अंस ते बालि कपि, सूर्य्य अंस सुग्रीव ॥
कपि केसरि तिय अञ्जना, पतिबरता परधान ।
पवन और शिव अंस ते, तेहि प्रगटे हनुमान ॥

यहि बिधि सिद्ध साध्य सुर जेते । धरे भालु बानर तनु ते ते ॥
यद्यपि ते बनचर तनुधारी । सुर सम बल बिद्या गुन भारी ॥
यम्बुद्वीप बन पर्वत जेते । बानर भालु बसे सब ते ते ॥
किष्किन्धा पुर तिन रजधानी । बालिनाम राजा गुन खानी ॥
१ सेवहिं सब मिलि बालिहिं कैसे । सुरपुर महं सुर सुरपतिजैसे ॥

१ इस में उदाहरणालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इन्द्र-सुवन अद्भुत बलसाली। अहै महा महिमा कपि बाली॥
अठदस पद्म सैनपति जाके। को कहि सकै बिभव बल ताके॥
कहत सुनत कपिपति प्रभुताई। पहुंचे सबहिं दूरि बन जाई॥
१ तहं दुन्दुभि तनु अस्थि निहारी। रजत सुमेरु मनहु अति भारी॥
२ पूछ्यो लखनभेदकह भामिनि। कपि यसरासि इन्दु यह यामिनि॥
प्रभु यक मयदानव बड़ भारी। अति सिल्पी मायिक नभचारी॥
भै तेहि युगल सुवन रन धीरा। मायाबी दुन्दुभि बर बीरा॥
मायाबी निज बैर सम्हारी। दीन्ह्यो सुरन कष्ट बहु भारी॥
देखि त्रसित सब सुर संघाता। बालि कीन्ह तेहि समर निपाता॥

महाबली दुन्दुभि असुर, समर बिज्ञ बरबीर।
गनै न त्रिभुवन काहु कहं, आपु सरिस रनधीर॥

एक बार अहमिति मनमाहीं। थाहन गयउ सो जलनिधि काहीं॥
यदपि जलधि जल अगम महाना। तेहि भय भै तेहि जानु प्रमाना॥
तब अभिमान बिबस बौराई। जलनिधि मथन लग्यो चहुं धाई॥
देखि बिपुल जलचर गन नासा। दुखितजलधिइमिबचन प्रकासा॥
तजहु असुर पति कोप बृथाही। मैं तुम्हरी सरबरि को नाहीं॥
समर पराजित लखि मोहि भाई। करहु समर हिमगिरि सन जाई॥
सुनत दनुज आतुर तहं गयऊ। गिरिहिं उखारन जब मन दयऊ॥
हिय हिमवान महत भय मानी। बल सराहि बहु बिनय बखानी॥

कहेउ जाहु पंपासरहिं, सुरपति-सुत-अस्थान।
करहु समर तेहि बीरसन, सो पुनि तुमहिं समान॥

१ इस में उक्त बिषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार है।
२ इसमें परंपरितरूपकालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महिष रूप तहं जाय सुरारी। कीन्ह्यो नगर उपद्रव भारी ॥
पुरजन गृह महिरुह गिरि भूरी। खुरन बिमर्दि मिलायसि धूरी ॥
१ लखि अति अद्भुत कृति निसिचारी। भये त्रसित सब पुरनरनारी ॥
समाचार कपि पति जब पाये। धाय गरजि अरि सन्मुख आये ॥
पुनि दोउ सुभट महाबल धामा। कीन्ह्यो घोर समर बसु यामा ॥
सुरपति सुत निज तेज सम्हारा। हनि मुठिका यक अरि सिर मारा ॥
तब मरि गिरो सो महि भहराई। बहु योजन निज तनु फैलाई ॥
तासु अस्थि यह कुधर समाना। छेंकत मगु सुनु कृपानिधाना ॥

चलिय त्यागि तेहि अन्य पथ, सुनि हंसि बोले राम ।
सुजन सुपथ लहि बिघ्न बहु, चलहिं कुपथ नहिं बाम ॥

२ अस कहि गहि पद बाम उठाई। फेंक्यो अस्थि राशि रघुराई ॥
३ लछिमनसहितचकितसो नारी। लखहिं जो कियअचरजप्रभुभारी ॥
तब सबरी प्रभु पद सिर नाई। भुजग-ताल-तरु कथा सुनाई ॥
ससिमण्डल आकार सुहायो। सप्ततालतरु जाय दिखायो ॥
सुनहु नाथ तरुमण्डल भारी। बेधि जो सकै एक सर मारी ॥
सो बलसालि बालि कहं मारै। सुनत लखन प्रभु ओर निहारै ॥
४ बिहंसि राम यक बिसिष चलाये। सातहुं तरुवर काटि गिराये ॥
तबतेहि निसरि सर्प यक आयो। करि प्रभु अस्तुति स्वर्ग सिधायो ॥
तेहि अवसर सुग्रीव पठाये। बिप्र रूप हनुमत तहं आये ॥
५ हनुमत कपट राम लखि पायो। रूप चतुर्भुज प्रगटि दिखायो ॥

१ इसमें त्रास संचारीभाव व्यंग्य है। २ इसमें द्वितियसमालंकार है।
३ यहां लच्छमण और शवरी का बिस्मयस्थायीभाव व्यंग्य है।
४ इसमें तृतीयसमालंकार है। ५ इसमें पिहितालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पीतबसन धारन किये, नीलकंज-द्युति गात ।
कोटि कोटि सत काम जेहि, देखि निछावर जात ॥
सरद चन्द्र निन्दक बदन, उर श्रीबत्सलखात ।
करजोरे अस्तुति करत, सकल देव संघात ॥
शिव ब्रह्मादि प्रधानसुर, सनकादिक मुनिवृन्द ।
फिरि फिरि करत प्रदच्छिना, पढ़त बेद सानन्द ॥
सेष रूप ह्वै लखन तहं, निज फन सहस उठाय ।
प्रभु सिर पर छाया करत, छत्राकार बनाय ॥

सेष रूप लछिमन कहं घेरे । सेवत सुर मुनि सिद्ध घनेरे ॥
१ अस अद्भुत हरि रूप निरेखी । मुंदे नयन कपि बिकल बिसेखी ॥
धरि धीरज पुनिनयन उघारे । द्विभुज मनुज तनु राम निहारे ॥
तब अति प्रेम जोरि युगपानी । यहि बिधि बचन कहत कपि ज्ञानी ॥
सुनु सर्बज्ञ देव जग स्वामी । मैं सुग्रीव सचिव अनुगामी ॥
बालि पच्छमहं प्रभु कहं जानी । कपि सुग्रीव हृदय भय मानी ॥
भेद लेन हित मोहि पठाये । कपट रूप धरि हम दूत आये ॥
छमहु सो प्रभु अपराध हमारे । त्राहि त्राहि अब सरन तुम्हारे ॥

बिष्णुदेव तुम जगतपति, धरेहु मनुज अवतार ।
बालि त्रसित सुग्रीव कहं, राखहु सरन उदार ॥
दीनबचन सुनि राम प्रभु, कपि उठाय उर लाय ।
अभयदान सुग्रीव कहं, दीन्ह हृदय हरषाय ॥
कह हर्षित हनुमान तब, सुनिये प्रभु रघुराय ।
सिय खोजब सुग्रीव कपि, करि बहु भांति सहाय ॥

१ इसमें हनुमानजी का भय स्थायीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब ते प्रभु यहि बिपिनमहं, आय बसे सिय साथ ।
तब ते प्रतिदिन चरित तव, मैं जानत रघुनाथ ॥
माल्यवान सुग्रीव सन, आय कह्यो यक बार ।
मिले बालि रिसि राम अब, रहेहु सदा हुसियार ॥
जौ बनि आवै कपट करि, बधहु ताहि बन माहिं ॥
नतु तेहि तिय सियकहं हरहु, राम आप मरि जाहिं ।
पै यह मत धार्मिक कपिहिं, नहिं भायउ केहु भांति ॥
१ तउ सशंक तुम्हरो चरित, रह देखत दिनराति ।
अस्थिसैल तरुताल गति, अबहिं कह्यो चरजाय ॥
तव अति बिस्मित प्रभु निकट, खबरि लेन हम आय ।
अब जान्यो यह मरम भल, मैं निजबुद्धि बिचार ।
बालि और दस बदन कहं, तुम करिहौ संहार ॥
अस कहि कपि प्रभु चरनपरि, बारबार सिर नाय ।
कह्यो जाय सुग्रीम सन, सकल चरित समुझाय ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतकिष्किन्धाकाण्डेसीतलसिंह
गहरवारबिरचितेप्रथमःसर्ग्गः

तेहि छन बन अति दूरि पथ, सुन्यो सबद सब काहु ।
मैं बधिहौं रन राम कहं, मातामह गृह जाहु ॥

खर दूषन त्रिसिरादिक जीते । बध्यो बिराध कबन्ध समेते ॥
तिन समान मोहि समुझहु नाहीं । मैं बधिहौं रामहिं रन माहीं ॥

१ यहां सुग्रीम का शंकासंचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यदपि राम सबजन – हितकारी । सब जग आजु सुजस तेहि भारी ॥
तदपि मित्र हित कारज करिहौं । बधि असपुरुषअजससिरधरिहौं ॥
कह लछिमन तिय कहहुबुभाई । केहि अन रव यह परत सुनाई ॥
यह सुरपति सुत अतिबलसाली । रघुपति बध हित आवत बाली ॥
कह हंसि प्रभु भामिनि भय नाहीं । असबरवीर दरस ध्रुव चाही ॥
यहि बिधि कहत सुनत तीनौ जन । पहुंचे मुनि मतंग-आश्रम बन ॥
उत ते कपि तेहि बन ढिग आयो । करत हृदय इमि शोक सुहायो ॥
यहि जग महं अस कौन सुकाजू । साधि न सकौं जाहि मैं आजू ॥
१ सकौं सोधि सब सृष्टि बिधाता । रामहिं निधन कौन बड़ि बाता ॥
पै फल सिद्ध कछुक नहिं सोई । अस कीन्हे भल कहै न कोई ॥

२ परमसाधु श्रीराम नृप, धार्मिक प्रबर उदार ।
पाय अतिथि तेहि मैं चलो, करन भलो सतकार ॥
३ बिपति द्रव्य दीपक रइनि, संपति में सिंगार ।
राम सरिस कोउ बिरल मणि, उपकारक संसार ॥
रोम रोम प्रति जासु तनु, प्रतिछन उठत पुकार ।
मेरे प्रिय प्रानी सबै, मैं तोहि करत पियार ॥

अहह! हन्त यह अचरज भारी । रामसरिस नृप जग उपकारी ॥
४ जोसब हित अनहित हित करई । तेहि सन बृथा लङ्कपति डरई ॥
हरेहु तासुतिय तोषन आयो । पुनि तेहि बध हित मोहि पठायो ॥
मैं पामर पसु पाप निधाना । करन चल्यो निसिचर मनमाना ॥

---

१ इसमें काव्यार्थापत्ति अलंकार है ।

२ इस दोहा में उत्तम काव्य वा गूढ व्यंग्य है। ३ इसमें कवि का रत्न परिचय है!

४ शत्रु मित्र पर एक समान व्यवहार होने से द्वितिय तुल्ययोग्यतालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ करि संसर्ग अधम निसिचारी । मैंहु भयउ निसिचर अघकारी ॥
२ राम बधे कछु हाथ न अइहै । लोक अजस परलोक नसैहै ॥
पै न बधौं अब जौ रन चोही । हंसिहैं सकल निसाचर मोही ॥
कहिहैं बालि रामभय मानी । कीन्ह न समर बन्यो बड़ ज्ञानी ॥
काह करौं कछु जानि न परई । उभय प्रकार हृदय मम जरई ॥
बहुरि बिचार कीन्ह मन माहीं । ध्रुव कर्तव्यहिं शोक बृथाहीं ॥

हरि-इच्छा भावी प्रबल, जेहि अवसर अस होय ।
रोकतहूं बहु यतन करि, अवसि होत है सोय ॥

भावी बिबस फिरी मतितासू । प्रभु ढिग चल्यो समर हित आसू ॥
तबहिं आय चर खबरि जनाई । आये इहां राम दुहुं भाई ॥
चलत पन्थ गिरिअस्थि ढहायो । एकहिं सर तरु ताल नसायो ॥
३ सुनत बालि मन बिस्मय छायो । बहुरि सो चर इमि बचन सुनायो ॥
गइ जो खबरि राम ढिग माहीं । सुग्रीवहु सो जानत नाहीं ॥
सुजन बिभीषन की सुभपत्नी । जब तिय जाय दीन्ह नृप छन्नी ॥
परम चतुर सो नीति बिभूषन । किय भविष्य लङ्केस बिभीषन ॥
कह कपि दसकन्धर अब मरिहैं । लङ्काराज बिभीषन करिहैं ॥

तेहि अवसर यक अपर चर, आय कह्यो कपि कान ।
अनुज सचिव मिलि राम सन, लीन्हअभयबरदान ॥
सुनि अति हर्षित तार स्वर, कपि बन कीन्ह पुकार ।
कहां राम सब सुभट मणि, परसुराम-जीतार ॥

१ यहां एक के दोष से दूसरे को दोष होने के कारण द्वितीय उल्लासालंकार है ।
२ यहां रूढीलक्षणा से — "हाथ न अइहै" का अर्थ कुछ लाभ नहीं है समझना चाहिये ।
३ यहां बालि का विस्मयस्थायीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ खोजत तुमहिं फिरौं बड़भागी । लोचन-फल दर्सन हित लागी ॥
सुनत राम ऊंचे स्वर कहेउ । जेहि खोजहु सो मैं दूत अहऊं ॥
कपि तुम सरिस धर्मधुरधारी । मोरेहु हिय दर्सन-रुचि भारी ॥
सुनत बालि अति आतुरधाई । देख्यो राम लखन दुहुं भाई ॥
२ अनमिष चख प्रभु रूप निरेखी । कहत मनहिमन हर्ष बिसेखी ॥
धन्य सो जनक जननि परिबारा । जेहि कुल भयउ राम अवतारा ॥
३ देखिय रूपसील गुन जैसे । सुनियत सकल पराक्रम तैसे ॥
दून सन रावन बैर जो कीन्हा । अघ अपयस अपने सिर लीन्हा ॥

४ आयो कपिपति शत्रु वत, करन हेतु रन रंग ।
धन्य राम जेहि देखि तेहि, उमगत प्रेम उमंग ॥
५ बहुरि प्रगट कह बचन कपि, तव दर्सन रघुनाथ ।
हरष सोक आचरज मोहि, प्रगट करत यक साथ ॥

देखि राम बर रूप तुम्हारे । नयन तृप्त नहिं होत हमारे ॥
तदपि हृदय अति होत हरासा । हमहिं न तव संगति सुख आसा ॥
जेहि कर तात भञ्जि भव चापा । दलेहु सकल भृगुपति बलदापा ॥
तेहि करबर अब धनुषचढ़ावहु । करहु समर मम सन्मुख आवहु ॥
सुनत बिहंसि कह कृपानिधाना । कपि तुम महाबीर बलवाना ॥
तुम सन समर उचित अति मोरे । अस रन मिलै भाग्य नहिं थोरे ॥

---

१ इसमें रूढ़ीलच्चणा है ।

२ इसमें हर्ष सञ्चारीभाव व्यंग्य है । ३ इसमें प्रथम समालंकार है ।

४ यहां युद्ध करने के लिये आये हुये बालि का राम प्रति रतिभाव अनुचित होने से भावाभास है और वह कबि के रामराजविषयक रतिभाव का अंग होने से ऊर्जस्वितालंकार है ।

५ इसमें भावशबलता अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पै रघुकुल यह सहज सुभाऊ। अरि निरस्त्र पै करहिं न घाऊ ॥
१ सुनि हिय हरषि कहतकपि ज्ञानी। रघुकुलनृपहिंउचितयहबानी ॥

तदपितातनिज हृदयमहँ, यहिविधि करहु विचार।
सस्त्र ग्रहन नहिं करत कपि, यह मनुष्य व्यवहार ॥

ये सन्मुख बन बिटप पहारा। सो सब सुमझहु सस्त्र हमारा ॥
अस बिचारि बिनु भ्रम बड़भागी। चलहु समरमहिं रनहित लागी ॥
बोले लखन सुनहु धनुपानी। कहत महाकपि सत्य बखानी ॥
निजनिज जाति प्रथा अनुसारा। करहिं सुभट जन रन ब्यवहारा ॥
२ तबनिज प्रतिभट देखि परसपर। भे अति हर्षित कपिपति रघुबर ॥
पुनि सशोक दुहुं कह मनमाहीं। इन सम बीर पुरुष जग नाहीं ॥
जौ बिधि बस ये रन बिनसैहैं। बीर बिहीन अवनि ह्वै जै है।
इमि मन गुनत राम अरु बाली। चलि भे समर भूमि बलसाली ॥
रन प्रांगनहिं पहुंचि दुहुं योधा। निरखि परस्पर भये सक्रोधा ॥
तरुगिरि सिखर बालि कपि मारै। दिव्य बिसिष प्रभु काटि निवारैं ॥
यहि बिधि कपिनिज पुच्छ भ्रमावै। गहि तेहि सिल तरु तोरि चलावै ॥
३ गर्जैं सुकपि कबहुं रद पीसै। बज्रपात सम ह्वै रव टीसै ॥
सुनि सुनि राम धनुष टंकारा। गूँजत सब बन बृच्छ पहारा ॥
४ कनक-मेरु कपि-पीत शरीरा। नील सैल स्यामल रघुबीरा ॥
५ करत प्रहार परस्पर जबहीं। बाढ़त दुहुन पराक्रम तबहीं ॥
छनमहं बनबिनु सिलतरु भयऊ। नभअरु अवनि बिसिषभरि गयऊ ॥

१ इसमें प्रथम समालंकार है। २ इसमें अन्योन्यालंकार है।
३ इस में पूर्णोपमालंकार है। ४ वाचक लुप्तोपमा है। ५ अन्योन्यालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वालि अनुज सुग्रीव कहँ, बिदित चरित यह नाहिँ ।
सहित बिभीषन सैल सिर, बैठे गह्वर माहिं ॥
कपि रघुपति संग्राम कर, सुनि कोलाहल कान ।
१ कहचलितचकितबिभीषनहिँ, सुनहुसखामतिमान ॥

यह प्रिय आर्य्य महत बलसाली । मोहिलखिपरत कंठ ध्वनि बाली ॥
२ बहुरि सुनहु यह धनु टंकारा । मनहु परे बहु बज्र पहारा ॥
तेहि चल सखा बिलम्ब न कीजै । चलिय बेगि कौतुक लखिलीजै ॥
असकहि दुहुँन चले तेहि ओरा । उठत बिकट रन रव जेहि ओरा ॥
लखिदुहुँ जनआवत रन तेहि छन । ये दोउको ? पूछत तिय लछिमन ॥
प्रभु ये दोउ सुग्रीव बिभीषन । कपि निसिचर कुलकमल बिभूषन ॥
पुनि देखहु तेहि दुहुन पछारी । ये आवत मर्कट भट भारी ॥
समुझि बालि दुखअति रिसिबिगरे । धावत आवत यहि छन सिगरे ॥
३ लखि आवत बहु तरुवर प्रस्तर । लीन्हलखनद्रुतदुहुंकरधनुसर ॥
काल बिसिष रघुनाथ चलायो । बालिहिं मुर्छित अवनि गिरायो ॥
कह सबरी लछिमन सन तबहीं । प्रभुनिज बिसिषतजहु जनिअबहीं ॥
वह देखहु रघुपति रन करनी । गिरी बालि कपि मुर्छित धरनी ॥
४ देखि लखन हिय बिस्मय छाये । तब लगि सब मर्कट भट आये ॥
तजि मुर्छा तब उठि कपि बाली । कहत सुनहु सब कपि बलसाली ॥

१ यहां सुग्रीम का बिस्मयस्थायीभाव व्यंग्य है । २ उक्तविषयावस्तूत्प्रेच्छा है । ३ इस में अर्थान्तरसंक्रमित बाच्यध्वनि है । यहां उपादान लच्छणासे—" तरुवर और प्रस्तर " शब्दों का अर्थ तरुवर और प्रस्तरधर है; इसलिये तरुवर और प्रस्तर रूप बाच्यार्थों ने धारण करनेवाले रूप अर्थान्तरों में संक्रमण किये हैं । यहां व्यंग्य तो प्रस्तरधरों में प्रस्तर सरिस काठिन्यता अथवा दृढ़ता और तरुवरधरों में तरुवर सरिस बिसालता है । ४ यहां लक्ष्मण का बिस्मयस्थायीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जौ अधिपति मैं सत्य तुम्हारे। तुम सब अति प्रिय प्रान हमारे ॥
तौतुम कहं बहु सपथ हमारी। अब न कोउ रन राम प्रचारी ॥
१ तीन काल त्रिभुवन के माहीं। राम सरिस धार्मिक कोउ नाहीं ॥
निज कुचाल फल मैं भल पायो। राम न मोहि रावन बिनसायो ॥
मोर मरन लखि दुख जनि करहू। यह उपदेस हृदय निज धरहू ॥
लखहु सुकण्ठहिं अब निज राजा। ममसुत अंगद कहं युवराजा ॥

बालिराज के बचन सुनि, भूलि बैर रघुराज।
समर काज सब साज तजि, रोवत कीस समाज ॥

तब कपि बालि सबहिं समुझाई। लीन्ह सुकण्ठहिं कण्ठ लगाई ॥
मनि कञ्चनमय हार सुहायो। निज उर लै अनुजहिँ पहिरायो ॥
पुनि सादर रघुबरहिँ निहोरी। कह कपि प्रेम बचन करजोरी ॥
सुनहु राम सर्बज्ञ सुजाना। सत्य-सिन्धु प्रभु कृपानिधाना ॥
मैं कपि मन्द जो किय अभिमाना। तेहि फल उचित दीन्ह भगवाना ॥
कियउ कुसंग जो असुर मिताई। भयउ उकटन तेहि प्रान गँवाई ॥
अब जेहि मम कृत प्रभु हित होई। करन चहौं यहि छन मैं सोई ॥
तुम कृतज्ञ प्रभु परम उदारा। अवसि लेहु उपहार हमारा ॥
हे कृपालु सब जन हितकारी। धर्म सिन्धु महिमा गुन भारी ॥
इतनी कृपा दास पै कीजै। अब मम बिनय मानि प्रभु लीजै ॥

अस कहि कपि गहिअनुजकर, सौंपे राम सुजान।
निज सेवक यहि करहु अब, कृपा सिन्धु भगवान ॥

पुनि कपि अनुजहिँ कहत सुबानी। मित्र धर्मसुत कहहु बखानी ॥

१ इसमें भूतार्थ प्रत्यक्षभाविकालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिधि सुत याम्बवान मतिमाना। जेहिबिधितुमहिँ दीन्हयहज्ञाना॥
सुनि कपि बन्धु चरन सिरनायो। मित्रधर्म कहि तुमि समुझायो॥
१ सब प्रकार छल कपट बिहाई। मीत बही जो करै मिताई॥
तन मन धन सर्बस तृन तोरै। करत मित्र हित नहिं मुख मोरै॥
कहत बालि पुनि प्रभुहिँ बखानी। तव कुल-गुरु बसिष्ठ बिज्ञानी॥
तोहि बहु धर्म सिखायउ जैसे। तहँ पुनि मित्र धर्म कहु कैसे॥
कह प्रभु तात तहौं बिधि सोई। सत्य बस्तु सब थल यक होई॥

२ सजलनयन करजोरि तब, कहत बालि अति प्रीत।
मानि बिनय मम बीर बर, होहु दुहुन सो मीत॥
अभयदान सुग्रीव कहँ, प्रथम दीन्ह तुम राम।
३ अब दुहुं मीत पुनीत ह्वै, सफल करहु सब काम॥

सुनत राम सुग्रीव सुजाना। कीन्ह प्रीति सब सहित बिधाना॥
गहि अति प्रेम परस्पर पानी। कह पुनि दुहुन सपथ बर बानी॥
मुनि आश्रम सब सहित समाजू। हम तुम ते मैत्री भइ आजू॥
मम तन धन अब सकल तुम्हारे। तब सर्बस पुनि भयउ हमारे॥
सो सुनि बालि परम सुखपाई। कहत बिभीषन कहँ समुझाई॥
४ अब मैं निज हिय दशा बिचारी। देखत अवनि रहितनिसिचारी॥
रावन राम समर बहु घोरै। ह्वै अब अवसि गये दिन थोरै॥
अवसि राम रावन संहरिहैं। राजतिलक तुम्हरे सिर परिहैं॥

१ इसमें बिधिअलंकार है।
२ इसमें अश्रुसात्विकानुभाव है। ३ इसमें रूढ़ीलच्चणा है।
४ यहां भविष्यत में जो निशाचरों से रहित पृथ्वी होगी उसे वालिराज के प्रत्यक्ष देखने का वर्णन होने से—भावी अर्थ प्रत्यक्षवर्णन भाविकालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रामपरमधरमातमा, रावन पाप-निधान ।
धर्महिँ प्रगटत सकलसुख, पाप सकल दुख खान ॥
धर्म हनत सब सत्रु कहँ, धर्महिं व्याधि नसात ।
जहां धर्म तहं बिजय ध्रुव, यहअतिनिश्चित बात ॥
तुम सबरी कर प्रथम जो, लिखि पठयो सन्देस ।
बांचि राम सो हर्ष मन, तुमहिँ कीन्ह लङ्केस ॥
असकहिकपिव्याकुलभयउ, तजन चहत तनु प्रान ।
देखि दसा मर्कट सकल, रोदन करत महान ॥

तब कपि बालि धीर धरि भारी । कहत सकल प्रियजन बनचारी ॥
तजहु सोक अब अवसर नाहीं । यह मम बिनय धरहु मन माहीं ॥
तुम पर अनुजांगद प्रभुताई । तुम सब कृपा अधीन गुसाईं ॥
करत रहेहु मोपर जस प्रीती । तैसहिं सदा निबाहेहु नीती ॥
औरहुं एक बिनय मैं करऊं । करहु प्रसन्न सुखी ह्वै मरऊं ॥
रावन राम समर ह्वै जबहीं । करेहु रामहित तुम सब तबहीं ॥
१ सुनि हर्षित मन सब बनचारी । बोलि उठे स्वर ऊंच पुकारी ॥
प्रभु आयसु रघुपति हित लागी । परौं सिन्धु जरिहौं प्रलयागी ॥

जाहु मुदित बैकुण्ठपुर, तजहु सोक महराज ।
रघुपति रावन समर में, हम करिहैं सब काज ॥
२ आयो कपिपति सत्रु ह्वै, ह्वै गो रच्छक मित्र ।
यह देखहु श्रीराम गुन, महिमा परम पवित्र ॥

---

१ प्रथम पर्य्यायालंकार है । २ इसमें तृतीय असंगति अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनत बचन अति हरष मन, हृदय राखि रघुबीर ।
१ जीर्णबसनअनतजतजिमि, तिमिकपि तज्यो शरीर ॥

२ बालि मरन लखि सब बनचारी । रोदनकरत बिलखि दुखभारी ॥
अंगद दशा बरनि नहिं जाई । पितु पद गहि रोवत गुन गाई ॥
३ अतिदुखब्याकुलरोवतितारा । गिरतिउठति पति करति पुकारा ॥
तेहि अवसर कर दृश्य निरेखी । भै सुग्रीवहु बिकल बिसेखी ॥
रामहुं हृदय सोक बड़ छायो । हा ! यह बीर व्यर्थ बिनसायो ॥
४ ह्वै सकरुणाजलभरिदोउनैना । इमि बहु सोच करत गुन ऐना ॥
५ काल बली सब जग कहँ मारै । नहिँ असकोउजोताहिनिवारै ॥
यह अति दृढ़ निश्चय सब ज्ञानी । यक दिन अवसि मरैं सब प्रानी ॥
जो सब जगत जीति बस करई । यक दिन अवसि सोउ नर मरई ॥
भये अनेक भूप जग माहीं । अब कछु सेष चिन्ह तिन नाहीं ॥
जो सब जगत जीति जस लीन्हा । काल मृत्यु अपने बस कीन्हा ॥
सो रावन जेहि सन रनहारा । मर्‌यो आजु सोउ बालि बेचारा ॥
अहह जगत जीवन दिन थोरे । जेहि हित नर अघ कर बहु घोरे ॥
अरब खरब लौ दरब कमावै । मरन भये कछु साथ न आवै ॥
जहं लगि यह जग प्रिय परिवारा । कोउ न करै परलोक सम्हारा ॥
जे जन यहि जग धर्म कमावैं । ते मरि स्वर्ग सकल सुख पावैं ॥

१ इसमें उदाहरणालंकार और मरणासंचारीभाव व्यंग्य है ।
२ यहां से लेकर आगे के अनेक पद्यों में करुणारसका वर्णन है ।
३ यहां अनेक क्रियाओं का एक कर्ता होने से कारकदीपकालंकार है ।
४ इसमें अश्रु सात्विकानुभाव है ।
५ यहां से लेकर आगे के पहिला दोहा पर्यन्त शान्तरसका उत्तम वर्णन है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मरन दुखद जग कह सब कोई। पै धार्मिकन परम सुख सोई ॥
जो धार्मिक जग फिरै दुखारी। सोउ मरि स्वर्ग लहै सुखभारी ॥

यहि जग की बल बिभव को, स्वर्ग न कछु सनमान।
सुख विलसैं सब जीव तहं, केवल धर्म प्रमान ॥
बहुरि प्रगट कहि राम प्रभु, समुझाये सब काहु।
लह्योबालि कपि मोच्छपद, जनि तेहि हित पछिताहु ॥
तब सुकराठ कपि बालिकार, मृतक कर्म सब कीन्ह।
रामायसु ते सचिव गन, राज तिलक तेहि दीन्ह ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेचद्भुतकिष्किन्धाकाराडेसीतलसिंह गहरवारबिरचितेद्वितीय:सर्ग:

अब सुग्रीव भये कपिराई। देस देस प्रति फिरी दोहाई ॥
यम्बुदीप जित बनचर बीरा। आये सिमिटि सकल रनधीरा ॥
१ हरषि कपीसहिं सब सिर नावैं। बिबिध भांति लै भेंट चढ़ावैं ॥
सकल राज प्रिय प्रजा सुखारी। करहिं महोत्सव आनँद भारी ॥
दूत कपि भरत सबहिं समुझाई। गै सबरी गृह प्रभु दुहुं भाई ॥
जब ते चित्रकूट प्रभु आये। समाचार सबरी सुनि पाये ॥
तेहि दिन ते बन के फल जेते। चुनि चखि चीन्हि धरति सो तेते ॥
अइहैं राम भवन मम अबहीं। यह फल तिनहिं खवाउब तबहीं ॥
आजु हरषि सो सब फल ल्याई। अतिरुचि दुहं भाइनहिं खवाई ॥
सबरी फलन खाय दुहं भाई। पुनि पुनि बहु बिधि करत बड़ाई ॥

१ इसमें प्रथम पर्य्यायालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भोजन करि बैठे प्रभु जबहीं। तनु तजि प्रभुहिं मिली सो तबहीं ॥
राम भक्ति बल अतुल निरिखी। सुरनर मुनि हिय हर्ष बिसेखी ॥
तब सब मुनि बहु बिनय सुनाई। निज निज गृह ले गै रघुराई ॥
यहि बिधि तहं कछु दिन भगवाना। रहे मुनिन उपदेसत ज्ञाना।

सचिवनसहितसुकण्ठ तब, मुनि आश्रम महं आय।
सैल प्रबर्षन पर्णगृह, गै दुहुं जनहिं लिवाय ॥
कन्द मूल फल फूल जल, लहि सब भांति सुपास।
बर्षाकाल निवाश हित, तहं बस रमानिवास ॥
१ ग्रीषम दीरघ दाह दहि, देखि दुखित संसार।
बर्षाऋतु घन प्रगटि नभ, बर्षत मूसलधार ॥

बर्षत घन गर्जत अति घोरा। चपला चमक रही चहुं ओरा ॥
सर सरिता झरना नद नारे। एकाकार भये अब सारे ॥
कहि न जाय बन प्रभा निराली। सब महि छाय रही हरियाली ॥
शस्य सहित सोहति सब क्यारी। भूषनबसनवती जिमि नारी ॥
फूले कदम केतकी जाती। झंझापवन बहै बहु भांती ॥
दादुर घोर रटनि रट लागे। नांचत मोर हंसगन भागे ॥
अगनित उष्मज जीव प्रगटि अब। घूमि रहे चहुं ओर अवनि सब ॥
हरिधनु छबि नभ लसै अनूठी। कहुं सोहै महि बीरबहूटी ॥
झंकारति बन झिंगुर जाती। बरनि न बनै बनक बकपांती ॥
बिरही बनिक बिबिध ब्यापारी। बैठिरहे मन मलिन दुखारी ॥
पपिहा पीउ पीउ रट लावै। बिषम बियोग गीत अनु गावै ॥
अब मग चलत पङ्क बहु लागे। पिछलत पैर परत नहिं आगे ॥

१ यहां से प्रारम्भकर आगे के बहुत से पद्यों में बर्षाऋतु का बर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

झूलत शस्यहिं देखि निज, हरषत हृदय किसान ।
चार पदारथ सहित जनु, अब मिलिहैं भगवान ॥
देखियरविनहिँ दिवसमहं, नहिं शशि रइनि प्रकास ।
बहुदिनलौं निशिदिन गगन, घटाटोप चहुं पास ॥

१ नहिं निशिउडु नहिं चन्द्र प्रकाशा । घटाटोप छावै चहुं पासा ॥
चहुं दिशि अंधकार बढ़ि धावै । विश्व लोप सामर्थ दिखावै ॥
अभिशारिका चोर निशिचारी । हर्षहिं घूक पुरुष व्यभिचारी ॥
अस सूची अभेद्य तम माहीं । कहुं कहुं जुगनु वृन्द चमकाहीं ॥
कबहुं दिवाकर पै घन धावै । मनहु रविहिं भिरि समर मचावै ॥
कबहुं भेदि घन रवि कढ़ि आवत । कबहुँ बढ़तघन रविहिंछिपावत ॥
रवि जब दबे मरुत प्रगटाये । मानहु रविहिं सहायक आये ॥
गगनांगन दोउ भिरे सभागे । जीते पवन हारि घन भागे ॥
भागे कबहुं कबहुं घिरि आवैं । घन अरु पवन भिरैं नभ धावैं ॥
अस छबिमय वर्षाऋतु देखी । बिरह व्यथित प्रभु भयउ बिसेखी ॥

२ गइ वर्षा आयो सरद, सुभ सोभा सरसात ।
स्वच्छ गगन निर्मल सलिल, सरसरिता दरसात ॥
घटे घोर घनघेर अब, सूखन लागे नीर ।
फूले कास सुहावने, भै गिरि बन सरि तीर ॥
बिमलदिवसनिसिससिप्रभा, अधिकअधिकसरसात ।
३ मुक्तागन ज्यों ओसकन, सोहत बन तरुपात ॥

१ यहां अनेक पद्यों में अन्धकार का वर्णन है।
२ यहां से लेकर आगे के अनेक पद्यों में समय की बिलक्षणता से उद्दीपनाधिक्य व्यंजित होता है; अतएव कालवैशिष्ट व्यंग्य है। ३ इसमें पूर्णोपमालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सप्तच्छद बन्धूक गन, कोबिदार कल्हार ।
चहुं दिसि फूले बिपिनमें, सोहत हारसिंगार ॥
१ हंसि हंसि कुमुदिनि मालती, खग चकोर हरषाय ।
सुभग सरद-ऋतु आगमन, सबकहँ देत बताय ॥
राजहंस कलहंस खग, सारसादि समुदाय ।
सटि सटि बैठे सरित तट, परमानन्द अघाय ॥
२ मीनन की करि करधनी, चीर नीर कमनीय ।
दुहुं तट पृथुलनितम्बिनी, सोहति सरिता तीय ॥
सघन कुञ्ज उद्भिज घने, ऊंचे सिखर अपार ।
सहित धातु-द्रवनिर्झरन, सोहत सुभग पहार ॥
बसि युगयुग जलनिधिउदर, अब छूवत आकास ।
ये गिरि गन जगदीश की, महिमा करत प्रकास ॥
सोहत बनबहु बृच्छगन, सहित फूलफल डार ।
पत्र पत्र सहं जेहि लिखी, महिमा सिरजनहार ॥
बिबिध भांति के पच्छिगन, चहचहात तरु डार ।
सुख बिचरत बन यन्तुसब, उतरत चढ़त पहार ॥

३ फूले सर पङ्कज बहु भांती । अति प्रसन्न दिसिबिदिसि बिभाती ॥
चहुं दिसि सुभग बिपिन के कुञ्जा । गुञ्जत मृदुल मञ्जु अलिपुञ्जा ॥
छहरति छटा स्वच्छ सरि रेती । सोहत पके धान धनखेती ॥
मुदित मीनलहि निर्मल नीरा । द्रुषत सीतकर बहत समीरा ॥
लागति राति कछुक सियराती । सुखी जीव सब चारौ भांती ॥

१ इसमें रूढीलच्चणा है। २ इसमें सावयवरूपकालंकार है।
३ इसमें रूढीलच्चणा है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पावस कृमि गन मसक नसाये। मन रञ्जन खञ्जन खग आये॥
उदय अगस्त्य हंस हरषाने। चक्र चकई छबि लखि बिलखाने॥
१ सूखे पथ पद पङ्क न लागे। चहुं दिसि पंथ पथिक अनुरागे॥
नृप गन सजि निज सैन समाजा। जहं तहं चले युद्ध की काजा॥
२ अब न नेकु आलस तनु लागै। पावस सकल दोष दुख भागै॥
कहि न जाय रजनी अति सोभा। सरद चांदनी लखि मनलोभा॥
दिन सरदातप की करुआई। हरति रहनि चांदनी निकाई॥

३ मेटि मैल पावस सकल, बरषि किरिन सित धार।
करत खेत दिसि बिदिसि ससि, मानहुं भ्क्षारिवहार॥
खेत पहार अगार सब, खेत बिटप तरु पात।
खेत बिपिन चहुं ओर महि, खेत गगन दरसात।

गुल्म लतादिक कुञ्जन माहीं। ससि-सितकिरिनछिटकिचहुंधाहीं॥
४ देखि जुन्हाइ प्रभा अभिरामा। मन भ्रम होत उग्यो जनु घामा॥
५ कैधौं छीर जलधि बढ़ि धाई। कै पारद सरि चलि उतराई॥
कै यह राम सुयस उजियारी। छाई नभ मण्डल महि सारी॥
कैधौं बहु सुख पाय अघाई। सुर तिय हास्य वृष्टि झरि लाई॥
बरषि सकल सुर सुख सुघराई। कै यह रमा आरसी लाई॥
६ कै यह सुभग सरद निसिनारी। आई पहिरि चांदनी सारी॥

१, २ इन दोनों में रूढ़ीलक्षणा है।
३ इसमें रूपक, अनुप्रास और उत्प्रेक्षालंकार का मिश्रण होने से संसृष्टि अलंकार है।
४ उक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार है।
५ यहां अनेक पद्यों में सन्देहालंकार अथवा बितर्क संचारीभाव व्यंग्य है।
६ यहां—शरदनिशिनारी और चाँदनीसारी—रूपक हैं और सन्देहालंकार के अङ्ग हैं, इसलिये अंगांगीभाव शङ्करालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ जगमगात नभ जो बहु तारा। सो पहिरे जनु हीरकहारा॥
२ देखत इमिबिधि सरद-निसिरानी। बिहंसतिदसदिसिसखीसयानी॥
३ सारद राका-ससि-छबि देखी। हर्षहुं हर्षत हर्ष बिशेषी॥

४ चन्द्र जलधि ते मनहु काढ़ि, चलीं चांदनी धार।
तिमिर तोम तट नाशकरि, बोरत सब संसार॥

५ फैल्यो धवल मयूख हिलोरा। जल थल नभमण्डल चहुं ओरा॥
सुछबि भौंर भरि अति उफनाती। तोरति नाव बिरहि जन छाती॥
६ प्रफुलित तरु प्रसून समुदाई। जनु बहु फेन चले उतराई॥
बढ़ि सब दिसि अद्भुत जलधारा। सूझत नहिं कछु वार न पारा॥
अद्भुत जल अद्भुत बिधि धायो। आजु सकल संसार बहायो॥
घर भीतर बाहर ह्वै धावै। भागेहु कोउ जन बचै न पावै॥
७ जलनिधि-धार अवनि मह बहई। यह जलथलनभ तिहुं पथगहई॥
८ यदपि सुधाकरते काढ़ि आवै। बिरहिनि बिरही हृदय जरावै॥

९ देखिरझनि इमिससिप्रभा, उठीबिरहसियपीर।

---

१ इसमें उक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार है।
२ इसमें परंपरित रूपकालंकार है और बिहंसति में रूढ़ी लक्षणा है।
३ इसमें यमक और अत्युक्ति का मिश्रण होने से—संसृष्टि अलंकार है।
४ यहां—चन्द्रजलधि, चँदनीधार और तिमिर तट रूपक हैं और वे उत्प्रेक्षा के अङ्ग हैं; इसलिये अंगांगीभाव संकरालंकार है। और तिमिरतट में रूपक और अनुप्रास दोनों हैं अतएव—एक वाचकानुप्रवेश संकरालंकार है।
५ इन दोनों अर्द्धालियों मे परंपरित रूपकालंकार है।
६ इसमें उक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार है। ७ इसमें अधिकतद्रूपरूपकालंकार है।
८ यहां चतुर्थ वा पंचम बिभावनालंकार है और तृतीय उल्लासालंकार भी हो सक्ता है।
९ इस दोहा से लेकर आगे के दो दोहाओं तक विप्रलंभशृंगार की उन्माद दशा का वर्णन है

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ह्वै उन्मत रोवत कहत, तेहि अवसर रघुबीर ॥
लछिमन देखहु बिपिनमें, लगी आग चहुं घाय ।
अवनि गगन लौ ज्वाल बढ़ि, आरत हम कहं छाय ॥
१ अगिनि ज्वाल नहिं नाथ यह, चन्द्र चांदनी आहि ।
हा ! चन्द्रानन सिय कहत, राम गिरे महिमाहिं ॥
लछिमन समुझायो बहुत, प्रभुहिं धरायो धीर ।
तउ सब निशिव्याकुल रहे, सीय बिरह की पीर ॥

उठि प्रभात आये कपिराई । कह कर जोरि सुनहु रघुराई ॥
सिय बियोग भव तव दुखनाना । प्रथमहिं मोहि कह्यो हनुमाना ॥
मैं सबबिधि सेवा प्रभु करिहौं । जियत जु ह्वै सिय खोजि निकरिहौं ॥
२ जियत न रह जौ सिय महि माहीं । मम तनु प्रान रहत तौ नाहीं ॥
रह आधेय न बिनु आधारा । लोक बेद दुहु यह सुबिचारा ॥
एक दिवस सुनु कृपा निकेता । बैठे गिरि सिर सचिव समेता ॥
तहँ देख्यो नभ कोउ नभ चारी । लिये जात रोवत यक नारी ॥
सो तिय गिरि सिर कपिन निहारी । निज पट भूषन दिय कछु डारी ॥
३ अस कहि पट भूषन जो पाये । हरषि राम कहं ल्याय देखाये ॥
देखत राम लाय उर लीन्हो । पुनि लछिमनहिं कह्यो यहि चीन्हो ॥
कुण्डल कंकन कहं नहिं जानौं । नहिं यह कण्ठ-हार पहिचानौं ॥
प्रति दिन सिय पद बन्दन कीन्हौं । ताते यह नूपुर मैं चीन्हौं ॥
सुनत राम करुना करि भारी । रोय उठे स्वर ऊंच पुकारी ॥

१ इसमें अविवक्षित वाच्यध्वनि है ।
२ इन दोनों अर्द्धालियों में बितर्क संचारीभाव व्यंग्य है ।
३ यहां इन दोनों अर्द्धालियों में—प्रत्यनीक अलंकार है ।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ हा ! प्रिय सखी बिपति बनसंगिनि । त्यागेसिकहामोहिअर्धङ्गिनि ॥

मरन कोटि गुन दुखद यह, प्रिय तव बिरह महान ।
अब न सहत कैसहुं बनत, तजन चहत तनु प्रान ॥

२ सुमिरि सुमिरि प्रिय तव गुनजाती । हहरिहहरिफाटति यहछाती ॥
हमहिँ अछत कस प्रान पियारी । सहल सबु गृह संकठ भारी ॥
तब सुग्रीव बहुत समुझायो । निज बल कहि सिय मिलन दृढ़ायो ॥
पुनि कपि कह प्रभु मम अनुमाना । सियहरिलियरावन बलवाना ॥
कह प्रभु यह मोहि कह्यो जटायू । जेहि रावन रन कीन्ह गतायू ॥
सब कपि बहु यूथपन बुलायो । सिय खोजहु कहि भेद बतायो ॥
पुनि हनुमानहिं कह कपिराजू । तुम कपि सब मर्कट सिरताजू ॥
नहिं अस कोउ काज जग माहीं । जो करि सकहु तात तुम नाहीं ॥
तव समान बल बिक्रम भारी । नहिं कोउ सुभट भुवन दसचारी ॥
जल थल नभ पावक के माहीं । तव गतिरोध कबहुं कहुं नाहीं ॥
जौ तुम यह कारज मन देहौ । तौ सिय सोध अवसि लै अइहौ ॥
यहि बिधि करि बहु सुयस बखाना । उठि सादर भेंटे हनुमाना ॥

लखिकपिपतिकृतहनुमतहिँ, सबहिंअधिकसनमान ।
निज कर मुदरी देइ तेहि, कहयहिबिधिभगवान ॥
जौकहुंतोहिमिलिजायसिय, तौ कहि मम बल प्रीत ।
यह मुदरी तेहि दीजियो, जेहि ते ह्वै परतीत ॥
मैं जब ते दण्डक बिपिन, आब बसे हनुमान ।
तब ते सब मुख तै सुन्यो, तव बल बुद्धि बखान ॥

१ यहां कतिपय पद्यों में वियोग जनित प्रलापदशा का वर्णन है ।

२ इसमें स्मृतिसंचारीभाव व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब कपिपति कृत कर्म लखि, यहममदृढ़अनुमान।
तुम करिहौ सब काज मम, महावीर बलवान॥

सुनि शिर नाय चरन भगवाना। कह यहि भांति बचन हनुमाना॥
[1] कहौ जाय लवनाम्बुधि पारा। अबहिं करौं रावन संहारा॥
कहौ त्रिकूट समेत उठाई। इत ल्यावौं निशिचर समुदाई॥
नतरु कहहु सीतहिं लै आवौं। सब निशिचर रन मारि गिरावौं॥
कहहु सकल जल जलधि हटाई। पार करौं सब कपि समुदाई॥
नतरु सकल कपि कन्ध उठावौं। जलधि पार लङ्का पहुंचावौं॥
कहौ अबहिं सब शैल उपाटौं। रचौं सेतु जल जलनिधि पाटौं॥
प्रभु आयसु जेहि बिधि मोहि होई। यहि छन अवसि करौं मैं सोई॥
इमि मुख कहत भये दृग राते। गहि बड़ दसनन अधर चबाते॥
[2] सकल अङ्ग पुनि फरकन लागे। कपि प्रति रोम तेज अति जागे॥
तब हिय हरषि कहत भगवाना, तुम सब लायक हौ हनुमाना॥
अब यहि समय सीय सुधि ल्याई। प्रान दान दीजै मोहि भाई॥

तब अञ्जनि-सुत बन्दि पद, लखन सहित रघुनाथ।
दच्छिन दिशि लङ्का नगर, चले अमित कपि साथ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतारण्यकाण्डेसीतलसिंहगहरवार
बिरचितेतृतीयःसर्ग्गः

१ यहां से लेकर आगे के कतिपय पद्यों में रौद्र रस का वर्णन है।

२ इसमें प्रथम पर्यायालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

✻ श्रीसीतारामाभ्यांनमः ✻

॥ सुन्दरकाण्ड ॥

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

✻ छप्पय ✻

१ जन्मतहीं जो उछरि, गगन रबि कहँ धरि खायो।

१ यहां इस छप्पय से हनुमान जी के बन्दनादि सूचक अर्थ के अतिरिक्त काण्ड भर की कथा की सूचना मिल जाती है अतएव मुद्रालंकार है। और यह नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गोपद जल ज्यों लांघि, जलधि गढ़ लङ्क जरायो॥
अघटन घटना घटन, घटन घट अघटन कर्ता।
सतत प्रनत प्रन पाल, सकल संकठ दुख हर्ता॥
जो बिपति काल रघुबरहुं की, सब प्रकार रक्षा कियो।
सो सुभट सिरोमनि बीर कपि, आजु बिराजहु ममहियो॥

दोहा

१ प्रेम नेम युत काण्ड यह, मारुति सुयस प्रकास।
पढ़ै सुनै तेहि चारि फल, अवसि मिलै अनयास॥

॥ अथ कथा प्रारम्भः ॥

दोहा

सिन्धुतीर सब कपिन युत, पहुंचि बीर हनुमान।
कीन्ह हृदय संकल्प दृढ़, लांघौं जलधि महान॥

रोला छन्द

२ सत योजन चहुं ओर, जलधि जल अगम अपारा।
गिरि सिर ह्वै कपि लखत, सूझ कछु वार न पारा॥
बहुविधि तुंग तरंग, उठत प्रकटत रव भारी।
विकट भेष जल मध्य, फिरत अगिनित जलचारी ॥१॥
भ्रमत बृहत आवर्त, महत गंभीर जलधि है।
को कबि बरनै पार, भयानक दृश्य अवधि है॥

१ इसमें आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है। २ इसमें सागर का वर्णन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तदपि न भय ह्वै अभय, हृदय पुनि पुनि मुद पागे ।
सहजहिं तरौं पयोधि, सुमिरि निज बल अनुरागे ॥२॥

[1] कोटिन मेरु समान, दीर्घ तनु तब कपि भयऊ ।
सहि न सक्यो सो भार, सैल कम्पित ह्वै गयऊ ॥
भयो बिमर्दित अङ्ग, फटे बहु बिकट दरारा ।
टूटि टूटि चहुं ओर, गिरैं तरु सिखर पहारा ॥३॥
औषधि गुल्म लतादि, सहित कम्पत सिगरे बन ।
जनु झुकिकपिहिं प्रणाम, करतह्वै अतिशंकितमन ॥
बिबिध रतन प्रगटाय, फटे बहु गह्वर आकर ।
मनि मानिक उपहार, कपिहिं जनु देत शिलाकर ॥४॥
चहुँ दिसि झरना झरै, धातु-द्रव बहु प्रगटाने ।
खग मृग गन भय ग्रसित, सैल तजि भागि पराने ॥
व्याघ्र सिंह चिक्करैं, महाफनि फन फुफुकारैं ।
मुख बाये बिष बमत, मनहु प्रज्वलित अंगारैं ॥५॥
जेहि सिल दसनन दँसै, अग्नि द्रुव सो लहरावै ।
अहि बिष ते ह्वै भस्म, सहस खण्डित ह्वै जावै ॥
सुरमुनि सिद्ध समाज, बसहिं जे सैल सयाने ।
सुतबनितादिक संग, लिये सब भागि पराने ॥६॥
प्रलय घोर घन गरजि, तरजि कपि नभ पथ धाये ।
गमन बेग बहु वृच्छ, उखरि तिन संग उड़ाये ॥

१ यहां से लेकर आगे के बहुत से पद्यो में भयानक रस और पर्वत का वर्णन है। इसमें पूर्णोपमालंकारभी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ तरु समूह उड़ि कपिहिं, चले पछुआवत कैसे।
स्वजन बिदेसहि जात, चलत सँग प्रिय जन जैसे ॥७॥
बहु प्रकार बहु ब्रच्छ, चले कपि कहं पछुआवत।
जिमि नृप के सँग समर, सैन सैनप बहु धावत॥
२ अमित फूल फल ब्रच्छ, सहित अद्भुत कपि सोहै।
चपला चमक समेत, मनहु जलधर मन मोहै ॥८॥
३ खगपति पवन समान, चले नभपथ हनुमाना।
प्रगटत तेज अपार, प्रलय रवि अनल समाना॥
४ नभपथ धावत जात, सोह युग भुज फैलाये।
जनु युग पँचमुखमहा, भुजगगिरि ते कढ़िआये ॥९॥
५ तेहिछनकपिहिँ निरेखि, सबहिँ निजमनअनुमाना।
अनुपाथोधि समेत, अबहिं करिहैं नभ पाना॥
६ पिङ्गल नेत्र बिसाल, चन्द्र सूरज सम सोहैं।
जगमगात सब गात, ज्योति लखि बिद्युत मोहैं ॥१०॥
७ लाल घ्रान मुख सोह, यथा सन्ध्या रबिमण्डल।
अति बिसाल लांगूल, उड़त जनु ध्वज आखण्डल॥
८ भुजबल उड़त अकास, कच्छ कपि पुनि पुनि बाजै।
कच्छान्तरगत बायु, घहरि बहुघन इव गाजै ॥११॥

---

१ यहां से लेकर आगे के अनेक पद्यों में उदाहरणालंकार है।
२ इसमें उक्त बिषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार हैं। ३ इसमें पूर्णोपमालंकार है।
४ इसमें उक्त बिषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार है।
५ इसमें अनुमान और उत्प्रेक्षालंकार की संसृष्टि है।
६ यहां उपमा और प्रतीपा लंकार की संसृष्टि है।
७ इसमें उपमा और उत्प्रेक्षालंकार की संसृष्टि है। ८ पूर्णोपमालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ गमन बेग परचण्ड, पवन जल जलधि हिलोरै।
कोटिन तुंग तरंग, उठैं रवि-रथ जनु बोरैं॥
२ जलचर गन अकुलाय, ग्रसित भय इत उत भागे।
कपिहिं गरुड़ जियजानि, सर्पगन अति भय पागे॥१२॥
३ जेहि पथ ह्वै कपि उड़ै, सिन्धु जल तेहि पथ धावै।
जनु तजि महितल मार्ग, जलधि जल गगन बहावै॥
दस योजन चौड़ान, तीस योजन लम्बाई।
कपितनु छाया सिन्धु, सलिल महँ परै लखाई॥१३॥
४ गिरि सपच्छ जिमि चलै, चलै रघुपति सर जैसे।
निरालम्ब पथ पवन, चलै तेहि छन कपि तैसे॥
कपिपति अङ्ग खिँचाय, संग धावैं घन माला।
नील पीत सित असित, अरुन बहु रंग बिसाला॥१४॥
५ कबहुं धसै घन जाल, कबहुं कपि बाहर धावै।
छिपत कढ़त घन पूर्न, चन्द्र ज्यों छबि दरसावै॥
यहि बिधिकपिनभजात, देखि सुर मुनि सुख पावैं।
सुमन वृष्टि झरिलाय, धन्य कहि गुन गन गावैं॥१५॥
सूर्य ताप नहिं करै, पवन सेवा प्रगटावै।
देव ऋषय गन्धर्ब, कपिहिं बिनवत सँग जावैं॥
निज कुल कारज हेतु, जात कपि कहं नभ देखी।
कह सागर मैनाक, उठहु हित करहु बिसेखी॥१६॥

१ अनुक्तबिषया वस्तूत्प्रेक्षालंकार है।
२ इसमें भ्रमालंकार है और "भयपागे में" रूढी लक्षणा है।
३ इसमें सिद्ध बिषयाफलोत्प्रेक्षालंकार है।
४ इसमें उदाहरण और प्रथम बिशेषालंकार है। ५ इसमें उदाहरणालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इन्द्र क्रुधित सब सैल, पच्छ जेहि दिवस कटायो।
कीन्ह्यो पवन सहाय, सैल मैनाक बचायो॥
सोसुधि करि मैनाक, उठ्यो बढ़ि गयो अकासा।
पवन पुत्र कहँ होय, यथा मगु नेक सुपासा ॥१७॥

बढ़त देखि मैनाक, सु कपि निज मन अनुमान्यो।
लवन-सिन्धु ते बिकट, बिघ्न कोउ कढ़ि प्रगटान्यो॥
चले जात अति बेग, सैल उरदाबि गिरायो।
कपि बल लखि मैनाक, हरषि निज नाम सुनायो ॥१८॥

करि कपि चरन प्रनाम, बहुत बिधि गुनगनगायो।
सागर निज अभिप्राय, सहित सम्बन्ध बतायो॥
सुनि सहर्ष हनुमान, सैल सागर सिर नायो।
मोहि न मग बिश्राम, काम कहि राम सिधायो ॥१९॥

सागर सह मैनाक, हरषि कपि भुजबल गायो।
जानी कपि बलबुद्धि, सुरन सुरसाहिं पठायो॥
भई ठाढ़ पथछेकि, कपिहिं कह खैहौं तोही।
रामकाज करि आऊँ, जननि तब खायहु मोही ॥२०॥

तजै न पथ नहिँ जान, देय कह पुनि हनुमाना।
ग्रससिन मोहि अबबेगि, प्रगटिनिज बदन महाना॥
अति बिसाल निज बदन, तबहिं सुरसा प्रगटायो।
ताहि द्विगुन हनुमान, तुरत निजरूप बनायो ॥२१॥

जेहि जेहि बिधिअहिमातु, क्रुधितनिजबदनबढावै।
ताहि द्विगुन ह्वै कीस, तुरत निज रूप दिखावै॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ तब सुरसा यहि भांति, प्रगटकिय बदन बिसाला।
जेहि समाय सब अवनि, स्वर्ग अरु सात पताला ॥२२॥
ह्वै अंगुष्ट प्रमान, पैठि मुख बाहर आयो।
करि प्रनाम लै बिदा, हरषि कपि नभपथ धायो ॥
कपि बल बुद्धि अपार, देखि सुरसा हरषाई।
चली इन्द्रढिग कहत, बहुत आसीस सुहाई ॥२३॥
राहु जननि सिंहिका, नाम निसिचरि यक भारी।
सागर जल महँ रहति, लङ्क-पथ की रखवारी ॥
उड़ैं गगन जे जीव, देखि जल तिन परिछाईं।
गहै छाँह नहिं उड़ैं, खैंचितिनकहं धरिखाई ॥२४॥
नभपथ धावत जात, देखि कपि जल परिछाहीं।
गहीछांह नहि चल्यो, चकित चितयो कपिताही ॥
ह्वै कर्षित तिय ओर, चले कपि अंग बढ़ाई।
कपितनुबढ़त बिलोकि, निसाचरि गर्जत धाई ॥२५॥
२ कहि न जाय जेहि भांति, कीन्हनिजबदनबिसाला।
एक होंठ नभ लग्यो, अपर छुइगयो पताला ॥
बज्र कठिन निज अंग, तबहिं हनुमान बनायो।
निसिचरि मुख महँ पैठि, फारिनखतनुकढ़िआयो ॥२६॥
चल्यो बहुरि नभधाय, सकल सुरसिद्ध सराहैं।
भै कपि सागर पार, गये गिरि लम्ब जहां है ॥
तहं निज बपुष बिसाल, त्यागि लघुरूप बनायो।
पुनि तेहि सैल प्रलंघि, कूदि त्रिकुटाचल आयो ॥२७॥

१, २ इनमें अत्युक्ति अलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोहा

इमि नभपथ ह्वै सुकपि जब, पहुँचे सागर पार ।
भये सगुन बहु रामसिय, असगुन लङ्कभुवार ॥
पढ़ै सुनै नित नेम यह, सिन्धु तरन हनुमान ।
नसै सकल संकट बिकट, दुहुँ जग यश कल्यान ॥

१ गिर शिर बैठि दीख कपि लङ्का । परमरम्य अद्भुत अति बंका ॥
२ जेहि बिलोकि अमरावति लाजै । महाराज रावन तहं राजै ॥
नृप धन जन बल बिभव निरेखी । ह्वै सब दिशिपति दाह बिशेखी ॥
३ कंचन मनि मानिकन रचाये । दीर्घ दुर्ग नभ रबिहिं उंचाये ॥
उच्च भवन सब नगर सुहाये । अष्ट धातु अरु मनिन बनाये ॥
चित्र बिचित्र झरोखा राजै । उच्च अटा बहु ध्वजा बिराजै ॥
वन उपवन बहुबाग बिभागा । स्वच्छ सलिल सरि कूप तड़ागा ॥
हाट बाट चौहट चहुंधाई । अति सुन्दर सब बीथि अथाई ॥
हृष्ट पुष्ट सब नगर निवासी । देखि परैं बल बिक्रम राशी ।
शैलाकार बिशाल शरीरा । देखे कपि अगनित भट भीरा ॥
चार द्वार पुर दीरघ सोहैं । बज्र कपाट लगे मन मोहैं ॥
पुर आब्रत अति ऊंच प्रकारा । खाई चहुंदिसि जलधि अपारा ॥
दल चतुरङ्ग सस्त्र गहि घोरा । रच्छा करत नगर चहुँओरा ॥
चहुंदिसि तोप लगी बहु जाती । अति दृढ़ पुर रचित सब भांती ॥
देखि अगम अति कह कपि ऐसे । करिय प्रवेस नगर अब कैसे ॥

१ यहां अनेक पद्यों में नगर का वर्णन है ।
२ यहां योग्य में अयोग्यता कथन होने से—प्रथम संबन्धातिशयोक्ति अलंकार है ।
३ यहां अयोग्य में योग्यता प्रगट करने से—द्वितिय संबन्धातिशयोक्ति अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि बिधि सोचत निसि ह्वै आई। तब बिड़ाल सम रूप बनाई॥
सुमिरि हृदय निज प्रभु अवधेसा। लङ्का द्वार कीन्ह परबेसा॥
पुर पैठत कपि लङ्का नगरी। ह्वै निसिचरि कह सन्मुख निकरी॥

अरे चोर कपि जात कहं, तू यह रङ्गनि मझार।
अस कहि गर्जति घोररव, कीन्हेसि चरन प्रहार॥
लखि तिय हंसि कपिबाम कर, दिय चपेट मुख एक।
रुधिर बमत महि तल गिरी, प्रगट्यो हृदय बिबेक॥
उठि बहोरि करि जोरि दुहुं, बिनय कीन्ह हरषाय।
१ सुनहुतातमोहिप्रथमबिधि, यहिबिधिकह्योबुझाय॥
जबकपि मुठिक प्रहार तुम, ह्वैहो बिकल अपार।
तब सबंस दसकन्ध कर, जानेहु ध्रुव संहार॥
हमहिं जीति सब निसिचरन, तुम जीते कपिराज।
जानि परत सिय राम कर, अब सधिहैं सब काज॥

पुनि करजोरि निसाचरि कहई। सुनहु तात सीता जहं रहई॥
रावन अन्तःपुर मन भावन। क्रीड़ा-बन तिहि महँ यक पावन॥
कहिनजायसबबिधिअतिसुन्दर। सुर मुनि मन भावन अचरज कर॥
बन असोक तिहि मध्य बिराजै। जहं सब जग सुखसम्पति साजै॥
करैं प्रबेस तहां जे लोका। ह्वै अतिमुद बिनसै सब सोका॥
तिहि महं इक मनि भवन सुहाये। २ मय बिसकरमा दुहुन बनाये॥

१ यहां यमकालंकार है।

२. मय राक्षसों के और विश्वकर्मा देवताओं के प्रसिद्ध शिल्पी हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तिहि गृह की चहुंदिसि अंगनाई। मनिमय कञ्चन तरु समुदाई ॥
जगमगात सब सम्पति साजैं। मध्य असोक सिंसुपा राजैं ॥
तिहि तरु बैठि दुखित अति सीता। रच्छित निसिचरि बृन्दबिनीता ॥
अबहिं जाय कपितिहि लखिआओ। बहुरि राम कहं खबरिजनाओ ॥

सुनत हरषि कपि लङ्किनिहिं, दीन्ह्यो यह बरदान।
अब तुम कहं हरि-भक्त पति, मिलिहैंज्ञाननिधान ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंह गहरवारबिरचितेप्रथमःसर्ग्गः

॥ चौपाई ॥

धरि सूछम तनु बहुरि कपीसा। पैठे नगर सुमिरि जगदीसा ॥
घरघर सकल नगर कपि देखे। गुप्त प्रगट सब ठौर परेखे ॥
खोजत बहुरि गये कपि तहवां। सोवत भवन दसानन जहवां ॥
कहि न जाय रावन गृह सोभा। जेहि बिलोकि सुरपति मन लोभा ॥
फिरिफिरि भूप भवन चहुंधाई। खोजि थके कपि सियहिं न पाई ॥
लङ्किनि बचन हृदय सुधि आई। गये असोक बिपिम कपिराई ॥
जहां सहज अरु कृत्रिम जाती। बहुतरु गुल्म लतादि बिभाती ॥
उभय जाति की बृच्छ अपारा। अवनि बिनम्र पक्व फल डारा ॥
कृत्रिम सरिसर सैल सुहाये। कहुं मृन्मय कहुं मनिन मढ़ाये ॥
मनि कञ्चन बिद्रुम मुकतादी। बने बिटप बहु गुल्मलतादी ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ कृत्रिम और सहज तरु माहीं। नेकहुं भेद परै लखि नाहीं॥
२ यदपि उभय तरु सरस सुहावैं। समुझत कर्म भेद बिलगावै॥
कृत्रिम सैल-सृङ्ग तरुडारा। वर्षत जल जन मन अनुसारा॥
वापी कूप सरित सर माहीं। मनिन बद्ध सोपान सुहाहीं॥
बिकसे सर पंकज अप्रमाना। सहजहु कृत्रिम बिबिध बिधाना॥
३ जिनपै उभय मधुप गुंजारैं। साम-गान जनु ब्रह्म उचारैं॥
धावत मृग समूह चहुं ओरा। चहकि चहकि खगगन कर सोरा॥
जहं तहं ठाढ़ि कनक कृत नारी। सींचैं जल कोउ करैं बयारी॥
कृत्रिम खग मृग कर्म निहारी। होत सुरन मन अचरज भारी॥
सब बिधि बिपिन अगम अति करनी। बस बसंत ऋतु ह्वै जहँ घरनी॥

वन आवृत चहुं ओर ते, अति दृढ़ उच्च प्रकार।
कियहु परिश्रम जाहिजन, होय कबहुँ नहिँ पार॥
खोजत कपि चहुं ओर तरु, गुल्म लता समुदाय।
वन असोक सिय भवन जहं, तेहि थल पहुंचे जाय॥
मध्य बिपिन सुभ सैल सिर, सब बिधि सुखद सुपास।
कञ्चन मनिमय भवन यक, देख्यो छुवत अकास॥
तेहि गृह अंगन मध्य यक, मनिबेदिका बिसाल।
जेहि चारिहुँ दिसि मंह लगे, अतिबिचित्र तरुमाल॥
कोटिन मनि मय खम्भ पर, छादित बेदी सोय।
तरु असोक अरु सिंसुपा, मध्य बेदिका होय॥

१ इसमें सामान्यालंकार है। २ इसमें उन्मीलितालंकार है।
३ इसमें उक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Ihitiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ तेहि तरु तर पति प्रेमपुनीता । देख्यो कपि बैठी महि सीता ॥
मलिन बसन अति कृसित शरीरा । चहुंदिसिबेष्टितनिसिचरिभीरा ॥
जटा जूट सिर केस बनाये । निज पद चख प्रभु ध्यान लगाये ॥
राम राम कहि जनक कुमारी । भरति उसास बिलखि दुख भारी ॥
२ भयहुं मलिन सिय प्रभा प्रकासी । धुम्रजाल जनु पावक रासी ॥
यहि प्रकार जानकिहिँ निरेखी । इहै सीय कह हरख बिसेखी ॥
जब रावन सिय कहँ हरि ल्यायो । गिरिसिरतेकपितेहिलखिपायो ॥
सो सिय रूप चीन्हि हनुमाना । इहै सीय निश्चय मन जाना ॥
बहुरि चिन्ह जस राम बतायो । चीन्हि सो कपिहियअतिसुखपायो ॥
ह्वै कृतार्थ मन कह हनुमाना । मैं कीन्ह्यो प्रभुकाज महाना ॥

दृढ़निश्चयकपिचीन्हिसिय, लखिबड़िबिपतिमलीन ।
किय रोदन द्वै दण्ड लगि, ह्वै तेहिदुखअतिदीन ॥
पुनि सिय सोभा सील गुन, पति पद प्रेम अपार ।
हृदय सराहत बहुत बिधि, जेहि छन पवन कुमार ॥
३ लखिकुसमनतेहिसमयउठि, लै बहु युबति समाज ।
बन अशोक सीता निकट, चल्यो निसाचर राज ॥
तरु पल्लव छिपि बैठ कपि, लखि आवत अरि मन्द ।
रड़नि अँधेरी तेरहीं, बीति उयो नभ चन्द ॥

नित प्रति रावन करै बिचारा । कबकरिहैं प्रभु मम संहारा ॥
जायबिपिन मैं सिय हरि ल्यायो । अजहुँ न राम नगर मम आयो ॥

१ यहां अनेक पद्यों में जानकी जी के भूतविप्रलम्भ शृंगार का वर्णन है ।
२ इस में उक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षालंकार है ।
३ इस में विबोधसंचारी भाव है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब मैं करौं कौनधौ काजू। जेहि मोहि बेगि बधैं रघुराजू ॥
१ करत बिचार हृदय यहि भांती। रावन सोय गयो तिहि राती ॥
२ द्वै मुहुर्त्त रजनी रहि जबहीं। देखत भौ सपना यह तबहीं ॥
बन अशोक बानर इक आयो। मिलि सीतहिँ सब नगर जरायो ॥
लखि अस सपन जागि दशभाला। आयो बन असोक ततकाला ॥
निज मन रावन कीन्ह बिचारा। होय सत्य जौ सपन हमारा ॥

तौ अब मैं बहु कटु बचन, सियहिं कहौं परचारि।
सुनत क्रुधित कहि राम कहँ, लैआइहिँ बनचारि ॥

निज सन्मुख दसमुख सिय देखी। कम्पित तनुभय सकुच बिसेषी ॥
पाहि पाहि कहि राम खरारी। बिलखि बिलखि रोदन कर भारी ॥
३ कह रावन सुनु सिय गुनखानी। हमहिँ देखितुमक्योंबिलखानी ॥
अति निर्मम रामहिं परित्यागी। अब मोहि भजहु करहु बड़भागी ॥
* बिनवत दास दया अब कीजै। एकबार आतम रति दीजै ॥
राम बसत बनचर गन माहीं। कोउ देखत कोउ देखत नाहीं ॥
मैं बहु लोक पठायउ देखन। चहु दिसि ढूँढ़ि लख्यो तेहि एक न ॥
अस रामहिं ले करिहौ काही। है सो निस्पृह तुमहिँ सदाही ॥
रहि समीपसबदिनआलिङ्गन। कीन्ह तदपि तव प्रीति न कछुमन ॥
भोगतहूँ तव भोग न मानै। निर्गुन अधम कृतघ्न महानै ॥

१ इसमें निद्रासंचारी भाव है। २ इस में स्वप्नसंचारी भाव है।
३ इस अर्द्धाली से लेकर तीसरे दोहा तक "शृंगाररसाभास" है और रावण के बचनों का साधारण अर्थ निन्दामय है परन्तु सरस्वती उक्तार्थ से भक्ति पक्ष का दूसरा अर्थ भी निकलता है। * इसमें मुद्रालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैं हरिल्यायो तुम सती, बिबिध सोक दुख लीन ।
अजहुं न आयो राम क्यों, आवै भक्ति बिहीन ॥
१ * निरत कुकन्या नग्न जन, अकुलअजातिअकाम ।
सदा अकिञ्चन ह्वै रहत, करत अकिञ्चन काम ॥
२ * परमनराधमतवबिमुख, अति निःसत्व अमान ।
क्यों चाहति अस पतित पति, मूरख पण्डितमान ॥

धरि तृन ओट कहति तब सीता । सुनु सठभट्टतवमति बिपरीता ॥
सूर्यप्रभा तजि सूरज काहीं । कबहुँ न रहति अन्य जन माहीं ॥
३ स्वान कि कबहुं सिंह भख पावै । यज्ञहबिष कब रासभ खावै ॥
धिक पापी तव कुल परिवारा । जो अस बचन कहत परदारा ॥
समुझत नहिं न उच्चकुलतियगति । ते न कुपथचलभयहुप्रानछति ॥
सून भवन ते मोहि हरि ल्याये । अब बहु बोलत बात बढ़ाये ॥
जौ चाहहु निज कुसल भलाई । अजहुं मोहि सौंपहु रघुराई ॥
४ न हित राम क्रोधाग्नि अपारा । ह्वैहौ भस्म सहित परिवारा ॥
सुनत बचन क्रोधित दसभाला । काढ़ेसि तुरत कृपान कराला ॥
छीनि खड़ग मन्दोदरि धाई । कहि बहु नीति पतिहिँ समुझाई ॥

जौ न होहु बस मास द्वै, कह खलसियहिं सुनाय ।
सकल निसाचरि बृन्द तव, काटि बांटि तनु खांय ॥
गयो भवन पुनि निसिचरिन, रावन इहै सिखाय ।
सीतहिं त्रास देखावहु, जेहि मम बस ह्वै जाय ॥

तब इक निसिचरि सिय सन बोली । सुनुसीतातवमतिअतिभोली ॥
बीतत यौबन बृथा तुम्हारा । कस न करहु रावंन भर्तारा ॥

१, २ इनमें मुद्रालंकार है ।
३ इस में अप्रस्तुत प्रशंसालंकार है । ४ इस में मिरवयव रूपकालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्रिभुवन सुख सम्पति समुदाई। निसि दिन भोगहु हृदय अघाई ॥
आजु चराचर त्रिभुवन माहीं। रावन सरिस और कोउ नाहीं ॥
लखि जेहि तेज मन्द दिनराई। इन्द्रादिक सेवहिं पद आई ॥
सो रावन तव परम सनेही। चाहत मिलन मिलहु किन तेही ॥
परम सुलच्छिनि तुम सुकुमारी। क्यों चाहति पति रामभिखारी ॥
जौ नहिं करिहौ कहै हमारो। तब ह्वैहै ध्रुव मरन तुम्हारो ॥
कोउ कह अब जनि बिलम लगाओ। सियतनुकाटिबांटिसबखाओ ॥
तब कोउ निसिचरि खड़ग उठाई। सीताकहं मारन उठि धाई ॥
धाय एक कह बदन पसारी। हमहिँ खाब यह गर्बिनि नारी ॥
कोउ कह परखि लेहु सखि आजू। जौ मम कहै न करिहै काजू ॥
तौ यहि काल्हि अवसि बिनसैहौं। सबतनु काटि बांटि कै खैहौं ॥
कोउ कह यह तिय परम सयानी। करिहैँ सिद्ध अवसि मम बानी ॥
यहिप्रकारसबसियहिँ डरावति। कहि कटु बचन बहुत गरिआवति ॥
परम सती सिय नारि सयानी। अति निर्भय बोली इमिबानी ॥

रे ! पापिनि निसिचारिनी, जनि कहु अटपट बैन।
कुलवन्ती कुलकमलिनी, कुल मर्य्याद तजैन ॥
१ अवै अगिनि बरु चन्द्रमा, रबि तें गिरै तुषार।
कुल कामिनी न त्यागहीं, निजकुल धर्माचार ॥
ह्वै प्रति छन परपद दलित, बिबिध दोषदुखदीन।
नहिं त्यागैं कुलधर्म निज, कुल तिय परम प्रबीन ॥
कोटिन बिधि दुख दीजिये, दीजिय कोटिन गारि।
कुल मर्य्यादा नहिं तजैं, जेकुलवन्ती नारि ॥

१ इसमें मिथ्याध्यवसित अलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रोम रोम तनु काटिये, जारिय प्रबल दवारि ।
नहिं पर पुरुष बिलोकिहैं, जो कुलवन्ती नारि ॥
१ कोटि इन्द्र सुख रावनहिं, मैं बहु देत धिकार ।
अति दरिद्र पति राम कहँ, हमहिं प्रेम स्वीकार ॥
काटि बांटि तनु खाइये, मारिय पावक जारि ।
नहिं रावन मैं सेइहौं, निजकुल कानि बिसारि ॥

रे पापिनि अब जनि समुझाओ । काटि कराठ मोहि बेगि नसाओ ॥
२ नहिं सुनिहौं मैं बचन तुम्हारी । काटि खाहु किन पावकजारी ॥
कोटिन भांतिबिपतिसहिमरिहौं । मैं निज पतिब्रत धर्म न टरिहौं ॥
३ जब लगि प्रान रहै तनु माहीं । नहिं छुइहौं रावन परिछाहीं ॥
कहि अस बचन बिदेह कुमारी । करति बिलाप हृदय दुख भारी ॥
४ तबत्रिजटायकजरठनिसाचरि । जागि सयन उठि कह तौने घरि ॥
रे पापिनि निजनिज तनु खाओ । जनि सीतहिँ अब कोउ डरपाओ ॥
जगजननी सीता सुर-स्वामिनि । अगजगपति रघुपति की भामिनि ॥
५ सियहिँ सेइहित कह अनलेखा । सुनहु सपन जो मैं अब देखा ॥
गज चढ़ि राम लखन दोउ भाई । आय संग बहुकपि समुदाई ॥
चहुँ दिसि लङ्का नगर जरायो । रावनादि निसिचरन नसायो ॥
लङ्का—राज बिभीषन दीन्हा । गहि सिय अङ्क गमन गृह कीन्हा
मुनि पुलस्ति तब समढिग आये । सिय महिमा गुनगन समुझाये ॥
६ त्रिजटाबचनसुनतसबनिसिचरि । भईमौनमनमहँबहुबिधिडरि ॥

१ इसमें तिरस्कारालंकार है ।
२ इस में प्रथम आक्षेपालंकार है ।
३ इस में प्रतिज्ञालंकार है ।
४ इस में बिबोध संचारीभाव है ।
५ यहां अनेक पद्यों में स्वप्नसंचारीभाव का वर्णन है ।
६ इसमें त्रासस‌ंचारीभावहै ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुतन दूत उत चलि गई, बहुत रही तहँ सोय ।
१ बिलखि कहत मन जानकी, नहिं कछु धीरज होय ॥
२ राम बिरह निशिदिन जरत, निबसतनिसिचरगेह ।
अस जीवन ते मरन भल, अवसि तजौं यह देह ॥

सीसबन्ध तरु डार बझाई । तजौं प्रान गलफांस लगाई ॥
अस गुनि सिय तेहि तरुतर आई, । जेहि चढ़ि बैठिरहे कपिराई ॥
३ सियभुजबामनयनतेहिअवसर । फरकिफरकिजनुकहतसगुनवर ॥
बार बार तनुपट फहराई । कहि न जाय जो मुख-द्युति छाई ॥
प्रथम दोष दुख सकल नसायो । परमानन्द हृदय बढ़ि आयो ॥
लखि भल समय सुमिरि भगवाना । बोले मन्द मधुर हनुमाना ॥
अवध नगर यक दसरथ राजा । देस देस जेहि सुयस बिराजा ॥
भे तेहि चारि सुवन अभिरामा । सब महँ जेठ रामगुनधामा ॥
सो पितु बचन मानि बन आये । संग जानकी लखन सिधाये ॥
बन सिय हरन कीन्ह दसभाला । भये दुखित अति राम कृपाला ॥
बनबन सिय खोजत दुहुँ भाई । आय कीन्ह सुग्रीव मिताई ॥
सो चहुँ दिसि बहुदूत पठाये । सीता खोजत हम दूत आये ॥
सुनत बचन सिय कछ हरषाई । जो मोहि यह प्रिय कथा सुनाई ॥
सो मोहि देखि बिकल दुख ऐसे । बेगि न प्रगट होतहै कैसे ॥

सुनत उतरि कपि वृक्ष ते, कीन्ह्यो चरन प्रनाम ।
दसमुखछलगुनिसहमिहिय, बोली रघुपति बाम ॥

१ इसमें विषाद संचारीभाव है ।
२ इस में तिरस्कारालंकार और प्रज्ञालंकार की संसृष्टि है ।
३ इस में देहलीदीपक और उत्प्रेक्षाकी संसृष्टि है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छल्यो जो दण्डक बिपिन महँ, दण्डी रूप बनाय ।
तेहिबिधिअजहुँछलनचह, धिकतोहिनिसिचरराय ॥

कह हनुमान जोरि युगपानी । राम दास मैं जननि सयानी ॥
रामदास जौ तुम कपिराऊ । कहु कछु राम प्रभाव सुभाऊ ॥
सुनि सहर्ष बोले हनुमाना । पूरन ब्रह्म राम भगवाना ॥
जेहि बल मैं लवलेसहिँ पायो । गोपदइव सागर तरि आयो ॥
सुनुसीता अब राम सुभाऊ । जेहिजनसन नहिँ नेकु दुराऊ ॥
यदपि करत लछिमन अति सेवा । भावत अधिक भरत कर भेवा ॥
बिसरि जननि चति नेह दुलारै । हिय मानत कैकयि उपकारै ॥
अवध जनकपुर बहु भख खायो । स्वाद अधिक सबरीफल गायो ॥
सचराचर त्रिभुवन प्रतिपालैं । तुम प्रियतिय अति बिपति बिहालै ॥
१ अस कहिहरि मुदरिहि दै दीन्हा । लीजै जननिराम कर चीन्हा ॥

देखि चीन्हि प्रभु मुद्रिका, सियहिय हरष अपार ।
२ सिर चख हृदय लगावती, पुलकति बारंबार ॥
पुनि पूछति सिय सुन्दरी, कहु मुदरी गुनधाम ।
कबहुँक मोहि दासी सरिस, सुमिरतलछिमनराम ॥
३ कह हनुमत सुनु जानकी, अब यह मुदरी नाहिं ।
पहुँची करि पहिरत सदा, श्रीप्रभु निजकर माहिं ॥
४ सिय तव बिषम बियोग दुख, रामभयो अस हाल ।
मुदरी कर पहुँची भई, पहुँची भइगलमाल ॥

१ इस में प्रच्छन्न श्लेषालंकार है । २ इस में रोमाञ्च सात्विकानुभाव है ।

३ इसमें अल्पालंकार है ।

४ इसमें बिप्रलम्भशृंगार की वियोगदशा का वर्णन है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सदा लच्छमन स्वच्छमन, जननी जानत तोहि।
बिरह दसा अब रामकी, नहिँ कहि आवत मोहि॥
तब मुदरी मनिमध्यपति, देखौं रूप अनूप।
यह गुनि चितई जानकी, तहँ देख्यो निज रूप॥
देखि चकित चित जानकी, बोले कपि हनुमान।
भये राम तव रूप सिय, धरि निसि दिन तव ध्यान॥
१ रामहिँ ध्यावति तुम सदा, राम ध्याव तव रूप।
रामरूप सिय तुम भई, भै प्रभु तव अनुरूप॥
सुनि रघुपति दुख जानकी, रोवति बिलखि अधीर।
कहु कपि तव कैसे अहै, अब रघुनाथ सरीर॥

२ प्रतिपद पठन शील विद्या सम। बिरहव्याधिवश भै प्रभुकृशतम॥
३ सिय सिय रटनि सदा रट लावैं। है बाउर राउर गुन गावैं॥
४ सुनुकपि राम बिरहकहसीता। मोहि सब जगत भयोबिपरीता॥
अमिकर किरन रबिहुँ ते ताते। पावक कण इव कंज लखाते॥
यह उद्यान बिभव सुख जेते। यम-गन इव मोहि मारत तेते॥
त्रिबिध समीर मनहु प्रलयागिनि। भयोदुखदमोहिजानिअभागिनि॥
जाय सकल मम दुख समुझाई। लै आवहु कपि प्रभु दोउ भाई॥
यहि बिधि बिनय करेहु रघुराया। जेहि मोपै उपजै कछु दाया॥
धीरजधरहु जननि गुन खानी। लै कपिदल अइहैं धनुपानी॥

---

१ इसमें मालादीपक वा अन्योन्यालंकार है। २ इसमें बियोग व्याधिदशा का वर्णन है
३ इसमें बियोग जनित उन्माद और गुण कथन दशा का वर्णन है।

४ इस अर्द्धाली से लेकर आगे की चौथी अर्द्धाली तक बियोग जनित उद्वेगदशा का वर्णन है और प्रथम व्याघात अलंकार भी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रावनादि बधि तोहि लै जैहैं। लङ्काराज बिभीषन पैहैं ॥
कह सीता सुनु सुत हनुमाना। किमि तरिहैं कपि सिन्धु महाना ॥
रावनादि भट बिकट जुझारा। केहि बिधि कपि करिहैं संहारा ॥
अति सूछम बपु तुम हनुमाना। ह्वै हैं सब कपि तुमहिँ समाना ॥
किमि अस कपि निसिचर बिनसावैं। मोरे जिय भरोस नहिँ आवै ॥

१ हरि यूथपन असाध्य कृति, कबहुं कतहुं कछु आहि।
कुपित राम लछिमन समर, रहै कि रिपु जगमाहिँ ॥

कहि अस बचन हरषि हनुमन्ता। प्रगटे बपु अति बिकट तुरन्ता ॥
२ काञ्चन मन्दर मेरु समाना। तपत तेज जनु रबि मध्याना ॥
देखत सीता अति हरषानी। बधिहैं कपि निसिचर मन जानी ॥
तब हनुमान कह्यो सुनुमाता। जाउँ राम ढिग भयउ प्रभाता ॥
देहु मोहि कछु निज अभिज्ञाना। जेहि बिश्वास करैं भगवाना ॥
सुनि कपि बचन बिदेह कुमारी। छिनक मौन गहि हृदय बिचारी ॥
चूड़ामनि उतारि सिर लीन्ही। अति हर्षितमन कपि कहँ दीन्ही ॥
जब मैं ब्याहि आइ ससुरारी। मुहँ दिखाइ दिय सासु हमारी ॥
बहुरि सक्रसुत कथा सुनाई। कहेहु तात रामहिं समुझाई ॥
अब कपि कहत तृतिय अभिज्ञाना। पुलकत तनु हियहर्ष महाना ॥
एकबार बनबास मझारा। भ्रष्ट भयो जब मम सृंगारा ॥
मम कपोल अनमोल सुहायो। निजकर तिलक राम बिरचायो ॥
तब सिय चरन बन्दि हनुमाना। चलत पंथ निजमन अनुमाना ॥

---

१ इसमें काकु बक्रोक्ति है। २ इसमें उक्तबिषया बस्तूत्प्रेक्षा है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ जौ केवल सिय सुधि लै जाऊँ। अधम- दूत मैं जगत कहाऊँ॥

मैं हुँ दूत रजपूत को, पवनपूत हनुमान।
क्यों नहिँ आरज कारजहीं, प्रगटौं सकल जहान॥

असबिचारिसियढिगफिरिआयउ। व्याजवचनकरि बिनय सुनायउ॥
२ मातु मोहि लागी अति भूखा। अस मन करत खाउं फल रूखा॥
कह सिय सुनहु सुवन हनुमाना। रचत बन बहु अरि बलवाना॥
नहिं तिन भय मैं नेकु डराऊँ। जौ माता तव आयसु पाऊँ॥
कह सिय हृदय सुमिरि रघुनाहू। जाहु सुखेन मधुर फल खाहू॥
सिय पद बन्दि हरषि हनुमाना। पैठि बिपिन खाये फल नाना॥
गहि बहु तरु जरमूल उखारे। तोरे गुल्मलता अरु डारे॥
मनि कञ्चनमय भवन सुहाये। ढाहि ढाहि चहुँ ओर गिराये॥
सीता-शयन भवन परित्यागी। रहे सकल तरुगन जहँ लागी॥
तोरि तरकि कपि सबहिँ गिराये। प्रमदाबन बिनु बृच्छ बनाये॥

मनि मानिक कंचन भवन, तोरि फोरि सब दीन्ह।
बापी कूप तड़ागतट, छिन्न भिन्न कपि कीन्ह॥
३ बनसोभा ऐश्वर्य्य सब, छनमहँ गये बिलाय।
जिमि श्रीपति गुनगानते, कोटिन पाप नसाय॥
४ हताराम हनुमान जब, जानकि मन आनन्द।
हाहाराम हता कहत, रोवति निसिचरि बृन्द॥

उड़ैं बिकल खगमृगगनधावैं। भयसूचक निज सब्द सुनावैं॥

१, २ इनमें वाच्यार्थ व्यंग्य से व्यंग्य है।
३ इसमें प्रतिवस्तूपमालंकार है। ४ इसमें शब्दश्लेषालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इत उतते निसिचरि सब आई। सिय ढिग जे सोवत उठिधाई ॥
देखि सकल बाटिका उजारी। जाय कही रावनहिँ पुकारी ॥
नाथ एक अद्भुत कपि आयो। तेहि प्रमदाबन सकल नसायो ॥
सुनि रावन कपि कर्म महाना। पठये बहु निसिचर बलवाना ॥
असीसहस बिकट निसिचारी। किंकर नाम महाबलधारी ॥
ते सब चहुँ दिसि कपिहिँ घेराई। करन लगे बहु भांति लराई ॥
ह्वै अति बिकट रूप हनुमाना। पटके निज लांगूल महाना ॥
१ कम्पै गिरि त्रिकूट गढ़लङ्का। ह्वै रह सब निसिचर हिय शंका ॥
लै यक लोह परिघ हनुमाना। मारै अरि गरजै बलवाना ॥

२ जयति राम जय लच्छमन, जयति जानकी मात।
जय सुग्रीव असीब बल, रामसखा बिख्यात ॥
३ कोसलेन्द्र को दूत हौं, पवनपूत हनुमान।
कोटिन रावन मारिहौं, आजु समर मैदान ॥
४ आजु लङ्कगढ ध्वंसि कै, सिगरे निसिचर बंस।
जनक सुता लै सौंपिहौं, श्रीरघुकुल अवतंस ॥

यहि विधि गरजिगरजि हनुमाना। मारै निसिचर दल अप्रमाना ॥
मारै कपि अरि करि अवहेला। अहिगन संग गरुड़ जिमि खेला ॥

१ इसमें शंका संचारीभाव है !

२ ये तीनो दोहे हनुमान जी कथित महा मन्त्र हैं इनके अथवा केवल प्रथम दोहा के जप करने से अथवा सम्पुटित सुन्दरकाण्ड पाठ करने से सभी कामनायें सिद्ध होती हैं और महामारी आदि भारी उपद्रव के समय सम्पुटित सुन्दर काण्ड पाठ करने से सर्वोपद्रव शान्त हो जाते हैं।

३ इन दोनों दोहे में रौद्र रस का वर्णन है। ४ इसमें देहलीदीपकालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ जिमि वासव दानव गन मारै। केहरि जिमि गज झुण्ड बिदारै ॥
तिमि कपि सब निसिचर संहारा। अस्सीसहस वीर बरियारा ॥
कछु अधमारे आय पुकारे। सुनि रावन पठयो भट भारे ॥
सुवन प्रहस्त अतुलबल शाली। यम्बुमालि बहु रन-यश-माली ॥
रक्तबसन भूषन सबधारे। बार बार निजधनु टंकारे ॥
रथ चढ़ि चल्यो बीर बलवाना। गर्जत प्रलय पयोद समाना ॥
लै बहु दल सो रन महँ आयो। कपिहिं घेरि अति समर मँचायो ॥
यम्बुमालि बहु बान प्रहारा। बह हनुमत मुख रुधिर पनारा ॥
२ रञ्जित रक्त सोह मुख कैसे। स्वर्न बिन्दुयुत पंकज जैसे ॥
क्रोधित कपि यक सिखर उठायो। यम्बुमालि दिसि ताकिचलायो ॥
मारि बान दस परम प्रचण्डा। करि दीन्हेसि सो गिरिबहुखण्डा ॥
तब कपि पुनि इक वृक्ष चलायो। निजसरनिसिचरकाटिगिरायो ॥
पुनि कपि हिय बहु विसिष प्रहारा। भैअतिक्रोधितपवनकुमारा ॥
लौह परिघ निज प्रथम उठाई। मार्यो निसिचर हृदयघुमाई ॥

भये भंग सब अंग अरि, गयोस्वर्ग तजि प्रान।
तब सब निसिचर सैन कपि, छनमहँ कीन्ह निदान ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंह
गहरवारबिरचितेद्वितीयःसर्गः

१ इसमें प्रतिबस्तूपमालंकार है। २ उदाहरणालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जम्बुमालि बध सुनि दसकन्धर। पठयो सात सचिवसुत भटबर॥
गर्ज करत सब रन महँ आये। वर्षैं बहुसर कपिहिँ घिराये॥
कोटिन सुभट कटक चतुरंगा। आये जे सब तिनके संगा॥
चहुँ दिशि घेरि बरषि सरभारी। मारन लगे एक बनचारी॥
अति अमोघ आयुध बहु भांती। एकहिं बार तजैं सुरघाती॥
१ परमचतुर कपि अंग बचावै। उछरि कूदि इत उत ह्वै जावै॥
यहि बिधि नभ धावै हनुमाना। नहिँ परसै तनु एकौ बाना॥
मारि मारि बहु सैन गिरावै। अतिचञ्चल निज बेग दिखावै॥
२ कबहुंक गगन कबहुँ महि आवै। पवन चक्र निज चक्र लजावै॥
३ बिनसै कपि निसिचर दल कैसे। लघुखगवृन्द बाज बड़ जैसे॥
जेहि सन्मुख पावै बिनसावै। मंच-घोष युत गर्ज सुनावै॥
सुनि कपि मंच-घोषणा भारी। नसै तेज बल सब निशिचारी॥

जयति राम जय लच्छमन, जयति जानकी मात।
जय सुग्रीव असीबबल, रामसखा बिख्यात॥
४ कोसलेन्द्र को दूत हौं, पवनपूत हनुमान।
कोटिन रावन मारिहौं, आजु समर मैदान॥
आजु लङ्क गढ़ ध्वंसि कै, सिगरे निसिचर-बंस।
जनकसुता लै सौंपिहौं, श्रीरघुकुल-अवतंस॥
यहि बिधि गर्जत घोररव, करत शत्रु संहार।
अवनिगगनसबदिसिबिदिसि, धावत पवन कुमार॥

---

१ यहां से लेकर आगे के अनेक पद्यों में चपलतासंचारीभाव का वर्णन है।
२ इसमें तृतीय प्रतीपालंकार है। ३ इसमें उदाहरणालंकार है।
४ इन दोनों दोहे में क्रोध स्थायीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ कबहुंझपटिमहितलगिरै, कबहुँ गगन उड़िजाय।
मारै निसिचर सैन बहु, आपन अङ्ग बचाय॥

अति अद्भुत गति कपि हनुमाना। देखत बनै न जाय बखाना॥
कोटिन निसचर चरन प्रहारै। पदतल गरदिमरदि बहु मारै॥
हनि मुठिका बहुतक संहारै। बहुतक नोंचि चोंथि नखफारै॥
बहुतक रगरि दीन्ह धरि छाती। जंघ बझाय बहुत बिनिपाती॥
बहुतक सुनि कपि गर्जमहाना। गिरे भूमि तल ह्वै बिनुप्राना॥
सातौ सचिव सुवन संहारे। चारौ भांति कटक धरि मारे॥
पद दलि कपि पैदल किय धूरी। चूर्ण किये रथ ते रथभूरी॥
हाथिन ते हाथी संहारै। गहि बहु बाजि बाजि पै मारै॥
यहि बिधि कपि सैनासब मारी। हय गय रथ पैदल निसिचारी॥
सोनित सरि तेहि छन उमड़ाई। प्रमादावन चहुँ दिसि बहिधाई॥
करत पूर्ववत गर्ज असंका। फाटक चढ़ि बैठे कपि बंका॥
बार बार कपि गर्ज सुनावै। है कोउ भट जो सन्मुख आवै॥
समर चरित रावन सुनि पायो। महासैनपति पांच पठायो॥
महाबली सबकाल समाना। जे जीते बहु समर महाना॥

बिरूपाच्छ यूपाच्छ खल, भासकर्ण दुर्द्धर्ष।
सुभट प्रघस धाये समर, लै बहुसैन अधर्ष॥
पांचहु सैनप सैन सब, आय समर बलवान।
घेरि लीन्ह चहुँ ओर ते, तेहि छन कपि हनुमान॥

तब दुर्द्धर्ष असुर बलवाना। मार्यो कपिहिँ पांच वर बाना॥

१ इसमें चपलतालंकार ... है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लगत बिसिष करि गर्ज अपारा। कपि उड़ि गयउ अकास मझारा॥
तब निज रथे ठाढ़ ह्वै दुर्द्धर। वर्षै प्रखर बिसिष अबिरलझर।
१ इत उत ह्वै कपि अंग बचावै। झपटत बाज सरिस नभधावै॥
२ महाबीर सैनापति दुर्द्धर। वर्षै मघा-मेघ-झरखरसर॥
ह्वै बहु बिसिष बिद्ध हनुमाना। करत किलकिला शब्द महाना॥
गयो दूरि उड़ि गगन मझारी। जहँ नहिँ जाय बिसिषनिसिचारी॥
बिधि सर दुर्द्धरधनुष संवांरा। जब लगि चाहत करन प्रहारा॥

धाय आय कपि बेग अति, उछरि गिरे तेहि सीस।
रथ सारथि दुर्द्धर सहित, भये बाजि बसु खीस॥
यह बिलोकि यूपाक्षभट, बिरूपाक्ष बरिवण्ड।
कूदि गगन कपि हिय हने, निज मुद्गर परचण्ड॥
तिन दोउन कर बेग अति, कपि निज बेग नसाय।
धाय आय महितल सपदि, यक बड़ बृच्छ ढहाय॥

आय गगन सो बृच्छ चलायो। दुहुं सैनप कहँ मारि गिरायो॥
यह बिलोकि हिय क्रोध बढाये। द्वै सैनप द्वै दिसि ते धाये॥
भास्कर्ण निज सूल प्रहारै। प्रघस प्रबल पट्टिस ते मारै॥
दोउ दिसि ते दोउ सुभट प्रहारा। बहै कीस तनु सोनित धारा॥
क्रोधित कपि गिरि स्ंग ढहायो। करि प्रहार दुहुं बीर नसायो॥
कपि पांचौ सैनप बिनसाये। पुनि अरिदल सब मारि गिराये॥
रथ ते रथ गज ते गज मारे। अस्वन ते अस्वन संहारे॥
पट गहि पटकै सैन पदाती। यहि बिधि सकल कटक बिनिपाती॥

१ इसमें पूर्णोपमा है। २ इसमें वाचक लुप्तोतमा है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ सोनित की सरिता बही, अनु पावस सरिधार।
रासि रासि शव देखिये, चहुँ दिसि मनहु पहार॥
यहि प्रकार सब रजनिचर, करि रन महँ संहार।
चढ़ि फाटक कपि पूर्ववत, गरजत बारम्बार॥

सुनि रावन कपि कर्म अपारा। पठयो निजसुत अछयकुमारा॥
जो अबलगि रन कबहुँ न हारा। यदपि बिजय किय सब संसारा॥
अति अद्भुत रथ विधि सन पावा। कञ्चन मनिमय तेज सुहावा॥
जो जल थल नभ समगति धावै। सकल सुरासुर धर्षि न पावैं॥
जोजित मनोबेग बसुबाजी। चित्र बिचित्र सोह धुजराजी॥
कोटिन सस्त्र महास्त्र अपारा। भरि भरि राखि यान मझारा॥
२ चढ़ि तेहि रथ रावनसुत धायो निराधार पथ ह्वै रन आयो॥
आवतही त्रय बान प्रहारा। हनुमत सिर बह सोनित धारा।
३ पुनि पुनि बर्षै बिसिष अपारा। जनु गिरि गिरै मेघ जलधारा॥
४ पवनचक्र इव कपि नभ धावै। लगै न सर इतउत ह्वै जावै॥
अति अद्भुत कपिकर्म निरेखी। रावन सुत ह्वै क्रुधित बिसेखी॥
पवन बेग नभ रथ दौरावै। पै केहु बिधि कपिपकरि न पावै॥
पुनि पुनि बर्षै खरसर धारा। लगै न एकौ पवन कुमारा॥
कपि हनुमत रावनसुत योधा। गगनांगन धावैं करि क्रोधा॥
५ एक एक पै घात लगावैं। चील्ह सरिस मँडरत नभ धावैं॥
गमिनभमँडरत कपि यकबारा। अरि रथ हुँमकि लात निज मारा॥

१, ३ इनमें उक्तबिषयावस्तुत्प्रेक्षा है।
२ इसमें प्रथम बिशेषालंकार है। ४ इसमें पूर्णोपमा है।
५ इसमें अनोन्य और उपमा का मिश्रण होने से—संसृष्टि अलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भयो भग्न रथ सारथी, आठौ अख नसाय।
गिरो व्योम ते अवनितल, रावनसुत भहराय॥

उठा सम्हारि खड़्ग ले धावा। गगनांगन कपि सन्मुख आवा॥
पुनि दोउ सुभट गगन अँगनाई। भ्रमन लगे निज घात लगाई॥
१ धावत फिरत सोह दुहुँ कैसे। मँडरत गगन बाजयुग जैसे॥
२ कबहुँ लरत दुहुँ महि चलिआवैं। कबहुँक उछरि गगनपथधावैं॥
पुनि पुनि असुर कृपान प्रहारै। लौह परिघ हनुमत कपि मारैं॥
३ लगत परस्पर सस्त्र अखण्डा। प्रगटत पवि ज्यों सब्द प्रचण्डा॥
४ एकहिँ एक हनै रिसिछाई। कहि न जाय अति बिकट लराई॥
५ तेहि छन दुहुं जन समर महाना। देखत सुरमुनिगन भय माना॥
सागर अवनि सैल डगमगहीँ। ह्वै रबिमन्द पवन नहिँ बहहीं॥
प्रगटत गगन बिकट रव भारी। भये सकल जगजीव दुखारी॥
६ यहि प्रकार दुहुं सुभट जुझारा। कीन्ह परस्पर समर अपारा॥
एकबार नभ समर मझारा। करि अद्भुत गति पवनकुमारा॥
धाय झपटि अरि चरन बझायो। फेरि झटकिबहु अवनिगिरायो॥
गिरा अवनि निसिचर बलवाना। तेहि पै कूदि परे हनुमाना॥
७ चूर्न बिचूर्न सकल तनु भयउ। तजि निज प्रान अमर ह्वै गयउ॥
८ इन्द्रादिक सुर असुर समाजा। ह्वै बिस्मित देखहिँ कपिराजा॥

रहे जो सैनप सैन बहु, करि सब कर संहार।
चढ़ि फाटक कपि पूर्बवत, गरजत बारम्बार॥

१ इसमें उदाहरणालंकार है। २ इसमें चपलतासंचारीभाव है।
३ इसमें पूर्णोपमा है। ४, ६ इनमें अन्योन्या लंकार है।
५ इसमें त्राससंचारीभाव है। ७ इसमें विरोधाभास है।
८ इसमें इन्द्रादिक देवता और असुरों का बिस्मयस्थायीभाव व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि सुत बध दसकन्धरहिँ, उपज्यो क्रोध अपार।
चल्यो आपु रन हेतु तब, कह्यो इन्द्रजेतार॥

हमहिँ अछत क्यों तुमरन जैहौ। अबहिं जाय मैं कपि बिनसैहौं॥
जियत पकरि अथवा रन मारि। ल्यावत हौं अरिनिकट तुम्हारे॥
असकहि चल्यो समर महि काहीं। योजित चारि ब्याल रथमाहीं॥
चले कटक बहु सुभट जुझारा। घेरि कपिहिँ रन करैं प्रहारा॥
१ इन्द्रजीत हनुमत दोउ योधा। सन्मुख समर भिरे करि क्रोधा॥
कोटिन बान निसाचर मारै। इत उत ह्वै कपि सबहिँ निवारै॥
लगै न एकौ सर बनचारी। मेघनाद मन अचरज भारी॥
ह्वै क्रोधित दिव्यास्त्र चलायो। निजकर गहि कपि तोरि बहायो॥
तब अमोघ सायक बहु मारा। कपि सिर हिय पद पुच्छ मझारा॥
तदपि न बिचलित पवन कुमारा। लौह परिघ निज कीन्ह प्रहारा॥

रथसारथि बाहन सहित, चूर्न चूर्न ह्वै जाय।
मेघनाद मुर्छित गिरो, बिधिबर ते न नसाय॥
तब कपि सैनप सैन सब, किय छन महँ संहार।
गत मुर्छा पुनि सक्रजित, ह्वै रथ अन्य सवार॥

महा घोर संग्राम मँचायो। अति अजेय कपि जीति न पायो॥
ब्रह्मपास तब असुर प्रहारा। ब्यर्थ किये वह पवन कुमारा॥
गुप्तरूप ह्वै बिधि तब आयो। बिनय बचन इमि कपिहिं सुनायो॥
२ जनियहि अस्त्रहिंतात निवारी। नतु मिटिहैं बर बचन हमारी॥
यहि मिसि सधिहैं काज तुम्हारा। बढ़िहैं बहुत सुयश संसारा॥

१ इसमें अन्योन्यालंकार है। २ इसमें शब्दश्लेषालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनि बिधि बचन हृदय सुखमानी। ब्रह्मबिसिषबस भे कपिज्ञानी॥
देखत बिसिष बद्ध हनुमाना। मेघनाद हिय हर्ष महाना॥
धाय झपटि कपि कहँ गहि लयऊ। रावन निकट सभा लैगयऊ॥
१ रावन सभा बरनि नहिं जाई। जनु त्रिभुवन सब सम्पति छाई॥
सिद्ध साध्य सुर असुर समाजा। सेवत चहुं दिसि दसमुखराजा॥
२ स्वर्न सिँहासन दसमुख राजै। जनु सुमेरु सिर मेघ बिराजै॥
दसौ शीश दसशैल समाना। बासुकि इव भुज प्रबल महाना॥
देखि रूप बल बिभव अपारा। कपि निज हिय इमि करै बिचारा॥
३ रावन जौ न बूड़ अघ माहीं। होत बिनास कबहुँ यह नाहीं॥
सब प्रकार बल बिभव स्वरूपा। है यह त्रिभुवन भूप अनूपा॥
जौ यह कोप करै मन माहीं। नासि सकै त्रिभुवन सक नाहीं॥
पै अब मृत्यु समय नियरायो। जानि परत तेहि सिय हरिल्यायो॥
अब सब बंस सहित बिनसैहै। हा! यह बीरहीन महि ह्वैहै॥

४ हृदय बिचारत दसबदन, देखि रूप हनुमान।
तीनि देव महँ अवसि कोउ, है यह कपि बलवान॥
मैं जब त्रिभुवन किय बिजय, देख्यो बीर अनेक।
जन्म दिवसतेआजुलगि, लख्यो न कहुँ अस एक॥
५ बालि नीलनल द्विबिदगज, यामवन्त सुग्रीव।
देख्यो अगिनत मर्कटहुँ, नहिँ कोउ अस बलसीव॥
घटै बढ़ै प्रगटै दुरै, धारै रूप अनेक।

१ उक्त विषया वस्तूत्प्रेक्षा है।
२ इसमें उत्प्रेक्षा और आवृत्ति दीपक की-संसृष्टि है। ३ इसमें संभावनालंकार है।
४ इसमें सन्देहालंकार है। ५ इसमें चतुर्थ प्रतीप है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहि न जाय अति तेज तन, साहस समर बिबेक ॥
कोटि काल सम रन करै, मानै नेक न त्रास।
पवन बेग धावत फिरै, महि पथ जल आकास ॥
केवल बानर रूप यह, कर्म न बानर होय।
सकल देव तप तेजबल, प्रगट भयो यह कोय ॥
सौ योजन सागर तर्‌यो, गोपद सलिल समान।
अवसि पूछि अब समुझिये, है को यह बलवान ॥

रोला छन्द

१ कह रावन तैं कौन, कीस आयो केहि काजा ;
रामचन्द्र को दूत, सीयसुधि पठयो राजा।
को राजा सुग्रीव, रामको जगत उजागर ;
खरदूषन त्रिसिरादि, बध्यो जो बिक्रम सागर ॥१॥

तव भगिनी को नाक, कान हर रघुकुल केतू ;
क्यों प्रमदाबन भंग, कीन्ह तोहि चिढ़बन हेतू।
क्यों चिढ़वै बिनकाज, दुष्ट तैं सिय हरि ल्यायो ;
अब का करिहौ कीस, ब्रह्म बर पास बंधायो ॥२॥

मोहि न बांधे लाज, राम की काज बनैहौं ;
तोहि कनैठी देय, अबहिं सियकहँ लै जैहौं।
कैसे तरिहौ सिन्धु, प्रथम आये तरिकैसे ;
प्रथम तर्‌यो केहि भांति, तरैं जन गोपद जैसे ॥३॥

१ समस्त रोला छन्द में गूढ़ोतरालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अबहिं मारिहौं तोहि, मोहि नहिं तोहि सँहारौं ;
त्रिकुटाचल गढ़ लंक, सहित जरमूल उखारौं ।
मम भुजदण्ड प्रचण्ड, कठिन ताड़न अद्भुत गति ;
को मन्दर को मेरु, कौन रावन लघु कृमि अति ॥४॥

सुनत बचन कर खरग उठायो । क्रोधित कपि कहँ मारन धायो ॥
तबहिं कह्यो करजोरि बिभीषन । दूत न मारिय नीति बिभूषन ॥
यदपि कीन्ह यह हानि बिसेषी । क्षमाकरहु नृप नीति निरेखी ॥
आन दण्ड दै पठवहु ताही । जाय ल्यायहैं निज प्रभुकाहीं ॥
यह सम्मति भल सबहिं सराहा । बिहंसि बचन कह निसिचर-नाहा ॥
कपि भूषन लांगूल सदाही । बसन लपेटि जरावहु ताही ॥
पुनि लङ्का चहुं ओर फिराई । सिन्धु पार खेदहु यहि भाई ॥
सुनत बचन निसिचर गन धाये । बहु सन बसन तूल ढन ल्याये ॥

सजि सजि बांधे पूंछ कपि, सकल तूल सन चैल ।
बहुरि चभोरे ताहि महं, कोटिन घट घृत तैल ॥
देखि चरित मन बिहंसि कपि, निजलांगूल बढ़ाय ।
हरषि हरषि निसिचर सकल, रचना रचैं बनाय ॥
अति दृढ बन्धन बांधि पुनि, कपि पुच्छाग्र जराय ।
असुर फिरावैं नगर सब, बाजन बहुत बजाय ॥
जेहि दिसि ह्वै चल पवनसुत, बटुरै भीर अपार ।
हंसि हंसि गारी देहिं सब, करि कर चरन प्रहार ॥
सो सब सहि गहि मौनकपि, निज मन करै बिचार ।
ब्रह्मपास अब छुटि गयो, करिहौं अरि संहार ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संकठ कठिन पर्‌यो कपि आई। यह सुधि जनक सुता अबपाई ॥
हिय अति दुख अकुलाय सयानी। कह अनलहिं निहोरि मृदुबानी ॥
१ कर्म बचन मन प्रकृति सुभाऊ। जौ पति मोर एक रघुराऊ ॥
तौ कपि कहँ हित सखा समाना। तुम होवहु पावक मतिमाना ॥
सिय पतिब्रत प्रभावगुन भारी। भै पावक अति हित बनचारी ॥
फिरि फिरि देखत दाहिन बायें। चले जात कपि घात लगाये ॥
पच्छिम द्वार निकट जब आये। ह्वै लघु बन्धन निबुकि पराये ॥
पुनि तहँ जित रच्छक भटभारे। छन महँ सब कहँ मारि निवारे ॥

पुनिहनुमतकपिहृदयनिज, यहिबिधिकीन्हबिचार।
बन बिधंसि ढाह्यो भवन, किय बहु अरि संहार ॥
अब चहु दिसि ते लङ्कपुर, जारि करौं मैं छार ॥
सीय हरन फल पाव जिमि, रावन सह परिवार।

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंह
गहरवारबिरचितेद्वतीय:सर्ग:

असं बिचारि हर्षित हृदय, पुलकत प्रेम अपार।
चढ़ि प्रसाद कपि पूर्ववत, गरजत बारम्बार ॥
जयति राम जय लच्छमन, जयति जानकी मात।
जय सुग्रीव असीमबल, राम सखा बिख्यात ॥
कोसलेन्द्र को दूत हौं, पवनपूत हनुमान।
कोटिन रावन मारिहौं, आजु समर मैदान ॥

१ इसमें संभावना लंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आजु लङ्कगढ़ ध्वंसि कै, सिगरे निसिचर-बंस ।
जनक सुता लै सौंपिहौं, श्रीरघुकुल-अवतंस ॥
डूमि गर्जत चहुं ओर पुर, धावत फिरत अशंक ।
गृह गृह आग लगाइ कै, फूंकत सब गढ़ लङ्क ॥
१ कनक कोट कपि मिलि गये, नेकुन परै लखाय ।
पूंछ अनल लखि भागहीं, चहुंदिसि अरि समुदाय ॥

२ लङ्का दहन करै कपि कैसे । फूंकै लोग होलिका जैसे ॥
धधकै लहरि स्वर्ग लौ आवै । मनि कञ्चनमय भवन जरावै ॥
३ बालक युवा वृद्ध नरनारी । पावक जरत बिकल ह्वै भारी ॥
तात मात हा भ्रात पुकारैं । पुत्र पुत्र कहि बहुत चिकारैं ॥
गुनखानी सयानि सब रानी । ज्वलन ज्वाल जरि अति बिललानी ॥
सकल देहिं रावन कहं गारी । जो हठि व्यर्थ बिसाह्यो रारी ॥
बहुजन सागर बारि उलीचैं । कूप तड़गादिक जल सीचैं ॥
बारुनास्त्र बहु असुर चलावैं । मूसलधार वृष्टि बरषावैं ॥
बरषैं दिव्य बिसिष खरधारा । जेहि कपि होय बेगि संहारा ॥
४ करहिं निसाचर यत्न अपारा । पै कपि तेज न पावहिं पारा ॥
५ जस जस करैं असुर उपचारा । बाढ़ै पावक-ज्वाल अपारा ॥
चहुंदिसि अवनि गगन सब छोरा । धधकतिप्रलयअगिनिअतिघोरा ॥
कोटिन निसिचर बिकट जुझारा । भै सब भस्म सहित परिवारा ॥
मनि कञ्चन निर्मित पाखाना । भये भस्म सुन्दर गृह नाना ॥

१ इसमें उन्मीलितालंकार है । २ इसमें प्रतिवस्तूपमालंकार हैं ।
३ यहां अनेक पद्यों में त्राससंचारीभाव है । ४ इसमें विशेषोक्ति अलंकार है ।
५ इसमें तृतीय विषमालंकार है ।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ जरत लङ्क चहुँदिसिउठत, अगिनिज्वालअप्रमान ।
ताहि मध्य धावत फिरत, नहिं लखात हनुमान ॥
२ कनकरजतमनिगृह जरत, बहतअवनिपिघलाय ।
मनु बहु रंगिनि धारसजि, जलनिधि जल उमड़ाय ॥

३ तेहि छन कपि अति तेज निहारी । भयेमोहबस सब निशिचारी ॥
पुर अंगन सब भवन दुवारा । देखहिं मर्कट रूप अपारा ॥
दिसि अरु बिदिसि गगन महितीरा । जहँ देखहिं तहं मर्कट बीरा ॥
मूँदेहु नयन हृदय कपि आये । जनु त्रिभुवन सब बानर छाये ॥
खोलत नयन ठाढ़ कपि आगे । जहं भागे तेहि तहं सँग लागे ॥
अति अद्भुत मय दृश्य निरेखी । भये सकल हिय बिकल बिसेखी ॥
अति भय कम्पत इत उत धाईं । भागहिं बहुत गिरहिं मुरछाईं ॥
यहि बिधि सबहिं प्रचारि प्रचारी । आयो नगर कीस बलभारी ॥

४ अजर बिभीषन ही भवन, लङ्का गढ़ तेहिकाल ।
सब ही थल में देखिये, अगिनिज्वाल बिकराल ॥
जाहि राम कहि ठाढ़ रहि, जाहिं न जे भय भागि ।
जारतहूं सब नगर तिन, कबहु न जारति आगि ॥

[दे]खि कपिबल अति अगम अपारा । दसमुख निज हिय करतबिचारा ॥
[य]हो कीस यह सहज अभीता । जेहि शत कोटि मरुत गति जीता ॥
[क]ठिन कालहु अधिक कराला । देखि परत यहि रूप बिसाला ॥
प्रगट पूँछ अति प्रबल कृसानू । मनहु उगी नभ द्वादस भानू ॥

१ इसमें मिलितालंकार है । २ इसमें उक्तबिषयाबस्तूत्प्रेक्षा है ।
३ यहां अनेक पद्यों में भयानक रस का बर्णन है ।
४ इसमें परिसंख्यालंकार है । ५ इसमें उक्तबिषयाबस्तूत्प्रेक्षा है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करहिं सचिव सब हृदय बिचारा। भौ निसिचर कुल अब संहारा॥
जारत नगर एक बनचारी। राखि न सकैं सकल निसिचारी॥
जासु दूत की अस प्रभुताई। होय तासु प्रभुबल किमि भाई॥
जब अइहैं बनचर बहु सैना। देखि को सकै तिनहिं भरि नैना॥

परमसोकभय बिकल अति, कहहिं सकलमनमाहिं।
अब सपनहु कपिचिह्नलखि, लगिहैंनिसिचरनाहिं॥

देखि जरत निज सब परिबारा। पुरजन परिजन वृन्द अपारा॥
दसकन्धर हिय अति रिसि छाई। पठयो प्रलय जलद समुदाई॥
प्रलय जलद सब दिसिपति साथा। चलि नृपति आयसु धरिमाथा॥
घेरे प्रलयकाल घनमाला। बर्षैं मूसलधार बिसाला॥
सकल लोकपति करि बल भारी। मारैं निज आयुध बनचारी॥
तब प्रलयागि अधिक जगि आगी। सरकि सौगुनी सब दिसि लागी॥
रोम रोम कपि पावक जागे। जरत अंग लोकप सब भागे॥
तब पठयो खल कालकराला। संग प्रेत बहु दल बिकराला॥
कपि घुमाय बालधि निज मारा। भये भूत भैरव संहारा॥
धाय झपटि कपि काल कराला। धर्यो दाबि निज दसन बिसाला॥
पुनि निज तनु अति तेज बढ़ायो। प्रलय मेघ सब अंग जरायो॥
कपि तनु तेज दग्ध घनब्राता। भागी सकल कहत यह बाता॥

१ देख्यो प्रलयहिं बारबहु, द्वादस भानु कृसान।
शेष मुखानल गरलहूं, नहिं कपि तेज समान॥

देखि सुरन गति हिय दुख भारी। कहहिं सचिव रावनहिं प्रचारी॥

१ इसमें चतुर्थ प्रतीपालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाथ ईश बामता बिसेषी। जानि परत बनचर गति देखी ॥
१ सुनि दसबदन कहत रिसि बानी। भयबससचिवनसुमतिसिरानी ॥
दनुज मनुज किन्नर सुर ब्याला। पञ्च भूत गिरि गन यमकाला ॥
जो चेतन महि स्वर्ग पताला। मम भय ग्रसित सकल दिसिपाला ॥
करि बहु तप शिव बिधि अपनाये। सोकि करैं इमि मम अनभाये ॥
पै यक बिष्णु प्रबल आराती। अप्रमान गुन बल सब भांती ॥
यदपि अखिल जगनायक ओऊ। जीति न सकैं सहज मोहिसोऊ ॥

अपर कौन सो ईश अब, कहहु तासुगुन नाम।
जो सपनहुं कोउ काल महं, होइ सकै मोहि बाम ॥
२ आजु सकल संसार महं, ममबलसुयस अपार।
एक छत्र मैं जगत पति, को मोहिं पावै पार ॥

कह तब सचिव जोरि युगपानी। यदपि नाथ सब सत्य बखानी ॥
त्रिभुवन सकल चराचर आजू। करि न सकैं तव नेकु अकाजू ॥
तदपि आजु कपि कर्म निरेखी। जानि परत कोउ ईश बिसेखी ॥
३ जो छन मध्य लङ्कगढ़जारा। सहित सकल बल गर्ब तुम्हारा ॥
४ सुनत सचिव बच हृदय लजाई। भयउ मौन तब निसिचर राई ॥
५ दूत कपि कह नभ ते इमि बानी। सुनुदसकन्धअधमअभिमानी ॥
तुम निज दल बल सहित समाजू। करि न सकैं कछु मोरअकाजू ॥
मैं अकेल तोहि सहित सहाई। जीत्यो सब प्रकार बरियाई ॥

असकहि बारिधि कूदि कपि, निजतनुबह्निबुझाई।
चल्योजबहिँ बिधिआयतब, कालहिँ दीन्ह कुड़ाय ॥

१ इसमें शब्दश्लेषालंकार है।
२ इसमें चतुर्थ प्रतीप है।
३ इसमें सहोक्ति अलंकार है।
४ इसमें व्रीड़ासंचारी भाव है।
५ इसमें गर्व संचारी भाव है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धरि सूछम तनु तबहिँ कपि, सीता के ढिग आय।
कर सम्पुट अति प्रिय बचन, बोले पद सिरनाय॥
चढ़िय जननि अब पीठ मम, चलिये सागर पार।
अबहिँ तुमहिँ पहुँचाइहौं, जहँ श्री राम उदार॥
जो पथ रोकैं रहनिचर, मैं करिहौं संहार।
कोटिन रावन समर करि, कबहुँ न पैहैं पार॥
कहहु सकल गढ़ लङ्क अरु, त्रिकुटाचलहिँ उखार।
रावनादि निसिचर सहित, राखौं सागर पार॥
यह कारज सधिहैं कि नहिँ, संसय हृदय अपार।
भयहुँ सिद्ध उपकार ते, ह्वैहै अति अपकार॥
हम तुम लछिमन राम कर, ह्वै जैहैं यस मन्द।
सुरनरमुनिसधिहैं न हित, सधिहैं हित अरिमन्द॥
लखि सुभावसुनिबचनसुचि, कहकपि हर्षित हीय।
१ जैसी चत्रियतिय चहिय, तुम तैसी कमनीय॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंह
गहरवारबिरचितेचतुर्थःसर्ग्गः

२ कोटि बज्र सम गर्ज कपि, कियउ जु चलतिहिंबार।
मुनिअरितियलपटायपिय, पियपिय करहिं पुकार॥

१ इसमें द्वितीय समालंकार है। २ इसमें त्रास संचारी भाव है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Shri Ashutosh Sahib Bhuwan Vani Trust Donations

पुनिपुनि करि सियचरनप्रनामा। चल्यो कीस जहँ प्रभुगुन धामा ॥
सागरतीर तुरत चलि आये। अति बिसाल तनु तबहिँ बनाये ॥
धाय चढ़े यक सैल महाना। चले गगन भरि जोर उड़ाना ॥
दस योजन चहुँ दिसि चौड़ाई। विंसत योजन जासु उंचाई ॥
गमन बेग सो सैल बिसाला। सहित सकल बन धसेउ पताला ॥
छन महँ जलधि पार कपि आये। महाघोर निज गर्ज सुनाये ॥
सुनि प्रमुदित कह सब बनचारी। करि आये कपि कारज भारी ॥
तब लगि अवनि आयहनुमाना। भेंटे सब कपिगन बलवाना ॥
१ सकल चरित कपि बरनि सुनायो। परमानन्द सबहिं हियछायो ॥
२ पुनि पुनि कपि कहँ अंक लगावैं। चूमत बालधि गुनगन गावैं ॥
पूंछि उठाय नांचि सब हरषैं। कहि बहु सुयस सुमन सुर बरषैं ॥
चले हरषि पुनि सब समुदाई। जहं सुकण्ठ कपि प्रभु रघुराई ॥
चलत पंथ मधुबन महँ आये। हनुमत बल तरु फल सब खाये ॥
बन-रच्छक दधिमुख बलवाना। बरजि रहा कोउ कहा न माना ॥

रोकत कपि धरिरच्छकन्हि, बहुबिधिताड़नकीन्ह।
भागी सब सुग्रीव ढिग, आय दोहाइ दीन्ह ॥

सुनि अति हरष कहत मन राजा। करि आये कपि प्रभु प्रिय काजा ॥
३ बिनुसियसुधिलहिबन फलखाये। आवत मम ढिगअवधि बिताये ॥
अस मन गुनि हर्षित कपिराई। कह पद बन्दि सुनहु रघुराई ॥
जानि परत मोहि कपिकृत देखी। भयउ सिद्ध प्रभुकाज बिसेखी ॥

१ इसमें प्रथम पर्य्यायालंकार है। २ इसमें कारकदीपकालंकार है।

३ इसमें काकु बक्रोक्ति है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ जौ न होत प्रभु काज सुहाये। नहिं आवत कपि द्रुमि फलखाये॥
२ मोरि मन प्रभु अस अनुमाना। कीन्ह काज तव कपि हनुमाना॥
सुनि कपिबच हरषि रघुनायक। फरकि सुभग अंग सुभदायक॥
३ लछिमन सुग्रीवहिं उठि भेटे। जनुसियमिलीहृदय दुख मेटे॥
तेहि छन सब कपि युत हनुमन्ता। आये जहँ कपिपति भगवन्ता॥
४ कपिहिं देखि संभ्रम उठि धाई। मिलन चहत जेहि छन रघुराई॥
५ धरि पद सीस जोरि युगपानी। कह कपिपरमसकुचिप्रियबानी॥
सोखिउ जलधि न लङ्क मिटायउ। रावनसिरयुतसियनहिं ल्यायउ॥
निसिचर हीन कीन्ह नहिं धरनी। लागउं नाथ अंक केहि करनी॥
इत उत धाय कहै सुधि जोई। मैं प्रभु दूत चपल पसु सोई॥
प्रभु महिमा निज दोष बिचारी। मिलत हृदय लज्जा अति भारी॥
६ सुनिकपिबचनहरषिसुरत्राता। सजल नयनअति पुलकित गाता॥

बारबार गहि अंक कपि, दीन्ह बिबिध बरदान।
तन मन धन सर्बस्व मम, होहु अधिक प्रिय प्रान॥

पुनि प्रभु कह्यो सुनहु हनुमाना। अबसिय बिरह चलन चह प्राना॥
बेगि प्रिया प्रिय कुसल सुनाई। करहु तात मम अन्त बिदाई॥
तब हनुमान चरन सिर नाई। सीयमिलन सब कथा सुनाई॥
कहि सिय कथित उभय अभिज्ञाना। चूड़ामनि कपि दिय भगवाना॥
बिरहव्याधिजेहिबिधिसियदेखी। बहुरिप्रभुहिं कहबिलखिबिसेखी॥

---

१ इसमें सम्भावनालंकार है। २ इसमें अनुमानालंकार है।
३ इसमें अनुक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा है। ४ इसमें आवेगसंचारीभाव व्यंग्य है।
५ यहां अनेक पद्यों में ब्रीसंचाड़रीभाव है।
६ इसमें अश्रु और रोमांच सात्विकानुभाव है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ प्रभु सिय तनु कृशता के आगे । प्रतिपद-चन्द्र पीन अतिलागे ॥
छिन छिन बदन देखि पियराते । कनक कंज अति श्याम लखाते ॥
नयनन देखि रुदन जलधारा । लघुलागत घन उदधि अपारा ॥
प्रभु लखि सिय सन्ताप कलापा । सीत पगत प्रलयाग्नि प्रतापा ॥
वपु छवि सेष रह्यो भगवाना । करत हृदय सन्तत तवध्याना ॥

जौ करुणारस उदधि बढ़ि, बोरै सब संसार ।
नाथ परम लघु लगत सोउ, सियहियदसाबिचार ॥

सुनि कपि मुख सिय दुखमयबैना । भये सजल दोउ राजिव नैना ॥
हृदय सीय गुन रूप सम्हारी । व्याकुल भये जगत-पति भारी ॥
२ कह कपि बहुरि चरन सिरनाई । बेगि करिय प्रभु समर चढ़ाई ॥
छन महँ सकल असुर दल जीती । आनियभवनसियहिं अतिप्रीती ॥
तब विधिसुत प्रभुपद सिर नाई । हनुमत कृति सब कहि समुझाई ॥
सुनि प्रभु पुनि पूछेउ कपिपाहीं । कहहु तात लङ्कापुर माहीं ॥
यहि छन कौन कथा परचारा । सुनि हंसि बोले पवन कुमारा ॥
३ नहिं शृंगार कुतूहल गाना । सुनियन कतहुं कथा धनु बाना ॥
तिय धनधाम धरनि गजबाजी । नहिं कहुं कथा सुभट रनयाजी ॥
४ तव-भव भयते भये सभीता । सब घर पढ़त पलायन गीता ॥

५ लङ्कापुर नर नारि सब, चलत रावरी बात ।
थर्थरात ज्यों बात ते, पीपर तरु की पात ॥

---

१ यहां से लेकर दोहा पर्यन्त विरह व्याधिदशा का वर्णन है।
२ इसमें औत्सुक्यसंचारीभाव है।
३ यहां से लेकर आगे के दोहा पर्यन्त त्रास संचारीभाव का वर्णन है।
४ इसमें लक्षित लक्षणा है। ५ इसमें उदाहरणालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कह प्रभु सुरन अगम्य अति, लङ्का नगर महान ।
बिद्यमान दसकन्ध भट, किमि जारेहु हनुमान ॥
१ प्रलयानल प्रभु कोपतव, प्रलय-पवन सिय-स्वासु ।
दग्ध प्रथम दसमुख नगर, हम निमित्त भे तासु ।
इक साखा ते कूदि कै, दूसरि साखा जाय ।
साखा मृगकी बुद्धि बल, है इतने रघुराय ॥
२ लवनाम्भोधि उलंघिबो, सत्रुन बध पुरदाह ।
ये प्रभु चरन प्रताप सब, मम बल यहि महं काह ॥

सुनत बचन सबकोउ सुखमाना । राम लखन युत्थपन प्रधाना ॥
तब सुग्रीव सकल पुर माहीं । कीन्ह प्रचारघोष चहुंघाहीं ॥
३ मर्कट भालुबृन्द सब जेते । होहु सजग अब रन हित तेते ॥
रावनराज बेगि बिनसाई । रामराज जग देहु चलाई ॥
रामराज निजराज समाना । जेहि ते ह्वै तव सब कल्याना ॥
भारत द्रव्य लूटि सब लङ्का । लिये जात यह दुष्ट असंका ॥
कन्दमूल फल मुनि नहिं पावैं । रावन कञ्चन महल बनावै ॥
प्रतिदिन नयोदण्ड यह लेई । सुर नर असुर सबहिं दुखदेई ॥
अबल सबल सब काहिं सतावै । रकत पाछि नृपदण्ड चुकावै ॥
दण्डक बन ऋषि मुनिगनजेते । रकत पाछि लीन्ह्यो कर तिनते ॥
यह चक्री बड़ चक्र चलावै । हितपथते सब कहं बिचलावै ॥

१ इसमें रूपका लंकार है ।

२ इसमें पर्य्यस्तापन्हुति और काकु बक्रोक्ति मिश्रित संसृष्टि अलंकार है ।

३ यहां से लेकर आगे के अनेक पद्यों में रौद्र रसका बर्णन है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखहु सीय स्वयम्बर माहीं। यह बहकायो बहु नृप काहीं।
दै कुमंत्र भृगुपतिहिं पठायो। व्यर्थ राम सन रार करायो॥
यहि स्वारथी चक्र के माहीं। बिनसे बालिराज सक नाहीं॥
देखहु सब सुर सिद्ध समाजा। मानत यदपि राम कहँ राजा॥
तदपि परे रावन भय माहीं। प्रभु हित करत न सेवत ताही॥
परो द्विचक्र सकल संसारा। अब सब जन मिलि करहु उबारा॥
धर्माचरण बढ़े जग जैसे। सब मिलि करहु कर्म अब तैसे॥

धर्म न्याय आचरण बढ़ि, जिमि जग ह्वै उपकार।
सब मिलि कीजे कर्म सो, करि अरिगन संहार॥

सहि न जात अब अनय अपारा। करहु आततायी संहारा।
जबलगि रावन रह जगमाहीं। प्रजा-बर्ग-हित ह्वै कछु नाहीं॥
यह सब श्रुति मर्याद मिटावे। नाशै धर्म अधर्म बढ़ावे॥
करि निजबस सब जग नर नारी। नित प्रति करत उपद्रव भारी॥
बसै समुद्रपार यह डाकू। रावन लोक रुवावन भाकू॥
मरन जियन की अब तजि शङ्का। सब मिलि चलहु चढ़हु गढ़ लङ्का॥
सिय उद्धार देशहित कीजै। सब मिलि समर सुयस अब लीजै॥
सुनत घोष हिय परम अनन्दा। घरघर ते कढ़ि बनचर बृन्दा॥

आये सब सुग्रीव ढिग, सजिसजि सैन अपार।
भई भीर नहिं जाय कहि, मनहु सकल संसार॥

सब कपि साजि अगम कटकाई। कीन्ह लङ्कगढ़ बंक चढ़ाई॥
चलत पंथ बनचर दलदेखी। कह बन बासिन चकित बिसेखी॥
अस्त्र सस्त्र इन कहं नहिं कोई। नहिं हय गय पदाति रथ होई॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वृषभ ऊंट नहिं भार कहारा। नहिं देखिय कछु खाद्य प्रकारा॥
१ तान बितान आदिकछु नाहीं। नहिं कछु द्रव्यहु बसन लखाहीं॥
लखिय न एकहु साज समरकर। परम कृसित तनु नृपहु जटाधर॥
अति अपार यह जलधि महाना। किमि तरिहैं ये बिनु जलजाना॥
सज्जित सकल समर के साजा। जगबिजयी दससुख महराजा॥

निजगृह बैठें सजगह्वै, साजि सैन अप्रमान।
केहि बिधि तेहि रन जीति हैं, नर कपि क्षुद्र महान॥

तिन महं बयोवृद्ध जे ज्ञानी। लगे बुझाय कहन अस बानी॥
महत स्वकाज महत्त्वहिं करहीं। नहिं उपकरण अडम्बर धरहीं॥
इनहिं न चहिय सौज समराई। धर्म काज महँ धर्म सहाई॥
ये चलि चरन जलधि तरिजैहैं। लङ्का सब निसिचर बिनसैहैं॥
लरैं जे जन स्वदेस हित धारैं। तिन सन कोटिकाल रन हारैं॥
१ कोटिन बिघ्न कष्ट दुख जोई। देसहितैषिन कहं सुख सोई॥
ये निज जाति देसहित लागी। चले समर जूझन बड़ भागी॥
धर्म न्याय ह्वै जेहि दिसि माहीं। दैवहुं होत सहायक ताहीं॥
राम शीलगुन देखहु भाई। करहिं जासु बन पसु सेवकाई॥
जग बिजयी रावन जय हेतू। लीन्ह कीश दल रघु कुलकेतू॥
अहो बड़न की इहै बड़ाई। करहिं महत कृति सुगम उपाई॥
निशिचर मारि भार महि हरिहैं। निज महत्व सिगरे जगभरिहैं॥
यहि बिधि कथा सुनत मगुमाहीं। सैन समेत चले प्रभुजाहीं॥
कपि सुग्रीब सहित सबवनचर। पहुंचे सिन्धु तीर करुणाकर॥

१ तानबितान=डेराशामियाना आदि। २ इसमें अनुप्रासलंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रथम मनाय जलधि जिमि सज्जन । जब न सुन्यो प्रभुक्रियमदगञ्जन ॥
तब तनु धारि जलधि कढ़ि आयो । सेतु बँधै सो भेद बतायो ॥

१ स्वान जाति अरु दुष्टजन, यह वृत्ति विख्यात ।
ढील दिये शिर पै चढ़त, कील दिये गिरि जात ॥
तब सचिवन मिलि मन्त्र करि, कृपासिंधु श्रीराम ।
पांचदिवस महँ जलधि पै, कीन्ह सेतु अभिराम ॥
बालिनिधन लंका-दहन, निरखि जलधि परिनाम ।
माल्यवान कह रावनहिं, सिय दै मिलिये राम ॥

सुन्यो न सो कछु अतिहित बानी । निज भुजबल गर्वित अभिमानी ॥
सेतुबन्ध सुनि क्रोध बढ़ायो । बैठि सभा निसिचरन बुलायो ॥
सैनप सचिव मित्र सब आये । पुत्र पौत्र परिवार सुहाये ॥
देखि सभा निज सकल जमाती । २ दसमुख कहै लाग यहि भांती ॥
सुनहु सभा सब बीर समाजू । अहै परिच्छा कर दिन आजू ॥
३ को सृगाल को सिंह कहावै । सो यहि छनहिं प्रगट ह्वै जावै ॥
रामलखन सब बनचर बृन्दा । जो बधिहैं रन चढ़ि सानन्दा ॥
तेहि समान त्रिभुवन तिहुँ काला । कोउ न परमप्रिय नृप दसभाला ॥

सकल बंद्य सब पूज्य पद, त्रिजग ख्यात मतिधीर ।
मोरबिभव गृह राज्य सब, लहै अर्द्ध सो बीर ॥
अस कहि संसदि दसबदन, प्रण-मणि दीन्ह धराय ।
ओहि भुजबल हिय गर्व अति, सो भट लेइ उठाय ॥

---

१ इसमें अर्थश्लेषालंकार है ।
२ इसमें शब्दश्लेष है । ३ इसमें गौणीसारोपालक्षणा है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनत दसानन यहि बिधि बानी । नहिं बोलेकछुकोउ भटमानी ॥
कपि हनुमत बल प्रथम बिचारी । परम सभीत सकल निसिचारी ॥
निज निज मन सब करहिं बिचारा । नहिं नर बनरन समर उबारा ॥
रामदूत दूक परम असंका । जारयो सहज सकल गढ़ लङ्का ॥
सानुज राम कटक सजि आये । करहिं काहधौ जानि न जाये ॥
इमि मनगुनि भय बस सब निसिच्चर । एकएक मुख लखत परस्पर ॥
देखि सभागति दसमुख बीरा । परम त्रसित हिय भयउ अधीरा ॥
तदपि धीर धरि कह इमि बानी । सुनहु सकल सुररिपु भटमानी ॥
जौ तोहि हृदय त्रास अति भारी । करि न सकहु सन्मुख अरि रारी ॥
तौ मम पुर तजि मुंह मसि लाई । जाय दुरहु गिरि कानन भाई ॥
जेहि न होय पुनि जगपरिहासा । रावन कटक मनुजकपि नासा ॥
समर चहेहुं जेहि अति प्रिय प्राना । सो यहिछन बरु जाय अजाना ॥
मोहि न आस कछु असुर सहाई । पठवौं समर न कोउ बरियाई ॥
समुझि हृदय निज भुजबल भारी । मैं हठि हरन कीन्ह नृपनारी ॥
अब अकेल करिहौं संग्रामा । बिधि गति सरिस होय परिनामा ॥
१ मैं जीतौं अरिगन रन माहीं । कैवे जीतहिं संसय नाहीं ॥

सचिवसुवनप्रियहितनसन, सबबिधिभयउनिरास ।
मैं जान्यों सब असुरकुल, आजुहिं भयउ बिनास ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंहगहरवार बिरचितेपञ्चमःसर्ग्गः

---

१ इसमें बिकल्पालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखि पितहिं अति बिकल बिषादा । कह प्रणबचन तबहिं घननादा ॥
हमहिं अछत लङ्कापुर माहीं । तुमहिं सुरेसहु सन भयनाहीं ॥
सुख ते राज करहु नृप लङ्का । नर बानरन कौन रनसंका ॥
देखहु आजु मोर रन करनी । नरकपि रहित करौं सब धरनी ॥
असकहि पितुपद रज सिरनायो । सैनप बोलि सैन सजवायो ॥
पुनि अति आतुर उठि मघवारी । समर चलन अबकीन्ह तयारी ॥
तेहि अवसर उठिसुजन बिभीषन । कहत बचन बहु नीति बिभूषन ॥
सम्प्रति राम असुर रन रारी । होत कौन बड़ अर्थ बिचारी ॥
परतिय हित अस रारि न कीजै । धर्म अधर्म कर्म गुनि लीजै ।
अहह लङ्कपति सरिस सुजाना । तिय हित भयउ परम अज्ञाना ॥
करत बिचार न कछु मन माहीं । तिय पतिब्रता अन्य बसनाहीं ॥
कोटिन कल्प कियहुं हठ भारी । सिय न सकति पर पुरुष निहारी ॥

१ मसक सुवननिगलैअवनि, बिनसैतमदिननाथ ।
ससक स्टंगधनु व्योम गुन, बिसिषसाजिशिव-माथ ॥
बंध्यासुत जीतै जगत, दुष्ट हृदय गत काम ।
अमिय होय बिषकण सरिस, तब सिय तजिहैं राम ॥

समुझि हृदय असनीति गुसाईं । त्यागहु व्यर्थकलह दुखदाई ॥
कोटिन सिव बिधिभयहुँ सहायक । जीति न सकहुसमर रघुनायक ॥
राम सकल व्यापक जगयोमी । परमब्रह्म जड़ चेतन स्वामी ॥
जग उतपति पालन लयकारी । सिव बिधि सक्ति सक्तिधर भारी ॥
बिश्वरूप श्रीपति भगवाना । जगत-जननि सिय प्रकृति प्रधाना ॥

१ यहां इनदोनों दोहे में मिथ्याध्यवसिति अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहि न सकहिं जेहि गुन प्रभुताई ॥
निगमागम सुर मुनि समुदाई । सो प्रभु भयो मनुज अवतारा ॥
सुरसुख करन हरन महिभारा । कोटि कराल काल किन होई ॥
१ तेहि सन बिजय कि पावै कोई ।

मधुकैटभ बलि दिति-सुवन, सहस बाहु सुरनाथ ।
जो मद भंज्यो सहज सब, सो यह प्रभु रघुनाथ ॥
अजहु न तेहि जो ईशकरि, समुझिसकहुनिअज्ञान ।
सुनहु नाथ तउ बचन मम, भाखत सपथ प्रमान ॥

मानहु तेहि यदि मनुज-कुमारा । तदपि बुद्धिबल अगम अपारा ॥
मिले बहुरि कपिदल सँगमाहीं । कोटिन काल जीति नहिं जाहीं ॥
अति अद्भुत रिपुकर्म निरेखी । होत हृदय भय चकित बिसेखी ॥
बाल बयस मुनि मख रखवारी । हति ताटका सुभुज बलभारी ॥
बिनु फर सर मारीचहिं मारा । गिरोजाय लवनाम्बुधि पारा ॥
जेहि सिव धनु त्रिभुवन मदगंजा । नृपमणि राम सहज सो भंजा ॥
नृप दसमुख बन्धन दुखदाता । सहसबाहु सब जग बिख्याता ॥
तासु सकल बल सुयस बिनासक । परसुराम सब नृपकुल त्रासक ॥
सोउ रन निरखि जासु प्रभुताई । गह्यो सरन बहु बिनय सुनाई ॥
परसि जासु पद पुन्य-निधाना । भयो हरितबन तरो पखाना ॥

खरदूषन त्रिसिरा सहित, हति बिराध कुकबन्ध ।
समर बालि हनि एक सर, बांध्यो जलधि अबन्ध ॥

यह कछु मनुज कथा मैं गाई । सुनहु सकल कपि कुल प्रभुताई ॥
बालिराज मर्कट कुलटीका । जेहि किय नृप सब सुयस अलीका ॥

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो कपि बालि बिपुल बलसाली। हतिइक बिसिषरामरनघाली ॥
सागर लांघि तासुइकधावन। सहज असंक प्रविसिपुर रावन ॥
तियबन ध्वंसि कटक बहु मारा। सन्मुख सबहिं अछय संहारा ॥
बिनुस्रम सब गढ़ लङ्क जरायो। सिय सुधि लै निज भवन सिधायो ॥

अजहुं जासुबलसुमिरिहिय, कम्पतसबनिसिचारि।
देखहु संसदि असुर गति, प्रभु निजहृदयबिचारि ॥
सुनिदसमुखकहकुपितअति, मैं तव मति सबजान।
परम त्रसित तैं रिपुन सन, तेहि बहु करत बखान ॥
जुरि न सकैं त्रिभुवन सकल, जेहि मोसन रन खेत।
नर कपि सन तेहिबिबिधबिधि, भयदिखरावतप्रेत।
अस कहितेहि मारन चल्यो, परम कुपित दसमाथ ॥
१ सकल सभाकहि अनय नृप, बैठारे गहि हाथ।

तब घटकर्ण परम भट मानी। कह यहि भांति नीति युतबानी ॥
तात बिभीषन बचन प्रमाना। उचित न तासु करब अपमाना ॥
गुनिय न हिय कायर करि सोई। तेहि सम सत्य सुभट नहिं कोई ॥
सकल असुर दुख त्रसित निरेखी। कहत नीति हिय प्रीति बिसेखी ॥
जो मोहि सिव बिरंचि मुनि नारद। कह्यो प्रथम बिज्ञान बिसारद ॥
सो सब आजु बिभीषन गायो। पै तव हृदय एक नहिं आयो ॥
मोरेहु हिय प्रतीति दृढ़ खासी। राम ब्रह्म सब अग जग-यामी ॥
जेहि माया सब जग बिस्तारा। कहिय मनुज तेहि कवन प्रकारा ॥

ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि, जेहि गुन करत बखान।
तेहि हठि नर पुनिपुनिकहत, तुमनृपकेहिबिज्ञान।

१ यहां लक्षितलक्षणा से—सभा शब्द से—सभासदों का अर्थ समझिये।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु तुम्हरे मत सत्य जो, राज-सुवन रघुराज ॥
तौ तेहि तिब हरिकहहु कस, कीजिय बैर अकाज ।
कहहु प्रथम मोहि बन्धु अब, परिहरिसकलबिषाद ॥
तुमहिं साधु नृप रामसन, केहिबिधिभयउबिबाद ।

रह्यो जबहिं निद्रित तुम भ्राता । भई तबहिं सबअनहित बाता ॥
मोहि गृह निवसत बिनु अपराधा । कीन्हअरिनबहुबिधिहठिबाधा ॥
सो सब चरित कहत गति देखी । होत हृदय दुख बिकल बिसेखी ॥
अवध नृपति दसरथ बिख्याता । तेहि सुत रामजेठसब भ्राता ॥
जेहि दिनजननि जठर यह आयो । असगुन अमित लङ्कपुर छायो ॥
बूझ्यो सचिव सहित गुरु ज्ञानी । कह्यो सकल रिपु मर्म बखानी ॥
तेहि दिनते संकित अतिताता । सेवत नित सिवसक्ति बिधाता ॥

बिबिध भांति करि यजनमख, मांगत यह बरदान ।
सहित सकल परिवार निज, अरिक्ततदुखह्वै चान ॥

सपनहुं करत न रिपु अपमाना । निसि दिन रहत हृदय भयमाना ॥
पै सो निज सुभाव गुन जाती । मम अपमान करत दिन राती ॥
निरपराध ताटका सँहारी । दलयुत सुभुज हत्यो कुबिचारी ॥
मगहुं चलत खल छल करिभूरी । किय तिय उपल परसि पगधूरी ॥
जाय जनकपुर पुनि यह बंगा । किय शिव इष्टदेव धनुभंगा ॥
मम अभिलषित जनक नृपकन्या । रूप शीलगुनत्रिभुवन धन्या ॥
करि मम सब प्रकार अपमाना । कीन्ह ब्याह निज हठ अज्ञाना ॥
अब तेहि पितु धौं केहि अपराधा । राजदेत अवचक करि बाधा ॥
निदरिनिकारेउबिपिनतेहि, सहितअनुजअरुबाम ।
सो बन बन महि बिबिधदुख, पञ्चबटी किय धाम ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तिय युत तहं निबसैं दोउ भाई। अब सुनु अपर चरित दुखदाई ॥
सब भाइन महँ मातु दुलारी। सूपनखा लघु भगिनि हमारी ॥
भइ बिधवा जेहि दिन ते सोई। काटति निज दुर्दिन दुखरोई ॥
यक दिन सो जननी ढिग आई। चरन बन्दि अस विनय सुनाई ॥
आयसु देहु जननि तजि माया। सिव सेवन हिय अति अभिलाषा ॥
मुनि सेवित निर्जन बनजाई। करिहौं मैं शंकर सेवकाई ॥
जननि तबहिं मोहि बोलि पठायउ। सादरआय चरन सिरनायउ ॥
कहि जननी भगिनी मनभाई। निज सम्मति पुनि प्रगटि जनाई ॥

तब मैं खरदूषन सहित, सुभट सहसदसचार।
पठयउ दण्डक बिपिन महं करि भगिनी रखवार ॥

निसिदिन करत सम्भु सेवकाई। बहु दिन गये बसत तेहि भाई ॥
जबते राम बास तहँ कीन्हा। सबहिं अंबटि हठि बहु दुख दीन्हा ॥
बिधिवस भगिनी बिपिन मझारा। सुमन लेन हित गइ इक बारा ॥
लखि कुदृष्टि रामानुज ताही। मिलन चह्यो भगिनी किय नाहीं ॥
ह्वै निरास तब हरि श्रुति नासा। कीन्ह दुष्ट बहुविधि परिहासा ॥
* त्रिसिरादिक सुनि लागगुहारा। छलकरि राम सबहिं रनमारा ॥
तब भगिनी दुख बिकल अपारा। आय कीन्ह मम निकट गुहारा ॥
निरपराध तेहि दुर्गतिदेखी। भयउ हृदय मम क्रोध बिसेखी ॥
अबलगि रह्यो बैर लघु भ्राता। सहि न गयो यह घात अघाता ॥
१ ह्वै अपमान दग्ध बन धायो। पलटोहित अरितिय हरिल्यायो ॥

१ यहां रावण वक्ता है—सीता के हरण करने में अपनी अन्यायरूपक्रिया को छिपाता है सो व्यंग्य से जाना जाता है। अतः वक्तृवैशिष्ट्य व्यंग्य है। विस्तारभय से इस व्यंग्यकी टिप्पणी बहुत स्थलों पर नहीं दी गई है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब तेहि तजत लगत अतिलाजा । मोहि कायर कह सकल समाजा ॥
तव मातामह बोलि पठायो । तेहि मिलि मैं यह मंत्र दृढ़ायो ॥
बालिराज कपिपतिबलधामा । कीन्ह नियुक्त रामबध कामा ॥
* अहह ! दैव गति अगम अपारा । छल करि राम बालि रन मारा ॥
बहुरि राम हनुमतहिं मिलाई । कीन्ह जाय सुग्रीव मिताई ॥
नृपधन लोभ बिबस अज्ञानी । भयउ रामसेवक तजि ग्लानी ॥
तेहि सिय सुधि बहु दूतपठावा । हनुमत जलधि लांघिपुर आवा ॥
* निसिमुख नगर प्रविसि छलकारी । गयउ अक्षयहनि सबपुर जारी ॥

पाय सीय सुधि सैन सजि, रामलखन दोउ बीर ।
जलधि सेतु बंधन कियो, लै मर्कट गन भीर ॥
अपर एक आचरज अति, कह्यो दूत सब आय ।
जलनिधि बांधत सैलगन, रहैं सलिल उतराय ॥
बहु बिधि ते गढ़ि कुमति निज, बहुत प्रपंच बढ़ाय ।
कह्यो बरनि सदसत चरित, बहु प्रकार समुझाय ॥

सो० कुम्भकरन मतिमान, कहत बिहंसि तवनृपतिसन ।
हिय आचरज महान, होत बन्धु तव बचन सुनि ॥

अनुज बिभीषन सत्यबखाना । तुम तेहि व्यर्थ करत अपमाना ॥
प्रभु पुनि तुम्हरे बचअनुसारा । जानि परत रिपु प्रबल अपारा ॥
निजबल राम काज सब साधा । तुम छल समुझि गनत अपराधा ॥
नाथ करहु निज हृदय बिचारा । ये दोउ बन्धु न मनुज कुमारा ॥

* इन तीनों अर्द्धालियों में—रावण बक्ता है और वह रामजी और हनुमानजी की अद्भुतपराक्रमप्रकाशनरूपक्रिया को छिपाता है सो व्यंग्य से जाना जाता है । अतएव यहां भी बक्ताविशिष्ट व्यंग्य है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जेहि प्रभाव सिल सिखर बिसाला। जलधि तरे जनु क्षुद्र पलाला ॥
जेहि निज सहज शील बस भाई। पशुकपि भालु लीन्ह अपनाई ॥
सुरहुं निरखि जेहि गुनगन भारी। गह्योसरन कुल-कानि बिसारी ॥
तेहि हठि नर पुनिपुनि तुम कहहू। नृप अभिमान मोहवस अहहू ॥

१ सुनिरघुपतिकृतचरितसब, ममहियअसअनुमान।
गहन दनुजबनदहन हित, महि प्रगटे भगवान ॥
हठि कीजिय स्वीकृत यदपि, तिनकहँ राजकुमार।
तदपि प्रसंसा योग्य नहिं, जो आचरन तुम्हार ॥
सुनु नृपेन्द्रमोहिभलिहिंबिधि, बात परतसबजान।
अब तव संसदि रहत नहिं, एकहुं सचिव सुजान ॥

सूपनखा जेहि दिन पुर आई। खरदूषनबध तुमहिं सुनाई ॥
तुमहिं उचित तेहि दिन महराजू। अरिहिं प्रचारि करत रन काजू ॥
समुचित सुभट कर्म परित्यागी। भे तुम जार-कर्म अनुरागी ॥
२ जाय बिपिन परतिय हरिल्याई। कीन्ह बन्धु तुम अतिप्रभुताई ॥
ब्रह्मवंश समुचित कृति जोई। तुम सब भांति कीन्ह प्रभुसोई ॥
श्रुति सम्मत तव धर्म निहारी। आजु प्रशंसत सब नरनारी ॥
तव कृत अस धार्मिक कृति माहीं। अबमैं कहन चहौं कछु नाहीं ॥
पै नृपनीति अवसि नृप मानहु। केवल दैहिकबल न प्रमानहु ॥
बिनु सुभमति दलबलहिं प्रमाना। होत न तात राजपरित्राना ॥
शाम दाम अरु भेद उपाई। जब न बनै तब करिय लराई ॥

१इसमें अनुमान और रूपकालंकार की संसृष्टि है।

२ इस अर्द्धाली से लेकर आगेके अनेक पद्योंमें अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनि यद्वा लक्षणामूलकगूढ़ व्यंग्य से व्यंग्य है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यहि बिधि निज करतब जो करई। सोन्रृप कबहुं बिपति नहिं परई॥
जे न्रृप बिनु अन्तिम गति जानी। निज रुचि करत काज हठठानी॥
होत भ्रष्ट न्रृप-श्री सोराजा। सहित सकल सुख सुहृद समाजा॥
प्रथम उचित कृति पाछे करई। पाछिल काज प्रथम मन धरई॥
नीति रहित सो मूढ़ न्रृपाला। पावत सुख नहिं कौनिहु काला॥
बिषय बिलास करत दिनराती। सो न्रृप परत कष्ट बहुभांती॥

सकल काज कहं बिज्ञबर, बरनत पांच प्रकार।
आरम्भक धन सञ्चयन, सिद्धि बिपतिप्रतिकार॥
देसकाल प्रतिभाग पुनि, करि निज मति बिस्तार।
सचिवसहितन्रृपकहं चहिय, सबदिनकरनबिचार॥

नीति निपुन बहु सचिव सुजाना। लहि सुमंत्रपुनिगुनिनिजज्ञाना॥
नित प्रति राज करत जो राजा। रहत मुदित सो सहित समाजा॥
सुमतिकुमतिसबसचिवबिचारी। हित अनहित मति हृदय निहारी॥
सब सन न्रृपति रहइ सज्ञाना। सहसा काहु न करइ प्रमाना॥
स्वारथ बिबस दुष्ट अभिमानी। नीति रहित छल कृत अज्ञानी॥
बिनु समुझे जो गति परिनामा। कहत मन्त्र लखि न्रृप मनकामा॥
अस मंत्रिन कहँ तजे भलाई। निगमागम सब देत दुहाई॥
ते सठ हठ अस मंत्र कहाहीं। जेहि न्रृप बेगि नास ह्वै जाहीं॥

जो न्रृप निज हितबचनसुनि, ग्रहनकरतनहिंन्याय।
होनिहार तेहि सकल सुख, अवसि नष्ट ह्वै जाय॥

सुनत कटुक अन्तिम सुखदाई। कह्यो अनुज बहु मंत्र बुझाई॥
तुम निज महत बिभव अभिमाना। कीन्ह तासु बहु बिधि अपमाना॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनहु तात श्रीमद समभारी। भूपहिं जगत न कछु दुखकारी ॥
१ दाहत दव दावानल जैसे। भूपहिं नसत भूपमद तैसे ॥
असबिचारि तजि कुमति अनन्ता। प्रभु चलि गहहु सरन भगवन्ता ॥
सिय जगजननि जनक रघुनायक। करत चरित सन्तन सुखदायक ॥
जेहि बहु कथा प्रथम तुम गाई। सो सब मनुज भिन्न गति भाई ॥
जेहि बल सहज सम्भु धनुतोरा। कहिय ताहि कस नृपतिकिशोरा ॥
सुनि अस बचन रक्त करि नैना। कह दसकन्ध जरत रिसि बैना ॥
अब मैं तुम सन भयउ निरासा। जान्यो तव बलबुद्धि प्रकासा ॥
जौ तुम रिपुसन गयहु डेराई। सोवहु जाय सयन-गृह भाई ॥
मैं कदापि सिय राम न देहौं। नहिं कायर ह्वै काज नसैहौं ॥

सुमति कुमति बा नृपति मद, ह्वै अजान बा जान।
प्रथम कीन्ह मैं काज जो, सो सब भांति प्रमान ॥

तन मन धन सर्बस बरु जाई। मैं निज हठ तजिहौं नहिं भाई ॥
२ सुहृद बन्धु सो यहि जगमाहीं। जो दुख सरि धरि बांह कढ़ाहीं ॥
बहु बिधि देत दोष दुख जोई। ताहि सुहृद जग कहै न कोई ॥
जौ कछु चहहु मोर उपकारा। रन चढ़ि करहु अरिन संहारा ॥
सुनि कह कुम्भकरण बड़ज्ञानी। प्रभु अति सत्य कहत यह बानी ॥
हम सन होय न कछु उपकारा। परेहु सत्य तुम बिपति अपारा ॥
रिपु कहं जीति सकौं रन माहीं। प्रभु सो बल मम भुजबल नाहीं ॥
पै पूछहु जो उचित उपाई। तेहि कछु युक्ति कहौंसमुझाई ॥

---

१ इसमें उदाहरणालंकार है।

२ यहां-दुखसरि-रूपक है सो 'बिधि' अलंकार का अंग है इसलिये—अंगागि-भावसंकरालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिय सादर सुखपाल चढ़ाई । चलिय उठाय कन्ध दोउ भाई ॥
करि बहु बिनय नाय पद माथा । सिय कहँ सौंपि देहु रघुनाथा ॥

कुम्भकरन कर बचन सुनि, हृदय हरषि सुखमान ।
बीर बाहु बरबीर तब, बोल्यो बचन प्रमान ॥

नाथ अनुज दोउ कहत यथारथ । सुखद सकल स्वारथ परमारथ ॥
नारि पाइ जौ फिरहिं खरारी । तौ नहिं व्यर्थ बढ़ाइय रारी ॥
कहत महोदर तब हरषाई । सुनहु सत्रुजय सुगम उपाई ॥
सब मिलि करहु नगर बिख्याता । भै रन निधन राम दुहुँ भ्राता ॥
सुनि सानुज पति समर निदाना । सिय परिहरे बिकल निजप्राना ॥
तब सीता-शव यान चढ़ाई । रघुपति निकट देहु पठवाई ॥
लखि सिय मरन सहित सब सेना । गृह फिरि जाहिं रामबलऐना ॥
सुनिकह कुम्भकरन रिसिबानी । धिकतव अधम बुद्धि अभिमानी ॥
तुम सम मन्त्रिन मन्त्र बिचारा । नसै चहत नृप सहपरिबारा ॥
१ कसन परै सो नृप दुख भारी । जहँ तुमसम मंत्री कुबिचारी ॥
जाय दुरहु निज मुंह मसिलाई । अब जनि बोलहु कुमति बढ़ाई ॥
तेहि छन महापार्श्व बलवाना । सुर प्रेरित ह्वै कह अज्ञाना ॥
आयसु देहु अबहिं रनजाई । हतौं राम सह सैन सहाई ॥
नाथ जो प्रथम आय हनुमाना । कीन्ह सबहिं बहु बिधि अपमाना ॥
सो यक प्रबल दैवबस होई । रह्यो अचेत तबहिं सबकोई ॥
नहिं कोउ हिय रह अस बिस्वासा । करिहैं कपि असकर्म प्रकासा ॥

२ अछय मारि पुर जारिहैं, अति लघु बानर एक ।
परम असम्भव बात यह, कीहि अस प्रथम बिबेक ॥

१ इसमें काकु बक्रोक्ति है । २ इसमें असंभवालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंह गहरवारबिरचितेषष्ट:सर्ग:

महापार्श्व के बचन सुनि, कह क्रोधित अतिकाय ।
तब न कीन्ह तुम काज कछु, अब कस कहत बनाय ॥

समय चूकि अब गाल बजावत । निज पौरुष कहि नृपहिं रिझावत ॥
अस कहि दसकन्धर दिसि देखी । कहै लाग सो नीति बिसेखी ॥
जगत नृपति बुध त्रिबिध बखाना । उत्तम मध्यम अधम प्रमाना ॥
समुझि मंत्र बुध गुरु समुदाई । करत काज सुर सुकृति सहाई ॥
सो नृप सकलसुयसगुनखानी । होत सिद्ध कृत कबहु न हानी ॥
जो केवल निज मत अनुसारे । कछु सुर सुकृति कर्म हिय धारे ॥
करत अकेले काज प्रमाना । तेहि मध्यम नृप निगम बखाना ॥
मध्यम नृप मध्यम फलपावै । कबहुं तासु कारज नसिजावै ॥

बिगत मंत्र गुरु सुमति जन, बिनुसुरसुकृतिसहाय ।
स्वार्थ कार्य करि अधम नृप, कारज सहित नसाय ॥
चौर कर्म करि ल्याय गृह, निरपराध परदार ।
नहिं सोहै यह समर प्रभु, दुहुं जग होत बिगार ॥
पुत्रबचन सुनि दसबदन, कहि कटु बच रिसिआन ।
सारद प्रेरित हृदय तब, कह दुर्मुख बलवान ॥
सुनहु राज राजेन्द्रमणि, लरिकन बुधि अति थोरि ।
अब सुमंत्रकछु करिय प्रभु, तब लीजिय मतिमोरि ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ पण्डित मूरख उभयजन, यद्यपि एक समान।
गूढ़ तत्व निर्णय समय, भेद परत है जान॥
सिय जनि दीजै राम कहं, बरु दीजै निज प्रान।
प्रथमजोकीन्हेहुकाज प्रभु, सोइ अब करहु प्रमान॥

सुनि तेहि बचन हृदय सुखमानी। कह दसकन्ध सहज अभिमानी॥
धन्य धन्य तुम सचिव सुजाना। अहहु बन्धु गुन ज्ञान निधाना॥
सखा समुझि तव मति अति गूढ़ा। मोहिलखिपरतबाकपतिमूढ़ा॥
देखि तोर बल साहस भारी। भये आजु सब असुर सुखारी॥
बूड़त सबहिं बिपति-सरि धारा। तुम हठि भयहु बीर कढ़हारा॥
कुम्भकरण आदिक भटभारे। जेहि रिपु देखि हृदय-बल हारे॥
तहँ यहि बिधि साहस लखि तोरे। उपजत हिय प्रमोद अति मोरे॥
असकहि तेहि निज अंक लगाई। पुनि रावन बोल्यो रिसिछाई॥
जेहि दुर्मुख मत होय प्रमाना। सो मम अति प्रिय प्रान समाना॥
रिपु सन मिलन कहत सठ जोई। तेहि समान ममरिपुनहिंकोई॥
जेहि कायर रनकर्म न भावै। अबहिं सभा तजि निज गृहजावै॥
सुनि नृप बचन सकल निसिचारी। अतिअनीतिलखिभये दुखारी॥

सिरधुनिधुनिपछितायहिय, सबमिलिकरहिंबिचार।
रामसमर चढ़ि मरन उत, इत रावन मोहि मार॥

२ उभय भांति दुखदारुनदाहू। खल ससि ग्रसे युगल नृप राहू॥
अब न उबार बिनहिं तनु त्यागा। कस न समर मरि होउं सभागा॥
यहि बिधि बहुनिसिचरभयमाना। कोउनिजजातिसहजअभिमाना॥
सब मिलि कहन लगे मत सोई। जेहि बिधिबेगि नाश नृप होई॥

१ इसमें विशेषकालंकार है। २ इसमें परंपरित रूपक लंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बज्रदन्त भट कुम्भ निकुम्भा। धूम्रनयन रविरिपु खल दम्भा ॥
यज्ञसमन अतिपार्श्व महोदर। रभस बज्रहनु सुबल बकोदर ॥
अग्निकेतु दुर्द्धर्ष सुरारी। खल सुप्तघ्न आदि भट भारी ॥
सैनप सचिव बन्धु सुत नाती। जहंलगि नृप प्रियजन अरुआती ॥
१ सुर प्रेरित सुधि बुधि बिसराई। हिय अहमितिअभिमानबढ़ाई ॥
गरजि तरजि बहु विधि अज्ञानी। कहनलगे बहु अटपट बानी ॥

रामलखन तपसिन सहित, धरि बनचर समुदाय।
आजु समर चढ़ि खाइहौं, भरिभरि पेट अघाय ॥

छनमहं करौं जगत संहारा। नरबनरन कर कौन विचारा ॥
आजु नाथ तव तेज अपारा। तपत सकल अगजग संसारा ॥
सुनि बिरुपाच्छ कहत सबकाहीं। गयउ प्रथम अब सो दिन नाहीं ॥
मूढ़ जिनहिं नरकपिकरि जाना। सो निसिचर कुल काल प्रमाना ॥

२ नर कपिते निज बल प्रबल, केहिबलकहतलबार।
जब लगि देखि सिंह नहिं, तबलगि सुभट सियार ॥
३ घर बैठे बोलत बचन, कायर सूर समान।
प्रबल शत्रु सो रन परै, भेद परै पहिचान ॥
४ समर विजय जे चहत हैं, हरि सो बैर बढ़ाय।
ते तनु सीतलता चहत, प्रलयानल महं जाय ॥
रविपावक महं उष्णता, सीतलता जल आहि।
अरि नासकता रामकी, निबसत शायन माहिं ॥

१ यहां से लेकर आगे के अनेक पद्यों में रौद्ररस का वर्णन है।
२ इसमें लोकोक्तिअलंकार है। ३ इसमें विशेषकालंकार है।
४ इन दोनों दोहाओं में प्रथम निदर्शनालंकार है।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुरि सचिव दसमुखमुखदेखी । कहैलाग नृप नीति बिसेखी ॥
सब समर्थ शंकर भगवाना । सोउ करत नृपनीति प्रमाना ॥
यद्दपि कामरिपु काम नसावा । तउ तिय निज तनु अर्द्ध बनावा ॥
जो पचये गर गरल कराला । धरत सुधांशु सदा निज भाला ॥
दहत नयन हर अनल अपारा । तउ धारत सिर सुरसरिधारा ॥
जो अहिपतिहिं बिभूषन कीन्हा । खगपति नाथ हृदय गहि लीन्हा ॥
जो दिग बसन रखत कछु नाहीं । तउ गृह सुरतरु धेनु सुहाहीं ॥
इमि शिव इष्ट देव भगवाना । राजनीति रत परम सुजाना ॥
नाथ सो नीति समुझि मनमाहीं । लघु रिपु गनहु मनुज कपि नाहीं ॥
ऋनरुज पावक पाप अराती । इनहिँ न लघु जानिय कोउ भांती ॥
प्रभु जहंलगि ये निशिचर-जाती । कहहिं बचन सब ठकुर-सुहाती ॥
तिनकर बचन करिय नहिं काना । अनृत प्रसंसक अधम अजाना ॥

निजस्वारथ बस ये कुटिल, बसहिं सुभोजन दान ।
जब दुर्दिन देखहिं निकट, सहजहिं करहिं पयान ॥

* पावस-सरि-जल खलन मिताई । परद्रोही-कुल कुसल भलाई ॥
शारदपुञ्ज तड़ित घनमाला । धर्मरहितजन बिभव बिसाला ॥
तिय-यौवन-श्री बयस किसोरा । अनय निरत नृप कर भुज जोरा ॥
रहत कबहुं सुस्थिर प्रभु नाहीं । श्रुति पुरान सब सन्त कहाहीं ॥
निवसत बिष अहिमुख पुछबीछी । सब तनु गरल ज्वाल खलतीछी ॥
तेहि बिछि पुछ अरु बदनभुजंगा । बुध परिहरहिं दुष्ट सब अंगा ॥
रुधिर न अहि-मुख दुष्ट सरीरा । हिंसक हृदय न कछु परपीरा ॥
तिमि प्रभु मूढ़ नृपति गृह माहीं । सपनहुं भूलि बसत सुखनाहीं ॥

* यहां बहुत से पदों में दीपकालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ खल मन्त्रिनहिं सौंपि सब भारा। रहत जे नृपनितमगनबिहारा ॥
सो दधि दूध क्षीर रखवारी। सोवत सौध सौंपि मञ्जारी ॥

॥ हरिगीतिका छन्द ॥

२ किय मूल जेहिउतखान तरु, तेहि और थल महं रोपई।
चुनि कुसुम कुसुमित लघुन बर्द्धत, कंटकिन कढ़ि लोपई ॥
घन वृच्छगन विश्लेष करि, अति उन्नतनहिं नवावई।
रचि यतन युक्ति अनेक विधि, तरु नीच ऊंच बनावई ॥
अस सुघर खगकर चरित जग, तसनृपतिगतिश्रुतिगावई।
जो करत अस सो चतुर नृप, दुहुं लोक सुख यस पावई ॥

दोहा - सुनि दसमुख कह बिहँसि वच, सचिवसत्यतववैन।
पै नर बनरन निधन हित, यह मत उचित अहै न ॥
३ सुरतिसचिवसबरसिकजन, बुधजनबिमलबिचार।
सदा समरप्रिय बीरकहं, सचिव एक असिधार ॥

नहिं अब मैं कोउ जन सँगलैहौं। चढ़ि अकेल रन अरि बिनसैहौं ॥
अस कहि समर चलन चह जेहिछन। गहि पदबोल्योसुजनविभीषन ॥
सुनहु नाथ सद्ग्रन्थ पुराना। जनसुखप्रद कृत त्रिविध बखाना ॥
यक जगसुखद दुतिय परलोका। तृतिय सुखद दुहुंजग हरशोका ॥
जो दुहुँ लोकहिँ सुखद समाना। तेहि अति उत्तम बेद बखाना ॥
पुनि जेहि सुहित सधै परलोका। सो उत्तम कृत कह मतिओका ॥
केवल यह जग सुखप्रद जोई। अधम कर्म बरनत बुध सोई ॥
परतिय अनय किये गृह राखे। को तिहुं सधै कहिय बिनु साखे ॥

१ इसमें दृष्टान्तालंकार है।
२ इसमें अर्थश्लेषालंकार है। ३ इसमें निरंगरूपकालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाथ सुनीति सुखद सबकाहू। उभय लोक सुख सम्पति लाहू ॥
सिव बिधि सरिस होय नृप जबहूं। है अन्याय किये दुख तबहूं ॥
सकल शास्त्र अस नीति कहाहीं। परतिय रत जन यस सुख नाहीं ॥
दूत सुप्रमान लखहु निजकरनी। निसिदिन हृदय जरत दुख जरनी ॥

समुझि सपदि सो सुमतिनृप, करहु स्वकुलपरित्रान।
सिय पतिब्रत पावक प्रबल, जरत सलभ सबजान ॥

जबते हरि ल्याये परदारा। नित नव असगुन होत अपारा ॥
सो सब बिपति समन जेहि होई। कहौं उपाय करहु प्रभु सोई ॥
सीता सौंपि रामकहँ दीजै। सब दिन राज लङ्कपुर कीजै ॥
नतरु तात निसिचर कुलमाहीं। रहहिं अवनि जीवत कोउमाहीं ॥
यह सम्मति पुनि प्रिय सबकाहू। प्रगट न कहहिं हृदय दुखदाहू ॥
यदपि रिपुहिँ सब त्रसित बिसेषी। कहिनसकहिंमतितवगतिदेखी ॥
चाटुकार जे खल अभिमानी। सुनिय न प्रभु तेहि अटपटबानी ॥
अस कहि सकल सभामुखदेखी। कहत बहुरि सो प्रीतिबिसेखी ॥
सब मिलि भूपहिँ करहु सम्हारा। परम धर्म यह अहै तुम्हारा ॥
गुरु पितु मातु स्वजन दुखदेखी। करै न हित तेहि पाप बिसेखी ॥
निज प्रियदेस जातिहित लागी। सहै कष्ट सो जन बड़ भागी ॥
अस बिचारि सिय दै रघुराई। करहु स्वजाति देश हित भाई ॥
१ ग्रसित राम अहिभूपति भेका। सबमिलि राखहु प्रगटि बिबेका ॥
२ बनचर कटक जलधि बिस्तारा। सीतादुखजल अगम अपारा ॥
लछिमन कोप सुभँवर बिसाला। रघुपति बपुष अगाध पताला ॥
बूड़त नृपहिं सहित परिवारा। सब मिलि सपदि होहु कढ़हारा ॥

१ इसमें परंपरितरूपकालंकार है। २ इसमें सावयव वा सांग रूपकालंकार है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहत बिभीषननिसिचरन, दुमि निज बुद्धि बिलास ।
सोसुनिसुनिसुरपतिहृदय, बहु बिधि उपजतत्रास ॥
जेहि दिन रावन मन्त्रहित, जोरेउ असुर समाज ।
दिवि सब देवी देवता, ह्वै यकमत सुरराज ॥
करि प्रसन्न श्री सारदा, पठये सभा मझार ।
तिहि तिहिबिधिकियअसुरमति, जिहिबिधिह्वैसंहार ॥
लखि सबजग उपकार अति, धर्मकाज जिय जान ।
मचै राम रावन समर, सो सब कीन्ह बिधान ॥

समय समय सो कथा सुहाई । कह्यो प्रथम पुनि कहब बुझाई ॥
यदपि बिभीषन बहु समझावा । काल बिबस तेहि हृदय न आवा ॥
करि बहु भांति अनुज अपमाना । कहै लाग कटु बच अज्ञाना ॥
सुनहु सकल सज्जन मतिमाना । है यह सठ सब कपट निधाना ॥
हृदय कपट मुख प्रीति बढ़ाई । बोलत बहुबिधि बात बनाई ॥
यह कुरीति प्रचलित सबठाईं । जातिहिं जाति देत दुखभाई ॥
सुर नर मुनि पसु पच्छिहुमाहीं । निज प्रिय जाति दुखदसबकाहीं ॥
देखहु करिगन खगगति भाई । जाति स्वजातिहिं लेत बझाई ॥

अहिबिषधर रिपु कुपित ढिग, बरु कीजियजगबास ।
हृदय अहित मुखसुहृदसँग, कबहुनकरियनिवास ॥
* कोटिन बिधि हित कीजिये, तौ न गुनैं उपकार ।
कपटी कुटिल कृतघ्न जन, अरु द्वेषी परिबार ॥

इच्छु सुरस नित सींचि बढ़ाइय । निम्ब मधुर रस कबहुं न पाइय ॥

* यहां अनेक पद्यों में अवज्ञा अलंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पालिय अमिय प्याय दिनराती । होय कि अविष कबहुं अहिजाती ॥
सुनि हंसि अनुज चरन शिरनाई । बहु प्रकार पुनि बिनय सुनाई ॥
प्रभु मम पूज्य जनक गुरु ज्ञाती । जो कछु कहिय उचित सब भांती ॥
पै बिनु सियहिं दिये भगवाना । यह जग तात न तव कल्याना ॥
कीन्हेहु हित कोटिन सिव धाता । राम बिमुख नहिंकोउ जगत्राता ॥
१ सघनदनुजबन दहन दवारी । तुम गृह आनि धरेहु पर नारी ॥
बिनु सिय तजे भजे भगवाना । सुनहु तात नहिं तव कल्याना ॥

अस बिचारि अति शीघ्र अब, गहहु सरन प्रभु राम ।
जबलगिचढ़हिं न कुपितरन, कपिभालुकबलधाम ॥

गहि तरु सैलसिला बनचारी । जब लगि करन उपद्रव भारी ॥
२ कोटि कृतान्त प्रगटि रनकरनी । निसिचररहितकरहिंनहिंधरनी ॥
निसिचर नारि रुदन जल धारा । जबलगि बह नहिं सरित अपारा ॥
तब लगि प्रभु करि सुगम उपाई । गहहु सरन सीता-पति जाई ॥
यामवन्त कपिपति हनुमन्ता । अंगदादि दधिमुख बलवन्ता ॥
३ प्रलयानल निज कोप अपारा । जब लगि लङ्क करहिं नहिं छारा ॥
नोंचि चोंथि नख दसनन्ह काटी । जबलगितोहिनमिलावहिंमाटी ॥
तव सुख सकल हेतु बिपरीता । तब लगि प्रभुहिं समर्पहु सीता ॥
४ सिय पतिव्रता तेज प्रलयागी । जबलगि जरहिं न असुरअभागी ॥
तब लगि प्रभुहिं सौंपि बैदेही । भजहु राम बिनुकाम सनेही ॥

कपिपति भृगुपति आदिकन, रनबिजयी बिख्यात ।
जबलगिचढ़हिंनकुपितरन, राम लखन दोउ भ्रात ॥

१ इसमें परंपरित रूपकालंकार है । २ इसमें वाचक लुप्तोपमा है ।

३, ४, इनमे निरवयव रूपकालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तबलगिसुमतिबिचारिहिय, सियहिं सौंपि रघुनाथ ।
सहित सकल अधिकार निज, राखि लेहु दसमाथ ॥
सुनत बचन उठि दसबदन, कम्पत क्रोध अपार ।
सुजन बिभीषन सीस पै, कीन्ह्यो चरन प्रहार ॥
तदपि अनुज गहि चरनन्टप, करिबहु बिनय प्रनाम ।
सचिव सहित अति हर्षमन, गयउ जहां प्रभुराम ॥
* पाद प्रहार्यो हित कहत, कीन्ह्यो अति अपमान ।
मिल्यो बिभीषन रामसो, भयो जगत कल्यान ॥
देखि चरितचित चकित अति, सकलसभामतिमान ।
हृदय सराहत अनुज मति, करि दसमुख अपमान ॥

माल्यवान तेहि अवसर आयो । कहि बहु नीति न्टपहिं समुझायो ॥
काल बिबस कछु सुनै न सोई । तब तजि सभा चले सबकोई ॥
सो सुधि सुनत हृदय अकुलाई । मयतनया तेहि अवसर आई ॥
रोवति बिलखि न्टपहिं गरिआवति । कहि मन्त्रिन भलमन्त्रहढ़ावति ॥
निसिदिन रमन करत परदारा । गयउ न्टपति हित अहित बिचारा ॥
तेहि अब न्टपहिं कैद करिलीजै । लङ्काराज बिभीषन दीजै ॥
सिय सादर चौपाल चढ़ाई । सब मिलि सौंपहु प्रभुरघुराई ॥
सुनत बचन मारनहितरानी । धावा खड़ग काढ़ि अभिमानी ॥

बैठारे सब सचिवमिलि, गहि न्टपकहं इकसङ्ग ।
भागी भवन मदोदरी, भई सभा सब भङ्ग ॥

इति श्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंह गहरवारबिरचितेसप्तमःसर्गः

* इसमें दोष से गुण होने के कारण तृतीय उल्लासालंकार है ।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आवा सरन बिभीषन जबहीं । हर्षित मिले राम उठि तबहीं ॥
निज कर तिलक देइ भगवाना । कीन्ह बिभीषन लङ्क प्रधाना ॥
पुनि रघुपति यूथपन बोलाई । सबहिं कह्यो यह मन्त्र दृढ़ाई ॥
परम रम्य यह थल अति पावन । उचित इहां शङ्कर पधरावन ॥
सुनत बचन कोटिन कपि धाये । ऋषि मुनि बृन्द बोलि लैआये ॥
ते सब कह्यो सुनहु भगवाना । रावन सम्भु-तत्व भलजाना ॥
जो आवै यहि अवसर सोई । प्रभु सबकाज सहज सिधहोई ॥
सुनि सब कपि कह अचरज भारी । किमि अइहैं प्रभुमख निसिचारी ॥
समुझि बैर सन्देह बढ़ैहैं । राम-यज्ञ रावन नहिं अइहैं ॥
पुनि मख-कर्म असुर का जाने । मुनि अगस्त कह बचन प्रमाने ॥

पढ़्यो सकल निगमागमन, कीन्ह्यो कोटिन यज्ञ ।
यहि अवसर रावन सरिस, नहिं कोउ जगत मखज्ञ ॥

तब कपिपति बहुदूत पठाये । समाचार रावनहिं जनाये ॥
सुनि मन गुनत दसानन ज्ञानी । अहो राम अद्भुत मतिठानी ॥
नीति निपुन क्षत्रिय मतिमाना । निज मखसिद्धि चहत मैं जाना ॥
इहै समुझि मोहि न्योति पठाये । अइहैं अवसि संग सिय ल्याये ॥
तिय पतिब्रता त्यागि दुख माहीं । नर अधिकार धर्मकछु नाहीं ॥
जौ न संग सीतहिं लै आऊं । ह्वै मखज्ञ अति अज्ञ कहाऊं ॥
किये मन्त्रना सचिवन पाहीं । यहि अवसर सधिहै हित नाहीं ॥
तेहि अति गुप्त रामढिग जैहौं । नहिं यह मत निसिचरन सुनैहौं ॥

सम्भु कृपा सीता मिलन, मोर निधन जिमि होय ।
चतुर सिरोमनि रामनृप, करत काज सुभसोय ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इमि अनेक हिय हेतु बिचारी । कौतुक करत अवधपति भारी ॥
जौ न आउं लखि निज हित हानी । मोहि अति भीरु कहैं सब प्रानी ॥
अस बिचारि मन सहज अभीता । प्रभु ढिग अवसि चलिय लैसीता ॥
अगजगनाथ राम भगवाना । जगत जननि सिय प्रकृतिप्रधाना ॥
सुरसुख करन हरन महिभारा । प्रभुरघुबंस लीन्ह अवतारा ॥
सिव बिधि शक्ति शुक्र गुरुज्ञानी । प्रथमहिं मोहि अस कह्यो बखानी ॥
दृढ़ बिस्वास यदपि यह मोरे । तदपि न तजौं सबुमत भोरे ॥
अब मम बेगि नास जिमि होई । रामनिकट चलि मांगिय सोई ॥

अस बिचारि अति गुप्त गति, चढ़िपुष्पकसियसाथ ।
जलधि पार आयो तुरत, जहं सब कपि रघुनाथ ॥

आवत देखि असुर सिय साथा । परमप्रेम उठिमिलि रघुनाथा ॥
अति आदर सन्मुख बैठारे । कुसल प्रश्न सब पूँछि सुखारे ॥
मिलत राम रावनहिँ निहारी । भयउ सबहिँ अचरजअति भारी ॥
प्रभुहिं सौंपि निसिचर तब सीता । कहन लग्यो कछु कथापुनीता ॥
लछिमन सहित राम सुखमानी । सुनहिं सकल कपि मुनि विज्ञानी ॥
लखि दसकन्धर ज्ञान अथाहैं । रामलखन मुनि हृदय सराहैं ॥
कहि अनेक इतिहास सुहावन । मख प्रारम्भ कीन्ह पुनि रावन ॥
१ निकट राखि प्रभु जनक किसोरी । बिंसतिपानि कीन्ह गँठजोरी ॥
निगमागम सम्मत जस गायो । बिधिवत सकल कर्म करवायो ॥
२ पुनि निज करकमलन जगपावन । अस्थाप्यो शिवलिङ्ग सुहावन ॥

१. इसमें शब्दश्लेष है । २. इसमें परिणामालंकार हैं ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ बेद पढ़हिं ऋषि मुनि निकर, बरषि सुमन सानन्द।
ब्रह्मादिक प्रमुदित कहहीं, जय जय रघुकुल चन्द॥

२ कहि न जाय सो सुख अवगाहू। सकल भुवन भरि चल्यो उछाहू॥
लखि रामहिं सब बिधि अनुकूला। प्रगटे सम्भु सकल सुखमूला॥
भरि लोचन छबि राम निरेखी। हृदय प्रेम आनन्द बिसेखी॥
३ अस्तुति करत जोरि युगपानी। तनु पुलकित मुख गदगदबानी॥
जयति राम जय जय रघुनायक। अगजगनाथ प्रनत सुखदायक॥
परम ब्रह्म अच्युत अबिनासी। प्रभु सर्बज्ञ सकल उर बासी॥
४ अजय अखण्ड अरूप अनामा। जयति भक्त परिपूरन कामा॥
अलख निरञ्जन अगुन अनामय। त्रिजगनाथ श्री-पति करुनामय॥
आरति हरन सरन सुखदायक। चारि पदारथ प्रद सब लायक॥
५ जय भगवन्त अनन्त मुकुन्दा। अखिल अनादि अगम अद्वन्दा॥
भक्तबछल भक्तन हिय बासी। अगजग मय निर्गुन गुनरासी॥
आदि मध्य अवसान बिगत बिभु। प्रकृति पार संसार परम प्रभु॥
सन्त-बिपति-भञ्जन मनरञ्जन। असरन सरन असुर मदगञ्जन॥
नर तनु धरि महि भार उतारन। जयति राम सुरकाज सँवारन॥

६ परमप्रेम आनन्द हिय, स्रवत नयन जलधार।
गहत चरन अति हित नमत, बिनवत बहुत प्रकार॥

१ इसमें भूतार्थप्रत्यक्षवर्णनभाविकालंकार है।
२ यहां आधार से आधेय बड़ा होने से—अधिकालंकार है।
३ इसमें रोमांच और स्वरभंग दोनों सात्विकानुभाव हैं।
४, ५ इनमें श्रुत्यनुप्रास है। ६ इसमें अश्रुसात्विकानुभाव है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्राहि त्राहि श्रीराम प्रभु, रघुकुलकमल प्रधान ।
चरन सरन मोहि राखिये, कृपासिन्धु भगवान ॥

निज जन जानि मोहि भगवाना । कीन्ह जगत सब भांति प्रमाना ॥
अब दस बदन सहित परिवारा । करहु बेगि भवसागर पारा ॥
१ असकहि हृदय प्रेम भरि भारी । गह्यो चरन तनु दसा बिसारी ॥
बरबस राम सिवहिं उरलाये । करिप्रबोध बहु विधि समुझाये ॥
ह्वैहैं सिद्ध सकल मनकामा । तुम सबदेव देव सुख धामा ॥
सुरनर नाग असुर मुनि माहीं । तुम समान मोहि प्रिय कोउ नाहीं ॥
पुनि निर्जन रावनहिं बुलाई । कह्यो राम मांगहु मन भाई ॥
प्रभु सन्मुख मरि समर मँझारा । भव सरि तरौं सहित परिवारा ॥

तव बिरोधमति हृदयदृढ़, अनुकूल रहै सचेतु ।
यह बरदान न आन कछु, देहु भानु कुलकेतु ॥
असकहिसबहिं अदृश्यगति, सियहिं विमानचढ़ाय ।
गयो दसानन लङ्कपुर, पुनिपुनि प्रभुहिं मनाय ॥
दसमुख हिय बसि शारदा, कीन्ह सिद्ध सबकाज ।
देखि चरित हिय हरष अति, सुरपति सहित समाज ॥
अति बिचित्र रावण प्रकृति, केहुबिधिबरनिनजाय ।
कतहुं महाकामी असुर, कहुं हरिभक्त लखाय ॥
कबहुंक अभिमानी अधम, सकल पाप-आगार ।
कबहुं सकलश्रुति शास्त्रबिद, अति नीतिज्ञ उदार ॥
अपुने पूर्व अपूर्व बस, अरु मुनि शाप-प्रभाव ।
एकहिं अपर विरुद्ध कृति, करत निशाचरराव ॥

१ इसमें अधिकालंकार है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ज्यों उन्मत अरु बाल गण, करत कर्म अबिचार ।
त्यों रावण कृत देखियत, कबहुं सकल व्यवहार ॥

इतिश्रीसीतारामचरितायनेअद्भुतसुन्दरकाण्डेसीतलसिंहगहरवार
बिरचितेअष्टमःसर्ग्गः

सुन्दर काण्ड समाप्त ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विज्ञापन

सम्पूर्ण "श्रीसीतारामचरितायन" सात खण्डों में छप रहा है, जिसका मूल्य लगभग १०) दस रुपये के होगा। परन्तु जो व्यापारी एकसाथ २५ पचीस जिल्द या इससे अधिक ख़रीदेंगे उनको २५) पचीस रुपय सैकड़ा कमीशन दिया जायगा।

भवदीय कृपाकांक्षी
जयप्रकाश सिंह
मोक़ाबले नवीस कलक्टरी
मैखलौटगञ्ज—गया।

पुस्तक मिलने का ठिकाना

जिन महाशयों को यह ग्रन्थ ख़रीदना हो वे निम्न पते से मंगावें।

पहिला ठिकाना :— **श्रीसीतलसिंह गहरवार, ग्रन्थकर्त्ता**
ग्राम और डाकख़ाना—इमामगंज
जिला गया।

दूसरा ठिकाना :— **जयप्रकाश सिंह**
मोक़ाविले नवीस कलक्टरी
मैखलौटगञ्ज—गया।

तीसरा ठिकाना :— **राजराजेश्वरी पुस्तकालय**
कचहरी रोड—गया।

चौथा ठिकाना :— **"विधु" साहित्यमन्दिर**
रमना—गया।

थोक ख़रीदारों को २५) सैकड़ा कमीशन मिलेगा।
विशेष हाल पत्र से पूछिये।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative